रूसी वेश्यालय—

यामा

(Yama the Pit का हिन्दी अनुवाद)

मूल अलेक्जेंडर क्युप्रिन
अनुवादक जैनेन्द्रकुमार

रूसी वैश्यालय

यामा

(Yama the Pit का हिन्दी अनुवाद)

मूल अलक्जेंडर क्युप्रिन
अनुवादक जैनेन्द्रकुमार

विचार-साहित्य	
जन द्र के विचार	30/
साहित्य आर सस्कृति	25/
परमा म	15/-
पश्चिम	15/
भारत	25/
अध्या म	15/

रोम रोला	
राम गाथा का भारत मत (दो खण्डो म)	50/
नीहार रजन राय	
भारतीय कला के आयाम	28/
एम हिरियन्ना	
कला अनुभव	15

विविध	
मध्यभारत दक्षिण पूर्व एशिया म	15

हिमांशु जोशी	
अन्तत	10/-
भवानी मिश्र	
जिन्होंने मुझे रचा	6/
प्रभाकर माचवे	
कहाँ स कहाँ	10
बालशौरि रेड्डी	
माटी की महक	10
सूयकुमार जोशी	
सूय ग्रहण	10
मातण्ड उपाध्याय	
व न्दिनी के नाग	10
महात्मा भगवानदीन	
जवानो !	10
जवानो राह यह है !	10/
अपनी पहचान	10

कला मक व लमिनेटेड आवरण सफेद कागज स्वच्छ मुद्रित

प्रकाशक

पूर्वोदय प्रकाशन

7/8 दरियागंज नई दिल्ली 110002

यामा

प्रस्तावना

शायद सन् 31 की बात है, राहम बनारस उतरा और प्रमचन्दजी का पुस्तक म लीन देखकर पूछा कि, यह क्या पढ रहे हैं ?

बोले, पावरफुल किताब है जनन्द्र ! लेखक हैं कोई क्युप्रिन '

तब ता समय न मिला और मुझे आगे बढ जाना पडा, लेकिन लौटत हुए फिर बनारस ठहरना हुआ आर फिर उन्होंने इस पुस्तक यामा का चर्चा की वही कहा जनन्द्र, पावरफुल किताब है।'

मैंने सुना। और मैं आकृष्ट भी हुआ, कारण, शक्ति मे श्रद्धा न हो आकर्षण तो है ही।

चर्चा वह वहीं न रह गयी प्रेमचन्द उसकी कथा भी दोहरान लग बनिया पार्क के पास वाले लाल मकान की बात है, पूरब की ओर बाना बडा कमरा था, चादनी बिछी थी पर दूर पास किताब कागज फैले थ सवेर का वक्त था, धूप की किरणो म ताप न था सिर्फ भीनी गरमाहट थी। थाली म नाश्ते के लिए ऊपर जाना अभी देरी पर बठे प्रेमचन्द बात कर रहे थे। मैंने जो कही जिक्र किया है कि प्रेमचन्द तार-तार आसू रो उठे, वह यही अवसर था। प्रसग 'यामा' की कथा का था। पुस्तक म वह प्रसग जहा जैसी युवक पर रीझती और प्यार की प्रेरणा म उस ही बिन भाग बिन छुए वापिस भेज देती है सचमुच जी को हिलाए बिना नही रहता। कथा दुहरात प्रमचन्द उस प्रकरण पर आए तो अपने को थाम न सके। ~ वहन पर सब वकार हुआ। उनके समूच अन्तरग का मथता ६ ।

उठा और उनका अवश कर गया। आवाज रुध आयी। मुह खुला रह गया आख फटी सी रह गयी शायद दृष्टि उनम म हर गयी थी कि दबन-दबन आसू अन्दर आए और उनका तार बध गया। कोई डढ दो मिनट यह दृश्य रहा। कमर म मुक साक्षी एक मैं था और वह म भूल नही सकता।

खर अन्त म बात मम पर आयी और प्रमचन्द बोल जनन्द्र तुम तो कराग नहीं म जानता हू पर ऐसी किताबो का अनुवाद होना चाहिए।

प्रमचन्द का लिखना मरी निगाह म नीतिनिष्ठ था यह थामा खन कर वश्या क बार म है मैंन उन्ह स्तब्ध होकर दखा, पूछा किताब इतनी अच्छी है?

इतना नही जानता अच्छी है। तो तुम तो अनुवाद कराग नही क्या?

हसकर कहा हा क्या करू गा।'

सुना है मैंन कि तुम कहत हो, लिख पाए वह अनुवाद क्या कर हम लिए तुमस साफ नही कह रहा हू पर करो तो अच्छा है।

बात आयी गयी हुई और मैं उन्ह आश्वासन न द सका पर लाकर दिल्ली आया तो प्रमचन्द की बात मन मे कटकर रह गई थी यथा पुस्तक प्राप्त की और पढ गया पुस्तक मुझ महान नही मालूम हुई अब भी किसी और म वह महान नही लगती पर ताकत उसम ह क्योकि ईमानदारी है और महत्ता ह पर त्वष भी है जो मुझ बहुत ऊची चीज नही जान पडता। जो हो पुस्तक पढन पर याद आया कि मैं प्रमचन्द का अनाश्वस्त छाड आया था। क्या म उनका ऋणी न था। ऋण भीतरी और गहरा था इसस चुपचाप मन पुस्तक को लिया और लिखना आरम्भ कर दिया?

उधर बनारस म प्रमचन्द क मित्र थ श्री चन्द्रभान जाहरी। किताब प्रमच द म ताजा थी हो और मुझस निराशा मिली थी। उ हान च द्रभाल जी स कहा और च द्रभालजी न लगता ह फारन काम हाथ म ल लिया। मुझ दिनो तक इसका पता न चला और जब पता चला तब तक मरा अनुवाद एक तिहाई के करीब हो चुका था। सच यह कि अनुवाद के काम म मुझ बडी उलझन होती थी और होती ह। इसस पता चलत हो मैंन चन की सास ली और अनुवाद अपना वहीं-का-वहीं छाड दिया।

उम सन '31 स अब यह '86 आ गया है। चौथाई सदी से ऊपर काल बीत गया। पन्ने पीले हो गए और कुछ इधर-उधर भी हो गए हों तो क्या अचरज ! पर दिलीप कुमार ने कहा 'इसे पूरा कर दो, हम छापेंगे।

मैंने कहा, 'गाडी वालों का कहना तो बाजार में है और कई सस्करण हो गए है।'

पर उनकी स्वय छापने की इच्छा बनी रही और मेरे लिए उसे पूरा करने का आदेश भी बना रहा। छोटो की आज्ञा अनुल्लघनीय होती है क्योंकि हम व्यतीत हैं और भविष्य उनका है। इस तरह यह अनुवाद सामने आ रहा है और मैं क्षमाप्रार्थी हूं।

अनुवाद का काम जोखम का है। आजादी लो तो सोच होता है कि तुम्हें इसका अधिकार क्या है। न लो तो मालूम होता है कि तुम मूल लेखक के साथ लिहाज बरत रहे हो आत्मीयता नहीं। मक्खी की जगह मक्खी न मारना गलत लगता है और जबरदस्ती उस मक्खी को मारकर ही रहना भी उचित नहीं लगता। इसमे अनुवाद एक बवाल है। मैंने तो जैसे तैसे निर्वाह करना चाहा है। जगह जगह, करीब हर जगह मालूम हुआ है कि कृति में मेरे मन का मेल नहीं है। अनेक विवरण जो कोई मेरा गला दबाकर भी लिखाना तो मैं न लिखता। अनुवाद में कलम की राह मैंने उतार और उपस्थित किए है। अनमने मन से यह हुआ है इससे निश्चय ही सुघर न हुआ होगा। पर विगत के ब्यौरो के अलावा जहा मानसिकता का मर्म है वहा आशा है मैंने विशेष चूक नहीं की है।

मूल पुस्तक के सम्बन्ध में बहुत विवाद रहा है जैसा कि लेखक के वक्तव्य में प्रकट है। विवाद अब भी हो सकता है पर लेखक के साथ मैं भी सहमत हूं कि मुह फेरना नैतिकता नहीं है। इसमे सामना करना अधिक नैतिकता है। समस्या है और भीषण है। निदान आपका भिन्न हो सकता है और समाधान भी। उसके साथ आपका बरत व्यवहार भी अलग हो सकता है। पर उपेक्षा काम नहीं देगी, न निरपेक्षता। मन में म हस लेकर और बुद्धि में वैज्ञानिक वृत्ति हमें उस चीज का छूना और छेडना होगा जिसे समाज का कोढ कहकर हम अपने से परे रखना चाहते हैं। नहीं तो निर्मलता हाथ न आएगी सिर्फ कायरता का ही दाग ऊपर चढेगा। वेश्या ...

जो भी है। क्या यह प्रश्न हमको नहीं छूता, नहीं चौंकाता कि क्या वह माँ नहीं है? और क्या नारीत्व का विद्रूप बनकर वह कोठे पर सजी-सजाई बैठी है? नहीं, उसे लज्जा नहीं है, जुगुप्सा नहीं है, बल्कि उलटे गर्व और दर्प है। तिरस्कार समाज उसे देता है, पर उससे गहरा तिरस्कार वह समाज पर थूक की तरह थूकने को तैयार है। यह स्थिति स्वस्थ नहीं है। यह प्रतिकार माँगती है। वह शायद चिह्न है और व्याधि व्याप्त है। पर जो हो, उसे टालना नहीं बन सकता। उससे निबटना ही होगा।

जहाँ-तहाँ स्थानों और व्यक्तियों के नाम सुविधा के लिए बदल दिए गए हैं। वे नाहक कठिनाई पैदा करते और विषय को व्यर्थ दुरूह बनाते। आशा है इससे मूल का अपलाप नहीं हुआ है, बल्कि उसके अभिप्राय के साथ न्याय ही हुआ है।

15 सितम्बर 36
दिल्ली

जैनेन्द्र कुमार

लेखक का वक्तव्य

यह पुस्तक दुनिया की अनेक भाषाओं और अनेक देशों में बीसों लाख से ऊपर की संख्या में खप चुकी है। रूसी के अलावा फरासीसी, जर्मन, स्पेनी, इतालवी, जापानी, स्वीडी, फिनी, नार्वेजी, गाल्हिनी और हंगेरी, अंग्रेजी, बाल्टी, लुथियानी और दूसरी भाषाओं में इसके संस्करण निकले हैं।

इस सफलता का कारण यह नहीं हो सकता कि पाठकों में पुस्तक ने किसी प्रकार की हीन उत्सुकता जगाई है। जन मानस उतने हल्के तल पर नहीं रहा करता। मेरा निश्चित विश्वास है कि 'यामा' ने बहुत लोगों को इस व्यभिचार-संस्था वेश्या के बारे में सच्ची सहानुभूति से सोचने को बाध्य किया है।

लेकिन लेखक पुस्तक से पहले भी मैं असंतुष्ट रहा और अब भी है।

सच ही इतनी समस्याएँ हैं जो इन हजारों वर्षों के काल में मानव जाति के सिर पर छाई रही हैं। उनसे जूझकर और झकझोरा जाकर कभी वह धरती पर गिरा है और नीचे पशु के तल तक उतर आया है, वे बड़ी और भारी और विकट कम नहीं हैं। युद्ध है, व्यभिचार है, फांसी है और श्रम है जिसका शोषण होता आया जो बेगार तक में चूसा जाता है। मुट्ठी भर विलासियों की सेवा में नियुक्त बहुतों की अधपेट गुलामी और चाकरी है। पर इन सब धारणाओं में मुझे नारी-देह और नारी प्रेम का पण्य व्यापार सबसे घातक प्रतीत हुआ है। नारी-देह और नारी प्रेम ये दो

परमेश्वर के परम वरदान हैं। किंतु मुझे प्रतीत हुआ है कि मनुष्य जाति का यह प्राचीन राग यह कोई ऐसा नहीं है जिसका जल्दी और सही इलाज होने में कठिनाई हो। सोचता हूं कि सिर्फ आदमी का यह भर कहना है कि क्या मेरे तुम्हारे यहाँ कोई सफेद बालों की वृद्धा नानी नहीं है ना कि जिनकी तुम श्रद्धा करते हो? बचपन में तुमने उनसे लोरियां सुनी हैं और गान और कहानियां। वे तुम पर आशीर्वाद रूप रही हैं और उनके प्यार की छांह में सारा घर तुम्हारा फल फूलता रहा है—है ना? तुम्हारी मां है ना जिसकी छाती से लगकर कभी आतुरता से तुम दूध पिया करते थे और कभी सहमे दुबककर कभी सो भी जाया करते थे! तुम्हारी पत्नी है ना जो तुम्हारे बच्चों की मां है और परिवार की केंद्र है। बहिन है जो आंगन में चहकती फुदकती है और जिसकी वाणी तुम्हें संगीत है? क्या तुम्हारा आग्रह न कभी भर लायी? और जबड़े गुस्से से हिले जा रहे हैं? सिर्फ इसी ख्याल से तो कि किसी ने तुम्हारी प्यारी छोटी बहिन के साथ रस्ते चलते कोई शैतानी बात कह दी है या ऐसा वैसा कोई इशारा कर दिया है! और बात जो कहीं तुम्हारी प्यारी बेटी की हो—पर नहीं कल्पना आसान नहीं है कि वह सहन तक मैं करूं

लेकिन तुम्हीं जब से पैसा लेकर रुपया डालर रूबल पाउंड या और सिक्का डालकर स्त्री के पास जाते हो और वहां बाजार रचते हो! चाहते हो पैसा ले और गिन कर छनकता गरमा-गरम प्यार वह तुम्हें दे—प्यार कि जिसमें सृष्टि का सार सृष्टि का रहस्य है जिसमें से जीवन बनता और पलता है जो स्वयं आदि है अन्त है और हां सबका समर्थन है, चाहते हो कि सिक्के से वही तुम खरीदो।

आपके लिए यह कहने की गुंजाइश नहीं है कि स्त्री राजी है कि वही नाच आती है कि वही स्वयं विसात आगे बढ़ती है कि क्या वह खुद नाच और हाट बनती है? जी बनती है क्योंकि आप बनाते हैं आपकी यह रचना ही ऐसी है पर सच और सही बात यह है कि अगर बचपन में वही प्यार में और सम्मान में पलती किसी के ध्यान के नीचे बढ़ती तो वह आज सम्मानित माता ही क्यों न होती बल्कि किसी की प्यारी बहिन भी क्यों न होती और दुलारी बनती।

न यही कहकर आप अपने को बहला सकते हैं कि आपके मग नात रिश्तेदार एक है और दूसरा आपके लिए बिल्कुल दूसरा है। दूसरे के परिवार में आपको न वास्ता है न लेना देना है लेकिन यह तो जगना कामा माचना है और हम अपने को थोडा ता सभ्य सम्भ्रान्त समझते ही हैं।

और जब आप अपनी पाशव वासना पूरी करने वेश्या के पास म आते हैं ऊब और उकताहट म जो आपको मिचलाया सा लगता है तो जान रखिए और याद रखिए कि उस वक्त आप वेश्या म कहीं अधम और पामर होते हैं। वर्तमान जीवन की विषमता और विडम्बना का लाभ उठाकर समझ लीजिए कि आपने ऐसे भिखारी को लूटा है जो अन्धा है उस मारा है जिसके हाथ बंधे हैं और जो बेबस है छला है तो उस जो नादान है मासूम है और जो स्वय शिकार है।

हा जसा मै समझ सका और सुझाव बन सका मैंने वेश्यावृत्ति के खिलाफ लिखा। लेकिन मुझे कोई नुस्खा नहीं मिला। मैं इतना ही जानता हूँ कि बहुतसी अभागिन नारियां वेश्यावृत्ति म पडती हैं तो कारण होता है एक ओर गरीबी और अशिक्षा दूसरी तरफ लालच और फुसलाहट तीसरी तरफ हर रोजगार की कमी या किसी रोजगार की नाकाबलियत। लेकिन इन सब चीजों के बारे म लिखना, बोलना, विचारना और प्रचारना सब क्या फिजूल नहीं है देखकर डर लगता है कि बडी म बडी सच्चाई का खोलकर रख स्पष्ट स स्पष्ट और उग्र स उग्र शब्दों का स्त्री पुरुषों पर कितना अकिंचितकर प्रभाव पडता है।

एक बार पीटर्स बर्ग स कामिया जाते हुए ट्रेन म कुछ युवक इजीनियर लोगों की मंडली ने मुझे पहचान लिया और इस वेश्यावृत्ति के बारे म मुझसे बात करने की अनुमति मांगी।

देखिए। वे बोले, आप इन चकलों की और अड्डों की गन्दगी की और घाव की उघाडते तो हैं लेकिन उम्र पर आकर आदमी म एसी बेबसी के साथ जो कामवेग और भोग की भूख लगती है उसको रोकने थामने का भी आपके पास उपाय है?'

बन सका वह मैंने जवाब दिया

मोटा खुरदरा बिस्तरा सख्त तख्त ओढने म कम्बल को ज्यादा मुनासिब

यम न ग और ज्यादा गम न हा, खूब हवा आय-जाय ऐसा सान का ठण्डा कमरा गाढी नींद, मगर लम्बी नही, और तडक सवेर का उठना, ठण्डे पानी म या बौछार म नहाना साधारण भोजन, मसाल का छौक बघार कुछ नही। अच्छी किताब जिसम वीरता और पराक्रम की गाथा हो। खूब सारा काम और खुली हवा म मल। लडके-लडकिया की सह शिक्षा, और अन्त म जल्दी विवाह, समझा बीस-बाईस वष म, क्याकि आखिर कुल गीन की लडकी उस अवस्था तक सहज सह सकती है।"

इंजिनियर लाग बोल—

यह सब हम जानत हैं, य बस ऊपर के मरहम हैं जड की बात का हल वे नही दत। सवाल है कि यान तृप्ति की जगह आप क्या देंग?

इस पर मरा मन बिगडा। मैंन उन्ह सुना दिया कि टाल्सटाय महान न एक बार ऐस वक्त क्या कडा जवाब दिया था।

एक मौक पर रूसी बौद्धिका की एक बडी सभा हुई। स्वभावत वहा खामी चख चख और ल दे रही। टाल्सटाय झुझलाकर अपने समय की सरकार का बुरी भली सुना रहे थ। उस समय एक युवक न उनस सवाल किया—

अच्छा लियो निकालाविच मान लिया आप सही हैं शासन बिगडा है और निकम्मा है। यही आप चाहते हैं ता चलिए हम उसे गिरा देंगे लकिन कृपया उसकी जगह आप हमे दीजिएगा क्या?

टाल्सटाय ने कटकर जवाब दिया।

थाडी देर का मानिय कि—परमात्मा न करे आपका कोई बुरी बीमारी हो गई, आप मरे पास आते हैं और पूछत हैं, यह क्या मुसीबत मुझे लग गई है और मै क्या करू। मैं कहता हू तुम बीमार हो और यह तुम्ह बीमारी है। अब करो यह कि बिना देर किय डाक्टर के पास जाओ और लगकर पूरी तरह इलाज करो। लकिन तुम तुरन्त उलटकर मुझ पूछत हो अच्छा मैं जाता हू डाक्टर क पास और इलाज म अपन को अच्छा भी कर लूगा लकिन सिफलिस की जगह पर आप मुझ

को दीजिएगा क्या ? तो भई मैं कबूल करता हूं कि जवाब देना मेरे लिए आसान न होगा "

यही मेरी हालत है जहां तक सम्भव हुआ है मैंने वेश्यावृत्तिकी भयानकताका ईमानदारीसे विवरण दिया है लेकिन मेरी चीज सही रूपमें सामने नहीं आई रूसी सेन्सरने ऊपरसे बिगाडकर उसे ऐसा बना दिया कि पहचानना मुश्किल था उस सेन्सरको आप जानते हैं कैसा मनमाना है, दोखनेको नाजुक और पाखण्डसे पूरा पर भोली पब्लिक उससे भी चिढ़ुक कर पड़ी हजारों गालियोंके खत, जिसमें ज्यादातर गुमनाम थे, मुझे अपने देशमें मिले—और अब भी जब तब मिलते हैं इल्जाम लगाया गया कि मैंने समाजकी जड़ोंको हिलाया है, युवकोंका चरित्र बिगाड़ा है, कि मेरा लिखना अश्लील है बहुतोंने मेरी ईमानदारीको और इरादेकी सच्चाईको समझनेसे इंकार कर दिया शुरूमें सहानुभूति और प्रोत्साहनके पत्र मिले तो प्रौढ़ वयकी अनुभवी समझदार महिलाओंसे और ईमानदार युवकोंसे जो अपनी यौन कामनाओंसे भयभीत थे और युवती कन्याओंसे भी व्यवसायी वेश्याओंसे मिले अनेक पत्र मेरे पास सुरक्षित हैं उनमें व्याकरणकी भूलें हो सकती हैं, पर वे बड़े गम्भीर और हृदयस्पर्शी हैं

विस्मय है इसपर कि देशसे बाहर, पेरिसमें, मुझे मान्यता भी मिली, समर्थन और आश्वासन भी मिला मेरा यह दर्दभरा उपन्यास फ्रेंच अनुवादमें निकला तो पेरिसके प्रेसने और वहांकी जनताने बड़ी हार्दिकतासे उसे अपनाया आलोचकोंने उस सौजन्य और सूक्ष्मताके साथ, जो कि फ्रांसके लेखकोंकी विशेषता है, उसकी त्रुटियां भी बतलाईं पर यह मत उनमें सब सामान्य और सर्वसम्मत था कि रचना, कहीं कुछ ग्राम्यता और कचाईके बावजूद, पूरी तरह नैतिक है उसमें हार्दिक मानव करुणाका एक स्वर जो व्याप्त है उससे पाठककी और साहित्यकी आवश्यकता पूरी होती है

मैंने तनिक खुलकर सांस ली

और अब मुझे इस बातकी बहुत खुशी है कि आखिरकार, दूसरी

ही भाषामें सही, म यामाको उस अपने मौलिक रूपमें लानेमें सफल हो रहा हू जिसमें वह शब्द पहनकर उतरी और उपस्थित हुई थी

सचमुच यह कोई आसान काम नहीं है सेन्सरसे कटे अश तो यादसे भी भरे जा सकते हैं, पर मुश्किल दूसरी है उपन्यास रूसमें अनेक सस्करणोमें छपा,—लेकिन प्लेट लेकर नहीं छपा यों ही सीधा छपता चला गया और उस कारण छापेकी अशुद्धियां बढती चली गई इससे न सिर्फ झुझलाहट होती बल्कि कभी तो मूल पाठ ऐसा बिगड जाता है कि समझ ही न आ सके ! मने उस सबको व्यवस्थित किया है और मुझे अब सन्तोष है कि मेरी कृति अच्छेसे अच्छे अमरीकी अनुवादकके हाथमें है

एक और भी कारण मेरे लिए प्रसन्नताका है यामाके अमरीकाम छपनेपर यह यह कि क्या एक समय वहीं "टाम काकाकी कुटिया" नहीं छपी ?

परिस शिशिर १९२९ —एलक्जण्डर क्युप्रिन

पहला भाग

बहुत दिन हुए, जब रेल नही निकली थी, इक्केवाल इकट्ठे-के इकट्ठे एक दक्खिनी शहरके परले किनारेपर बस हुए थ पीढी दर पीढी वे वही रहते आए थ इसीसे उस जगहका नाम पड गया था इक्का टोला (याम्सकाया स्लावड्डा) अर्थात इक्केवालोकी बस्ती कुछ उसे याम्सकाया भी कहते थे, कुछ याम्सकास और कुछ लोग उसका और अप भ्रश बनाकर कहते थ 'यामा अर्थात खड्ड होते होते रेल आ गई भापके इजनने इक्का और इक्केवालोका मिटा ही दिया वे धीरे-धीरे अपनी समाजका मस्तानापन खो बैठ और इधर उधर दूसरे ध धाम समा रहे बिरादरी टूट चली, तौर तरीके अपने वह भल गए, और जिसने जहा ठौर पाया उसी पेशम पडकर वे लोग तितर बितर हो गए पर वर्षोतक—अबतक भी—यामाकी एक धुधली सी याद, एक खामोश शोहरत बाकी है लाग सभ्रमसे कहते ह—'वही यामा जहा सदा शराबका दौर रहा करता था, और हर वक्त वह पहल वही जहा रातोम बहार बहती थी और ऊपर खतरेका खौफ ! और जहा बस—क्या क्या न था !"

पर जाने किस विध आप ही आप कुछ और चीज आ जमी पहले वहाकी लजीली बहुए खिलती कन्याए और प्रौढा विधवाए, मदिराका और अपने स्वच्छद प्रेमका व्यवसाय तनिक बचकर, दब छिपकर, कुछ विशेष यत्न और अधिक सफलताके साथ कर पाती थी अब उसके अवशेषपर चकले उठ खडे हुए ह इस व्यभिचारको सरकारकी सनद प्राप्त है इसपर सरकारी देख रेख है, वह बाकायदा है, नियमानुमोदित

है उ नीसवीं मदीका अ त आते आते यामाकी दोना गलिया—छोटा यामा, बडा यामा—आमने सामने दोना ओर इसी तरहके अड्डोसे भरी हुई थी निजी मकान कुल पाच छ बचे हागे उनम भी दारुखाने थ या और वसी चीजाकी दुकान वहा आ खुली थी, जिनकी यामाके व्यभिचारके साज और सामानके तौरपर माग रहा करती

इन लगभग तीन दजन धराम रहनेवालिया की दिनचर्या एक सी थी वही तरीके, वही रीत अ तर था तो फीमकी रकममें इस क्षणिक तृप्ति और नारी देह इस क्षणिक सम्पर्कका यहा एक दरपर आप खरीद सक्त थ तो वहा कुछ कीमत ज्यादा लगती थी चुनाचे उन घराम रहनेवालियाके यौवन, सौंदय, चातुय और हुनरम भी उसी हिसाबसे अ तर था उनको वेपभूपाम और सजावटम और कमरोकी रौनकम भी उसी कदर फक हागा

सबसे अव्वल जगह है ट्रपिल बडी यामावाली गलीम बढिए कि पहला अड्डा वही है खासी पुरानी फम है इसके नए मालिकाका नाम इस फमके नामसे अलग है वे नगर पिता ह और जिला बोडके सदस्य ह मकान दुमिजला है हरा और सफद दरवाजेपर दो काम दार घाड बने खड ह द्वारपर नक्काशी हा रही है सामने चौड जीनेपर धारीदार बनातका फश बिछा है हालमें एक उम्दा कारीगरीका नमूना एक भालू खडा है जिसके अगले फल पजाम एक लकडीकी रकाबी टिकी है कि आनवाले अपन विजटिग काड उसम रक्ख नाच घरमें चिकना फश है चारो ओर भारी रेशमी पर्दे पडे ह दीवारके किनार किनारे कतारम सुनहरी और सफद कुर्सिया ह और आइनदार मेज खास कमरे म गलीचे, दीवान, मसनद और साटनके मुलायम गद्दे पड ह ख्वाब-गाहोम नील और गुलाबी शमादान और रेशमी दूध सी रजाइया, और सफेद भक भागमे तकिए ह

वहा कामिनिया नीचेतक आनेवाले गाउनामें मिलती ह किनारो पर फर रहती ह या वे तरह-तरहके मर्दाने और जनाने उपवेशोमें सजी हुई ह इनमें अधिकाश जमन ह, या आस-पासके प्रान्तासे आई

है वे सुन्दरियां पर्याप्त काया है पीली कांति है, और वीभत्स स्थूलता यहां एक मुलाकातके बीस रुपए लगते है फिर भी अरक पचास दो रुपएवाले तीन ठिकाने है वे जरा हल्के है, सामान भी उतरा हुआ शेष स्थान एक रुपएवाले है वे और घटिया है छोटे धामा वाली गलीमें हिसाब आनाका है वहा कोठरीकी धरती सीली, गीली है दीवारोपर जाले हैं, खिडकियोपर पर्दोके नामपर लाल लत्ता कोठरियोको अलग करनेके लिए छोटी दुकानोकी तरह दर्मियानमें बस एक टट्टरकी आड है टट्टर छततक पूरे उठे हुए नही है खाटोपर पुआल के ऊपर चिकनी धब्बेदार चादर पडी हुई है और नकली फलालैनी कम्बल वे काल छेदो और जुओसे भरे, सिकुड, गूदड हुए पड है हवा वासी सी और भारी है मदिरा और मानव देहसे विसर्जित तरह-तरहके मलोके गधकी उमससे भरी औरत छपी छीटके घाघराम लिपटी है अधिकतर रूखी, मद मुखर, व स्त्री नामपर जो रही हैं उनके चेहरेपर नोच खरोच और मार पीटके निशान है उनपर सिगरेटके बक्सके रग की मददसे रोगन सा पोत लिया गया है

साल भर हर शाम, हरेक दरवाजेके आगे लाल लालटेन जलती लटकती रहती है विशेष कुछ दिन छूट रहती है—यानी व्रत पर्वके दिन इन दिनो जरूरी तौरपर धर्मका ध्यान और परमात्माकी उपासना होनी चाहिए उन दिनोकी तो लाचारी ठहरी, शेष सब दिन रोशनियां जगी रहती है जैसे नुमाइश हो खिडकियां चमक उठती है सगीत चारो और फैल जाता है और गाडीवाले बिना फुरसत पाए अपनी गाडीको लेकर आते रहते और जाते रहते है इन घरोके प्रवेश द्वार रात भर आमन्त्रण देते हुए खुले खडे रहते है दूरसे ही द्वारके आगेका प्रशस्त जीना ऊपर जाता हुआ दीखता है वहा रग बिरगी रोशनी जगमगाती है सबेरे तक सकडो हजारो ही आदमी इन जीनो परसे उतरते है और चढते है यहा हर कोई जाता है अधमरा सा डाढीसे जमीनको चूमता वृद्ध भी सजीवनी बूटीकी खोजमें आता है और हाईस्कूलमें पढनेवाले छोकरे भी आते है नाती पोतेवाले कुटुम्बियोके सिर-धनी लोग, समाजके स्तम्भ रूप

सुनहरी चश्मा लगाए प्रतिष्ठित पुरुष, नव विवाहित, बड़ बड़ नामवाले आचार्य अध्यापक, वार और स्त्ना और वकील, सदाचारक धनी और रक्षक सुधारक और लक्चरार और स्त्रियाके सम.नाधिकारके समथक जाशीत नवाक जनक लखक आवरागद, जासूस फरार कदी, अफसर, विद्यार्थी क्रान्तिकारी और किराएके दल भक्त पस्त और साहसी, रागी और स्वस्थ जिन्होंने स्त्रीको कभी देखा नही और जो उसक सामने इच्छास और भयस थरथर कापत आत ह य और वे भी जा इस तरहके मामला ममालोम स्त्र दके हुए ह भोली आखो और सुन्दर चेहरावाल तरुण और भयंकर वीभत्स आकृतिवाले बहर अ ध सड वे लाग भी जिनकी दह लटक चली है मास गलीली है, और पेट जिनके मटकेसा निकल ह व लाग भी आत ह जिनक सिरपर बाल नहीं हात जो आत्म विश्वासस हीन ह पर पिउलग खुशामदियास घिर ह वे जाय-दादापर जीत ह आजाद अदास वे आत ह जैसे किसी यौवनम आए ह वे बठत ह पीत ह प्रसन्न हानका चेष्टा और बहाना करत ह और वीभत्स अग भगीका प्रदशन करत हुए नाचत ह व कभी घूर घूरकर खामी दरमें ध्यान पूवक और कभी पाशविक शीघ्रताके साथ, इन दजना म किसी एक कामिनीको चुन लेते ह वे जानते ह इकारका डर नहीं— इकारका सवाल ही नहीं उतावलीम पगली अपना रुपया टनम फक दत ह और इस बाजारू बिस्तरपर जा किसी दूसरे मदके स्पास अब तक भी गरमाया हुआ है, वहीं बिना उद्देश्य बिना भाव वह काय कर गुजरत ह जो विश्वक तमाम रहस्याम चरम सुन्दरतम रहस्य है—नूतन जीवनकी सृष्टिका रहस्य और य स्त्रिया ! य भी अनायास, अनुद्यत तत्परताके साथ व्यावसायिक अभ्यासवश सिसकारी भरती और तरह तरहके शब्द उच्चारण करती काट काटकर विभिन्न अग भगिमाओ द्वारा मानो अपनी मारम मौर गम मसाला मिलाती सी मशीन जसी उन मर्दोकी कामना पूरी करती ह क्या? किसलिए?—आखिर इसीलिए कि एक क्षण बाद वस ही शब्द, सीत्कार, आसना क्रियाओ और चेष्टाओस वे दूसरे अभ्यागतोको लें और उन्हें भी चुका डाल फिर तीसरे फिर

चौथे—दसवे !—और ये सब शायद बाहर नम्बरबार बरामदेमें इंतजार म खडे रह हैं कि कब पहला निबटे और कब उनका नम्बर आए !

इस भांति तमाम रात बीतती है दिन होनेको होता है कि यामा धीरे धीरे शान्त हो चलता है प्रभात उजला पडा कि मेला भी उजडा तब सब किवाड बन्द हो जाते ह और कामिनिया सोती ह शाम होते होते वे फिर जाग जाती ह—कि रात पास आ रही है, उसके लिए तयारी करें

बाजारकी दुकानकी तरह अपने खुले कोठोमें, समाजसे कटी और बहिष्कृत, परिवारसे त्रस्त और शापित, समाजकी अभियुक्त और उसके शासन दण्ड द्वारा दलित, नगरकी वासनाको अपने भीतर पीकर बहने वाली मोरी बनी ये नारिया हमारी गिरिस्तियोकी प्रतिष्ठाकी स्वय पाप बनकर रक्षा करनवाली य स्त्रिया य चारसौ अपढ काहिल, सनकी, बाझ, बेहूदा औरत—अनन्त हाकर आते जाते अपने दिन, महीने और बरसो बरस पार करती हुई इस तरह अपना अविश्वसनीय, उत्कट, घोर और विचित्र जीवन जीती ह !

२

दोपहरके दो बजे होगे दो रुपए दरवाला अन्ना मरवानीका आलय नीदमे डूबा है वह बडा कमरा भी जिसके किनारे किनारे क्रमदार बड आइनोकी मेजें और गद्दार कुर्सिया रखी और ऊपर रसीली तस्वीरें सजी ह, शात सो रहा है वह जसे चिंतित ह वह मानो खिन्न है अधेरेम सिमटा पडा है रोजकी तरह कल शाम भी रोशनिया जगी थी, उद्दाम सगीत गूजा और घुमडा था, तमाखूका नीला धुआ उमडा था, और दो दोके जोडोमें पुरुष और स्त्रिया टाग उछाल उछालकर, कटि घुमा घुमा कर ताण्डवम नाचे थे सारी गली लालटनोकी रोशनीस जगमग थी द्वार बाह खोलकर निमन्त्रण देते हुए खुले थे आदमियोका बडा जमघट था और गाडियोका ताता—और सवेरे तक यही रहा था

अब गली सूनी है गर्मीके सूरजकी धूपम बिल्लोरके मानिंद जगमगा रही है लेकिन कमरोंके पर्दे सब गिरे हैं वहा अधियारी है सीलन है मानो वह अधरा कह रहा है—अभी नही !

बाजा एक ओर काली झुकी पीठ उठाए चुप बैठा है पीली जीर्ण टूटी, दात दिखाती हुई-सी खूटिया चमक रही है हवा ब द है, उसमें कलकी ग ध है उसमें तमाखूकी, इतराकी, सीलकी मलिन स्त्री देहकी पसीनेकी, पाऊडरकी, एटिसेप्टिक साबुनकी इन सबकी बास जसे हवाम मिली हुई है उस पीले बूरकी बास है, जिसे कल फशपर छिडका गया था, इसीके साथ पासकी घासकी भीनी भीनी महक भी मिली हुई है आज एक पवका दिन है पुरानी रीतिके अनुसार घरकी सरक्षिकाओंने कमरोको, हालको, फशको एक प्रकारकी दूबसे बिछा रखा है उसी पुरानी रीतिके अनुसार उन्होने सलीबकी मूर्तियाके आगे दीपक भी जला दिए ह पर लडकिया अभी सो रही ह वे इस दीपक जलनेमें भाग नही ले सकती क्योकि उनके हाथ रातके कामसे पवित्र नही ह

यहाके चौकीदारने सदर फाटकको भी खूब सजाया है इसी तरहस और सब ठिकाने भी आजके दिन सजाए गए ह उनमें धूप जल रही है, और रौगन चमक रहा है

तमाम घर चुप ह खाली है निश्सा है रसोई घरमसे करछी चलानेकी सी आवाज आ रही है लुबी एक लडकी, नग पर, नगी बाह, असुन्दर, पर देहकी ताजा, स्वस्थ और पुष्ट, अपनी कोठरीके बाहर के दालानम आ कल, दुकानदारीके समय, छ ग्राहकोने उसे लिया था उसने सबको निबटाया, पर रातभर उसमें कोई न टिका इसलिए अपने चौड बिस्तरपर आज वह खुदा और आनके साथ जी भरके अकेली सो पाई है अस वह जल्दी उठ बैठी है, महाराजिनको रसोईमें मदद देने आ पहुची है कि वह जजीरसे बध कुत्ते पेमूको कुछ खिलाने लग गई कुत्ता जजीरको साथ खींचकर उचकता है लपकता है, पू छ और पीठको फर-फराकर सीधा खडा होता है उसे उत्साह है वह मचलता है, हल्के भौंकता है मानो ऊपर चढकर उसे खरोचना चाहता है पर

लम्बी बनावटी कठोरतासे कहती है—"चुप गधे   मैं तुझे अभी बताती हूं—यह गुस्ताखी !"

लेकिन वह मनमें पमूकी शरारत और प्यारभरा बड़ा आह्लाद मान रही है   कुत्तापर अपना जोर पाकर वह खुश है क्योंकि आज वह औरतके मदसे छूटी अकेली खाई है   और उसे पारसालके आजके उसके दिनकी और बातें भी याद आ रही हैं

रातके सब मेहमान अपनी राह चल गए हैं   मगर अब फिर पड़ी कामकी, व्यवसायकी, माल-बचकी घड़ी पास आ रही है   पाच जने मालिकके कमरेमें काफी पी रहे हैं   पहिली तो मालकिन ही है अन्ना सरकानी   उसीका नाम उस घरकी लिखा पढ़ी है   कोई मास्टर पहुंचा होता, कद की छोटी और गुट्टी है   तीन गोल भरे बोरे एक दूसरेके ऊपर रखे जाएं, और वे तीनों ऊपरकी ओर क्रमशः एक दूसरेसे छोटे छोटे होते जाएं तो अन्नाकी शक्ल बन गई समझिए   नीचेवाला बोरा लहंगेसे घिरा उसका अधोभाग, दूसरा छातियोंसे भरा उसका धड़, तीसरा बोरा उसका सिर   अचरज है कि उसकी आंखें हल्की, भोली अबोध बालाकी सी हैं   पर मुहके आठ अनुभवी बुड्ढे खुर्राट जैसे हैं, कुछ भीचे से, भीगे और लटकते हुए   उसका पति इलिया सार्विच भी मस्त, चुप, मामूली-सा बुड्ढा आदमी है   अपनी बीबीके अंगूठे तले वह रहता है जब अन्ना सरकानी यहां रक्षिकाका काम करती थी तब यह दरबान था   धीरे धीरे वह अन्नाके समीप आने लगा, भांति भांतिसे वह अपनेको उपयोगी सिद्ध करने लगा और देखा गया कि वह चतुर भी है   सो यह दिन भी आया कि वह अब खजांचिया है, कुछ यह कर लेता है, कुछ वह   और वह कुछ सब कुछ

फिर दो रक्षिकाएं हैं, बड़ी और छोटी   बड़ी है एमा ऊंचवाली लम्बी कोई छियालीस बरस की भरी पूरी औरत है   दिहरी ठोढ़ी, आंखों के चारों ओर काले से वृत्त   चेहरा पहाड़ी नाशपातीका तरह माथेसे नीचे आंखोंके साथ चौड़ता जा रहा है   रंग कुछ मटियाला है, आंखें छोटी काली   नाक जैसे एक जगह इकट्ठी हो गई है   ओठ एक दूसरेमें बंद-

चेहरेम सब मिलाकर शान्त शासनका भाव है यह भेद किसीस छिपा नही है कि साल दो सालम अना इन एमा उडवानीको ही सब कुछ घर-बार और कारबार सौंपकर चली जानवाली है इस कारण लडकिया मालकिन जसी ही उसे मानती और अदब करती हे लडकी अगर भूल करती ह ता उसे अपने हाथो यह एमा, बिना दया अथवा अदयाके, एसे ठण्ड हिसाबी ढबसे उधेडती है कि चेहरेपर तनिक भी भाव नही आता, न आवेश न करुणा लडकियाम से कोई एक उसकी मनोनी और प्रम पात्री भी हुआ करती है उस वह ईर्षालु प्यारके अधिकारसे तग कर मारती है यह प्यार उसकी मारसे भी कठिन हाता है

दूसरी है जकिया वह हालम ही इसी घरकी मामूली नदयास उठकर रक्षिका बनी है लडकिया अबतक उस परिचित ढगस पुकारती ह वह दुबली है, चपल जरा मसखरी गुलाबी रगकी बन्ल घुमीले चक्करदार काढती है उसके मन एक्टर लोग भाते ह खासकर मजा-किया एक्टर एमा उडवानीकी परम अनुचरी है

पाचवें महाशय स्थानीय जिला इन्सपेक्टर वर्केश ह कसरती आदमी ह, सिरपर बाल थोड, दाढी लाल पखेकी तरह फली आख नीली उनीदी और बारीक मोहक सी आवाज हर कोई जानता है कि पहले वह खुफिया विभागम थ अपनी शारीरिक क्षमता और दयाहोनताके कारण अपराधियोके लिए आतक थ

मुदे उघड कई व्यापार ह जो उसके चित्तपर शायद अपना बोझ डाले अभी बठ ह सारा नगर जानता है कि दा साल हुए उ होने सत्तर वर्षकी एक समद्धा वद्धास विवाह किया और पार साल ही गला घाटकर उसे खत्म भी कर दिया पर मामलेको रफा दफा करानेमें वह नाकाम नही हुए इसी तरह शेष चारोने भी अपने वक्र जीवनम दो एक एसी बातें देखी और की कराई हे लेकिन जसे शिकारी अपने पुराने शिकाराके नामोको याद करके भी चित्तमें किसी प्रकार की दुविधा पाप, और ग्लानिके भावका अनुभव नही करते, उसी तरह य लोग भी अपने अतीत की काली कहानियो और लहूकी लाल वारदातोको अपने व्यवसायके

मागमें आई जरा बदमजगी भर समझ लेते है बस एसे कि वे बातें आइ, हुइ और पार गईं -

सब लोग काफी पी रहे ह पर इसपेक्टर सच पूछो तो पी नही रहे ह, मानो जतला रहे ह कि केवल औरोंके अनुरोधका वह पालन कर रहे ह

मालकिनने मानो टटोलते हुए कहा, "क्या करें, फोमिश, यह धन्धा तो अब धेल नफका नही रहा पर बस तुम्हारा कहना भर है कि "

वर्केशने अपना गिलास धीरेसे उठाया, मुहमें घूट लिया, जीभको तालूमे लगाकर मानो उसे नीचे पहुचाया, फिर धीरे धीरे अपनी अगूठी वाली अगुली दाए बाए मूछोपर फेरी और हाथोको मेजपर फलाकर, आखोको चमकाकर, वह बोला 'खुद ही सोच देखो ध्यानमे लो कि म कितना खतरा उठा रहा हू लडकीको फुसलाकर आखिर यहा इस क्या कहू, खर हा, इस तुम्हारी जगह ले आया गया है पता लग चुका है और उसकी तलाश है पुलिस चौकन्नी हो गई है सही, एकसे दूसरी जगह दूसरीसे तीसरी, और पाचवीसे दसवीं इसी ढग वह लडकी कहो की कही पहुचती रही है पर अतमे अब सुराग तुम्हारे यहा लगा है और सोचा तुम्ही मेरे जिलेमें मेरे म क्या कर सकता हू ?"

मालकिनने कहा, मि० वर्केश, लेकिन वह बालिग है"

इसिया साविशने समथन किया, "वह बालिग है उसने सही लिख दी है कि वह अपनी मर्जीसे "

एमा उडवानीने स्थिरतासे कहा, "और सच, परमात्मा जानता है, वह यहा एसे रहती है जस हमारी अपनी बेटी"

इस्पेक्टरने उकताकर जरा जारसे कहा, 'लेकिन म यह नही कहता मेरी बात समझिए क्योकि प्रश्न कतव्यका है सोचिए, या ही मेरी परेशानी कम नही है'

मालकिन एकदम उठी स्लीपर पहनकर दरवाजेकी तरफ बढी और मधमुदो-सी आखोसे इस्पेक्टरकी ओर बाली "मि० वर्केश, क्या

आप, माफ कीजिए, जरा मुलाहजा फरमाइएगा कि हम मकानमें क्या-क्या तबदीलियां कर रहे हैं हम जगहको थोडा बढाना चाहते हैं"

इन्स्पेक्टरने कहा, "ओह, सहर्ष "

दस मिनट बाद दोनों लौटे दोनों एक दूसरेको नहीं देख रहे थे वर्केशका हाथ जेबमें एक नए कोरे सौ रुपयोंके नोटको दबाए था बहकाई हुई लडकीकी चर्चा अब नहीं छिडी इन्सपेक्टरने अपने काफीके प्यालेको पी डालकर वर्तमानकी गिरी दशाकी शिकायत करना शुरू किया

मेरा एक लडका है स्कूलमें पढता है, नाम है पाल देखो तो बदमाशको आकर कहता है पिताजी, लडके मुझे चिढाते हैं, गालो देते हैं कि तेरे बाप पुलिसमें नौकर हैं यामापर काम करते हैं और चवन्नी वालियांस रिश्वतें लेते हैं अब परमात्माके नामपर तुम्ही बताओ श्रीमती यह गुस्ताखी नहीं है ?'

"यहां तक ! और रिश्वतकी इसमें क्या बात है ! मैं ही '

" मैं उससे कहता हू कि जबान सम्भालकर बात कर छोकरे और जाकर अपने हैडमास्टरसे कहना कि अबसे ऐसा न हो नहीं तो मैं तुम सबका हाल अफसरोंको लिख भेजूंगा और जानती हो क्या ? वह फिर पढकर आता है, कहता है मैं अबसे तुम्हारा लडका नहीं हू और चाहे किसीको अपना लडका बना लो यह कोई बात है ! उसे इतना सच मिल गया है कि अभी पहली तारीख तक चलेगा, सो देखो वह मुझसे बात तक करना नहीं चाहता खैर उसकी खबर लूगा '

अन्ना मरकानोने मुह लटकाया, उसकी धुधली आखोंमें ओस सी आ गई, आह भरती बोली, 'आह, यह सब मुझसे क्या कहते हो ! अपनी बडीकी ही मैं कहू हम उसे जान बूझकर शहरमें रखते हैं एक ऊचे इज्जतदार घर की लडकीके लिए यह जगह आप जानते हैं जरा ठीक नहीं है और वह लडकी हाई स्कूलसे एक साथ कैसी कैसी बात मुहमें लेकर आती है कि मैं लाजसे लाल हो जाती हू '

पति इवानने कहा, 'जी हां, अन्ना तमाम लाल हो रहती है '

इन्स्पेक्टर सहानुभूतिपूर्वक सहमत हुआ कहा, 'हा, तुम्हे तो लाल हानेकी बात ही है हा हा, मैं ठीक समझता हू पर, या खुदा हम किधर जा रहे ह —सब कुछ यह क्या हो रहा है ? देश कहा चला जा रहा है ? म पूछता हू, ये क्रान्तिकारी, यह स्कूल कालेजके लडके य क्या कह इ ह ? वे क्या पाना चाह रहे हैं ? वे, तो वे अपने सिवाय और किसीको दोष भी न दें दुराचार सब जगह फैल रहा है, सदाचार गिर रहा है, बुजुर्गोंकी इज्जत उठ गई है म कहता हू, इ हे गोलीसे उडा देना चाहिए '

जकिया उत्साह पूवक बीचमें बोली, "हा, कल ही तो एक बात हुई कि एक मेहमान आया, मजबूत-सा आदमी था "

एमा उडवानी इन्स्पेक्टरकी बात सुन रही थी और उसकी सब बात से अपनेको सहमत पा रही थी जकियाको बीचमें काटकर उसने कहा, "बस, खतम करो जकिया, देखो, जाकर लडकियोंके नाश्तेका इन्तजाम करो "

मालकिनने कहना जारी रखा "अब तो किसी भी आदमीका भरोसा नहीं किया जा सकता कोई नौकर नहीं जो चोर न हो और इन लडकियोंको बस अपने मर्दोंकी पडी रहती है खैर,वह कर मौज लेकिन अपने फर्जोंका भी तो उन्हे जरा ख्याल होना चाहिए "

सब चुप थे तभी किसीने द्वार खटखटाया एक बारीक स्त्री कण्ठने द्वारके दूसरी ओरसे कहा, "बाईजी, कृपाकर पसे ले लीजिए, और मुझे कागज दे दीजिए पीटर चले गए हैं "

इन्स्पेक्टर उठा अपनी पोशाक सभाली "वक्त हो गया है म जाऊ गा नमस्ते, अम्मा, धन्यवाद, इसिया साहब !"

लगभग चक्षु हीन इसिया साविशने मेजपर अपनेको बढाते हुए कहा, "एक प्याला तो और लीजिए ?"

"धन्यवाद, नहीं, गर्दन तक भरा हू बडी कृपा आपकी '

'आपकी कृपाके लिए धन्यवाद न हो, कभी-कभी आते ही रहा कीजिए "

"आपके अतिथि होनेमे मुझे सदा प्रसन्नता ही होगी मादाबज !"

लेकिन दहलीजमे वह एक मिनट रुका, साभिप्राय शब्दोमे बोला, 'फिर भी, मेरी सलाह है कि इस लडकीको आप किसी और जगह पहुचा दे अभी वक्त है अलवत्ता मामला आपका है, लेकिन मिस्रकी हैसियतसे पहलेसे आगाह कर देना मेरा फर्ज ठहरा "

वह चला गया उसके पैरोकी आहट जीने परसे कम हुई और दरवाजा उसके पीछे भिड गया, तो एमा उदासीन घृणा भरे स्वरमे कहा, 'दोगला हरामी कहीका आते भी अपनी रखना चाहता है और जाते भी बदमाश !"

३

एक एक कर कमरेसे सब बाहर हो गए ह अब अधेरा है सूखती हुई दूबमसे साधी गध आ रही है

हा, शाति है शामके छ बजेसे व्यालूके वक्त तककी य शान्तिकी सूनी घडिया कठिनाईसे पार होती ह रोज बीचका यह समय यहाके अलस जीवनमें एसा ठाली, बकाम, भारी, निरा रीता सा होता है कि ज्यो त्यो ही कट कर देता है स्त्रियोंकी अन्य सस्थाओमे, या मठोमें अथवा और महिला शिक्षालयोंमें, लम्बी छुट्टीके वक्त समय सिरपर ऐसा ही भारी होकर टग सा जाता है कि काटे नहीं कटता लगभग वसा ही भारी इस घरमें यह समय हो जाता है जहा आराम और फुरसतकी अतिशयता है वहा समय एसे ही, अलसाया सा झूमता हुआ, कन-कन बीतता है लडकिया बस पेटीकोट और अगिया सी जाकट पहिने खुली बाह, खुले सिर, नगे पर बेकाम यहासे वहा फिरती रहती ह कभी बे-नहायी, बकडी, यू ही बाजेको ढकने मूदने लगती ह कभी टमे बजा उठती ह या ताश ही खेलने लगती है या झगडा छेडकर गालीका ही लेन देन करने लग जाती ह इसी तरह अलस झुभलाहटके साथ वे

सध्याकी प्रतीक्षामें दिनकी शष घडिया काटती ह

लुबी नाश्तेके बाद बची जूठनको पमू कुत्तेके पास ले गई कुत्तेने खाना निबटाया, और अब उससे मित्रता करने लगा लुबी लौट आई साथ नूरीको पकडा, कुछ मीठी टिकली और खरबूजकी गिरी खरीदी, और छज्जेपर खडी कुट-कुट उ ह खाने लगी बीजाके छिलके कभी उसकी ठोड़िया और कभी उभरी छातीपर टिके जम्फरकी तहपर रह रह जाते वे दोनो बबात बात करतीं, कुट-कुट मुह चलाती हुई गलीम आते जाते लोगोको देखती और समीक्षा करती जाती वह लालटेनवाला जो लालटन उतार उतारकर उनम मट्टीका तेल भर रहा है, या वह पुलिसका सिपाही जो बगलमे रजिस्टर दबाए घरतीको धमकाता चला जा रहा है, या वह बाबू, या वह लाला जो जनरल स्टोरकी और लप कता चला जा रहा है इ हीको लकर वे अपनी बातचीत बुनती चली गइ

नूरी न ही सी लडकी है चमकती हुई आख, सफेद लच्छेसे बाल कनपटीपर छोटी नीली नस दीखती ह उसका मासूम बालपन देखकर छोट मेमनेकी याद आती है प्रस न, चपल, उत्सुक, हर बातम अपनी नाक डालकर मानो उस सूघ लेना चाहती है सबमे सब बातम सहमत है हर बातकी सबस पहले सध पा लेती है वह इतना बोलती है, और इतना शीघ्र कि मु हमेंसे थूककी न ही छीट बाहर उडने लगती ह, और ओठोपर बुलबुलेसे आ पडत और मिटते रहत ह बिल्कुल बच्ची सी है

सामन एक दुकानके ऊपरसे वह एक लडकेन भाका और उतर कर एक पासके शराबखानेकी तरफ वह भाग चला

"पोतुल ! ओ, पोतुल 'नूरी चिल्लाई, "तुम भी लोगे कुछ ? आओ थोडेस बीज तुम भी लो "

लुबीने कहा, 'आओ ना, एक प्यार ही सही '

नूरी हसी एसी जोरकी हसी कि गला सारा भर गया बोली, "आओ तो, जरा यहा गरमा ही जाओ "

लेकिन तभी दरवाजा खुला और दिखलाइ दी बाईजी बडी

शि ! यह क्या ओछापन है" उसने साधिकार कहा, 'कितनी बार म तुमसे कह चुकी हू कि तुम्ह घरसे निकलकर छज्जेपर नही जाना चाहिए और शि, एस कपडे पहने ! समझ नही आता, हया क्या हुई तमीजदार लडकिया जो अपनी इज्जत करती ह, कभी या लोगोके सामने आती ह ? इसको याद करो कि तुम एम वम चक्लेम नही हो हमारे यहा हो बाइज्जत जगह'

लडकिया भीतर चली गई और टाग हिलाती, और चीज कुट कुटाती हुई हसियाई सी रसोईदारिनको देखती बठ गइ

छोटी मनकाके घरमें एक पार्टी जमा हो गई है मनकाको छोटा मनका कहते ह, छोटी गोरी मनका कहते ह, या गरारतन दगई मनका भी कहते हैं विस्तरके किनारेपर वह और एक ओर जाहरा बठी है जाहरा लम्बी, सुन्दर लडकी है कमान सी भवें सामनेको मानो पूरी खुली भूरी सी आख, और गोरा मुलायम ठठ रूमी वेदयाका चेहरा वे ताग खल रही ह छोटी मनकाकी प्रियतम सखी जेनी दोनोंके पीछे विस्तरपर चित लेटी है महाशय डयूमाकी एक फटी सी जिल्द उसके हाथमें है पढ रही है, और सिगरेट पी रही है तमाम घरम पढनेकी शौकीन वही है बेहद पढती है और बनरतीब पढती है किन्तु जाने किस प्रकार इन रोमान्टिक उपन्यासोंके पढनेमे भी वह न भावुक बनी है, न कल्पनाशील उपन्यासोमे उसे सबसे ज्यादा उलझा हुआ प्लाट पसन्द आता है, जिसकी फिर एक एक कडी मात तक बडा होशियाराम खुल भाई जाए और जिसमें शानदार डयूएलके सीन हो उसमें कोई लाड महोदय बडी लापरवाहीसे मरते जूनक तरम खोलन हो जम खुद मरने या किसीका मार डालनेकी चिता उन्ह छु भी नही गई है फिर वह महाशय शासन और लापरवाह, अपने प्रतिद्वन्द्वीकी छातीम ठीक निशानेपर मानो दागन ही लपकके साथ आगे बढकर मद प्रकट कर कि 'मुझे अत्यन्त खेद है कि श्रीमानकी ऐसी बढ़िया आकटमे मने छेद कर दिया है !" वहा दीक्षिणका मसूर गहरा हो और कप्तानायक उनमसे अकूत रुपए दाए

बाए यहा वहा बखरता सा रहे या नवाबोके विलास प्रम, शत्रुता, प्रतिस्पर्धा और मजाककी कहानिया उस ग्रच्छी लगती ह अर्थात चटपटी, भावुक, जोशोली, वीरतापूण, ग्रादि बातास भरी रचना उसे पसद ग्राती है एसा साहित्य जो पिछली सदियाम फामर्में ढरो उत्पन हुआ पढती उहे ह, लकिन ग्रपने दनिक व्यवहारिक जीवनमे वह समभदारीमे चलती है गम्भीर है कुशल पनी और कठोर कभी बहद तीखी भी हा जाती है यहा उस वह जगह प्राप्त है जा स्कूलाम मक्षम विद्यार्थीको सहज मिल जाती है सब सुदर और ग्रनुभवी विद्यार्थी जसे पुज सकता है और निदय हो सकता है, वसे ही यहा जनी है ऊचे कदकी, छरहरी सुदर, सतज आखें, छोटा सा बद ग्रहमय मुह, ऊपरके ओठपर हल्की काली सी रख, और गालोपर जैसे बुखारकी हो लाल-सी चमक

मुहमे सिगरेट बिना हटाए और उडत हुए धुएकी ओरसे कभी ग्राख मीच मीच लेती हुई वह थूकसे उगली गीली करके किताबके पने उलटती जाती है और पढती जाती है टागे घुटने तक खुली ह पैर फले ह जो ग्रसुदर दीख पडत ह ग्रगूठ उनके मोटे मोटे बाहरको निकले है

यहा ही तिमिरा है हाथम कुछ सीनेका सामान है, कुछ भुकी हुई, टाग एक पर एक रख बठी है तिमिरा एक शात, सहज स्वभावकी सुदर लडकी है रग तनिक लालिमामय है उसका ग्रसली नाम ग्लीसरा या जसा ग्राम लोग कहते ह लूकीरिया है लेकिन वेश्यालयाका पुराना नियम है कि कठोर नामाको बदलकर सुदरस मधुर नाम कामिनियो को द दत है तिमिरा पहल एक साध्वियाके मठम थी इससे ग्राज तक उसके चेहरेपर एक तरहकी जर्दी और कातरता सी है वह ग्रपनेको यहा सबस ग्रलहदा रखती है किसीस बहुत खुली या घुली हुई नहीं रहती, और ग्रपने ग्रतीतम किसीको साभी नही बनाती जान पडता है साध्वी रहनेके ग्रतिरिक्त उसके ग्रतीतम और भी बहुत कुछ है उसकी सधी-बधी बातचीतम, उसकी गहरी सुनहरी-सी ग्राखोके लम्ब पलकोंके नीचेसे निकलकर चुपचुपाती बचकर जाती हुई सी निगाहम, उसके चलन म उसकी वक्र मुस्कराहटम, और उसकी लज्जाशील सभ्रात जचनेवाली

मुद्रामें और ध्वनिमें कुछ अधेरा-सा रसीला और भदीला भी दीख पडता है एक अवसरपर सम्भ्रमके साथ सुन पडा कि तिमिरा बे धडक फ्रेंच और जमनी भाषामें बोल रही है तिमिराके भीतर जसे गुप्त, सचित, सयम शक्ति थी बाह्य नम्रता और विनीततापर भी सब उसके साथ अदबसे और सम्भालकर बोलते थ मालकिन क्या और उसकी साथिन क्या, और दोनो बाइय भी और वह दरवान भी जिसका इम घरमें अजीब दहशत और आतक था सबको मानो उसका लिहाज रखना पडता था

'मेरा आ गया!" जोहराने कहा, और ताशकी गड्डीके नीचे तुरुपका पत्ता उल्टा रक्खा हुआ था, उसे बदल लिया "म चालीस बढती हू तुम्हारे पास क्या है ? मेरे पास इक्का इक्का है ओ, मनका तुम्हारा दहला ही है म जीती सत्तावन और ग्यारह अडसठ मेरे कुल अडसठ हुए, और तुम्हारे ?"

मनकाने कुछ झीककर आठ लटकाकर कहा 'तीस ' तुम्हारी फतह है, तुम खल जानती हो अच्छा, बाटो हा, फिर क्या हुआ तिमिरा ?" अपनी सहेलीकी ओर मुडकर वह बोली, 'कहती जाओ, मं सुन रही हू "

जोहराने पुराने, काले, चिकने ताशके पत्तोको फटा, मनकाने उन्हें काटा और उगलियोम थूक लगाकर जोहराने बाटना शुरू किया

इधर तिमिरा सीती जाती थी, और अपनी स्थिर आवाजमें कह भी रही थी "हम कारचोबीका काम करती थीं चादरें, गौन और पर्दोको फैलाकर बेल, फूल और स्वस्तिक आदि सुनहरी धागोंमें उनपर काढती थीं सर्दीम एक कमके किनारे हम बैठा करती थी खिडकिया छोटी थीं, वहा रोशनी ज्यादा न थी, और तेलकी और धूपकी गध आती थी बात करनेकी मनाही थी हम लुक छिपकर बोलती चालती, क्योकि गुरुमानीकी कडी निगाह रहती था कभी कोई यकायक किसी गीतका चरण गा उठती—प्रभु तेरे माध्य गगनमें हम खुले गलेसे गाती थीं क्योकि वे दिन शान्त थ, और धीमी महक उठ रही होती थी, और सामने खिडकीमेंसे रुईके गालेसे बर्फके टुकड भागते दीखते थ जसे, जस यह

सब सपना हो।'

जनीने फटे उपन्यासको बन्द करके पट परे रख लिया। जोहराकी सिरके ऊपरसे सिगरेटके बच सिरेको फाड़ और ठटठेम कहा, दीदी मैं सब मालूम है तुम्हारी तबकी बातें बच्चोको चिवनाया करती थीं, और क्या ? जानती हो तुम्हारे इन धार्मिक स्थानाके चारो ओर टोह लेता हुआ पाप डोलता रहता है'

"मने कहा, चालीस मेरे छियालीस थे बस" छोटी मनकाने मग्न हाकर और ताली बजाकर कहा, "म अब तीन कहती हू"

तिमिरा जनीके शब्दापर हसी ऐसी दुर्बोध मुस्कराहट जिसे हसी कहना कठिन है और जिसमें जाने क्या अर्थ नही हो मकता

"अजान लोग साध्विओके बारेम बहुतेरा कुछ कहते ह हा और कोई पापाचार हो भी गया हो तो "

"जो पाप नही करता, उसे पश्चातापका मौका ही कहासे आएगा?" जोहराने बीचम सावेश कहा और ताश बाटनेके लिए उगलिया फिर जीभसे छुआई

"और क्या, दिन भर बन्दी रहो, और सोती रहा थकानसे आखो के आग तारे नाचने लगने और सवेरे खडे होकर जो प्राथना करनी होती तो कमर टाग सब दुःख आती, और शामको फिर प्राथना और गुरुआनीकी गुहाकी देहलीपर माथा टककर कहना होता, हे माता, हे जगद्धात्री, हे गुरुआनी भीतरसे फोकी आवाजमें उत्तर मिलता—धम वृद्धि हो—बस, यही होता"

जेनीने कुछ दर उम ध्यानसे देखा, जरा सिर हिलाया, और गम्भीर होकर कहा, 'तुम निराली हो, तिमिरा तुम यहा हो, और मुझे इसका अचरज है सच, म समझ सकती हू कि अल्हड सोनाकी तरह ये और दूसरी यहा प्रमका खिलवाड कसे कर सकती ह उसस कि मूरख ह, कुछ देखा जाना नहीं है लेकिन लगता है तुमने सब आच दखी है सब रग परख ह फिर तुम क्यो इस तरहके व्यापारमें अपनेको डाले पडी हो। बताओ, यह कमीज तुम किस लिए काढ़ रही हो ?"

तिमिराने बिना शीघ्रता किए कपटको घुटनेपर फैलाया, सुईको उसमे अटकाया, सीवनको अगुश्तरीमे दबाकर इनकार किया और झुकी आखोको बिना उठाए सिरको जरा एक और झुका हुआ रहने देकर उसने कहा कुछ तो करते रहना होगा न ! यो ही बैठे तो आदमी थक जाए और ताश मे खेलती नही, मुझे भाता नही "

जनी अपना सिर हिलाती रही बोली ."नही तुम विचित्र लडकी हो सच तुम अजीब हो अपने गाहकोमे तुम हम सबसे ज्यादा वसूल करती हो एवजमे अधिक देती नही हो मै जानती हू पर तुम पसा बचाना तो दूर खर्च कहा करती हो—कि गहु सात रुपयकी पीतलकी शीशी ही खरीद डाली ! किसे उसकी जरूरत है ? और अब ये पन्द्रह डालकर यह रेशमी टुकडा खरीद लाइ ? सब मकाके लिए ही तो क्या ? '

"हा शानिस्काके ही लिए '

"जसे तुम्हे बडा रतन मिल गया? निकम्मा चोर कहीका, वह सका गोया सरकार ही हो ऐसे घोडेपर चढकर आप यहा तशरीफ लाते है पर यह बात क्या है? क्या अभी तक तुम उसके हाथो ठगी नही हो? मरे उचक्के, ये तो सदा ऐसा ही करते है हमेशा वह तुम्हीको चुनता है, तो वह तोडेगा भी तुम्हीको क्या इसका तुम्हे डर नही है ?'

तिमिराने दातोसे धागेको तोडा, और आहिस्ता पडकर कहा, 'जितना चाहती हू उससे अधिक मै कुछ उसे नही दूगी

"और इसीका तो मुझे अचरज है तुम्हारी सी बुद्धि तुम्हारी सी सुन्दरता—मै तो किसीको इसके बलपर एसा फासती कि मुझसे ब्याह करनेपर ही वह छूटता फिर घोडे भी मेरे होते, और जेवर जवाहर '

अपनी अपनी पसन्दकी बात है जनी देखो, तुम ही कसी मन मोहनी लगती हो और तुम्हारा स्वभाव भी कैसा स्वतन्त्र और प्रबल है पर फिर भी तुम यहा इस गड्ढमें आ फसी हो "

जनी चहक पडी और अपनी कडवाहट बिना छिपाए बोली "हा, क्यो नही अपनी ही न कहो, छटे चुने मेहमान सब तुम्हारे ही नसीब

पडते ह और जो चाहे वमा तुम उनका उल्लू बनाती हो मेरे पास या तो बुड्ढे आएगे या बालक लौंडे मेरी किस्मत है भी खोटी उन बुड्ढोके मुहमे बू आती है इन लौडोके मुहके पासकी राल भी नही सूखती सबसे ज्यादा म इन लौंडोपर भीकती हू पिल्ला सा डरता, झिझकता, कापता वह आता है ठहर वह नही पाता, और काम निबटा कि आख उठानकी हिम्मत उसे नही सूझती लाजसे वह अपनेमें सिमटा जाता है, जी होता है कि उसकी थूथडीपर एक दू रुपया दनसे पहले उसे वह जबमें मुट्ठीमे दाबे रहता है सिक्का गरम गरम भीगा-सा उसकी मुट्ठी मसे निकलता है दूध पीता मेमना ही जो न हो उसकी अम्मा दो चार आने मिठाईके लिए उसे देती होगी उसीमसे बचाकर आप रण्डी के लिए जोडते ह जाएगे जनाब रण्डीके पास ओठ पै बाल आए नही, टटमें पसे गिनतीके ! कुछ ही रोज हुए एक लडका मेरे पास आया जाते वक्त जानबूझकर भिझानेके लिए मैने उसे कहा, 'देखो, मेरे प्यारे बहादुर, यह मीठी टिकिया है, घर जाओ तो इसे चूसते जाना, खूब मीठी है' पहले तो वह बिगडा, पर फिर टिकिया ले ली मैं ऊपर चढकर छज्जेपर पहुची कि देखू वह क्या करता है वह बाहर निकला, एक बार झिझककर मारा और देखा, फिर झटसे चुपचाप टिकिया मुहमें डाल ली सूअर !"

"पर बुड्ढोसे तो पनाह ही है" छोटी मनकाने मीठेसे कहा और शरारतन जोहराको देखा, "तुम्हारी क्या राय है जहरबी ?"

जोहरान अभी खेल खतम किया था और वह अब अगडाई लेनेवाली थी कि उसकी अगडाई रुक गई नहीं जान सकी कि वह इसपर बिगडे या हसे ? उसका एक बधा मुलाकाती है, एक बुड्ढा पुराना सरकारी मुलाजिम खासा बडा उसका कुनबा है वह जोहराका बधा गाहक है और ऊट पटाग आसनोका प्रमी है सब उसके आनेपर जोहराको छेडा करती ह

जोहरान आखिर अगडाई ली और जम्हाई लेते हुये-से मुहसे बोली, "तुम सब मोरीमें पडो, और वह कमबख्त बुड्ढा भी जाए जहन्नुममें !"

"लेकिन, इससे भी बुरे" जेनीने कहना जारी रखा, "उस खूसटस और मेरे उस लौंडस भी बुरे —सबसे वाहियात हमारे प्रमी है इसम क्या बहलनकी बात है कि आते ह वह साहब चढ हुए धुत और नाना चेष्टाए करते ह खिलवाड करते ह और जताना चाहते ह कि उनम कुछ है पर क्या है ? क्या कहने उन जवामदके ? मलेमे मल, बासी कुचले हुय, गन्दे सारी देह प मारपीटके निशान ! वाह क्या कहने जवामदके ले देकर शानकी बात उनके हुक्म यह है कि हमारी तिमिरा बीबी उनके लिये कमीज काढकर तयार कर रही ह तिसपर वह साहब कसमें भाडग गालिया बकग और झगडनका उतावले हुए रहग ऊह, नही !" और वह एकदम खुश होकर चिल्लाई, 'म जिस खूब प्यार करती हू, खूब ही पक्का, गहरा, अमर प्यार ! वह मेरा मनका है मेरी छोटी मनका मेरी नन्ही प्यारी गुडिया मनिया !"

कहते कहते अप्रत्याशित रूपमे जनीने मनकाको कधोसे पकडकर आलिगनमें जोरसे बाध लिया और बिस्तरपर पटककर उसके बाल, आख ओठोको जोरसे आवेगके साथ चूमने लग गई मनका कठिनाईस अपनेको छुडा सकी उसक चमकीले लच्छे से बाल फल गय, चेहरा लाल हो गया, वस्त्र अस्तव्यस्त और लाज और हसीस भीग सी रही आखोको नीचे किए वह बोली, छोडो जनी ! जनी छोड दो ह ह क्या कर रही हो ! मुझे जाने दो'

छोटी मनका घरभरम सबसे प्यारी और भोली लडकी है वह उदार है, भोली है किसीकी बातसे इन्कार नही कर सकती सब उसस स्नेह का बर्ताव करते ह जरा बातपर लजा जाती है और ऐसे अवसरों पर बडी मोहनी लगती है लेकिन, तीन बार हलकी शराबके गिलास पी ले, और इसकी वह शौकीन है, तोवह ! फिर नहीं पहचान सकते कि यह वही मनका है एसी झगडालू हो आती है कि बाइया और दरबानके बूते भी नहीं सम्भल पाती, पुलिसकी जरूरत हो जाती है तब यह उसके लिए कुछ भी बात नहीं कि वह किसी गाहकके मुहपर चपत जड दे, या शराबका गिलास उसपे उडल फक लम्प उलट दे, या माल

किनकी गाली बकने लग जाए जेनी उसके प्रति एक माके जैसे अदभुत वात्सल्य और गौरवभावके साथ व्यवहार करती है

इतनेमें छज्जेपरसे तेज चालसे आती हुई रक्षिका बाई जकियाकी आवाज सुनाई दी

"लडकियो, खानेके लिए चलो" और इतनेम मनकाके कमरेका द्वार खोलकर वह अधमरी-सी झाकी और जल्दी जल्दी बोली, "खानेके लिये, खानेके लिये चलो, बीबियो !"

वे रसोईम गई उन्ही कपडामें बिन नहाई, कोई नगे पैर, किसीके परोम स्लीपर, वे खानेके कमरेमें जा बैठी ! खाना परोसा गया खाना बुरा नही था पर भूख किसीको हो तब न ! जिन्दगी आरामकी बितानी पडती है नीद अनियमित मिलती है, और यो भी दिनमें मगा मगाकर चाट पकौडी खाती रहती ह इमसे भूख हो कम ? हा, नीना अकेली चारके बराबर खाती है वह नाट कदकी, दबी नाककी, एक सीधी गवार लडकी है उसे दो महीने हुय एक फरीवाला बहकाकर लाया और यहा बच गया उसकी भूख अभी खासी है, स्वस्थ है, तरह तरहके तरीकास मरी नही है

जेनीने अपने शोरबेकी तश्तरीको यो ही जरा छू-छूकर चखा और बोली हा, नीना मेरा भी शारबा न ले ला ले भी लो हा, हा, क्या बात है ? शरमाओ मत आखिर बदनको तन्दुरुस्त रखना है कि नहीं ? लेकिन आप लोग एक बात जानती ह ?' अपनी साथनियोकी ओर वह मुडी, 'हमारी नीनाके पेटम गिडोआ पड गया है जब गिडोआ हो जाता है तो आदमी दोके बराबर खाता है—एक अपने लिए, एक खुराक उसके लिए"

नीनाने चिढकर सानुनासिक स्वरमें कहा, "मेरे पेटमें गिडोआ नही है तुम्हारे पेटमें गिडोआ है जभी तुम पीली हो"

और वह दहिचक खाती रही खानेके बाद अजगरकी तरह वह निदासी हो आई जोरसे ऐंडी, पानी पिया, जम्हाई ली, और ऐसे दि

कोई देख नहीं, चुपकेसे आदतवश हाथसे मुहके आग उसने क्रास बना लिया

लेकिन तभी जकियाकी आवाज बरामदो, कमरोंमेंसे सुन पडी—

"बीबियो कपडे पहनो तयार होओ, बठनेका वक्त नहीं है काम के लिए तयार "

कुछ मिनटोके बाद उस आलयके कमरोमें सस्त ओडीकोलान, साबुन और पाउडर आदिकी महक जग उठी लडकिया तैयार हो रही ह शाम आ रही है !

४

ग्रीष्मकी सध्या आई पीछ पीछ रात रातमें देर तक अरुणिमा-की आभा रही घरके दरबान साइमनने रोशनिया जगा दी साइमन गठीं देहका पुष्ट ब द कठोर आदमी है क ध चौड और मजबूत बाल काले, मुहपर चेचकके दाग भवें भूलती मूछ घनी काली म द उदण्ड आखें दिनम छुट्टी रहती है, और वह सोता है और रातभर बे चूक जागता और उद्यत रहता है कि मेहमानोके कोटोंकी सम्भाल रख और भीतर कुछ गडबड हो तो डडा लेकर झट पहुच जाए

आया बाजवाला लम्ब कदका सलीकेका युवा व्यक्ति है भूरी भौहे भूरे पलक आखोम मोतिया बि दु जब मेहमान नहीं होते यह और इसिया मिलकर गाते बजाते रहते ह मेहमानोके कहनेपर जब यह बजाते ह तब हल्की गतपर केवल कुछ आने इन्हे मिलते ह, वसे रुपया इसमें आधा भाग मालकिनका होता है, शष आधको दोनो आपसमें बाट लेते हैं लडकिया इस बाजवालोका लिहाज करती ह अपने मुलाकातियोसे इसका जिक्र किया करती ह

अब, इस समय, घरमें रहनेवाली सब जनीं सुघर और सुसज्जित, गाहक मेहमानोंके स्वागतके लिए उद्यत हैं एक प्रकारकी प्रतीक्षादी

मीठी आतुरताम घुली सी जा रही ह यह सही है कि इनमें पुरुषोके प्रति एक उपक्षा और वितृष्णाका भाव है तो भी, ज्यो-ज्यो शाम होती है, उनके जीवनमें मानो आशाकी लौ कापती सी उठने लगती है और आत्मा में जसे कुछ छिड पडता है नही मालूम आज किसके वे पाले पडेंगी जाने आज क्या कुछ विलक्षण, उपहास्य, आकषक, भीषण, भयावह, नही घट उठगा क्या जाने कोई मुलाकाती आए, और उनपर अपना सब कुछ निछावर कर उठें कोई शिगूफा ही खिल जाए या जाने कुछ एसा हो जाए जिससे समस्त जीवनकी धारा ही बदल जाए इन आशाओ, इन सम्भावनाओम, कुछ ऐसा आवेश, नशा, उत्तेजना होती है जसे अभ्यस्त खिलाडीको जुएकी फडपर बठनेस पहले अपने रुपयोको खन कात होती है और यद्यपि वासना, तष्णा, भोग लिप्सा इनम बिल्कुल नही है फिर भी वह वस्तु तो विनष्ट नही हो सकी है जो स्त्रीका स्त्रीत्व है यानी रिझानेकी तबियत ।

और सच ही अजीब अजीब आदमी आते ह अप्रत्याशित घटनाए घटती ह कभी एकाएक पुलिस आ धमकती और एक भलेसे सम्भ्रात दीखनेवाले आदमीको गदनसे धकियाकर पकड ले जाती कभी आने वालोकी किसी मदहोश और फसादी टोलीमें और यहाके नौकरोमें ही मुठभेड हो जाती इस सघषमे खिडकियोके शीशे फूटते, बाज टूटते, कुर्सियोंकी टागे डण्डकी तरह आपसमें सिर फाडनके काम आ निकलती फशपर लहू फल जाता और फूट सिर और टूटी बाहोको लेकर लोग दर-वाजकी तरफ भागते दीख पडते अस्पतालकी आबादी बढती, पुलिस को काम मिलता एसे समय जेनीकी उन्मत्त खुशीका ठिकाना न होता जहा भी घमासान मच रहा होता पहुचकर उन्हें और उकसाती उभारती, छेडती, चिढाती और ताली बजाकर खुश हो मानो उछलने ही लगती थी बाकी दूसरी एसे समय चीखती हुई डरके मारे बिस्तरोंके नीचे जा दुबकती थी

कभी ऐसा भी होता कि किसी मजदूर सघ या ऐसे ही किसी सर-कारी विभागका पदाधिकारी या खजाची आ पहुचता उसने हजारोको

रकम डकारी हुई होती और भागनेसे पहले आत्मघात करने या जेल जानेसे पहले अपनी बची-खुची शक्ति और रुपएमें मौज उड़ाने कुछ पिट्ठूओंको लेकर वह यहा आता उसे बुखारकी सी प्यास होती तब तमाम घरके दरवाजे और खिड़किया लगातार दो दिन राततक बन्द रहती और वह घोर अथवा अघोर लीला मचती कि बस! चीख, चिल्लाहट, आसू निवेदन इन सबका मानो भोग लेकर पुरुषकी बर्बरता नारी देहपर अपनेको सब प्रकार व्यय और चरितार्थ करती स्वर्गके दृश्य धरतीपर सृष्ट करनेकी स्पर्द्धामें औरतें मद मदसे मत्त, भाति भातिसे अपने अग प्रत्यगोंको घुमाते हुए नग्न नाचते डोलते वे मूमरोंकी तरह बिस्तरपर, धरतीपर, जहा वहा शराब पी पीकर गिरते फिरते तब देहकी सब प्रकारकी गधसे और मदिराकी उमससे उस घरका वातावरण मानो छककर भर जाता

कभी सरकसका नट आ पहुचता कसरती चुस्त पोशाकमें कसा वह ऐसा लगता है जैसे कालीन बिछे हालसे जीनसे कसा बसा कोई घोडा आ गया हो कभी लम्बी-सी चोटी लटकाए चीनी आदमी भी आ धमकते नही तो स्याही सा काला हब्शी ही आ रहता उसके खुले कालरके कोटके बटनमें फूल लगा हुआ होता और कपड़े बेहद झक सफेद होते लड़कियोको विस्मय होता था कि कपड़े काली देहमे लगकर काले नही हो जाते थे बल्कि उस जमीनपर वे और भी उज्जवल लगते थे !

इन वेश्याओंकी अघाई कल्पना ऐसे असाधारण मानवोंके दर्शनसे मानो सिककर और फूल आती थी उनकी समाप्त प्राय विषय लिप्सा भड़क जाती और व्यावसायिक उत्कण्ठा धार ले उठती थी वे सबकी सब मुग्ध बनी ऐसे समय एक दूसरेसे ईर्ष्या सी करती, और होड बद कर उसे खीचने और रिझानेकी चेष्टाए कर निकलती

एक बार साइमनने एक प्रौढ वय पुरुषको हालमें पहुचाया यह अच्छा पसेवाला इज्जतदार आदमी जान पड़ता था कोई असाधारण बात उसके विषयमें न थी दुबला, कठोर चेहरा, ऊची कनपटी, छोटा

माथा, नुकीली डाढी, घनी भवें एक आख दूसरीसे जरा ऊपर और ज्यादा खुली थी आते ही उसने अनायास हाथ उठा मानो जोडनेके लिए माथ तक पहुचाए पर जब दखा कि वहा कोई मूर्ति नही है, तब वह घबराया नही, हाथ नीचे कर लिए तब कामकाजी आदमीकी तरह सीधा बढता हुआ वह सबस मोटी लडकीके पास पहुच गया स्वाधिकृत और सुनिश्चित स्वरम उसने कहा, "उठो, चल" और सिरके इशारेसे एक कमरेके दरवाजकी ओर सकेत किया

उस लडकीका नाम किटी था वह उधर गई, इधर उसके पीछे साइमनन नूरीको चुपचाप कुछ बताया नूरीकी आखम दहशत-सी समा गई पर रस भी था उसने अपनी साथिनोका बताया कि जो आदमी किटीको ले गया है उसका नाम ही डालूसिंग है पिछले साल जब जल्लाद एक कम हो गया तो इसीने अपनेको पेश किया था ग्यारह कदियोको उसने हाथा हाथ दो दिनमें फासीपर खीचकर खतम किया अब आपका विश्वास हो या ना हो तथ्य यह है कि उस समय वहा कोई एसी न थी जिसे स्थूल काया किटीके भाग्यपर ईर्ष्या न हुई हो सबमें एक तीखी, वेदना भरी विकल, जिज्ञासा सी उठी और उन्हे मथने लगी आध घण्टे बाद जब डालूसिंग निश्चेष्ट ब द मुद्राके साथ लौट चला, तब सब औरतें मुह बाय, ब बोले, उसे दखती रह गई फिर अपनी खिडकियासे जबतक दीखा उसे देखती रही उसके बाद झट किटीके कमरेम पहुची किटी अभी कपडे पहन रही थी उसपर सवालो की झडी लगा दी वे एक नए भावसे, जैसे अचरजसे, रह रहकर किटी की लाल स्थूल नगी बाहोको, अबतक सिमट पडे बिस्तरको, और किटी ने उन्हे जो दिखाया उस मले, पुराने, घिसे, नोटको देखती रह गई किटी ज्यादा क्या बताती ? जस और मद वसे ही वह था बस, वह सीधे सादे ढगस इतना ही कह सकी लेकिन जब उसको भी पता लगा कि उसका मुलाकाती कौन था तो वह एक दम रो पडी वह स्वय न जान सकी क्यो ?

पतिनोम पतित, जहातक मनुष्यकी कल्पना पहुचे उस कोटितक

प्रथम, जल्लादके कामके लिए अपनेको स्वयसेवक रूपमें प्रस्तुत करने-वाले इस आदमीने उसको तनिक भी कठोरतासे, जरा भी चोट देकर नही भोगा ना ही उसकी चेष्टामें किसी प्रकारके स्नेहका आभास था स्त्री जैसे उसके लिए एक सामान थी उसके प्रति उसम किसी तरहका भाव न था उसकी चेष्टाम किसी प्रकारकी अपेक्षा, इच्छा ममत्व नही था उसने स्त्रीको ऐसे ले डाला जसे कोई कुत्तको, यहातक कि छतरी कोट, टापीको भी न ले और बस भोग लिया जसे जरूरत पडनेपर कोई रद्दी घूरेपर पडे गदे लत्तसे अपना काम ल ते काम निकला कि उसे फिर वही घूरेपर फक अलहदा किया इस विचारकी विभीषिका को किटीका छिछोर मद मस्तिष्क उसकी यथार्थतामें ग्रहण ता नहीं कर सका, पर उस विभीषिकाकी छायाके स्पर्शसे ही वह इस प्रकार रो पडी पर जसे वह अकारन रो रही है वह तनिक नही जान सकी कि वह क्यो रो रही है

और भी घटनाए वहा घटी ह जिनमे इन अभागी नारियोंके निष्फल हीन, दीन, तुच्छ रुग्ण, कलिमय बास भरे फीके और खारे जीवन के तलपर कुछ लहर सी उठ आती ह बबर निरकुश ईर्ष्या जय घटनाए भी हाती ह, तब तमचेकी गोली, और जहरकी पुडियासे एक-दोके प्राण भी खोय जाते ह कभी भाग्यवश इसी घूरपर सच्चे उजल और कोमल प्रेमके अकुर भी फूटते ह और यहींसे अपने प्राणोका सचय करके लहलहा भी आते ह कभी यह कुत्सित घर छोडकर कोई वेश्या अपने प्रेमीके साथ निकल भी जाती है पर लगभग अनिवार्यतया वह फिर यहीं लौट आती है दो तीन बार यह भी हुआ कि कोई वेश्या गभवती पाई गई गभवती! बड ही उपहास व्यग, क्षोभ और निराशा की बात यह यहा समझी जाती ! हाय !

पर जो हो, प्रत्येक सध्याकी प्रतीक्षामें यहा एक विलक्षण आकषण की मदिरा रहती थी—कि जाने क्या हा ! नहीं तो इस रसकी घडीके बिना इन स्वरव विहीन, अलस, निष्फल नारियाका जीवन सपाट, नीरस, व्यर्थ और दुसह ही होता यही मानो कुछ हरियाली थी

५

एक दिन यहा, अन्ना वाले आलयमे, फिर विचित्र घटना घटी आरम्भ उसका साधारण था पर अन्त हैरतनाक और ऐसा निकला कि किसीकी समझमें न आया जाडाके दिन सध्याका समय था छ बज चुके होग किसीने बाहरसे घण्टी बजाई साइमनने ऊपरसे झाक कर देखा, द्वारपर एक स्त्री खडी है साइमनने थोडा सा द्वार खोल कर पूछा, "क्या चाहिए ?"

"मालिकनसे मिलना है'

'क्यो ?"

'काम है म भर्ती होना चाहती हू"

"ठहरा म उन्हे कहता हू"

उसने दरवाजा बन्द किया और एमा उडवानीके पास पहुचा

सरक्षिकाने पहिले तो बहुतसे सवाल किए कैसी है ? चेहरा कसा है ? कपडे कैसे ह ? कही पुलिसकी भेदिया है, ऐसा तो नही लगता न? फिर उसने कहा, "अच्छा, उसे यहा ले आओ और तुम भी दरवाजकी ओटम खडे रहो कि कही काम पड जाए जरूरत हुई तो म तुम्ह बुला लूगी"

महिला आई सरक्षिकाने झट एक निगाहमें अपनी अभ्यस्त आखो से उसे ऊपरसे नीचेतक देख लिया साफ था कि वह कोई पेशेवर नही है काले रेशमके वस्त्र थे चेहरेपर बनावटका और सज्जाका लेश न था कदमें बडी न थी पर देह सुन्दर, सुडौल और सुढार थी चेहरा आकर्षक, चतुर, और पीतवर्ण था उसमें अरुणिमाकी छाया भी थी आख सतेज, नीली, और दृष्टि हार्दिक, दूरस्थ और अनिश्चित थी

"यही कोई बीस वर्षकी होगी" एमाने मनमें सोचा पूछा, "आप की उमर, श्रीमती ?'

छब्बीस !"

"लेकिन लगती कम हू आपको वस्त्र उतारनेमे आपत्ति तो न होगी ?'

"तमाम ?'

"हा, तमाम भीतरकी अगिया भी !"

"अच्छा"

वह बिल्कुल नग्न हो गई उसे अपनी नग्नतापर बिल्कुल लज्जा न थी

'बहुत ठीक" सरक्षिकाने मानो शाबाशी देते हुए कहा 'नही तो स्त्रिया मर्दोके सामने नही, ऐसी हालतोंमे स्त्रियोके सामने नगी होने में लजाती हू"

एमा उडवानीने स्पर्श आदि द्वारा उसकी तमाम देहका निरीक्षण किया वैसी ही सजीदगीसे जसी पशुओका लेने देन करने वाले मोल बेचके समय ढोरोको छू दबाकर देख सरक्षिका कहती जाती थी, "बदन अच्छा है छातिया भरी हू उनमें उभार है अभी ताजा हू जाघके पट्ठ खासे कठिन हू बीमारीका भी कोई निशान नही खर, यह तो डाक्टरी मुआयनेसे पता चल जाएगा अच्छा दात देखें, ठीक है, ठीक है एक ही बना हुआ है कुछ डर नही अच्छा अब आप कपडे पहन लीजिए"

उसने इस भाति अपना निरीक्षण खतम किया महिलाने पूछा, 'क्या म पास समझी जाती हू ?"

सरक्षिका हसी, 'आप तो गजब करती हू लेकिन एक मुश्किल है, जो स्वतन्त्रता देख चुकी है उसका हमें भरोसा नही होता उन्हें लेते हुए डर होता है"

पर क्या म तो किसीके दबावसे नही अपनी मर्जीसे आई हू

'सही है लेकिन क्या ठीक कब तुम्हारे रिश्तेदाराके जीमे आ जाए और वह तुम्हें ढूढते हुए यहा आ पहुचें या तुम अपने मित्रोंमे ही किसीसे चिट्ठी पत्री करने लगो नहीं तो कोई जान पहचान वाला ही तुम्हे देखकर यहा आ धमके'

'नही, आप चिन्ता न कर   म यहा नई नू पीटसवर्गसे आई हू और इससे पहले मैंने यह शहर कभी देखा भी नही"

अयमनस्क एमा उडग्रानीने कहा, "हा मक्ता है पर एक बात और है लगता है, तुमने भली मोमाइटी देखी है तुम्हारे दोस्त होंगे, आर बच्चे !"

महिलान स्थिरतासे उत्तर दिया "नही, म कुल अकेली हू म स्वतन्त्र हू सम्बन्धी नही ह बच्चे भी नही ह, और मित्र भी नहीं ह पतिस भी छुट्टी है कनीका तलाक दे चुकी हू और अधिकसे क्या म आपकी सब शर्तें पहलसे ही मान लेती हू आपके कायदसे चलूगी, आपकी रीत मानूगी आप देखेंगी मुझमें उत्साहकी कमी नहीं है आपकी सब बात म चुपचाप मान लेती हू और आप देखगी, म आज्ञाकारी हू और सबसे शिष्ट भी ह और विनीत !"

सरक्षिकाने कहा, 'तुम्हारी बात ठीक ह, भली ह उन्हे पूरा कर दिखाओगी तो अच्छा है पर तुम अभीतक खुली रहो हो, और जिस तरह तुम्हे यहा रहना होगा उसका तुम्हें पता अभी नही है"

"जस ?"

'जसे तुम्हारा पास तुमसे ले लिया जाएगा, और पुलिसको भज दिया जाएगा अच्छा तुम्हारे पास प्रमाण पत्र तो ह न ?"

"है क्या आप चाहती ह, मैं अभी आपको दे दू ?"

'वह ठीक है बाकायदा है ?"

'बिल्कुल "

'ओह ! यह बाकायदगी भी जरूरी है अच्छा इसकी जगह तुम्हे एक पीला टिकट मिलेगा उसमें तुम्हारा और तुम्हारे बापका नाम, तुम्हारी जाति सब लिखा रहेगा और तुम्हारा पेशा, तुम्हारा लक्ब भी सब रहेगा यानी वेश्याका टिकट तुम्हारा होगा तुम्हारा पहला पासपोट पुलिसके पास रहेगा फिर वह वापिस नही मिलता वापिस लेनेमें बडा पसा लगता है और बहुत कोशिश !"

"मुझे उसकी जरूरतका ख्याल तक नही है"

"ठीक, हर हफ्ते पुलिसका डाक्टरी मुआयना होगा"

'हां वह मैंने सुना है यह उचित ही नियम है"

'तुम्हारा कहना ठीक है, यह उचित है और जरूरी है हां, और तुम जानती हो कि स्त्रीको अपनी देहके यौवन और सुन्दरताकी रक्षाके लिए सदव क्या क्या ध्यानमें रखना चाहिए खास कर उसे जिसका पेशा प्रेम हो ?"

इस विषयमें म क्या कहू"

"और यह तुम जानती हो जो तुम्हे छाटे उसीका तुम्हे बनना होगा चाहे वह कोई हो, कसा ही हो तुम्हे कितना भी ना पसन्द हो"

"यह नियम सख्त है खर, यह भी सही म आख बन्द कर लूगी, म मुह फेर लूगी बस यही तो"

'हा बस करीब-करीब यही बात ह छाटी छोटी बात और होगी अच्छा अब साफ-साफ बताओ यह ठीक होता है कि पहले खुलकर समझ लिया जाए तुम्हे किसी नशेकी तो शायद आदत नहीं है ?'

'नहीं कोई भी नहीं कभी भूले भी अफीम, कोकीन मारफीन वगरा कुछ नही छुआ मने लोगोको देखा है जो खाते ह, और मुझ— मेरी तो तबियत और बिगड़ गई ?'

"अच्छा शराब ?"

"हा बहुत कहा गया ता साथ देनेके लिये पी लेती हू अकेले कभी नही'

'यह कामकी सिफत है सुनो म तुमसे एस कहती हू जसे घरकी बडी कहती है और तुम समझदार हो तुम पीती नही यह तो अच्छा है पर अपने मेहमानोको, खास कर पसवालोको रिझाकर, उकसाकर खूब खिला पिला सको तो हमारा फम इसम अप्रसन्न न होगा सब बात बर्तावकी खूबसूरतीका सवाल है और इसम तुम्हारा भी नफा है और नफा भी कम नहीं पी सेन्ट पाव फीपनी तुम्हारा है लकिन लिमा कत समझ सलीका होनेकी बात है आदमीको तो ऐसा चढाया जा सकता है कि वह कहीं न रुके जब रोका जाए तभी रुके '

"जहा तक बनेगा करूगी "

"अच्छा अब म निजी कुछ कामकी बात तुमसे कहू लोग तरह तरहके आएगे और जाने क्या क्या तुमसे मागगे समझती तो हो न क्या कहू ? आड-टेड, प्राकृतिक और अप्राकृतिक, सब कुछ यों तो तुम्हारा मुलाकाती निबटनेके बाद तुम्हे क्या कुछ भट देकर जाता है, उससे हमारे फमको मतलब नही वह तुम्हारी अपनी खूबी और होशियारीकी कमाई है हम हमारी बधी फीस चाहिए और ऊपर जो पान इलायची वगैरह उसके लागतके दाम इसलिये अगर कोई भला आदमी तुमसे उलट विकट—समझीं तो ?—यानी उल्टे सीधे प्रेमकी माग कर बठे तो तुम साहसके साथ इन्कार कर सकती हो हम इस मामलेमें तुम्हे दबाएगे नही न दबानेका हम हक है हा, एक बात जिसकी तुम्हें पाबन्द रहना होगा यह कि तुम इन्कार किसीको नहीं कर सकती यह शत जरूरी है कि वह तरीकेसे हा जो—तुम जानती हो—तरीका होता है, गडबड नही तब इन्कार करना अहद तोड़ना होगा लेकिन एक बात है यह ऐसे वहमी मौजी, बेहूदे लोग पसा जी खोल कर देते ह बडी बडी रकम देते है और सुपारी पानके खर्चमें भी कमी नही करते तुम समझती ता हो, जो पाओ, सब तुम्हारा फीस और पान सुपारीकी लागतके दाम बस हम मिलते जाए इसको और साच दखना "

'मैं सोचूगी और देखूगी पर तो भी धृष्टता क्षमा कीजियेगा, मेरा मन नही मानता कि म सबसे क्या बिल्कुल सब किसीके, हरेकके साथ—!'

'म तुम्हार भावाको समझती हू पर तुम जसी परी-सी कोई खास मिलती ह तो हम नियमम कुछ ढील भी कर दते ह तुम बधी फीस जमा करा दो और सुपारी पानके पचास भी बस तुम आजाद हो हम गाहकसे कह देंगी कि तुम कपडमे हा उसने फिर जिदकी तो हम पुलिसका परवाना दिखा सकते हे उसमें इसकी गुजाइश है देखो, हमारी सरकार अदूरदर्शी नहीं है, सब तरहकी व्यवस्था हमने कर रखी

है पर ऐसा सुभीता उन्हीको मिलता है जो यहाकी सिंगार हो, मानिंद फूल, यहाकी गौरव, और जो अच्छा कमाती हो "

'मै इस कृपाका पात्र होनेका यत्न करूगी '

एमा उडवानी ने दयापूर्ण प्रभुताके साथ सिर हिलाकर कहा यह बहुत अच्छा है पर कुछ और भी मुझे पूछने दो तुम यहा आई कैसे? सस्ता पैसा पानेकी इच्छासे ? या जीनेसे उकता कर ?

"एह, श्रीमती ये कारण सब तुच्छ ह " महिलाने अविचल स्वरमें उत्तर दिया, 'म एकान्तमें इसका कारण बताऊगी वह बिलकुल सीधा है मदके लिये मेरे भीतर बडी प्यास है वह बुझती ही नही कारण यही है और मद एक ही एक नही, हरदम नया आग मानो, यह मेरी कोई बीमारी नही है, चाह है स्त्रियोके बारेमें पुरुषोका भी यही हाल है पर जब समाजमें रहते ह, जहा सैकडो आदमी हम जानते ह वहा काम आसान नही होता साधन सहज हाथ नही आते एक मामला शुरु हो तो उसे लबी दर पहल समझो, पकाओ एक लम्बी इन्तजार उसके बाद जाकर तब कही कुछ पाओ फिर भी झिझक बनी ही रहे लज्जा सकोच रह ही आए ख्याल रहे, यह गिरावट है सब हुआ और मामला ठीक पडा कि कुछ दिनमें उसकी ताजगी जाती रहती है और बास ठण्डी पडने लगती है ज्यो ज्यो दिन निकलते ह मजा बमजा, भारी और फीका होता होता उड जाता है अन्तमें हो आती है उकताहट थकान, और कलह कुढन होती है और ईर्ष्या, और फिर धमकियां, ताना और गालियोका लेन देन होने लगता है तोबाह ! फिर आसू पर म जानती नही कि रोया कसे जाता है क्या लोग रोते है जब हुआ मेरे साथ तो मद ही रोया वही मरनेकी धमकी देन लगता था आखिर दिन आता है कि तागा टूट जाता है मामला बिखर जाता है एक चुपचाप भाग निकलता है दूसरा रह जाता है अह, क्या तमाशा है तो इसलिये म तुम्हारे पास आई हू यहा झझट है नही और आदमी भी एक नही है हा, मेरे मनमे बीमारियोकी तरफसे कुछ कुछ दहशत है

"उसकी दहशत न करो शहरकी निसबत यहा रोग होनेका बहुत कम मौका है और फिर म —कई उपाय बतला दूगी '

और कामकाजी ढगमे उसने कहा "सच कहू मेरा जी तुमम लग गया है तुम गजब हो, गजब तुम हमारे यहाकी सरताज होगी सरताज तुम्हारी देह खूब बनी है सो जाओ एक दिन और सोचो शायद मन बदल जाए नही तो कल चार बजे फिर आ जाना म तुम्हे यहाकी मालकिनके पास ले चलूगी एक ही बात है, अपना कोई एक आशिक मत बना बैठना अच्छा होगा कि किसी खासकी तरफ अपनेम झुकाव पदा न होने दो बस उन सबका सिर पर रक्खो, यही कला है'

"आपकी आज्ञा मेरे मनको अच्छी लग रही है आप स्वय देख लेंगी आप मुझसे सतुष्ट होगी मुझे आशा है"

'आशा है सतोष दोनो ओर होगा"

'लेकिन, मुझे एक शब्द और कहने दीजिए, श्रीमती—'

"—एमा उडवानी"

'हा, माननीया श्रीमती एमा उडवानी, जो बात मने आपसे स्वीकार की है यह हर दम नये मदकी चाह, यह बात, आशा है, हम दानोके बीचमें ही रहेगी'

"ओह, ऐसे जसे कब्रमें गडी हो तुम्हारे हमारे दोनो तक ही यह है — तो फिर कल मुलाकात होगी, अगर तुम्हारा मत नही बदला तो"

'कैसे बदल सकता है !"

अगले दिन यह महिला यहाके बोर्डिंग वासोंकी तरह आकर रहने लगी मालकिन अन्ना मरकानीको भी इसने अपनी सहज नम्रतासे प्रसन्न कर लिया इसिया सार्किन ही उसकी ओरसे कुछ रुखा रहा

वह कहता, "यह पढे लिखे ऊचे घरानकी है इन ऊचे लोगोमे कुछ भला नही होता न हुआ, न होगा और जो कामकी बात कहो तो यह ज्यादा सहार ही नही सकती जरा सी बात हुई कि थक रहती है बीमार हो जाती है" लेकिन वह भी धीरे धीरे अभ्यस्त हो गया और उसका भी बडबडाना छूट गया

उस नई लडकीने अपना नाम मन्दा रक्खा मन्दालिनीका यह संक्षिप्त रूप था

पहले तो साथियोने मन्दाको चिढाना दबाना चाहा वे यहा पुरानी थीं उसकी हसी करती और फवतिया कसती संस्थाग्रोमें, शिवालया में, और जहा कही व्यक्तिमात्रा समुदाय होता है, यहातक कि जलमें रेलके डिब्बाम, हमेशा और हर जगह नए आनेवालोको इसी तरह मजाकका और अपमानका शिकार बनाया जाता है या कहो मानवका चलन ही ऐसा है

किन्तु मन्दाकी दृष्टिम स्वरम, कुछ अज्ञात शान्त, ऐसी शक्ति थी जो इस प्रकारकी छेड छाडको अधीन, व्यथ, और कुद कर देती थी उसमें और साथनियोम कुछ मनमुटाव हो भी गया तो वह बढने नही पाया झगडा जसी कोई चीज उनके बीचम नही हो सकी तिसपर बात यह थी कि वह चुपचाप, बिना निम्न जचे बिना नत हुए सहज भावसे कोमल सकती थी सबकी बात वह रख लेती थी जिसके कारण कोई उसके प्रति निकट भी नही आ सका, किसीको अपने प्रति अत्यत घनिष्ट उसने नही बनने दिया बिना किसी सखाके बिना किसी विश्वास पात्र सहेलीके, वह इस विलक्षण दुनियाम आकर धीरे धीरे अपनी जगह बनाने लग गई यह कह देना चाहिए कि दूसरेकी सहायता देने, दूसरो के काम आने, दूसरोका आदर करने और मुसीबतके समय पसा देने लेने के लिए वह सदा उद्यत रहती थी इसलिए सब उसका आदर करती थी पर क्रमश उसके सम्बन्धमें असाधारणतामें दिलचस्पी कम होने लग गई जसे वह कभी नई निराली थी ही नही जसे कभी उसके सम्बन्धमें जानने पूछनेको कुछ था ही नही जैसे वे उसे भूल गई थी, और अब वह उनमें फिरसे आ गई है हा, तिमिरा कभी कभी मन्दाके पास आती, खाटपर बैठती, दस पन्द्रह मिनट बात चीत करती, और असन्तुष्ट चली जाती कहती, "तुम तो अचेतन पदार्थ जसी हो मन्दा वसी भी नही, जैसे पक्षी, पशु, वनस्पति होते है तुम्हारे भीतर हृदयकी जगह मांस है, बस मास!"

एमा उडवानी अपनी बातकी सच्ची रही मन्दाकी वैषयिक तृष्णा की बात किसीपर उसने नही खोली पर, धीरे धीरे उसपर भी एक भारी चिन्ता सी सवार हो गई हा, मन्दाका काम चला उसे लोग अक्सर चुनते उसपर लावण्य था और वह अत्यन्त आकर्षक थी अक्सर आनेवालामसे अधिक पैसे, बढिया रुचि और ऊचे दर्जेके लोग उसको पसन्द करते थे

पर, अचरज है, सब उसकी तारीफ करते, उसे चाहते, पर एक बार के बाद कोई दुबारा उसकी ओर न झुकता एमा अपने भीतर तक करती हुई सोचती, यह क्या अजीब बात है इसी तरहके भेदोमें पली और इन्हीमें व्यापार करनेवाली यह प्रौढा अपने माथपर हाथ रखकर सोचती—कि बात समझम नही आती वह सुन्दर है, चतुर है, बात करना जानती है, उसम व्यक्तित्व है वह खासे गहरे पानीमें आदमीको रिझा ले जाती है फिर भी उसकी सफलता रुक क्यो रहती है? उसने बहुतसे लोगोसे जिनसे वह घनिष्ट थी और खुली हुई थी, सवाल किए उसन जानना चाहा कि मन्दा जो यह सबको एसी जल्दी आकर्षित कर लेती है, पर अपनी विजयको कायम नहीं रख सकती, लोग और भी जल्दी उससे थक जाते ह, इसका भेद क्या हो सकता है

उसको गोलमोल अस्पष्ट उत्तर मिला, "उस लडकीमें सब बातें हैं कमी कुछ नही है वह सुन्दर है, मधुरभाषिणी है खुश रहती है, रमणीय लगती है लेकिन तुम्हें अब कसे बताए प्रमके लिए वह उद्यत नही होती मुक्त नही होती, न क्रियाशील आदमीको ऋलाती नही, चोट नही करती वह अगर जरा यह करे कि पर वह कर नहीं सकती, या वह करना नही चाहती"

और जो खले-खाए पारगत होते वे सक्षिप्त सा उत्तर देते, "है खूब पर मसाला कम है खानेमें कुछ मिर्च और जरा चटनी भी होनी चाहिए"

एमा उडवानीने अन्तमें स्वय मन्दासे बात करनेका निश्चय किया पूछा, 'अच्छा, मन्दा, कामका क्या हाल है? पसन्द तो है न तुम

स तुष्ट हो ?"

हा खूब मुहम्मदने अपने स्वगकी कल्पना पुरुषके लिए नही स्त्रीके लिए की होती, तो म उसी स्वगम रह रही हू

लेकिन क्या तुम्हारे गाहक तुमम सन्तुष्ट ह ?'

मग्दा हसन लगी बोली "पहले यह बात है, कि म नही जानती बिल्कुल नही जानती और सच कहू ता जानना भी नही चाहती मुझ कुछ उनके भावोस लना देना नही है म ईमानदारीके साथ अपना कत्तव्य निवाहती हू और क्या ?'

सरक्षिका तीखी हो गई बोली, यह स्वाथ है, मग्दा यह स्वाथ है कि तुम अपन ही बारेमें सोचती जाती हो पुरुष अपन सारे जोस चाहता है कि स्त्री स्वाद ले, सिसकी भरे हाफे चीखे, काटे, नोचे खसोट और कुछ रसीली—समझी न—बातचीत भी करती जाए तुमको थोडा बहुत अपनी तरफम भी कुछ करना सिसकी भरना, समझी कुछ करना ? सीखना चाहिए'

मग्दाके मुहपर कुछ छा फला वह हसी न थी, घृणा न थी जाने किस भावसे वह बोली 'धयवाद एक बार बराबरके कमरेसे इसी तरहकी सिसकीकी और दूसरी मदमाती चेष्टाओकी कत्रिम ध्वनिया मन सुनी थी मुझे उसपर हसी आती है, और घृणा भी म क्षमा नही कर सकती '

सरक्षिका तुरन्त कुछ उतर आई और साधारण सहज स्वरमें बोली 'खैर, यह तुम्हारा काम है मगर तुम जनरल नहीं होना चाहती तो सिपाही रहो लेकिन अब तुम्हारा ख्याल हमपर लाजिमी नही होगा तुम्हारी रियायत अवस बन्द हुई तुम्हारी खुशीकी अब हम फिक नही रखेंगी दस मिनटके बाद जो तुम्हे मागगा उसीके साथ जाना होगा वह गदेस गन्दा, सडा बूढा चाहे फिर कोई हो

मग्दान चमककर कहा, मगर म न चाहू तो ?'

तुम्हें चाहना पडगा मरी बन्नो" सरक्षिकाने धीमेस विष-भरे स्वरमें कहा, 'चाहो न चाहो, तुम्हें करना पडगा'

"और वह कौन करा लेगा ?"

"साइमन देखा है, वह कराएगा वह बलकी तातोका चाबुक तुमने उसका अभीतक देखा नही तुम चाहो तो उसे देख सकती हो नही गरम मत हो, घबराओ नही यहा तुम-सी, तुमसे भी खूखार जाने कितनियोको बसम किया है"

"म शिकायत करूगी'

"किससे ?'

"पुलिससे—गवनरसे"

"गवनर दूर है, और पुलिस हमारी खरीदी ह तुम एक चिट्ठी एक पुर्जा बाहर तक नही भज सकती जानती हो तुमपर कडा पहरा है'

मग्दाने आवेशम आकर कहा, 'म निकल भागूगी"

'मेरी प्यारी बन्नो, निकलनेकी कोई जगह नही है तुम भाग जाना चाहती हो ? वह भी असम्भव है मारगे हम नन्हे नही, पर तुम्हारी तबियतकी धारको तोडकर सीघ्री जरूर बना देगे मै जोसे कहती हू, अच्छा है, तुम अपनेको काबूमें कर लो अभी समय है तुम्हारा भी इसी में भला है और अब चलो कमरेमें"

तीन दिन बाद एक आश्चयजनक घटना हो गई ठीक दोपहर एक दीघकाय अजु न सा पुरुष कप्तानकी पोशाकमें अन्ना मरकानीके इस आलयम उपस्थित हुआ और ड्राइग रूममें आ पहुचा एक कदम पीछे बिल्कुल सतक, मानो परेडपर हो, वर्कश था अभी तक यामाके लोगोंने भयकर और भैरव वर्कशको ऐसा निम्न, अवनत, दुम हिलाता हुआ नहीं देखा था

अफसरने शिष्टतासे कहा, "मै यहाकी मालकिनसे मिलना चाहता हू"

साइमन नम्र होकर बोला, "वह यहा नही है आव घण्टेमें आ जाएंगी"

वर्कश सभ्रमके साथ कप्तानके पास आया सादर निवेदनके स्वर

में बोला, "हुजूर इजाजत है कि म इसका इतजाम करू आप एसे हकीर लोगोंसे बाततक करना गवारा करें,इसमें हुकूमतकी तौहीन है हम पुलिसमें ह, हमारी दूसरी बात है यह हमारा काम है जहा गद जुम और खौफ हो वहा आपके हाथमें हम ह यह हमारे हिस्सेकी बात है हमारे रोजमर्राके कामसे इनका वास्ता है"

अफसरने कहा 'आपकी इच्छा''

वकश एसेजा रसे चिल्लाकर बोला कि खिडकीके तख्ते झनझना उठे और फानूसकी लटकी हुई तौलिया बज उठी बोला "उस औरतको यहा लाओ, क्या उसका नाम है ?"

एमा उडवानीने कमरेके अधखिपे दरवाजमसे कछुए सा सिर निकाल कर दहशतसे देखा -और लडकिया घबराई हुई अपने रातके ही कपडो म एक दूसरे दरवाजमें एकपर एक इकट्ठी हो गई और एक दूसरेके कधेपरसे झाककर हालमें देखने लगीं

अपनी बाहोंसे खुली गदनको ढकती हुई एमा बोली, "अभी लीजिए अभी थोडी देरके लिए क्षमा कीजिए, मै पूरे कपड नही पहने हू कृपाकर बस एक मिनट ठहरिए"

'एक सेकण्ड भी नहीं' वर्केशने दहाडकर कहा और उसकी तरफ उगली उठाकर धमकाते हुए बोला, 'हम यहा तेरी खूबसूरती ताकने नही आए ह बुढिया कहीं की'

अफसरने उसे जरा रोका कहा, 'जरा शिष्टतासे''

"हजूर यह जानवर शिष्टता क्या जाने बिना पिटे कभी यह कुछ सुनते ह आप हजूर—''उसने अत्यन्त विनीत बनकर कहा, 'आप जरा उस कमरेमें चल'

वह उसी छोटे कमरेमें पहुचे जहा उस त्योहारके दिन वर्केशको काफी पिलाई गई थी और कुछ और भी बातचीत हुई थी एमा अब भी कुछ कपडो और पिनोको लेकर भागनेका उपक्रम कर रही थी कि वर्केशने उस दुरुस्त किया कहा, 'अरी ओ फटी जूती कहीं की, और क्या सुन्दर बनने जा रही है ? यहा बैठ, यह देखती है, यह क्या है ?"

श्रौर उसने उस की नाकके श्रागे एक पुर्जा किया उसपर विश्वके महा-महिम शक्तिशाली पुरुषके दस्तखत थे, अर्थात् कमिश्नरीकी पुलिसके कप्तानके अपने कागजपर लिख अक्षरकी ओर सकेत करते हुए कहा, "इस स्त्रीको जानती है ?"

'जी हा !"

पहली बात यह कि उसका वह काड लाश्रो, जो यहापर इस्तैमाल करती हो"

"अच्छा क्या हजूर चाहते ह कि उसको फाड दिया जाए ? या म आपके सामने पेश करू "

"लाओ मुझको दो "

"दूसरी बात यहा उसका क्या नाम है ?'

"मग्दा, हजूर !"

'तीसरी बात, तुम्हारे यहा सबसे होशियार और काबिल लडकी कौनसी है ?"

"जी तिमिरा !"

'तिमिरा ? अच्छा !"

वह दरवाजसे झाका, और चिल्लाया, "तिमिराको यहा ले आओ फौरन क्या कपडे नही पहने हैं ! जैसी हो, इधर हमारे पास आओ !"

तिमिरा जल्दी जल्दी चलकर वहा पास आई

'तुम इसी मिनट श्रीमती—मग्दाके पास जाओ उन्हे जाकर कपडे पहनाओ उनके अपने कपडे, समझी ? और स्नान वगैरा अच्छी तरह कराना, समझ गई न ? और फिर उन्हे यहा ले आओ और बाकी सब लडकियां अपने कमरेमें जाए किसीकी आवाज सुनाई न पडे समझी खबरदार ! नहीं तो म तुम्हें अभी सबको थानेमे पहुचा दू गा चलो "

जब मग्दा आई, न जरा डरी थी न घबराई हुई सदाकी भाति वह शान्त थी उसके आते ही अफसर तुरन्त खडा हो गया और तनिक झुककर अभिवादन किया फिर उसके हाथका सम्मान पूवक चुम्बन किया इस समय बर्केश बासकी तरह सतर्क तना खडा था रक्षिकाने

धीमेमे कहना शुरू किया "जी एक बिल था "

अत्यन्त उत्साह पूर्वक वर्केशन उसे घुडककर कहा, "कोई बिल शिल नहीं, चुप !"

लेकिन अफसरने उसे खामोश रहनेकी आज्ञा दी

रक्षिकाके बिलको पूरा चुकता ही नहीं किया गया, ऊपरसे भी काफी भेंट मिली अफसर और महिलाकी प्रतीक्षामें द्वारके बाहर एक बढिया बग्घी थी वर्केशन उन्हें बग्घीमें चढनेमें सहायता की

तिमिरा मन्दाको जानेके लिए तैयार होनेमें मदद दे रही थी उस समय उनमें यह बातचीत हुई

'सो मन्दा तुम वेश्या बिल्कुल नही थी ?" तिमिराने पूछा

मन्दा मुस्कराई

'नहीं, मैं नही थी"

'इसके मानें तुम कुलीन हो ?'

'नही, तिमिरा ! कुलीनताकी शत्रु !

'तो यहा ऐसे घरमें तुम भला कैसे आई ? या सच जब तुम स्वतन्त्र थीं, तब काफी आदमी तुम्हें नही मिलते थे ?'

मन्दा फिर मुस्कराई उसमें किसी प्रच्छन्न विषादकी छाया थी

"आह ! तिमिरा ! तिमिर, तुम्हें भरोसा नहीं होगा अगर मैं कहू कि मैं एक निष्कलक स्त्री हू ठीक इस क्षणतक भी निष्कलक हू"

तिमिरा पूरी तरह खिलखिला पडी

'हा, हा दिनमें छह छह सात सात आदमियोको तुमने अपनी देह सौंपी—और तुम निष्पाप हो निष्पाप क्यो जी सन्त हो"

मन्दाका चेहरा गम्भीर हो गया तिमिराकी ओर वह झुकी जो तब अपनी एडियोपर बठी थी उससे पूछा, तिमिरा, तुम होशियार हो मुझे एक बात पूछने दो, तिमिरा समझो, तुम युवती कन्या हो कुमारी अछूती अक्षत—कि एक कमीना पिशाच तुमपर बलात्कार करता है बताओ तिमिरा उसपर तुम पापिष्ठा हो गई या निष्पाप रहीं ?"

"कह क्या रही हो ? तब, तब, मैं क्वारी कहां रही ? तब मैं अक्षत तो नहीं रही"

"अच्छा तिमिरा, परमात्माके सामने, या किसी भद्र देवता रूप पति-के सामने जो परिस्थिति समझता है, जो दयालु है और स्वय अपने सामने स्वय अपने सामने तुम पापिनी हो ? या निर्दोष हो ?"

'क्या ? अवश्य निर्दोष हू"

'यही मेरे बारेमे मान लो तिमिरा ! तुम कठिनाईसे समझोगी "

तिमिरा कुछ क्षण चुप रही

"लेकिन, यह अफसर यह तुम्हारे पति ह ? प्रेमी हैं ? भाई ह ?"

'कोई नहीं ह, कामरेड है हम दोना एक पथके सहयात्री पथिक ह ?"

"आह, मरदा ! म अपने चित्तमें अनुभव करती हू कि तुम तनिक भी मिथ्या नही कह रही हो लेकिन म समझ नही सकती जसे तुम भोली भाली एक नारी हो ! म तभीमे अनुभव करती हू कि तुम एक कुलीन महिला हो लेकिन कैसे किसतरह अपनी मर्जीसे तुम इस पन गतमें फसने आ गई, गिरने आ गई ? मेरी ही बात लो मैं अपन को तुमसे खोल दू गी कभी मैंने शिक्षा पाई थी, चाहे वह ऊपरी ही थी अब भी म दो भाषाए जानती हू जो यहा बोलती हू वह मेरी भाषा नहीं है, बनाकर बोलती हू तुमसे वह भाषा म जानबूझ कर बोलती हू लेकिन म गृह हीना हू, भ्रान्त लक्ष्य-हीन उड़ते पक्षीकी तरह, स्वतन्त्र, निर्बाध नहीं जानती मेरी आत्मा किधर उड़ रही है और वह किस डालपर बसेरा लेगी पर तुम, तुम, तुमने यह क्यो किया ?"

मरदाका चेहरा अकस्मात् मानो पथरा गया, रक्त उसका सूख गया उसने विरत होकर कहा, 'हां, मैंने कभी तुम्हारे कृत्रिम आवरणको भांप लिया था साफ है, यह तुमने यहां वासियोंमें निभनेके लिए ही अपनाया था अच्छा, अगर तुम्हें ऐसी जिज्ञासा है तो मैं साफ कह दू

म एक लेखिका हू मै इन विलासके केन्द्रो और लीलाके कुजोके जीवनका सच्चा चित्र दुनियाको देना चाहती हू और मेरा उपन्यास सत्य हो, प्रामाणिक हो, इसके लिए मैंने सोचा, मुझे स्वय उसमेंसे पार होना होगा हा सबमें, सब कुछमेंसे, तिमिरा"

तिमिरा, जो कि अबतक अपना काम समाप्त कर चुकी थी, बोली, "ठीक म तुम्हारे अभिप्रायकी सत्यतामें श्रद्धा रखती हू लेकिन तुम जो कहती हो, लेखिका हो—सो गप है म देखती हू उद्देश्य गहरा है अभिप्राय महान है, इससे भी बहुत महान है लेकिन मे सौगन्ध खाती हू, अपनी इस बातचीतका मैं किसीसे नाम न लूगी"

मन्दाने स्थिर होकर कहा, "जो तुम्हारी इच्छा, धन्यवाद!" फिर सहसा मानो पश्चातापके आवेशमें उसने तिमिराको दृढातिदृढ आलिंगन-में कस लिया, चुम्बन किया, और धीमेसे उसके कानमें कहा, 'मै तुम्हे पत्र लिखूगी"

इन घटनाओको कोई आठ महीने हो गए क्रान्तिम उभार आने लगा हडतालें हुई, आन्दोलन स्थानीय बनकर उठने लगे गगनके दिन आए सक्षेपमें क्रान्तिका सन्देश, निश्शब्द नीरव, हवामें फलता सब ओर छा गया राजनीतिक बेचनीमें से उठकर घटनाए घटी, स्फोट हुए, और गिरफ्तारिया देशमें आम हो गईं

सो एक दिन आधीरात अम्बा मरकानीके शान्त स्थानम भी कुछ सिपाही आ धमके पुलिस अफसर भी साथ थे मकानको घेर लिया गया जो मेहमान थे सबको पहरेके अन्दर एक ओर कमरेम भज दिया *गया जो सोते थे उन्हें भी इस कामके लिए जगाकर पहरेम बन्द किया* गया मकानकी तलाशी हुई कोना कोना छाना गया बमोकी और लाल पर्चोकी तलाश थी पर मिला कुछ नही फिर आलयकी लडकिया एक एक कर कमरमें लाई गई और अफसरने उनस कठोर होकर, दयालु होकर सब विधिसे मन्दाके बारेमें पूछा ताछा वह *क्या क्या करती थी, क्या-क्या उसने कहा किनस मिली, किनको उसने चिट्ठी लिखी, क्या किसीको कुछ यादगार, या कुछ किताबें दे गई ? आदि*

लडकिया इन सवालोका कुछ न बना सकी वे घबराई, लाल हुई, पसीन छूटे, भासोको कुचाकर रोई, और अफसरके पैरो गिरकर, दुहाई देने लगीं, "दयारे ! हमारे सिरपर गाज गिरे, जो हमन कुछ किया हो, किसीको मारा हो, या जो किसीकी चोरीकी हो !" उन्ह सबको रुख-सत कर दिया गया

तिमिरा बहुत कुछ कह सकती थी अपनी अन्तिम बातचीतकी बात तो कह सकती थी दूसरी वेश्याए, जिनमें अपनेको विशिष्ट और बढा-चढाकर दिखानेकी इच्छा बलवती होती है, और जो भावावेगको अति-शयताका प्रदशन करनेकी आदी होती है, अवश्य बहुत कुछ बना जोडकर कहती पर तिमिरान सनकके साथ कहा

"महाशय, मैं उसके बारेमें आपको इससे ज्यादा कुछ नही कह सकती कि वह नीच, दुष्ट, हरजायन थी दुनियाके सब मद उसके लिए काफी नही थे सो बेहया, वह यहा आकर मरी !"

सिपाही और अफसर लौट गए और फिर नही आए लेकिन उसके बहुत दिनो बाद भी अन्नाके यहा रहनेवाली लडकियोको मुहल्लेके लोग सोशलिस्ट कहकर पुकारते थे और लडकिया सच इसपर बहुत नाराज भी हो लिया करती थीं लेकिन एक दिन घोर विभीपिकाके भावके साथ तिमिराने एक बात सुनी सुनी क्या, कानो पडी सो सुन गई वर्केश उसी छोटे कमरेमें मालकिन, उसके खाविन्द, और रक्षिकाके सामने शराबका प्याला हाथमें लिए कह रहा था

"अपनी मन्दाकी याद है ? मानना होगा, बडी ऊची उडती चिडिया थी गजबकी औरत निकली उसके दसियो नाम थे एक तो, एमा उडवानी, वही था जो उस टिकट पर लिखा था और उसने तुम्हे दिया और तुम्ही उसे अपने हाथो थानेमें ले गई, और बदलेमें पीला टिकट ले आई ! उसके मुताबिक अलका लवीश उसका नाम था ताल्लुकेदार घरानेकी और सगीतशिक्षिका, यह भी उसपर लिखा था लेकिन तुम जानती हो, वह तुम्हारे घरमें क्यो आई ? गजब है, सोचकर सिर चकराता है वह तुम्हारे यहा आकर, समझो, इस पेशेकी बारह खडीका

अभ्यास कर रही थी नही, नही, घबराओ नही घबराओ मत, जो आगे हुआ वह सुनो, वह सुनो तुम बौखला रहोगी इस पेश और बाजारका यहा इतना अभ्यास लेकर कि वह अपनेको रडी बताकर किसी की भी आखमें धूल झोक सके—उसने क्या किया ? वह दक्खन सब स्टापाल चली गई शुरूम वह मल्लाहोके एक गुटम मिल गई फिर दूसरे फिर तीसरे, फिर चौथमें पहुच गई उसके बाद तो यही काम उसन ओडसा और सिकोलौरमे किया अब देखो, एक बात कही तुम्ह साफ नजर आती है ? वे सब ब दरगाह थ सब जगह उस पीले टिक टकी आडम उसने सरकारके प्रति विद्रोहकी आग भडकाई वह लोगो को उकसाती थी, कहती थी 'इन सब राजकुलोका सत्यानाश कर दो इन पसेवालाको भी मिटा डालो खासकर जमीदारोको, बुराईकी जड यही है' उसके जरिए इन सब शहरोमें लाखा बलवाई परचे, अपीलें और मन्दश बटे और फले बहुत कोशिशें हुइ पर वह पकडी नही जा सकी सब जगह उसके दोस्त मदद पर थ और तो और, वह कप्तान भी जो यहा आकर ऐसे मजमें उसे साफ ले गया हम सब अवकूफ बन कर हाथोमें जिसका बेग लिए खडे देखते रह गए, वह नवल नामका कालिजका निकला हुआ लडका था बस सब कपडे अफ्सरके पहन रक्ख थे कम्बख्तने गजब भी क्या किया ? खास गवनरके यहासे और पुलिस कप्तानके पास पहुचकर उसने सामन पुर्जा पेश किया वह सरकारी कागज था, सील मुहर दुरुस्त थी, सच्चे सही दस्तखत ! देखो कम्बख्तकी हिम्मत ! खर, कुछ बात नही अब हजरतको पकडकर साइबेरियाकी खाने खोदनेको भेज दिया गया है सालेको अच्छी सजा मिली बदमाश !"

'और मन्दा ?" एमा उडवानीन पूछा

'मन्दाकी भी गति हो गई उसने गवनरपर बम फका, और साली वह भी फासी झूल गई !"

सध्याकी भीनी अधियारीकी ओर मुह किए खिडकिया खुली हैं हवाकी धीमी धीमी लहरोसे पर्दे तरगित हो उठते ह सामनेके बगीचे की ओसस भीगी घासमें से महक उठ रही है वृक्ष अपनी फुनगियाको हौले हौले हिला रह ह

लुवी नीचे मखमलकी अगिया और नूरी गुलाबी खिलता ब्लाउज पहने अपने लहराते बालाको पीठपर छितराए खिडकीके जगलेमें एक दूसरेम लिपटी हुई पडी ह वे मिलकर कुछ गुनगुनमे एक अस्पताली गीत गा रही ह जो इधर कामिनियामे खूब प्रचलित है नूरी अपनी बारीक आवाजमें अलाप लेती है लुवी उसीको दोहराती है वे गाती ह

सोमवार अब फिर आया है
चाहिए कि वे मुझे अब बाहर ले चल
पर यह डाक्टर जाने नहो देता
उस सुसरेकी——

सब घरोमें खिडकिया प्रकाशसे चमक उठी हे दरवाजोपर कन्दीलें लटकी ह दोना लडकियोको सोफिया वाले चकलेका भीतरी भाग साफ दीखता है वह बिल्कुल सामन ही है पीला, चिकना, चमकना फश है, दरवाजेपर फिरोजी रगके पर्दे जिनमें झालर टकी ह एक ओर बडा काला पियानो है और एक बडा आइना आन बानकी पोशाकामें सजी स्त्रिया आती जाती दीखती ह और दपणम पडते हुए उनके प्रति-बिम्ब बराबरके चकलेका दरवाजा, नीले ग्लोबसे ढकी तेज बिजलीकी रोशनीसे जगमग हो रहा है

सध्या गम है और शान्त कही दूर, रेलकी सडकके पार मकानोंकी छता और वृक्षोस आगे,और आग और और दूर, जहा आसमान धरतीका चुम्बन पाकर लाजसे लाल हो रहा है, वही गुलाबी परिया श्यामारुण

वस्तोंमें जैसे सोना उछाल उछालकर खेल रही है प्रकाशमें कोमल ऊष्मा और श्यामारुण धवलता है इस हल्के, धीमे, मृदुल प्रकाशमें बहती हुई तरलित वायु जैसे किसी मीठे रहस्यका सन्देश दे रही है मानो कह रही है—रात आ रही है रात वसन्तकी यह सध्या, कुछ खिन्न कुछ प्रफुल्ल, अलस भावसे मानो नगरके ऊपरसे जाती जाती कुछ ठहर गई है नगरके कोलाहलकी अस्पष्ट ध्वनि दूरागत सगीतकी भाति आ रही है लौटती गायोंकी गोधूलि वेलाकी पुकार उनके साथ अभिन्न होकर मिल गई है कभी पास ही किसीके चलनेकी आहट आती है कभी जान पड़ता है किसी सुन्दरीके वस्त्रोंके साथ हवा झगड रही है, और सुन्दरीके वस्त्र फरफरा रहे है सडकपरसे जाती हुई घोडा गाडियोंके पहियोंकी घडघडाहट कानोंमें पडती है सब मिलकर लगता है जैसे कोई लोरिया गा गा कर, थपक थपककर सबको सुलाना चाहता है और दूर रेलकी पटरीपे भागते हुए एञ्जिनकी चीख सुन पडती है और वह अपनी हरी लाल रोशनियोंसे अधियारीका चीरता हुआ सिसकी सी भरता चला जाता है मानो सन्देश देता है

धाई अम्मा आएगी,
खीर मलाइ लाएगी
खीर मलाई लाएगी,
सबको बाट खिलाएगी

"पोतुल!" नूरीने नीचे सडकपर फुदकते से जाते हुए एक आदमीको देखकर एकदम पुकारा, 'ओह, पोतुल !'

उसने लापरवाहीसे कहा, 'क्या है क्या बात है ?"

"अरे, एक दोस्त तुम्हारा मुझे मिला था तुम्हे उसने नमस्ते कहा है मुझे आज ही मिला था"

"दोस्त कौन ?'

'अरे, बडा सुन्दर था छोटा-सा बढ़िया-सा जवान क्योंजी तुम मुझसे पूछते क्यों नहीं, कहा मिला था !'

"अच्छा, बताओ कहा मिला था ?" जरा रुककर पोतुलने पूछा

"बताऊँ कहा मिला था ! वह अलमारी जो है, उसके ऊपरके खाने में हमारी तकिया रखी रहती है वहीं वह मिला था"

छिः, क्या मजाक है !"

नूरी इसपर सारे घरमें खिलखिल हँसती हुई उछलती फिरी टाँगे फेंकती, हाथ नचाती मुँह बनाती और दुहरी हो होकर हँसती और बेबस हो आती फिर हँसना बन्द करके गम्भीर सा चेहरा बनाकर एकदम धीमे कहती 'नूरी, अरी तू जानती भी है प्यौरस साल एक औरतका गला काटकर जिसने साफ किया था, वह कौन था ? यही पातुल था सच, राम कसम !'

'क्या री सच ? और वह मर गई ?"

'नहीं, वह मरी नहीं" और मानो यह कहते हुए नूरीको खेद हुआ, "वह बच गई न महीने दो महीने तक अस्पतालमें तो पड़ी रही डाक्टरने कहा घाव एक दो सूत और गहरा जाता, तो खात्मा ही था चलो खैर !'

"तो इसने यह सब किया क्यों ?"

'मैं क्या जानूँ उस औरतने रुपया छिपाकर रखा होगा या वफादार नहीं रही होगी यह आखिर उसका प्रेमी था—उसका "

"तो, उसे कुछ सजा भी हुई ?"

'नहीं, बिल्कुल नहीं गवाह ही नहीं मिला बात यह थी कि एक शोरोगुल मचा हुआ था सैकड़ों लोग लड़ झगड़ रहे थे वहाँ पता क्या चलता तभी मौका देख उसने अपना काम तमाम किया और, मालूम है, औरतने पुलिसको क्या कहा ? कहा कि उसे किसीपर शक नहीं है पर पीछे पोतुल खुद इस बातकी डींग मारता फिरने लगा कि ओह, इस बार तो दुनका चला रह गई, अबके देखा कैसे एक हाथमें सब झगड़ा साफ किए देता हूँ अभी उसने मेरे हाथ देखे कहाँ हैं वह भी वह देखेगी कि क्या करूँ'

लुबीके सारे बदनमें कँपकँपी छूट आई उसके स्वरमें दहशत समा गई पर धीरसे बोली, 'यह आशिक लोग भी एक आफत होते हैं गजब-

के हैवतनाक !"

मोह तोबा ! तुम जानती हो, एक साल तक गाइमनके साथ म भी इसी प्रमके पाकरमें रही एमा माफनका परकाला है कि क्या वह बदनपर कोई जगह जो बचाई हो गसा मारता था नीलकाने मारक चित्त सदा मेरी दहपर रहते ग्रौर मै उसी तरह डोलती रहती और यह मार किसी खास बातपर थोड ही भुगतनी पडती थी सब या ही ब बात, बे मतलब सवेरे आता, मुझ कमरमें ले जाकर भीतरम ताला बद कर लेता ग्रौर करता मताना शुरु बाह मराडता, छातिया चूटना, गला नाचता ग्रौर मुझ बुरी तरह पाटता नही ता चमन ही लगता ग्रौर फिर एकाएक एसे जोरम काटता कि मर ग्राठास खून निकल आता म रोन लगती बस जम उस इसी बहानका इतजार रहता तब वह शिकारी जानवरकी तरह मुझपर टूट पडता उसकी दह तमाम थर थरान लगती मेरे पाससे धला धला छीन लेता पास इतना भी न छोडता कि बीडी ता ले लू यह साइमन एक कजूस है जो मिला लिया ग्रौर जमा बकमें बस जा आया, हमशा बकम जमा करता रहा है कहता है जब हजार रुपए पूरे हा जाएग ता किसी तीरथम जाकर भगवद् भजनम दिन काटूगा ग्रौर म सच कहती हू तुम उसकी कोठरी म जाकर दखा दिन रात चौबीसा घण्ट मूर्तिके ग्राग दीया जलाए रखता है ईश्वरके बारेम बडा कट्टर है लकिन मरा ख्याल है इसका कारण है कि उसके चित्तपर पापका भारी बाभ है वह खूना है '

कहती क्या हा !'

'ग्राह लुबी ! उसकी न कहो जाग्रा गाए हा वह ग्रागे क्या है?'
ग्रौर नरी ऊ ची बारीक आवाजम गान लगी

ग्ररी म ग्रतारके जाऊगी,
वहास जहर लाऊ गी
ग्रौर जहर पीके जा सोऊ गी
एसी कि फिर बस

जनी इधर उधर कमरेमें चक्कर लगा रही थी उसके हाथ पीठके

पीछे थे चलती कुछ झूमती सी थी और आइनामे अपना अक्स देखती जाती थी वह एक चुस्त, ऊँची पोशाक पहिने थी जिसके कारण उसकी देहका उभार स्पष्टतर होकर दीखता था।

मनका और पाशा ताश खेल रही थी मनका ताशकी बेहद शौकीन है सबेरेसे अगले सबेरे तक लगातार उसे ताश खिला लो दोनो आमने सामने, बराबरमे सुभीतेके लिए खाली कुर्सी छोडकर, बैठी ताश खेल रही है जीतके पत्ते गोदमे डालती जाती है मनका एक ऊदे रंगकी पोशाक पहिने है जो उसे खूब सजती है और उसकी युवा देहकी प्रदर्शिनीके प्रभावको जमा और चमका देती है

उसकी साथिन पाशा अद्भुत अभागिन लडकी है उसे अबतक यहाँ होनेके बजाए कही उन्माद रोगियोके अस्पतालमें होना था उसे एक स्नायविक रोग है जिसके दौरेमे वह हरेक मर्दपर ऐसी भूखी, अतृप्त, उन्मत्त, भावसे टूटकर गिरती है जिसका ठिकाना नही चाहे वह कोई हो नरकीट ही क्यो न हो इस दुर्गुणके लिए साथिन सब उसका मजाक करती है मानो कि पुरुषके प्रति उनमे एक जो संग्रहीत विद्वेषका भाव है यह पाशा उसके प्रति द्रोहका अपराध करती है मानो इसी बातकी चिढ और कुढन मनका उसके ऊपर ताने और फबतियाँ ढालकर निकालती है खासकर नूरी तो पाशाकी उन सिसकियोकी, सीत्कारकी, अन्यतम कामोन्मत्त अवस्थाके समय उसके मुहसे निकलनेवाले उन बेहद अश्लील उद्गारोकी, जो पास लगे दूसरे तीसरे कमरेतक भी खूब सुन पडते है, बडे मजे ले लेकर हू ब हू नकल निकाला करती है पर पाशा पुरुषका आलिंगन पाकर ऐसी मस्त हो उठती है कि उसे कुछ सुध-बुध नही रहती कहते है, वह यहाँ लाचारीमे पडकर छलमे बहकाए जानेके कारण या किन्ही विवश परिस्थितियोमे फँस जानेकी वजहसे भर्ती नही हुई पर अपनी इस घोर दुर्जय, भयावह दुर्दम वृत्तिको चरितार्थ करने अपनी खुशीसे यहाँ आई है यहाकी मालकिन और रक्षिका उसकी इस अघोरी प्रवृत्तिमे और बढावा ही देती है, क्योकि पाशाकी सदा ही माग बनी रहती है जितना दूसरी चार-

कर कहा "ताश बना '

मनिया रानी तुम जीजी बनी हो? तुम बडी अच्छी हो देखो, पत्ता दा'

मनिया हार गई ताशकी गड्डी उसने अपनी गोदमे रख ली पत्ता खीचा पहले हुकमका बादशाह निकला फिर ईटका बादशाह

पाशा खुशीसे ताली बजा उठी, "ओह, यह मेरा लक्ष्मण है उसका आज आनेका वादा भी है जरूर, जरूर मेरा लक्ष्मण ही है'

'तुम्हारा आशिक नम्बर एक, वह जार्जियन ?"

'हा हा, जार्जियन लक्ष्मण ! कैसा अच्छा है वह म उसे अपने पाससे अब कभी न जाने दूगी जानती हो, पिछली बार उसने मुझसे क्या कहा था उसने कहा, अगर तुम यही इसी घरमे रही, तो म तुम्हे भी जानसे मार दूगा और खुद भी मर जाऊगा और मुझे एस देखा एस देखा जैसे बिजली !"

जेनी चलते चलते पास खडी हो गई थी उसने यह सुना पूछा, यह किसने कहा था ?'

'क्या, मेरे जार्जियनने, लवको ! 'तू भी मरेगी म भी मरूगा ! —यही उसने कहा था"

'बेवकूफ कहीकी ! जार्जियन-वार्जियन वह खाक नही है सुनती है कि नही वह आर्मीनियन है और आवारा है हा, तू सिर फिरी पगली जरूर है'

"आह, नही वह आर्मिनियन नही, जार्जियन है और क्यो "

"म तुझे बताती हू, वह आर्मियन है मै और भी तुझे कुछ बता सकती हू, मूर्ख !"

'तुम मुझे कोसती क्या हो जी जेनी ! मने तुमसे कुछ नही कहा क्या कुछ कहा ?"

"मनमें हो तो कहके ही देख ले तू ही पहल करके देख, गधी ! पर, कोई हो, तेरे लिए सब एक जसे नही ह, क्यो री ? या तू उसके प्रममें पडी है ! क्यो ?"

'तो हा म उसके प्रमम पड़ी हू

और ववकूफ भी है तू हीं और व- दूसरा जो टोपीम वज लगाकर आता है वह लगड़ा—उसके भी प्रममें है ?"

'सा क्या हुआ, हा म उम भी पसन्द करती हू वह इज्जतदार आदमी है ! '

और नाट् जिल्दसाजका? और उस ठेकेदारका? और उस लुहारके बच्चेका ? और उस तीन टागके नटका ? गदहेका ? उल्लका ?

अरी, कमीनी कुतिया ! ' जनीने एकदम चिल्लाकर कहा "तुझ दखते ही मुझ नफरत होती है ! गलम रस्सी बाधकर तू अपनी जान क्या नहीं ले लेती जू की बच्ची "

पाशाने चुपचाप आसू भरी आखोंपर अपने पलक डाल लिए मनियाने उसका पक्ष लिया ठीक तो है जनी, क्यो एसे उस दुतकारती हो ? क्या उस बिचारीपर टूटी पड रही हो ?

जनीने बीच हीम काटकर तीखेपनसे कहा, "आह ! तुम सबको मजा आता है तुमम आत्म-सम्मान नहीं रह गया है कोई राह चलता यहा आता है और पस फककर गामके पिण्डकी तरह तुम्हे खरीद लेता है बघी दरमे जसे सवारीकी घाड़ी हो, घण्टे एक आधके लिए तुम्हारा किराया तय करता और मजा करता है और तुम मजम घुल घुलकर उसकी गादम बताशा बन जाती हो, 'आह मर प्यार! मरे राजा! ' कहने लगती हो कहती हो, 'आह कसा मस्त अलौकिक प्रम !" अम थू' कहकर घणाके साथ जोरसे जनीने फर्शपर थूका और मुह मोडकर कमरेके इस कोनेम उस कोनतक शीशोमें अपना मु ह दखती लम्बे लम्बे डगाम तजीम घमने लगी

उधर गायक मास्टर इसहाक दाऊद अभी वाइलिन बजानेकी कोशिश करते हुए इसिया सावितम उलझ थ

बस नहीं बस नहीं, इसिया सावित ! वाइलिनको जरा एक तरफ धर दो सुनो राग इस तरह है'

एक उगलीसे उसने पियानोपर स्वर छेड़ा और गला खोलकर अपनी

फटी-सी आवाजमें गा उठा

'आ आ आ आ आ सा सा सा हा, ठीक ! अब फिर वैसे ही कहो"

कुत्ता जो कान देकर रिहर्सल सुन रहा था और दुबली सी मुह पर खूब पाउडर पोते पियानोपर कोहनी रखे, झुकी हुई, मदमाते चेहरे-से वीरा भी समझनेकी चेष्टा कर रही थी बालोके लच्छे बनाकर माथेके दोनो ओर भवोके पासतक ले आए गए थे, और अपने ऊचे जूते बिर्जिस, और आधी बाहोकी कमीज पहने वीरा रेसकी घुडसवार सी मालूम पडती थी भौहोके नीचेसे चमकती उसकी नीली आख अपने नीचे छोटी नुकीली नाकको देखती हुई फर्शकी तरफ जमी थी आखिरकार दोनो गायन मास्टरोका झगडा निबटा, उनमे समझौता हुआ, और वरका बडी अदासे चलती हुई जोहराके पास पहुची अदाके साथ बाह फैलाकर मर्दाना ढगसे उसने जोहराको सलाम किया और वे दोनो खूब खुश, साथ साथ कमरेमे इधर उधर उछलती फिरने लगी

चहकती नूरी सब बात पहले खबर रखती है वह एकदम खिडकी से कूदकर उत्साहके साथ पुकार मचाती जल्दी जल्दी बोली, "अरी एक बढिया गाडी टेपिल आई है सच और बिजलीके लम्प है झूठ बोल तो मुझपर आसमान फट जाय ऐसे तेज लम्प है कि दैया री !"

जनोको छोडकर सब लडकिया खिडकीसे झाक झाककर देखने लगी सचमुच ही टेपिलके दरवाजके पास एक कोचवान बहुत बढिया गाडी लिए खडा था विक्टोरिया नई थी, रग चमचमा रहा था, और दोनो ओर दो बिजलीकी रोशनिया लगी थी उसके बड और एकदम सफद घोडो की जोडी कान उठाए सिर हिला हिलाकर अपनी टापोसे धरती खुरच रही थी ऊपरके बक्सपर मजबूत दढियल कोचवान पत्थरकी मूरतकी तरह घुटनोपर बाहें रखे सीधा तना बैठा था

नूरी चिल्लाई, "ए मिया कोचवान, जरा हमें भी बग्घीमें बिठा ले! '
खिडकीसे और भी आगे झुककर वह चिल्लाई, 'मै छोटी सी लडकी हू, मुझे चढा ले तुझे मेरे प्यारकी कसम, एक बार मुझे सैर करा दे"

लेकिन गोबरार मातायान तनिक हम दिया और उगलियाम धर्मो सगामको जरा दतारा दिया पाहाला बया दर्गोला दरवाजा था कि पर उठाकर यह दुलकी घालस पस पर गाडी दवताए रथकी तरह चुपचाप घूमती हुई मन्य हो गई बापमाका पोट भी प्रदृश्य हो गई

नि ! बया बतमीजी है ! ' एमा उटयानी प्रपन कमरमग क्रुद्ध स्वरमें बोली, कोई भली लड़कियोका इस तरह प्रपनी खिडकियोंसे उचक उचककर तमाम गली ताकने दखा है ? उह बया बहूदापन है ! और म जानती हू गय नूरीकी करतूत है जब दखो नूरी उसीकी शरारत !

काली पोशाकमें नवाबाना उसका प्रन्दाज था पोला स्थूल चेहरा प्रांखोके नीचे लटकती मासल थलिया प्रौर तिहरी ठोडी सब जनी स्कूली लडकियोकी तरह बाप्रदब कुर्सियोपर भटपट बठ गई बस, प्रकेली जनी खडी प्रपने प्राइनेम दखती रही दो प्रौर एसी गाडिया साथियोके स्थान पर प्रा खडी हुई यामामें जीवन प्रा रहा था आखिर एक प्रौर बिक्टोरिया घडघडाहट करती हुई प्राती सुन पडी उसकी घडघडाहट यहा प्रन्ना मरकानोके द्वारपर प्राकर एकदम रुक गई

देखा गया दरबान साइमन बड हालमें किसीको गाडीसे उतार रहा है जनीने दरवाजा खोलकर उधर देखा, प्रौर फौरन मुडकर फिर उसी भांति चलने लगी उसका सिर हिला, गुनगुनाकर मन ही मन वह बोली, "जानती नही कौन है ! कोई नया ही प्रादमी मालूम होता है यहा तो पहले नही दखा होगा कोई पाच-दसका बाप, दो चारका दादा मुटाप, सुनहरी चश्म, k. रपडास तो एस लगते ह कि कोई बुजुर्गवार ही ह"

एमा उडवानीने एसे कहा जस कमानका हुक्म दे रही हो, "लडकिया हालमें चलो लडकिया ! '

एकपर एक मुसकाती इठलाती वे हालमें प्रा गई तिमिराकी राहे गदन खुली ह नकली मोतियोकी माला पहने स्थूल किटी, मान्सल, चौकोर चेहरे प्रौर नन्हे प्रायेको लेकर रगीन परोकी पोशाकम लाल फूल सी खिल रही है सबसे नई प्राई हुई नीना खुशनुमा मखमली

धानावर्में है उसके बाद फिर मनका, अर्थात बनी मनका फिर यह-दिन सोलहा सानका की वहद उठी नाक और गाख आवदार बडी बडी, और चितवन एसी मीठा, सविपाद, तरल अग्निमय, कि जैसी दुनियामें नहूदिनोमें ही मिलता ह

७

एक प्राढ़ वयके पूरुपने प्रवेश किया सरकारी दान विभागके कर्मचारीके कपड पहन अनिश्चित कदमोंसे दोनो हाथाकी हथेलियाको आपस म मलन, मानो धोते हुएसे, वह महोदय जरा झुकी चालसे आए लड-किया सब सतर चुप खडी रही, जसे मानो उन्ह इस व्यक्तिके आनेका पता भी न हुआ इसलिए वह सज्जन हालमें सीध चलन हुए आए और आकर लुबीकी कुर्सीकी बराबरकी कुर्सीपर बट गए लुबीने उच्च कुलीन कन्याकी भाति अदबसे, मानो अनजाने, अपने कपडोको तनिक समेट लिया

आगन्तुकने कहा, 'आप मजेम ता ह, खुश ह ?"

लुबो भी तुरन्त बोली, "आप तो खुश ह?" फिर कहा, "शुक्रिया है आपका ठीक हू मुझ एक सिगरट दीजिए"

'माफ करें, म पीता नही"

'अच्छा, पीते नही! मद ह, और सिगरेट नही पीते ? तो एक गिलास लेमन ही दिलवाइए मुझ लेमन बहुत अच्छा लगता है"

उमने चुपचाप यह सुन लिया और अनसुना कर दिया

'उह कसे कजूम बाब हो अच्छा, तुम कहा काम करते हो ? सरकारम मुलाजिम हो ? कहीं क्लक हो ?"

'नहीं म एक अध्यापक हू, जमन भाषा सिखाता हू"

लेकिन बाबू, मने तुम्हे कही देखा है तुम्हारा चेहरा पहचाना मालूम होता है मने पहले तुम्हें कहा देखा है!"

'हो सकता है म नही जानता सडकपर कही देखा होगा"

"सडकपर ही देखा होगा या कही और देखा होगा कम से-कम एक गिलास शन्तरका शर्बत तो पिला ही दो म एक गिलास शतरा नही माग सकती ?

वह इधर उधर देखता हुआ फिर चुप हो गया उसका चेहरा चमकने लगा माथेपर दिपती लाली सी आ गई आकाक्षा मुहपर आ झलकी वह मन ही मन इन औरतोंका जसे तखमीना लगा रहा था उनमस वह अपने लिए एक छाट लेना चाहता था पर उस हिचक हो रही थी और वह चुप था इसके अतिरिक्त लुवीकी ऊट पटाग बात स उसे खिझलाहट हो रही थी मोटी किटी उसके मन चढ रही थी भरी, मुलायम पकडम भर आए एसी उसकी देह थी पर सोचा, मोटी औरतें रतिमें चपल नही होती, यह भी न होगी और चेहरा भी सुदर नही है वीरा भी उसके जीको भाती थी सलोनी, नमकीन उसकी सूरत थी और कमी भरी जाघ और छोटी मनिया भी क्या बुरी है उसने सोचा, ताजा स्कूली लडकी सी दीखती है फिर देखा जनी गजब है कसी सोहनी लग रही है उसके बदनमें जोबन है क्षण इक वह जेनीके पक्षमें निश्चय करनेको उद्यत हो गया पर अपनी कुर्सीमें उठा सा, और फिर वही बठ गया उसे साहस नही होता था और जेनी सचमुच इस आदमीकी ओर जरा भी प्रवत्त न दीखती थी वह यो उद्यत प्रतीत होती थी लापरवाह, मौजीली और दुलभ उस आदमीने समझ लिया कि इस घरमें इस लडकीके नखरे सबसे बड चढ कर ह और जान पडता है यह लोगोसे अपने ऊपर खच भी सबसे अधिक कराती है किन्तु दान विभागका यह कमचारी समझदार आदमी था उसका बडा परिवार था और क्षीण रुग्ण स्त्री इसीसे बला त्कार और विषयाधिक्यके अत्याचारसे वह बेचारी तरह-तरहके स्त्री रोगो से आक्रान्त और दुबल थी एक कन्या विद्यालय और अन्य महिला सस्थाओमें पढ़ाते रहनेके कारण इस आदमीके भीतर सदा एक प्रकारका प्रच्छन्न कायिक लिप्साका बुखार-सा रहता था पर, अमन था, और

कायर इससे सदा अपनी इच्छाओंको दबाकर रोके रखता था इच्छाएं इस भांति संचित होती रहतीं जहां तहांसे कुरच खुरचाकर अपने बजटमें से बचा खुचाकर यह आदमी कुछ पैसा जमा कर पाता, और सालमें दो तीन बार छुट्टी निकालकर चकलेमें आ पहुंचता था किसी औरतपर खर्च करनेके इरादेसे ही वह यह पैसा जोड़ता था और तमाम समय इसी की बात सोचता रहता था वह उसे मजा ले-लेकर, हाथमेंसे एक एक कौड़ी छोड़कर खर्च करना चाहता था वह इस मजेको यथासंभव नशीला और अधिकसे अधिक दीर्घ-कालिक और चटपटा बनाना चाहता था साथ ही बीमारीकी छूतका डर भी उसे भीतर कम नहीं काटता था अपने पैसेकी वह जितनी हो सके कीमत वसूल करना चाहता था उसके भावुक चित्तकी साध थी कि उसे कहीं अछूती कुमारी मिल जाय जो कविता-सी प्यारी हो, लजीली, हास्यमयी, कटीली और प्रगल्भ ! और वह सपने लेता था कि जैसे उसके प्रेमालिंगनसे स्त्री एकदम आल्हाद में मद मस्त हो गई है हांफ रही है और आनन्दकी अतिशयताकी मूर्च्छना में घुली बिखरी सी जा रही है

लेकिन सब आदमी यह चाहते हैं गन्दे, घिनौने, अंगहीन, अपाहिज, नपुंसक सभी इस उन्मत्त लास्यके स्वप्न देखते हैं और अनुभव द्वारा इन कामिनियोंने भी सीख रखा है कि उत्कृष्ट लीलाएं मत्त चेष्टाएं और सीत्कार आदि करके मर्दोंको कैसे वैसा ही विलासका स्वाद और आभास दिया जा सकता है

लुबीने बड़बड़ाकर कहा, 'कमसे कम बाजेवालोंको एक झूमता नाच ही बजानेको कह दो, चलो जरा नाच हो जाए"

यह बात उस आदमीको पसन्द पड़ी, गानेके बहाने जब लोग आपसमें सटे भिड़कर नाच रहे होंगे तब काम आसान हो जायगा इस नीरव स्थिर वातावरणमें नहीं तो उसे सहज हिम्मत नहीं होती नाचके बीचमें उसे आप ही आप जोश आ जायगा और किसी एकको छांटकर आगे बढ़नेमें उसे कठिनाई नहीं होगी पूछा, 'पैसे कितने लगेंगे ?"

"घुंघरूवाले नाचमें एक अठन्नी, सादेमें इसका भी आधा तो

ठीक रहा ?"

"अच्छा, सही तुम्हारी मर्जी सही म पसेकी परवाह नही करता ' अपनेको उदार अनुभव करते हुए उसने कहा, ' किससे कहना होगा ?"

"क्या, वहा जो दो साजवाले बठ ह, उनसे कह दो '

"क्या नही बडी खुशीके साथ '

उसने चादीकी चवन्नी बाजपर रखकर कहा "हा, उस्तादजी तो कछ सादा नाच शुरू होने दीजिए '

इसिया साविशने पसा जवम रखकर कहा, ' क्या फरमाइश है! क्या हो ? वाल्टज, पोलका या मुजरका !'

' हा, हा, कुछ भी सही "

नाचकी शौकीन वीरा अपनी जगहसे चिल्लाई, ' वाल्ट्ज वाल्टज !"

' नही, पोलका वाल्ट्ज नही, मुजरका वाल्टज ? ' औरोने भी चिल्लाकर कहा

लुबीने बीचमें रोककर कहा, "एक पोलका होने दो इसिया साविश, कृपया जरा पोलका होने दीजिए यह मेरे बाबू ह, और मरे लिए करा रहे है ' और उस आदमीके गलेमें बाह डालकर कहा, "क्यो बाबू • ठीक है न ? '

किन्तु उसने कछुएकी तरह गदन समेटकर अपनेको छुडा लिया लुबीने बुरा नही माना वह नूरीके साथ नाचने लग गई तीन और युगल घूम घूमकर नाच रहे थे नाचम सब लडकिया अपनी कमर सीधी रखती ह और चेहरा स्थिर जसे उन्हें इस नाचमें किसी तरहका कोई गहरा रस नही है मानो वे भी सब भद्र सोसाइटी महिलाओंकी तरह रस विनोद भावसे नाच रही हैं इस शोर शराबके बीचम चुप चाप उठकर अध्यापक महोदय छोटी मनकाके पास पहुचे और अपनी बाहें पेश करके कहा चलो '

वह उसे अपने कमरेमें ले गई कमरा वसे ही सस्ते ढगपर सजा था जसे ऐसे धकलोंके और कमरे एक पलग, एक मज, उसपर मज-

पोश मजपर एक आइना, एक गुलदस्ता, कुछ खाली तश्तरी, एक पाउडर बक्स दो एक फोटो, कुछ मुलाकाती कार्ड, ये चीजे और रखी थी पलगके ऊपर दीवारमे चिपटी एक बडी सी तस्वीर टगी थी जिसमें एक सुल्तान मुहमे गुडगुडी लगाए, अपने हरममें हूरोसे घिरे आराम कर रहे थे कुछ और सस्ते लोगोकी फोटो भी थीं छतसे जजीरसे गुलाबी शेडसे ढका लेम्प लटका हुआ था एक छोटी मेज और थी और तीन कुर्सिया पीछे स्टूलपर एक सुराही और गिलास रखा था

छोटी मनकाने अपनी जाकटके बटन खोलते-खोलते अपनी सदाकी नीतिके अनुसार कहा, 'मेरे प्यारे एक गिलास लेमन मगवाओ"

अध्यापकने कठिन मुद्रासे कहा, "पीछेमे, अभी नही और सब बात तुम्हारे ऊपर है यहा लमन मिलता किस कामका होगा यही खारी हल्का मिलता होगा'

लडकीने उत्सुकतासे प्रत्युत्तर दिया, "और यहा शराब है, बहुत अच्छी सब चीज अच्छी मिलती है फी बोतल दो रुपया पर तुम अगर इतने ही कजस हो, तो लो मुझे बीयर ही मगा दो क्यो ठीक है?'

"अच्छा बीयर सही"

"और मेरे लिए लमनेड और सन्तरेका गिलास भी ठीक है न ?"

'हा, लमनकी बोतल सही, पर सन्तरा नहीं पीछे हो तो हो सकता है पाछ मे तुम्हे शम्पेन भी मगा दे सकता हू पर, सब बात तुमपर है अगर तुमने खूब जोसे समझी न माने हमें खुश किया "

"तो बाबू म चार बोतल बीयर और दो बोतल लेमनका आडर दे दू क्या ? और एक चाकलेटका पेकेट भी अपने लिए ठीक है न ? क्या ?'

'दो बोतल बीयर, एक बोतल लमन, और कुछ नही मुझे पसन्द नहीं है कि मुझसे सौदा किया जाय"

'और म अपनी एक सहेलीको भी बुला लू ?"

"नही, रहने दो'

मनकाने दरवाजमेंसे भाका और पुकारकर कहा, "अजी, बाई जो दो बोतल बीयर, और एक बोतल लेमन मेरे लिए '

एक ट्रम रखकर साइमन यह सब सामान लाया और अपने अभ्यस्त हाथोंसे बोतलोंको खोलने लगा पीछे पीछे रक्षिका जकिया आई अभिवादन करती हुई बाली, "बहुत ठीक है अपने घरकी तरह बिल्कुल बे-तकल्लुफ रहिए आप ही की चीज है और मैं आप लोगोंको जो हा, सोहाग घडी के लिए बधाई देती हू '

मनकाने निवदन किया 'बाबू इन हमारी बाईजीको शामिल हाने के लिए नही कहग ? रक्षिकाजी, आइए मदद कीजिए

"अच्छा, जनाब, आपके स्वास्थ्यके नामपर लीजिए म भी एक घूट लेती हू —पर कुछ कुछ आपका चेहरा मुझे पहचाना मालूम होता है "

जमनने भी अपनी शराब पी वह चुस्कीमे स्वाद लेता हुआ पीता था और मूछोको जीभ फर फरकर चाटता था वह सोचता था कब यह औरत यहासे टले पर उसने अपना गिलास नीचे रखकर धन्यवाद दिया और बोली, क्या हुजूर दाम अभी अदा कर दीजिएगा और इस शराबकी कीमत और देर कितनी रहिएगा ?—वह भी अदा कर दीजिए पहले द देनेम आपको भी सहूलत है हम भी आराम है '

पसकी बात इस अध्यापकको भला नही लगी इससे उसकी इच्छा आका रगीन भावुक आवरण उड सा जाता था और वह अपनी नग्नताम आ सामने होती थी वह नाराज हुआ

यह क्या दहकानीपन है म यहासे भागा नही जा रहा हू और तुम्हे आदमी आदमीमें फक करना आना चाहिए तुम देखती हो, एक इज्जतदार आदमी तुम्हारे यहा आया है—यो ही, भागा गिरा कोई राहगीर नही है यह क्या बदतहजीबी है "

रक्षिका जरा धीमी हुई बोली 'जनाब, नाराज न हूजिए आप इस बीबीको तो मुलाकातपर जो देंग दग ही म नही समझती आप इस लडकीके साथ कुछ उल्टा सीधा कीजिएगा ओह यह हमारी सन

लडकियोमें म उम्दा चीज है लेकिन म आपको बीयर और लेमनेडकी कीमत देनेकी तकलीफ दूगी मुझे भी मालकिनको हिसाब देना है दो बोतलके एक रुपया, लेमनकी चवन्नी, चवन्नी एक रुपया"

'या परमात्मा, एक बोतलके आठ आने !' जमन गुस्सा होने लगा 'क्या, रुपयकी पाच बोतल कहीम म दिला सकता हू '

"तो जहा सस्ता काम हो, आप वहा जा सकते ह' जकिया भी बिगडी "लेकिन अगर आप भली इज्जतदार जगह आए ह, तो यहा का बधा दाम यही आधा रुपया है हम ज्यादा नही लेते हा, यह ठीक है तो क्या चार आने आपको लौटाऊ ?'

जमन अध्यापक जोर देकर कहा, "जी हा, चार आने ! जरूर ! और म अब आपसे चाहूगा कि यहा कोई न आए"

'जी नही आप कहते क्या है ?" जकिया दरवाजके पास जानेकी शीघ्रता करती हुई बोली, 'आपकी जगह है, जी भर रहिए अच्छा, आप खुश रह'

मनकान उसके पीछ दरवाजकी चटखनी लगा दी और अपनी नगी बाहासे जमनको आलिगन करती हुई गोदमें बठ गई

'तुम यहा बहुत दिनासे हा ?" अपना प्याला मुसकते हुए जमनने पूछा

उसके मनम अस्पष्ट अनुभव हुआ कि जो अवास्तव प्रमका व्यापार अब होने जा रहा है, उसके लिए भी हृदयाके अधिक सानिध्यकी कुछ गहरे परिचयकी, और अधिक घनिष्टताकी आवश्यकता है इस कारण अपनी अधीरताको दाबकर वह बात करने लगा सभी मनुष्य जब अकेले कामिनीके पास होत ह तब इसी तरहकी बातें छेडकर आरम्भ करते ह और नारी भी लाचार होती है कि अनायास निरानन्द, बिन स्वद बिना उत्साह, और बिना छलके भावके, आप ही आप अपने अभ्यस्त नपे तुले जवाब देती चली जाए

बोली, 'बहुत दिन हुए तीसरा महीना है"

"तुम्हारी उमर कितनी है ?"

मनकाने अपनी उमरके पाच बरसाको उडाकर कहा, 'सोलह !"

"ओह इतनी कम—उम्र हा ?' जमन अचरज करन लगा नीचे झुककर बूटके तस्मे खोलने उसने आरम्भ किए तो यहा तुम कसे आई ?"

एक अफसर था अपन घरके पास ही उसने उसके मुझे खराब किया और मेरी मा ऐसे मामलाम बडी सखत थी उनको पता लगता ता अपन हाथो मेरी जान ले लेती सा म घरसे भाग आई, और यहा आ गई "

"और तुम उस अफसरको प्रम करती थी ? यानी वह—सबसे पहले पहल समझी ?'

"प्रम न करती ता उसके पास कस जाती ? उसने मुझ विवाहका वचन दिया था लच्चा कहीका ! और जब वह मेरा सब कुछ ले चुका ता छाडकर चल दिया "

'अच्छा ता पहली बार तुम शरमाई थी ?"

'हा क्यो नही ! शरम तो आती ही है अच्छा बाबू कसे चाहते हो ? रोशनीम, या अधेरम, या लालटन जरा कम कर दू ठीक है?

'अच्छा, तुम यहास उकताती नही हो ? तुम्हारा नाम क्या है ?'

"मनिया हा जरूर उकताती हू जिन्दगी ही यह क्या है !'

जमनने जोरसे उसके आठोको चूसा और पूछा 'और तुम मर्दो का प्रम करती हो ? कोई है जिनसे तुम खुश होती हा ? जिनसे तुम्हे सुख होता है ?"

क्या नही हाग ' मनका हस पडी 'तुम्हार जसे मुझ खास पसन्द ह, जो अच्छ, भर डालडौलके होन ह

तुम उन्हें प्रम करती हो ? अच्छा, क्या करती हो ?"

'क्या ? या ही करती हू तुम भी मुझ बड अच्छ लगत हो'

जमन कुछ सकण्ड सोचता रहा उठाकर अपने प्यालपर से गुमकी भी भर लेता था तब उसने वह कहा जो हर कोई एम समय कहता है उसकी देहका अपन अधिकारम नीच पानके क्षणामें, इन अत्यन्त पत

हुए क्षणोंमें, हरेक पुरुष यही कहता है "तुम्हीं हो मनिया, तुम्हें मैं बहुत चाहता हू, बहुत ही मैं तुम्हें ले जाऊंगा, अपनी रानी बनाकर रखूंगा"

लडकीने उसकी अंगूठीवाली उंगलियां हाथमें लेकर अंगूठियोंको फेरते हुए कहा, "तुम ब्याहे हो ?"

'हा, पर स्त्रीके साथ रहता नहीं हूं वह बीमार है, और वह प्यार नहा द सकता '

बेचारी मनियाने अनायास कहा, "मुझे पता हो कि तुम यहां आते हो, तो क्या जी, वह कितनी रोए ?'

"उह, छोडो ! मनिया, मनिया, तुम जानती हो मैं हमेशा ऐसी लडकीकी खोजमें मरता हू जो तुम सी सुन्दर हो, तुम-सी सलोनी मैं खाता पीता आदमी हू म तुम्हारे लिए अलग मकान, तुम्हारा सब इंतजाम कर दूंगा और ऊपर जेब खर्चके लिए डियानीस रुपए महीना दूंगा तुम चलोगी ?"

'चलूंगी क्यों नहीं, चलूंगी'

उन्मत्त हो, वह उसे चुम्बन करने लगा किंतु उसके कायर हृदयमें एक गुप्त आशंका भी पीडा द उठा उसने कांपती घबराई सी आवाजमें पूछा "मनिया, तुम नीराग ता हो न ?"

'क्यों ? हा, मैं निरोग हूं हर शनिवारको यहा डाक्टर मुआयना करने आता है"

पांच मिनट बाद वह चुम्बन झुककर अलग चली गई उसके बाद उनमें चलकर साथ रहनेकी या परस्पर प्रेमकी बातचीत नहीं हुई अपन मनकाक ठहा बनी रहनेपर असन्तुष्ट था उसने रक्षिकाको बुलवाया मनियाने ड्राइंग रूममें पहुंचकर आइनेमें देखकर अपने बाल संवारते हुए कहा, "रसिका जी बाबू तुम्हें बुलाते हैं

रसिका चली गई लौटी तो उसने पाशाको बुलाया अलहदा ले जाकर पाशाके कानमें कुछ कहा फिर जब लौटी, तब पाशा उसके साथ न थी उसने हंसकर पूछा, 'क्या बात है मनका तुम अपने बाबूको खुश

नही कर सकी ? वह तुम्हारी शिकायत करता था कहता था, वह भी कोई औरत है जस लकडीकी औरत हो, जस बरफकी सिल ! मने उसके पास पाशाका भेजा है '

मनकाने मुह बनाया और थूककर कहा, 'क्या मनहूस आदमी है बात ही करता जाता है पूछता है म चूमता हू नो तुम्ह कमा लगता है ?अच्छा लगता है ? कुत्ता कहीका ! कहता है म तुम्ह ले जाऊगा और घरम रखूगा,"

जक्सिन साधारण भावसे कहा, सब ऐसा ही कहते ह "

किन्तु जनी जो सवेरेसे ही बिगड रही थी, एकदम भभक उठी लाल हाकर दोना तरफसे अपन कटि प्रदेशको हाथोस जोरसे पकडकर उसने चिल्लाकर कहा, "ओह, लफगा ! कमीना ! चोर कहीका म उस बुड्ढे, मनहूस जानवरको जिदा पाऊतो कान पकड कर आइनेके पास ले जाकर खडा करू और वह देख अपनी थूथडी, कसी खूबसूरत है ! खूबसूरत नही है ? ता तब और खूबसूरत लगगी जब मुहस लार बहेगी, आख फट रही हागी गला घुट रहा हागा और स्त्रीके सामने तू लबलबा रहा होगा और तू चाहता है तरे सने हुए चान्दीके टुकडके सामने हम बतासे सी घुल जाए तरे लिए पके पानकी चरमर करके टूट, तेरा प्रम पानके लिए हमारी आखें खुमारस माथपर चढने लग ! म कहती हू कि उसकी थूथडीमें म एस जमाऊ एस जमाऊ कि खून आने लगे '

'ओ जनी ! शि, बन्द करो ! एमा उडवानीने उसकी बातस लज्जित, भीत, होकर उस रोकते हुए कहा

जेनीने कटकर कहा 'म नही बन्द करती ! '

लेकिन वह आप ही आप चुप हो गई और अपने फले नथने और सुन्दर काली आखोम प्रज्वलित अग्नि लेकर क्रुद्ध तेज कदम पटकती हुई वहासे चली गई

दान शने ड्राइगरूम भर गया यामाके पुरान परिचित मिया गबदू भी आ पहुचे दुबले लम्ब, सुबड, बुडढ आदमी ह नाक लाल निवारीका लिबास पहने थ, और ऊचे दूट जयम एक छडी सी भाक रही थी दिनके दिन, और रातके रात यह आदमी किसी सराय या दारु खानेम काट देता था वहा चुटकुल छेडता, कहानिया वहता और हाव भाव जताकर लागाका मन रिझाता वह सदा दारुके नशम ब हाल मा रहता यहा नौकरास, मालिकामे, लडकियाम सबगे उसका रब्त जब्त था मालकिनस लगाकर नौकरानी तक यहा सब उस उपेक्षा, दया और तिरस्कारके भावसे देखती पर उसके लिए किसीके मनम मल न था कभी कभी उसस उनका कुछ काम भी सध जाता प्रमियाकी चिट्ठिया प्रमिकाआके पास पहुचानम वह अच्छ काम आता था बाजा-रसे भट कोई चीज मगानी हा तो वह था अपनी कतरनी-सी जुबानके और आम सम्मानके अभावके कारण किसी न किसी प्रकार वह अपरि-चिताके जमावमें भी अवसर जा पहुचता और उन लागास अपने ऊपर कुछ खच तक करा लेता था इस तरह मिल पसेका वह इधर-उधर कही न ले जाता, सब इन लडकियो पर ही खच करता था कभी बचाके कुछ पसकी अपने लिए बीडी ल ली ना ले ली इस तरह सब उसके आदी हो गय थ, और थाडी बहुत अपनी तबियत उसस बहला ही लिया करते थ

मिया गबदू आए, बड तपाकस माइमनस हाथ मिलाया, और ड्राइग-रूमके दरवाजेपर आकर रुक गए टापी सिरक एक ओर रखी थी, और आप लम्ब लम्ब अजीब जचते थ नूरीने देखत ही कहा, "लो मिया गबदू आ गये कहिए मियाजी बस कह डालिए"

गबदूने फौरन विचित्र आकृतिया बनानी शुरू की और सनानी ढग से सलाम करके कहा, "ई जनाबसे आपको वाकिफ होना चाहिए वह

ऐसी बाइज्जत जगहोके पुरान मेहमान और दोस्त ह   नाम? नाम है जनाब इकबाल बहादुर, नवाब ब मुल्क, रइस आजम व-परगना—अजी मिया तानसेन, और उस्ताद मण्डसा" गायकाकी ओर मुडकर उसन कहा, जरा हम सूइया वाली और वह सावनकी बहारवाली चीज सुन वाइएगा   और, मोहतरिमा बी जकिया साहिबाका सलाम   ओहो, ता इन दिनो बोसाकी मुमानियत है   अच्छी बात है, नाम कर रक्खूगा और आह, किशमिशी मेरी छनन मनन गुड़िया !"

और इस तरह किसीको छडता, किसीसे मजाक करता, वह लडकियोम घूमता हुआ आखिरकार मोटी क्टिीके बराबर आ बठा क्टिीने अपनी एक टाग उसकी टागपर रख ली, घुटनोपर कोहनिया टिकाई, और हथलीपर मुह रख, मिया गवदूका दखने लगी जो अपने लिए एक चुरट बनानेमें लग य

'क्या बात है, मिया गवदू, तुम इससे कभी थकते ही नही हमेशा ऐसे ही घुमा घुमाकर चुरट बनाते रहते हो"

गवदू मिया न फौरन भौ और सिरकी गजी चमडीको सिकोडा और नजममें कहना शुरू किया

मेरी सिगरेट प्यारी,
मेरे अकेले की साथन,
क्यो न म तुझ प्यार करू
या ही नही,
किस्मतके हुक्मसे,
सब तुझ मुह लगातह

किटीने निश्चिततासे कहा, 'पर गवदू, तुम तो जल्दी ही बोल जाओग"

'तो उसमें ऐसी क्या बात है बीबी"

बरकाने कहा गवदू कोई और मजदार नजम सुनाओ"

आज्ञानुसार तुरन्त अपना हुलिया अजीब बदलकर उसने गाना शुरू किया

इम उजले आसमानम तारे बहुत ह,
उन्हें गिननेका कोई रास्ता नही,
पर हवा धीमेसे कानम कहती है, है
लेकिन सच कोई रास्ता नही
फूल फूल रहे हैं, तो ए मुर्गों,
तुम भी क्यो नहीं गाते ?

"इससे भी एक प्यारी चीज और पेश करता हू मुलाहजा हो'
और सकम्प ध्वनिसे उसने गाना शुरू किया

वह अफसर चला आ रहा है,
पीछ पीछे जा रही है
लडकी,
चाहती है,
कहीं, जरा वह ठहर जाए,
वह उसे रिझाये,
और उसकी दुलहिन बन जाय,
पर लो अफसर जो सुनता भी हो
उसने तो घोडे को एड लगाई,
मूछें मरोड लीं,
और घोडे पर फुदकता,
वह भाग ही चला

इस तरहकी गधापच्चीसीम वह रातो रात इन कमरोम काट देता है एक विलक्षण मानसिक साहचर्य, सहधर्मित्व और जातीय अनुकूलता भी इनमें पैदा हो गई है लडकिया जैसे इस आदमीको अपनेमें का ही एक समझती ह इसका कभी कभी छोटा मोटा काम चला देती है, कभी अपने पसेसे इसे दारु वारु भी खरीद दिया करती ह

गबदूके कुछ देर बाद, नाइयोंकी एक टोली आई उन्ह आज काम से छुट्टी थी आते ही वे हल्ला मचाने और तरह-तरहकी खुशियां मनाने लगे लेकिन यहा चकलेमें आकर भी वह अपनी दुकानकी, छोटे

मोट हिसाब किताबकी और अपने मालिकोंकी बीवियोंकी बात करनेमे न चूके य लोग काफी हदतक बिगड चुके थ झूठ य बोलते थ और भावी जीवनके लिए विलक्षण सूझें इन्हे सूझा करती थी विचित्र मसूबे यह बाधा करते मसलन सोचते कि कही किसी सेटके यहा टिप्स लग जाय फिर सेठानीको गुपचुप फसाया और बस मौज ही मौज वे अपने पसीनेकी कमाईके पसको अधिकसे अधिक लाभ पूवक खच करना चाहते थे इसलिए उन्होने यामाके चकलेमे एकाएक जान पहचान करनेका निश्चय किया हा, ट्रेपिल वालेमे जानेका साहस उनमें न हुआ वह जगह ऊची थी पर यहा अम्मा मरकानीके यहा आकर इन्हें किसी तरह हिचकिचाहट नही हुई आते ही नाच गानके साजके लिए फमायशकी और नाचमे जी खोलकर हिस्सा लिया पर इसमे आग बढकर लडकियोके बारेमें मोल-तोल उन्होने नही किया कहा

'और जगह भी देख दाख ल फिर हम अभी लौटकर आ रहे ह"

और भी सरकारी मुलाजिम यहा बहुतेर आन गए चमकते बूट पहने, और जेबमे से भाकता हुआ रगीन रूमाल लिए बहुतसे स्कूल कालेजके नए लडके आए और कई इज्जतदार अफसर व दूसर लोग भी आए य यहाकी मालकिन और मेहमानोंके सामने पडकर अपनी इज्जत जानेके ख्यालसे बढ झिझकतेसे और दहशत मन्द रहतेथ धीरे धीरे डाइगरूममे एसा कोलाहल मचा और वातावरण मदमत्त हो उठा कि जितने भी थ सबके मनकी हिचक हवा हो गई और वे गरमाने लग

एक सोनाका प्रमी आया करता था वह बराबर नियमसे आता आकर अपनी प्रमिकाके पास बठ जाता और घण्टो रसभरी, अधमुदी-सी आखोंसे उसे देखता रहता था कभी वह आह भरता कभी निढार हो रहता अक्सर उन दोनोंमें कलह भी हो जाती वह कहता—

'तू क्यो यहा चकलेमें रहती है ? क्यो इन परवके दिनोमे मोधका भोजन नही करती ? क्या अपने धरम और अपने कुटुम्बसे बिछुड कर यहा आ गई है ?

एसे समय अधिकतर सरगिना जनिया इस ओर शरावेमें उसके

पास पहुचकर ओठ समेटकर कहती —

'क्या बाबू, यहा क्या बठ हो ? बैठे पीट सेव रहे हो ? जाओ, उस लेकर जरा वक्त ही काट आओ "

ये दोनो यहूदी थ साथ ही दोनो एक जिलेके रहनेवाले जान पडते थ परमात्माने इन दोनोको मानो इसीलिए बनाया था वे एक दूसरेको उत्कट, हार्दिक, गहरा प्रम करनेके लिए मानो लाचार थ लेकिन नौकरी, धन हीनता, मनका सकोच, भय आदि बहुत सी चीजोने बीचम आकर इन दोनोको पथक भी कर दिया पर प्रम प्रम है विपदाओ कठिनाइया और विविध लाछनाओको पार करके जसे तस इस आदमी यादरन अपनी प्रेमिकाको ढूढ ही निकाला और वह आकर यही एक स्थानीय दवाखानमें छोटा मोटा क्लक बन गया वह सच्चा, कट्टर लग भग धर्मान्ध यहूदी था वह जानता था कि सोनाको स्वय उसकी माने बुरदा फरोशोके हाथ बेंचा है फिर उसके इस हाथसे उस हाथ बार बार बचे और खरीदे जानेकी भी बहुत सी दद और हैरतनाक बातें उसे मालूम थी उसकी सच्ची यहूदियाना पवित्र पाप भीरु आत्मा इन विचारोकी यादमें काप जाती थी पर प्रेम महान् है यह प्रम सब कुछ जीत लेता और हर सन्ध्या यह आदमी अन्ना मरकानीके ड्राइग रूमम आ उपस्थित होता वह अपने थोडेसे वेतनम से पेट काटकर एक आध भी रुपया बचा पाता कि सोनाके कमरेमें आ पहुचता पर मिलकर सुख न सोनाको मिलता था, न उसको पर एक दूसरकी देहोको पास पाते तो उनसे रुका किसी भाति न जाता पर दहिक विषय सभोगकी क्षणिक तप्तिके बाद वे दोनो रोते, एक दूसरेको कोसते और खूब कलह करते इन मुलाकातोके बाद जब सोना ड्राइग रूमम लौटती, उसकी आख फूली होती और पलक लाल किन्तु बेचारे यादरके पास पसा कभी कभी ही हो पाता था इससे अधिकतर शामको अपनी प्रेमिकाके पास आकर घण्टोके घण्ट वह खाली उसे देखता बठा रहता था —मानो चुपचाप जलते जीसे इसीकी प्रतीक्षाम बठा रहता हो कि कब कोई मुलाकाती आए और सौदा पटाकर उसकी सोनाको साथ ले जाए ! और इस तरह

जब वह किसीसे निबट निबटाकर फिर उसके पास आकर बैठती त
अनजानम वह उसे खूब खरी खोटी सुनाता सोनाकी ओर बिना
मुंह फेरे धीमे धीमे सब कहनी अनकहनी वह ऐसे कहता था कि
का ध्यान उधर न हो और इस बातचीतके समय सोनाकी बडी
प्यारी सुदर आखोमें मानो चितामें जलती हुई एक सतीके जैसा अ
विनीत तरल भाव आ रहता था

एक चश्मेकी दुकानम काम करनवाले जरमनोकी बडी सी टो
आई एक खाद्य पदार्थके स्टोरके कई क्लर्क भी आए और यामाके
परिचित दो और गाहक इन दोनोंके सिरकी खाल चिकनी थी औ
कनपटियोंके दोनो ओर छोटे-छोटे चिकने मुलायम बाल थ यहाके म
लोग एकको नन्ने कहते दूसरेको मिर्जा उनका भी वहा उसी तरह स्वा
गत अभिनन्दन हुआ चश्मेकी दुकानवाले कालू और स्टोरवाले बदलू
का भी प्रफुल्लतापूर्वक चुम्बन और चिल्लाहटके साथ स्वागत हुआ इस
स्वागतसे मन ही मन उन्होंने अपनेको गौरवशाली अनुभव किया चपल
नूरी झटपट पता लगाकर कि कौन कौन आए हैं अपनी आदतके अनु
सार चहकती फिरी

"तुम्हारा बाबू आया है, जनी ' अथवा 'अरी ओ मनका, देख,
इधर तेरा कौन खडा है ! '

मिर्जा अपनेको गायक प्रसिद्ध किए हुए था वह गायक क्या था,
गायकका जूठन भी न था एक परचूनिएकी दुकानपर बैठता था यही
मिर्जा आया, और प्रसिद्ध कविकी कवितापर अत्याचार करता हुआ एक
दम गाने लगा

—मेरी प्रिया, आ, आ, आ जा, आ जा '

वह जब आता, इसी कण-कटु आवाजमें यही गीत गाता हुआ
आता था

फिर लगातार नाच गाना होने लगा, तिमिराका प्रेमी मनका भी
आ पहुचा लेकिन सदाकी भांति न वह गान थी न वह धूम न खूब
खाने पिलानेकी तैयारी उसने प्रदर्शित की, न कुछ और ही किया

जब वह किसीसे निपट निबटाकर फिर उसके पास आकर बठती तब सबके अनजानम वह उस खूब खरी खोटी सुनाता सोनाकी ओर बिना सीधा मु ह फर धीमे धीमे सब कहनी अनकहनी वह एस कहता था कि लोगो का ध्यान उधर न हो और इस बातचीतके समय सोनाकी बडी-बडी प्यारी सुदर आखोमें मानो चितामें जलती हुई एक सतीके जसा अत्य त विनीत तरल भाव आ रहता था

एक चश्मकी दुकानम काम करनवाले जरमनोकी बडी सी टोली आई एक साथ पदार्थके स्टोरके कई क्लक भी आए और मामाके सु परिचित दो और गाहक इन दोनोके सिरकी खाल चिकनी थी और कनपटियोंके दोनो ओर छोट छोट चिकने मुलायम बाल थ यहाके सब लोग एकको नन्हे कहते दूसरेको मिर्जा उनका भी वहा उसी तरह स्वागत अभिन दन हुआ चश्मकी दुकानवाल कालू और स्टोरवाले बदलू का भी प्रफुल्लतापूवक चुम्बन और चिल्लाहटके साथ स्वागत हुआ इस स्वागतसे मन ही मन उन्होन अपनेको गौरवशाली अनुभव किया चपल नूरी झटपट पता लगाकर कि कौन कौन आए हैं अपनी आदतके अनु सार चहकती फिरी

'तुम्हारा बाबू आया है, जनी अथवा अरी ओ मनका, दख इधर तेरा कौन खडा है !'

मिर्जाने अपनेको गायक प्रसिद्ध किय हुए था वह गायक क्या था गायककी जूठन भी न था एक परचूनिएकी दुकानपर बठता था यही मिर्जा आया, और प्रसिद्ध कविकी कवितापर अत्याचार करता हुआ एक दम गान लगा

'—मेरी प्रिया आ, आ आ जा आ जा'

वह जब आता, इसी कण-कटु आवाजसे यही गीत लादता हुआ आता था

फिर लगातार नाच गाना होन लगा, तिमिराका प्रेमी सेनका भी आ पहुचा लेकिन सदाकी भाति न वह शान थी, न वह अदा न खूब खाने खिलानकी तयारी उसन प्रदर्शित की न कुछ और ही किया

जाने क्या वह उदास था दाहने पैरसे कुछ लडखडाकर ठिठककर चलता था और चाहता था कि लोगोका अधिक ध्यान उसकी ओर न हो शायद आजकल उसके कामधामके दिन भले न थे चलते चलते सिरसे तनिक सकेत उसने किया, तिमिरा झट ड्राइग रूमसे बाहर आ गई, और वे दोनो उसके कमरेमें गायब हो गए मजीतलाल भी आया वह एक्टर-की तरह साफ, सुथरा, लम्बा, डाढी मूछ सफा अपने चिकने-चेहरे और चढी हुई आन-बानके कारण हल्का और आछा जचता था, जसे मुसाहिब

स्टोरके क्लक युवकोचित स्फूर्तिके साथ, और पुस्तकमसे सीखी हुइ नियमानुकूलताके साथ नाच रहे थ यह दखकर लडकियोने भी उमीक अनुकूल किया नाचमें बहुत कम हिलने जुलने और सिरको सीधा बस जरा एक ओरको झुका रखकर, एक प्रकारके अलस, व्यथित, थकित भावम छोटे छोटे कदम रखकर नाचनको शिष्ट और कुलीनताका चिन्ह समझा जाता है बीच-बीचम अभ्यस्त और लापरवाह ढगमे कभी कभी नाचते नाचते रुमालस जरा हवा कर लेना भी जरूरी होता था सो यह सब मानो इसी तरह बहलाकर अपने मनको समझा लेना चाहते थे कि वे भी ऊच, कुलीन सोसायटीके लोग ह, और जरा यू ही मन बहलाव और शिष्टताके नाते यहा कुछ नाच ले रहे ह पर फिर भी वह एसी लगनसे नाच रहे थ कि उनके चेहरेसे पसीनेकी धार छूट आई थी

चकलास भरी इस यामाकी गलियोम अबतक चार छ टण्ट बखेडे घट भी चुके थ कोई आदमी लहू लुहान सडकमेसे भागता जाता दीखता चादकी पीली रोशनीम लहूसे सना वह काला भूत सा जान पडता था उसे अपनी चोटकी चिता न होती, वह गर्माया होता और बडबडाता हुआ अपनी टोपी वापिस लेने पहुचता जो भमेलेमें कही गिर गई होती उसी तरह छोट यामामें कही जहाजके मल्लाहोमें ही छिड बनी, तो कहीं मजदूर ही भगड पडे और इधर थके हारे बाजेवाले ऊघते हुए आदतके भरोसे उगलिया चला चलाकर उन्मादीसे कुछ बजाते रहते थे

रात ढलते तक बस यह हाल रहता था

तभी सहसा सात कालिजके लडके आए, साथ एक नए प्राफसर थ और एक पत्रकार

९

एक सम्वाददाताको छोड कर ये सब सवेरेसे बसतोत्सव मना रहे थे कुछ परिचित बालिकाए भी उनके साथ थी वे साथ साथ दिन भर नहाया किय तरे किश्तीमें सर की, नदी तटपर झाडियोके झुण्डोंके बीचमें खीर पका कर खाई, अपने हाथो बनी हल्की शराब पी, और गीत गाए इस तरह कही साझ होते बस्तीको लौट उनकी नावके दानो पार्श्वोंमें नदीका काला पानी लहराता हुआ आ आकर लग रहा था तारोकी और बिजलीकी प्रकाश पक्तियोकी छाया उस पानीमें पडकर आपसम हिलमिल कर नाच रही थी जब वे नावस तटपर उतरे डाडाके स्पशस उनकी हथलिया गम थी बाहो और टागोंके पट्ठोम हल्का मीठा सा दद था और तमाम देहमें एक शान्त, स्वस्थ, अलस थकान सी फली थी

तब वे अपनी तरुण सहयोगिनियोको अपने अपने घर पहुचाने गए मकानोके सामनेके बगीचोंके द्वारोसे उ होने हार्दिकतामे खूब जोरासे हाथ मिलाकर परस्पर अभिवादन पूवक बिदा ली

तमाम दिन चहल पहल और मौजम बीता उस आनन्दमें थोडा बहुत ग्राम्य अगाम्भाय रहा हो और कुछ चाञ्चल्य भी, कितु उसमें युवकोचित सयम था कोई अपनेको भूला नही था और जसा कि अक्सर हुआ करता है, पारस्परिक बढा बढी असन्तोप या भीतरी मन मुटावकी छाया तक भी उनके इस आजके मनोरञ्जनपर नही पडी सूरजकी खिलती धूपम मिट्टीमें, नदी तटकी ताजा वायुम और पानी और घासकी सोंधी महकमें खेलते, नहाते तैरते, और नाव खेते देहमें एक स्फूर्ति और शक्तिका सचार हो आता है उसकी सहज मस्तीन और

अपन परिचित घरोकी इन सुदर, पवित्र, सस्मित, और कुशल कयाओ की उपस्थितिन नि सन्देह उनमे एक आनन्दप्रद मन स्थिति उत्पन्न करनेमें और उनकी आजकी इस हार्दिक प्रसन्नतामें बडा सहयोग दिया लेकिन, मानो उनकी चेतनाके अनजानमें ही उनमें रसोन्मुखता जाग पडी जब बस्तीके घरसे बाहर हम जाते है, चिन्ता शून्य, हल्के और उन्मुक्त, सूरजकी प्यारी धूपमे चलते ह, मिट्टीसे खेलते ह पानीमे नहाते ह और घासपर लोटते है, तब मानो इन सबके स्पर्शसे हमारे जीके भीतर दबी हुई निर्बाध स्वतन्त्र, सनातन, और सुदर दैवी पशुता-सी जागती है उस वस्तुको मनुष्य साधारणत आईन कानूनकी सहायतासे भुलाए रखता है इस प्रकारका उन्मुक्त अवकाश पाकर निमल, निर्दोष चित्तसे अपन आपके साथ क्रीडा किए बिना आदमीसे नही रहा जाता तो जब बनती हुई चायके चारो ओर अध लिटी, अध-ढकी, कया मूतिया दिखाई देती थी, जब वे नदीके लहरोंते जलम गयके व्याजस चिल्ला चिल्ला उठती थी, धूपसे गरमाई उनकी देह परके वस्त्रोमसे जब महक सी फूटती थी, उन्हें नावमें बठानकी सहायताम जब हठात उनकी गातका स्पश हो जाता था, जब शुद्ध सखा भावसे परस्परका स्पश और आलिगन उनमें होता था, तब आप ही आप उनके तरुण गातम शुद्ध, स्वस्थ, सपुलक रसोन्मुखताका भाव लहराता सा व्याप उठता था

मा रातको जब विद्यार्थियाके उपहार गृहका दरवाजा बन्द होनेका समय आया, और हल्की मदिरासे स्फूर्तिमान और भोजनसे छके हुए ये अपने छतके नीचेके बन्द कमरेसे निकल कर बाहर सडकपर आए, जहा ठण्डी अधियारी रात बचन सी फली थी, आसमानके तारे और धरतीपर की रोशनियां जाने क्या निमन्त्रण देती जान पडती थी, जहा हवामें सोये फूलोंका सौरभ व्याप्त था, जिससे मनम तरगें और देहम कपकपी सी उठती थी—उस समय उनमेंसे हरेकका सिर गरमा रहा था, चित्तमें भीनी भीनी प्यास-सी थी, और जाने कैसी भीनी-भीनी आकाक्षाए भीतर तरती हुई मालूम होती थी आरामके बाद नसोमे और धमनियाम दौडते हुए लाल लहूको अनुभव करना, देहमें तारुण्यको

फूटते और बहते हुए अनुभव करना कैसा अच्छा लगता है शरीरका प्रत्यक अवयव जब, लगता है, उत्सुक, उद्यत, हृदयकी हर चाहको कायमें परिणत करनेके लिये आज्ञाकांक्षी है, तब हम कैसा प्यारा लगता है जी होता है कि बिना शब्द, बिना बिचार, बिना चेतना, आदमी अविकृतावस्थाम निर्विकल्प जैसे बस भागता ही चला जाए ओससे भागी घासपर किसी कामिनीके हल्के पद चिन्होंका अनुगमन करता हुआ खोया चला जाए अथवा अपने पूरे कण्ठको खोलकर चिल्ला कर पुकारे, 'ओ तू वहा है ? मेरी बाहे खुली ह तू आ !'

अब उनके लिए बिखरकर अलग अलग होना कठिन था तमाम दिन जो साथ साथ बीता, सो सब रिल मिलकर अब मानो एक लच्छस एक और एक प्राण हो गए जसे आपसम गुथा मिथा और उलझा हुआ जानवरोका एक एक गुच्छा हो जाता है वैस ही मानो ये इतने जने मिल कर एक इकाई बन गए थ प्रतीत होता था इनमस एक गया कि सतुलन भग हुआ और राग टूटा सब मानो एक सुरपर आ कस थ और एक इक्विलिब्रियम सम्पन्न हो गया था वह टूटा कि फिर जुड़गा नही और इसलिए वे कभी गुच्छम साथ साथ किसी पटरीपर ही चलते रहते कभी यो ही कुछ देर बठकर गप्प उडाते, या सडकके बीच चलकर मागमें अवरोधक बनते किंचित दम्भपूवक वे आपसम चर्चा करत थ कि बाकी रात कहा चलकर बिताई जावे जान पडा कि बाग दूर बहुत है, और वहा अन्दर जानेके लिए टिक्टके पस भी दने पडत ह और उस रातकी अनुरजन शालामें सामानकी कीमत भी बहद ज्यादा होगी और थियटरोके भी प्रोग्राम कभीके खत्म हो चुके होग विनय पालिवालने कहा, चलो जी मेरे यहा चलो बीयरकी एक दजन बोतलें ह, कुछ और शराब भी हो जाएगी" लकिन लोगोको यह बात पसन्द न आई कहा आधी रातको किसी कुनबेवालेके घरम जात फिरें कि दब दबे पाव जीना चढ़ना हो और घुस फुस बातें करनी हो कि कोई सुन न ले और जाग न जाए

'मै बताऊ भाइयो, चलो किन्हीं उनके यहां चलें ' 'यह सही

चीज रहेगी" मानो निर्णायक भावसे लखनपालने कहा वह कालेजका पुराना विद्यार्थी था कुछ लम्बे कदका, और झुका हुआ चेहरा कुछ रजीदा विश्वासोंमें वह नास्तिकवादी था, और कमत बिलियर्ड, घुड-दौड और ताशमें जी डालकर खेलनेवाला जुआरी वह उदारतापूर्वक मानो भाग्यसे बद-बदकर बडे दाव लगाकर जुआ खेलता था पिछले दिन ही उसने एक क्लबमें एक हजार रुपए जीते थे वे रुपए उसकी जेबमें ऐसे जल रहे थे कि जेबमें छेद कर दग और वह निकलेंग

"और नहीं तो क्या ठीक तो है किसीने उसका समर्थन किया, "चलो, वहीं चलें"

'फायदा क्या है तमाम रातका किस्सा है" तीसरा ऊपरी उकता हट और बनी बुद्धिमानीसे बोला

चौथेने माना जमुहाई लेकर कहा, "भाइयो, घर चलो आ आ चलो जी चला आज भरकी काफी सैर हो गई"

लखनपालने कटाक्षके साथ कहा, "सोते सोते तो तुम कोई भाड फोडोगे नहीं—अच्छा प्रोफेसर क्या आप चल रहे ह ?"

किन्तु यह उपआचाय यारश्कर जल्दी माननेवाला आदमी न था प्रतीत हुआ, वह सचमुच खीज उठा है पर जैसे कदाचित् उसे स्वय पता न था कि उसके चित्तकी किसी अँधियारी दरारमें उसीके भीतर जाने क्या छिपा हुआ है

"छोडो मुझ लाखन" उसने कहा, "भाइयों, यह पातक है अपराध है गधापन है—यह जो आप करने जा रहे ह हम अभी कसा रमणीय, प्रसन्न, सरस, और मग्न जीवन बिताकर चुके ह लेकिन नहीं, तुम्हे फिर भी मदहोश होकर कीचमें लोटनेकी तबियत होती है नहीं, म नहीं जाऊ गा'

लखनपालने शात कटाक्षसे कहा, "फिर भी, यदि म भूल नहीं करता और बहुत दूरकी नहीं दो एक मौसम पहलेकी बात याद करता हू, तो देखता हू, श्रीमान भावी आचार्यके साथ कुछ और लोग भी, एक जगह डटे हुए शराब ढाल रहे ह गिलास बजा रहे हैं नाच-नाच रहे ह

मौज कर रहे हैं और वे बाकी कुछ नही छोड़ रहे ह—सच है ?"

लखनपालने सच कहा था छात्रावस्थामें और अतिरिक्त प्रोफसर की अवस्थामें भी, यारश्करने अनगल, स्वच्छन्द, मौजी, जीवन ही बिताया था होटलोमे, शराबखानोम, चकलाम सब कही वह परिचित था उसकी स्थूल साधारण कदकी गोलाकार आकृति, उसके फूले गुलाबी देवोपम गालोकी स्वस्थ आभा, तर, प्रसन्न आख, मुखर स्वभाव, वाचाल तबियत और तेज हसी—अबतक इनके लिए उसकी इन जगहोमें याद की जाती है

उसके साथियोको पता नही चलता था कि कहासे अपने पाठ्य विषयोकी पुस्तकोको पढनेका समय यह निकाल लेता था लेकिन अपने काममें वह सदा ठीक रहता और परीक्षाओमें सदा प्रतिष्ठाके साथ पास होता रहता था प्राफेसरोकी आरम्भसे उसपर आख थी अब यारश्कर धीर धीरे अपने पुराने साथियो और बोतलके यारोको तजने लगा अब अनिवाय रूपम उसका मिलना बोलना प्रोफसरोंसे होता था, और वह उन्होके बीचम अपने सामाजिक साहचयका क्षत्र बनाकर उसे बढा रहा था अगले वषके लिए कालिजकी आरम्भिक श्रणियोम रोमासपर, व्याख्यान दनका काम उसे मिला था और एसे मौके कम न होत थ जब वह बातचीतमें अन्य नवीन प्रोफसरोकी तरह न कहता हो—हम प्रोफेसर लोग, विद्यार्थियोसे जान पहचानकी स्वतन्त्रता, उनके साथका आवश्यक सम्पक, सभाओ, प्रदशनो आन्दोलनो, और बहसामें सहयोग—ये सब बातें अब उसकी उन्नतिमें अधिक सहायक न थी इसमें अब उसे कुछ टोटा ही दीख पडता था, और वह इनसे बचता था किन्तु नए तरुणोम प्रिय और परिचित बने रहनेका मूल्य भी उसे ज्ञात था, और इसलिए अपने पुराने साथियोंसे एकदम सम्बन्ध तोडनेका निणय भी उसने नही बना लिया लखनपालके शब्दोने तो भी उसे भडकाया बोला 'ओह छुटपनम हमने क्या-क्या किया सो कहनेसे बनता क्या है चीजें हम चुराते थ कपड हम खराब करते थे, कभी चीटें मक्खीको पकडकर, उनके पर और टाग भी तोडने लगते थे" यारश्कर गरमाकर तेजीसे बोलने

लगा, "ठीक, तब करते थे लेकिन, इन सबके अन्त होनेका दिन भी आता है मर्यादा भी कुछ वस्तु है निःसन्देह, सज्जनो, आपको कुछ सिखाने, कुछ परामर्श देनेका अधिकार मेरा नहीं किन्तु हम अपनेसे समझदारीको माना करें आदमीको अपने साथ ईमानदार रहना होगा। ८ न्व सहमत हू कि वेश्यावृत्ति मनुष्यताका सबसे मैला दाग है इसमे भी सहमत हू कि इस पातकमें अपराधी स्त्री नहीं है दोषी हम पुरुष हैं जब माग होती है तो दुकान भी खुलती है अब, सब जानबूझकर अपनी सुबुद्धिके खिलाफ शराबके नशेमें पडकर यदि मै वेश्यालयमें जा पहुचता हू तो मै तिहरा अपराध करता हू पहला अपराध उस बेचारी भोली स्त्रीके प्रति जिसे मैंने अपने चादीके रुपएके जोरपर अत्यन्त निद्य जघन्य गुलामी तक झुकनेको लाचार किया दूसरा मनुष्यताके समक्ष, कि मैंने अपनी क्रूर वासनाके लिए घण्टे-दो घण्टेको नारी देहको किराए पर प्राप्त किया और इस्तेमाल किया, और इस प्रकार अपने कृत्यसे वेश्यावृत्तिकी आवश्यकताका समर्थन किया अतमे यह घोर अपराध है अपने निजके प्रति अपने अन्तःकरण और चित्तके प्रति और तर्कके समक्ष भी '

'छि !" लखनपालने अपने मुहके भीतर देरसे रुकी हुई वितृष्णाको मानो इस सम्बोधनमें निकाल देते हुए बारीक आवाजमें एक और सिर लटकाकर कहा, "हमारे फिलास्फर साहब, वहा अपनी रफ्तारपर छूट पडे हैं कुछ बात भी हुई ! नाकको सीधी पकड लो, या घुमाकर पकडो, एक ही बात है '

बाक मजाक उडा देना आसान है " यारक्करने कहा, "लेकिन मेरी रायमे इसके अभागे जीवनमे विचारकी इस निर्बलता और चरित्रकी अस्थिरतासे अधिक शोचनीय बात और नहीं है आप कहेंगे, चकलेमे एक गया न गया इसमे तो कुछ बन बिगड जाएगा नहीं मेरे एक बार जानेसे, न जानेसे, दशाकी अवस्थामे क्या कोई फर्क पड जाएगा ? इसी तरह पाच साल बाद हम कहने लगेंगे कि घूस अलबत्ता बुरी चीज है, लेकिन भाई बच्चे हैं, कुनबा है और फिर तो दस साल बाद हम पक्के पूरे पुण्या-

रमा समाजोपजीवी रशियन लिबरल ही बन जाएगे व्यक्तिगत स्व
की बात करग अफसर नामके उन निकम्मे लफगोके भाग सलाम
ऍगे जिहे हम नफरत करत ह और अपने कमराम जाकर प
आरामकी नीद सोएगे, कहेंगे, देखो भाई, भडियोमे रहना तो भडि
कर रहना एक नेताने एक बार ठीक ही कहा था, 'हमारे वि
सरकारी दफ्तरोके भावी हेड क्लक ह'

'भावी क्लक नही ता भावी प्रोफसर!' लखनपालने कहा

'लेकिन गजबकी बात तो यह है" यारदकरने सुना अनसुना क
इस चोटको बचाते हुए कहा "गजबकी बात तो यह है, हम सब
अभी अभी नदीके रम्य तटपर कसे विमल विहार और विनोदमें
थे और साथ हमारे कौन थी ? किशोर कयाए जा कुलीन
सुदर स्वस्थ और सुरभित तब हम अपने आपको कसे हृष्ठ,
उदाराशय, मगलमय और प्रमुदित पा रहे थ पर अभी हाल
विदा लेकर आए ह कि रडियोकी बात करने लग ह ! हम सब
एक क्षणके लिए कल्पना तो कर कि हम अपनी अपनी बहनोंके साथ
थ, हस-बोलकर खुश हो रहे थ कि यहासे आते ह और सीध
चल पडने ह – यामा ! ओह, क्या यह कल्पना सुघर है सुद
सहज है ? ओह !

"किन्तु समाजकी अनप्त काम तष्णाके निकल कर बह जानेके
कुछ मोरिया भी चाहिए कि गदगी न फले" विद्वत्ता पूवक सुवेश
वालने कहा वह लम्बे कद का जवान और कुछ भक्की था त
कपड थे नाकपर बिना फ्रमका काले पतले फीतेसे गलेम लटकता
चश्मा और एक अदाजियाना टोपी खासा रईस जादा लगता
अपनी नौकरानी या किसी पडौसिनसे स्नेह व्यापारका सिलसि
जोडना कठिन भी होता है शिष्ट भी नही माना जाता तब बताओ
क्या करु अगर स्त्रीके बिना मेरा काम चलता न हो और मुझ उस
जरूरत हो ?"

"हा जी बडी जरूरत हो' यारदकरने कुछ खिजला कर हल्का

प्रतिरोध करते हुए कहा, "क्यो कि आखिरकार हमको यह मान लेनेका साहस होना चाहिए कि हम रशियन बुद्धि जीवो तकप्रिय लाग कालिजस निकलते निकलते कमर भुका वठत ह, चेहरापर हमारे झुर्रिया पड जाती ह हमारी आकाक्षाआमें जोर रहना नही, न तबियतम उत्साह विषयका भूख हमारी भरी फाकी हो जाती है बस जरा चाह सी रहती है, एक लत, जी का खुजली-सी, नक दरका जा बहनाव चमते ह कि हम थक रहते ह एक आत्मीन मुझे अपनी आम्बा दखी वारदात सुनाई एक काकेशियन पहाडी था इगराप्रदेनका था या अमरिशयन वहरहाल सब डील डौलका था, और नगरा वह किसलोवोडस्क आया किस्लोवाडस्क बढिया फशनविल स्वास्थ्यकर सरगाह है थी मवे शामका एक सुन्दर, सुहावनी हरी सध्या थी इगराका सगीतकी ध्वनि सुनाई दी वह उसी ओर चल पडा चलते चलते एक खिडकाके पास जा पहुचा, भीतर नाच हा रहा था नाच वाल्ट्ज था एक स्त्री इतन सूक्ष्म, इतने कम कपड पहन था कि कह दीजिए कुछ पहन हा न थी

जान नाचते नाचत क्या सनक उस सवार हुई यह चक्कर काटती हुई आता और खिडकाके बिल्कुल पासस घूमती हुई निकल जाती इसमें जसे उस मजा मिल रहा था वह खिडकीस इतनी लगी हुई सी निकलती थी कि उसका अधोभागका सूक्ष्म वस्त्र लहराता हुआ, बाहर खडे सुदर पहाडा घुडसवार को छू छू जाता था

कि अकस्मात एक भयाक्रान्त चीख गूजी एक छलागम वह पहाडी खिडकी कूद कर अदर पहुच गया, एक धक्केमें स्त्रीके साथीको दूर फेंक दिया पलक मारतेम उसने रग बिरगी कपडकी उन कतरनोको फाड फेंका जो स्त्री पहन थी और उस जमीनपर पटक दिया लागाने अपनी छडियोसे और छतरियासे बहुतेरा उस मारा, हटाया, पर व्यथ एकन रिवाल्वर भी छोडा एक फौजी आदमीने एक जोरका तलवारका हाथ भी उसकी पीठपर दिया पर इसकी जरा भी परवाह जो उसने की हो उन सब बड इज्जतदार लागाकी आखोंके सामने-सामन उसने बचारी नारीपर बलात्कार सम्पूण किया पीछसे जब पुलिस आकर

टूटी तो उसने सुना, शान्त भावसे कहा, "अब जब से चला चाहे फिर उड़ा दो जो होता है हो। पर, यह रानी ऐसी नंगी क्या नाचती फिर रही थी?

और बस मैं उस उपस्त पत्तुरा पश सेता हूं प्राकृतिक शक्तियां का क्या अपराध? पर तुम कहते हो—हमारी जरूरतें! आह हम मस्तिष्क-जीवी प्रेम करते हैं कल्पना द्वारा। हम पुरुष नहीं हैं, बस हम पिता बन सकते हैं और कुछ नहीं।'

वाह, वाह!" सत्यकामने कहा, 'प्यारा दिल प्रोफेसर उस पुराने रामलता गा है कि औरतें दगी और काबू की पर फिर उस भावके बड़ पादरीका गा जो मान वासपर रखता और पछताता है'

लेकिन तभी एक विद्यार्थीने बाधा दी। मित्र मण्डलीमें उसे रामसरन कहते थे। पीला दुबला नाटे कदका व्यक्ति था, जिसकी नाक बड़ी थी। उसका चेहरा साफ त्रिभुजाकार था, और माथा चौड़ा फैला जो सिर तक बालोंसे शून्य था। पिचके गाल नुकीली ठोढ़ी वह ऐसा रहता था कि मसखरा हो सकता था। जब उसके साथी क्रमशः राजनीति, प्रेम थियेटर या कभी पढ़ाईमें लगे रहते थे तब यह रामसरन तरह तरहके मुकदमे मामलातकी खोज खबरमें लगा रहता था दावे, अरजी दावे जाय दाद मनकूला या गैरमनकूला अगर मगर बातोंके दांवपेचोंमें वह उलझा रहता था। अदालतोंके पुराने फैसलोंके मुख्तलिफ पहलुओंको उसने अपने दिमागमें नक्श कर रखा था। सैकड़ों ही मामले उसे बजिंस हिफ्ज थे। बिना एक पैसा लिए बिल्कुल अपनी मर्जीसे एक सालतक वह एक वकीलकी मुहर्रिरी करता रहा। इस पिछले साल एक मुकामी अखबारमें अदालती खबर देनेका वह काम करता रहा। उसके साथ ही वह शक्करके व्यापारियोंकी सिंडीकेटके दफ्तरमें भी ज्वाइंट सेक्रेटरीका सहायक बन गया था। और जब इस सिंडीकेटने अपने एक मेम्बर कर्नल वेस्केवाविके खिलाफ वह मशहूर मुकदमा चलाया जिसकी अखबारोंमें धूम रही तब इस रामसरनने शुरूसे ही अपने दिमागमें जो कयास कायम किया था, आखिरकार सिंडीकेटने ठीक उसीके मुताबिक अपना फैसला दिया।

उसकी अवस्था अधिक न थी, तो भी प्रमुख कानूनदा लोग उसकी रायकी कदर करते थे यह सही है, कि ऐसा वह जरा ढगके साथ करते थे जिसने भी रामसरनको निकटसे देखा, उसे सन्देह न रहा कि इसका जीवन जरूर सफल होगा रामसरन भी अपने इस विश्वासको छिपाता न था कहता था, पतीसका होते न होते अकेली दीवानी वकालतके बदौलत ही ज्यादा नहीं तो पन्द्रह-बीस लाख तो कमा ही लूगा उसके सहपाठी अपनी सभाओका और अपनी क्लासका बहुधा उसे ही अध्यक्ष चुना करते थे पर वह सदा अस्वीकार कर देता, कह देता, क्षमा कर मुझ समयाभाव है पर जब कभी आपसमे झगडेके फसलेकी बात आ जाती तब वह अवश्य भाग लेता उसकी युक्तिया तक सम्मत और प्रबल होती पर उनमें कुछ ऐसा भी होता था कि वह मुद्दई मुद्दालय दोनों पक्षोके जी लग जातीं और उन्हें मान्य होती थी और मामलेका निबटारा शातिपूवक हो जाता था वह यारश्करकी तरह विद्यार्थियोम सब प्रिय होनेके मूल्यको खूब पहचानता था और यदि वह उनको तनिक अहम्मन्यता अथवा उपेक्षाके भावसे देखता था, तो भी अपने किसी सकेतस, भगीसे, अपने पतले दुजय होठोके तनिकमे भी वक्रसे प्रकट न होने देता था

बीच बिचावके तौरपर रामसरनने कहा, 'अच्छी बात है गणश यारश्कर कोई आपको जबरदस्ती तो आपके ऊचे स्थानस खीचकर इस कामर्में गिरा नहीं रहा है तब फिर आप अपनेमे आवश और विषाद क्यो लाते हैं ? बात सीधी है रशियन तरुण कुछ ह जो सभ्रात वगके ह, कुलीन और शिष्ट बस वे चाहते ह कि बाकी रात अपने थोडा गाकर पेटोमें कुछ गैलन शराब उडलकर, हस बोलकर, जरा प्रसन्नता और मौजसे बिता लें और, अगर सब जगह दुकान बन्द हो गई ह बस एसी ही जगहें बची हैं तो "

"तो हम चाहते हैं आमोद लूटें और औरतोके यहा जाकर जो बिक्रीके लिए बैठी हैं, वेश्याओंके यहा ! चकलेमें !" यारश्करने बीचमें उपहास और कटुतासे कहा

"हाँ, यह भी सही, तो क्या हुआ ? एकबार एक विचारकने इस मानित कन्येका विचार लोगोंसे किया   तो दायराम उग यहाँ बिगनी, जहाँ निम्न श्रेणीके लोगोंकी जगह भी   यह बोला— वाह, निचलोंकी अगली जगह मना देनेका यह तो अच्छा उपाय मालूम हुआ!' और आखिर मैं कहता हूँ, तुम्हारे कथनानुसार यदि किराया देकर स्त्रीका अपनानेका साक्षी तुम्हारा चित्त तुम्हें नहीं देता, तो कठिनाई क्या है   वहाँ जाओ और आ जाओ   कोई आग बटोरो तो कहना नहीं   आपकी निगरानी भी सुरक्षित रहेगी"

पारसचरन कुछ नाराज होकर आपत्ति की   कहा, 'रामसरन तुम बहुत बढ़ जाते हो   यह तो वही बात हुई कि कुछ सफेदपोश लोगोंने इकट्ठे सामने   वक्त जो फाँसी चढ़ते हुए किसीको देखा तो बोले, 'नहीं हमारा इसमें कोई हाथ पाप नहीं है   हम मृत्यु दण्डके खिलाफ हैं   यह सब सरकारी वकील, जज और जल्लादके काम हैं'

सच कहा, गणेश पारसदार, और अंशतः सत्य भी   पर यहाँ यह तुलना लागू नहीं पड़ती   रोगीसे दूर रहकर हम उसकी व्याधि नहीं हर सकते   उसके लिए व्याधिग्रस्त व्यक्तिके पास जाए बिना चारा नहीं   हम सब लोग जो राहकी रुकावट बने यहाँ खड़े हैं हम सबको अपने रास्तेमें कभी-न-कभी इस भयंकर वेश्या समस्यासे जाकर टकराना पड़ेगा   व्यभिचार ही नहीं, कहो घोर घृणित व्यभिचार ! लखनपाल धनवाल और   पालीवाल समालोचक बनेंगे, तो मैं वकीलकी हैसियतसे, पतकी और   तनवर डाक्टर बनकर — आखिर   हम सब इस समस्याके तटपर   पहुँचेंगे ही   हाँ बेल्टमार्की दिशा है—गणित   किन्तु क्या, वह भी तो   आखिर   प्रोफेसर या मास्टर बनेगा   उसके हाथमें नूतन भाग्य होंगे कि उनका विकास करे, उन्हें मोड़ या दिशा दे   यह भी नहीं तो पिता तो   उसको बनना ही है   जिसे हमने हौवा बना रखा है, और जिससे हम डरते हैं   उसे दूर भगाना है तो अच्छा यही है कि हम उसे जाकर भरपूर देखें और पहले भय भगा दें   और गणेश पारसकर मैं तुमसे भी कहता हूँ   मेरी और अधमरी कई भाषाओंमें तुम विचक्षण

हो, तुम धरतीके भीतर गडे हुए अतीतके अन्वेषक हो और प्रकाशक हो पुरातन पोम्पियाइ, थिवीस निनेवामें प्रचलित सस्याबद्ध धमगत व्यभिचारकी आजके रहाके रूसके चक्लोंके व्यभिचारसे तुलना क्या तुम्हारे लिए भी महत्त्वपूण और शिक्षाप्रद न होगी ?"

लखनपालने चिल्लाकर कहा, "शाबाश, राममरन खूब! भाइयो, अब ज्यादा वात करनेकी जरूरत क्या है, चलो प्रोफसरको पकडें और गाडी म विठा चलें"

हसत और शोर मचाते हुए विद्यार्थियोने यारस्करको घर लिया, और वगलाम बाहे डालकर और कमर पकडकर उसे उठा लिया सबके भीतर स्त्री देहके प्रति आकषण विद्यमान था, लालसा उग रही थी पर लखनपालके अतिरिक्त किसीको बढकर कहनेकी हिम्मत नही हुई अब दम्भ टूट गया और उलझन दूर हुई मानो अब बात सीधी साफ सुलझ कर सामने आई सबको अपने पुराने सहाध्यायीपर मजाक करनेकी सूझने लगी यारस्कर झिझका, उसने जिद्द की, रोष किया और हसकर निकल छूटनेकी चेष्टा करने लगा लेकिन इसी समय एक लम्बा, काली मूछो वाला कान्सटविल जो इन्हें बहुत देरसे सक्रोध और तीव्र निगाहसे देख रहा था शोर मचाते हुए इन लडकोके पास आया और बोला, 'लडको म कहूगा कि आप लोग जमा न हो इसकी इजाजत नही है आगे बढ़ो"

वह गुच्छा का-गुच्छा आगे बढा यारस्कर धीरे-धीरे पिघल रहा था

"भाइयो म साथ चलने को तैयार हू, अगर आपकी जिद्द हो मत समझिय, रामसरन की बातोसे में विश्वस्त हू नही पर म भद नही डालना चाहता अपनको तोडकर आपसे अलग करू, इससे मुझे दु ख होगा लेकिन एक शत है, हम वहा कुछ पी लेंग, खेल लेंग, हस लेंगे और उसी तरह लेकिन ज्यादा कुछ नही किसी तरहकी ग दगी नही यह सोचकर लज्जा और दु ख होता है कि रशियन बुद्धि और कुलीनताके गौरव स्वरूप हम युवक राह चलती पहली स्त्री देखकर मुहम पानी भर लाते ह"

लखनपाल ने हाथ उठाकर कहा, 'मैं सौगन्ध खाता हूँ"

रामसरनने कहा 'मैं अपना जिम्मा लेता हूँ"

'और मैं भी परमात्माके नामपर, भाइयो हम सब शपथ ले

यारस्करने ठीक कहा है —और शेष भी बोले

वे गाडियोंमें दो दो तीन तीन बैठ गए गाडी वाले दरसे उनके पीछे-

पीछे कतारमें आपसमें कुढ़ते झगडते आ रहे थे वे सब चल पडे

लखनपाल प्राफसरके बराबर बैठा वह प्रोफेसरके बारेमें ठीक-

ठाक रखना चाहता था उसने अपने और औरोंके घुटनोंपर तनवरको

बैठा दिया तनवर बाईस वर्ष का था पर बालक लगता था चेहरा

गुलाबी, भरा, मनोहर था रेख उभरी नहीं थी और बालोचित औत्सुक्य,

लज्जा और कुछ भोलापन उसके चेहरे पर था लखनपालने गाडी वालाको

पुकार कर कहा, 'टालूकाका वाली जगह ले चलो'

सब डालूमिगके उपहार गृहपर पहुचे यह सारी रात खुला

रहता था वे कमरेमें गए और शराबकी वेदीके सामने इकट्ठे खडे

हो गए सब छके हुए थे और किसीको भूख-प्यास न थी पर हरेकके

मनमें इस भावनाकी अंधियारी-सी छाया विद्यमान थी कि वे अब

बिल्कुल उस तटके किनारे आ गए हैं, जहासे बस पग भर आगे—ज्ञात

क्या नहीं है और जान क्या है ! सब भीतर ही भीतर जान रहे थे कि

वे एक प्रकारके व्यर्थ निलज्ज कृत्रिम, उद्धत तीक्ष्ण विलासमें पडते जा

रहे हैं उस विलासमें जिसमें सहज रूप नहीं है, प्रसन्नता नहीं है नशा

और उन्माद है और सब पीकर किसी तरह अपनेको मन स्थितिमें ले

जाना चाहते थे कि जब चारों ओर मानो कोहरा-सा आ जाता है और

उस कुहरेके तटपर, एकाएक एक इन्द्रधनुष खिंच जाता है जब वस्तु और

विचारोंकी रेखाएं एक दूसरेमें खोने लगती हैं, और जब मस्तिष्कको यह

पता नहीं रहता कि हाथ क्या कर रहे हैं, टाग क्या कर रही हैं और

जिह्वा क्या बक रही है और शायद इन विद्यार्थियोंको ही नहीं वहां

सामानमें आनवाले हरेकको ही इस भीतरी मानसिक द्वन्द्वकी वेदनाका

कम अधिक अनुभव होता था क्योंकि डालूमिगका व्यापार इतनी रात

गए होता था कि यहा आने वाला हरेक जानता था कि इसके बाद उसे कहा जाना है वह यहा अपनी जगहपर जरा देर ठहरता, और पी पाकरबधी राह आगे बढ जाता था

जब विद्यार्थी सस्ती, कीमती, भाति भातिकी शराब पी रहे थ, रामसरन ध्यानसे टक लगाए कमरेके एक दूरके कोनकी तरफ देख रहा था वहा दो आदमी बठे थे एक चिथड पहने हुए था और उसके सामने परली तरफ मुह किए सामनेकी मेजपर कोहनी डाले और एक दूसरेके ऊपर रक्खी मुट्ठियापर ठोडी टिकाए सिमटा हुआ सा छोट बाल और पुष्ट देहका बादामी सूटमे ए" और भद्र व्यक्ति बठा था बुड्ढा आदमी अपने सामने पड व जको लेकर फटी किन्तु खुश आवाजम गा रहा था

आ अमराई मरी बचपन की याद की प्यारी अमराई ,
जहा कमी न थी वनस्पतिया खिली थी, और दूध बहा करता था

'जरा क्षमा करें, वहा मरे एक सहयोगी मित्र ह" राममरनन कहा और सूटवालेसे मिलनेके लिए चला गया मिनट भरमें उसको अपन साथ ले आया और अपन साथियोसे उसका परिचय कराने लगा

'भाइयो आइए म आपको अखबारी दुनियाके अपने एक सहयोगी का परिचय दू—कुमार पवनजय, पत्रकारोम सबसे प्रतिभाशाली ह, और सबसे आलसी '

वे सब अपना अपना नाम हार्दिक भावसे पुकारकर अपना परिचय देने लगे लखनपालने कहा तो आइए कुछ पिय '

यारश्करन उसी सुसस्कृत मुद्रासे जो उसकी अपनी थी कहा, 'मुझे क्षमा कीजिएगा, म आपसे सर्वथा अपरिचित शायद न हू हा, साक्षात्कार नही हुआ क्या आपन ही प्राफसर प्रिटनोसकीका वह व्याख्यान पत्रमें नही रिपोर्ट किया था जो उन्होन युनीवर्सिटीम विपक्षियोके उत्तरमें अपनी थियरीका समर्थन करत हुए दिया था ? '

'जी मैंन ही लिखा था ।"

' ओह बडी प्रसन्नता हुई " यारश्करने मनोहर ढगसे कहा, और जाने

क्यो पवनजयका हाथ फिर जोरसे दबाया "मने आपका लेख पढा था क्या खूब यथार्थ, कुशल, सम्पूर्ण वर्णन था मुझपर कृपा न कीजिएगा ? आपके स्वास्थ्यके नामपर "

'तो मुझे भी इजाजत दीजिए ' पवनजयने कहा, "जखरिश और भी बनाओ एक, दो, तीन, पाच नौ ग्लास बढिया कोग्नक "

"नही, नही, यह आप नही कर सकते "

"आप महाशय हमारे अतिथि ह ' लखनपालने आपत्ति करते हुए कहा

पत्रकार उदाराशय हसी हसते हुए बोला 'तो म आपका साथी कैसा रहा? म सिर्फ पहली सालमे दाखिल हुआ था, वह भी पूरे वर्ष नही रह सका, एफ०ए० भी नही पास कर सका हा ठीक है, जखरिश ! सज्जनो मेरा निवेदन है कि

मतलब यह कि आध घण्टे बाद यारकर और लाखन किसी तरह भी इस पत्रकारको बिछुडने देनेको राजी नही हुए और उसे अपने साथ यामा भी घसीट ही ले गए पत्रकारने भी कुछ विरोध नही किया उसने सीधे तौरसे कहा, 'अगर म आपके लिए बोझ न हू तो मुझे प्रसन्नता है यह भी कि आज मेरी जेब भरी ह ! आदरणीय पत्रने मुझे आज लेखो का पुरस्कार दे दिया है यह करिश्मा ही समझिए एकाएक मुझे अपनी जेबमे एक टिकट पडा मिले और उसके बल दो लाख मुझे मिल जाय तो आप क्या कहे ? 'आदरणीय मे रकम मिलना उससे कम बात नही है क्षमा करे म अभी आता हू "

यह उस वृद्ध पुरुषके पास गया जिसके साथ अभी बैठा हुआ था उसके हाथोमे चुपचाप कुछ रुपया दिया और शिष्ट अभिवादन पूर्वक उससे विदा ले आया

जहा म जा रहा हू बाबा, वह जगह तुम्हारे लिए नही है कल हम फिर इसी याजकी जगह मिलेगे नमस्कार !

सब उपहारगृहमे निकले युवक यनवाले जो व यामकी बात करनेवाला भादी था और जिसकी तबियतका या हालसे बाहर होते ही लखनपालके

पास गया, और उसे एक ओर ले जाकर कहा—

"लाखन, मुझ तुमपर अचरज है हम सब यहा अपने आपसके लोग ही थ पर तुम्हारा जी बिना किसी गैरे गरेको साथ मिलाए माने तब ना, क्या जाने कौन आदमी है, कि साथ पकड लाए !"

लखनपालन मिठासस उत्तर दिया "नहीं नहीं, सुबेश यह खूब जिंदा-दिल आदमी है"

१०

अन्ना मरकानोके स्थानके द्वारपर पहुँचे तो यारस्करने बडबडाकर कहा, "सज्जनो, यह क्या ? यह जगह तो गदहों के लायक भी नहीं है आखिर यही था तो इतना तो होता कि जरा किसी सलीके की भली जगह जाते यह नहीं कि एसी टकियाई जगह आ पहुचे सज्जनो म कहता हू कि हमें चलना है तो टूपिलवाली जगह चल वहा और नहीं, रोशनी तो है'

लखनपालने बा अदब तपाकके साथ उन नये प्रोफेसरके सामने आ-कर अपने हाथा दरवाजा खोला और जरा सिर झुकाकर अनुरोध पूवक कहा पधारिए महोदय ! कृपया भीतर पधारिए"

"म कहता हू यह ठीक नहीं है अह, क्या गन्दगी है टूपिलकी औरत आखिर कुछ तो ह"

रामसरन जो पीछे-पीछे था जोरस एक विद्रूप हमी हसा "हा-हा, ग्रान्ड यारस्कर, ठीक है हम उसी नकपर और क्यो न आगे चले वह अधम, भूखा, चोर जो पटके लिए कहींसे रोटी चुरा लाया है हमें निंद्य है लेकिन बक्का डायरेक्टर जो दूसरोंके लाखो अपने सिगार घोडा, और घुड्दौड़के शौकपर उडा देता है, हम उद्यत है कि उसका पक्ष लें ! और यही चाहिए क्यो यही न ? क्या, यही ना ?"

क्षमा कर किन्तु इस तुलनाकी यहा सगति मैं नही देखता" यारस्करने सयत स्वर में कहा, "तो भी मुझ क्या मर्जी है, चले चलिए"

लखनपालने प्रोफेसरको आग बढने देकर कहा, "जरूर, और इसलिए और भी जरूर कि कुछ एतिहासिकता है जो इन्ही घरोके भीतर मिलेगी, जिसे यही पोषण मिलता है भाइयो युवा विद्यार्थियाकी पीढियोकी पीढियां जिन्होने यहा आकर अपनेको पाया और खोया है हमें टल रही ह और फिर हम लोगोका सब जगहकी तरह यहा भी तो आध टिकट का हक होगा क्या नागरिक साइमन महाशय, यही बात है न ?'

साइमनको यह अच्छा नही लगता यहा टोलीकी टोली आती है तो उसे लगता है कि कही भगडा न उठ खडा हो तिसपर विद्यार्थिया की बातचीत उसे और भी अच्छी नही लगती उसकी समझम ही ठीक नही आती ये बस सस्ता मजाककी बातें करते रहते ह ईश्वर परमात्मा किसीको नही मानते और तुर्रा यह कि अमनके और शासनके खिलाफ उनम सदा विद्रोहकी आग भरी रहती ह उस दिन ही उसन क्या देखा था देखा कि कज्ज़ाक सिपाही, आस पासके कस्माव और छोट मोट दुकानदार सब मिलकर इन विद्यार्थियाको द मारपर मार रह ह साइमनने यह देखा ही था कि वह भी एक चलती गाडीम लपककर चढ गया, कहा, चलो चल' और युद्ध स्थलपर पहुचकर दमादम स्वय भी उन्ह मारन लगा वह उन लोगोको इज्जतकी निगाहस देखता था जो वयसमें प्रौढ होते देहम कुछ स्थूल, चुप, स्थिर और दुकानकी तरह दीखते थ वे चुपचाप एक एक करके आते यहा वहा भांकते रहते कि कोई पहचानवाला न मिल जाए और फिर निवट निबटाकर भटपट वापिस चले जाते थ चलते वक्त व इसे खासी बखशीश दे जाते थ उन लोगोको यह साइमन अनायास कहा करता राय, साहब

सा गारकरका बडा ओवरकोट थामनेके बाद लखनपालके जवावमें उसने धुमाकर अथ भरे ढगस कहा 'म कोई नागरिक महाशय नहीं हू म जमादार हू'

और म इसपर आपको धयवाद देनेकी अनुमति चाहता हू" लखनपालने साभिवादन भुककर उत्तर दिया,

ड्राइग रूममें बहुतसे आदमी थे क्लक लोग भरपेट नाचनेके बाद,

तर और सुरा, *अपनी अपनी कामिनियो लग रूमालसे अपनी हवा करते* हुए बैठे थे। भेड़की ऊनकी सी उमस गंध आ रही थी। मिशका और उसका वह साथी जिल्दसाज आपने सामने एक मेजपर बैठे मिलकर कुछ राग छेड़नेकी कोशिश कर रहे थे। दानाका निर्लोम कपाल था, नीचे उतरकर कनपटीके पास कम थोड़े मुलायम बाल उगे थे। आंखें मस्त चढ़ी हुई रगीन, उद्धत मजपर अपनी कोहनियां टिकाकर बैठे, एक दूसरेकी अपेक्षासे अधिकाधिक प्रोत्साहन पाकर ऊंची भारी आवाजमें अलग अलग आलाप लेकर वे ऐसे रीछ रहे थे कि मानो कोई उनके गलेमें रह रहकर मुक्के मार रहा हो।

मेरे दिलमें दर्द है ऐ मेरे दर्द

एमा उडवानी और जन्यिा अपना पूरा जोर लगाकर उन्हें जता रही थीं कि *घरमें रहें*। *मिशा गवदू आरामके साथ एक कुर्सीपर सो रहे* थे। टांग पर टांग रक्खी थी, जुड़े दोनों हाथोंमें अपने घुटनोंको पकड़े थे, और सिर लटक रहा था।

लड़कियोंने तुरन्त इन विद्यार्थियोंमेंसे कईको पहचान लिया और वे स्वागतके लिए आगे बढ़ीं।

'तिमिरा तुम्हारा मालिक आ गया है—पालीवाल और मेरा आशिक भी—पतकी" नूरीने चिल्लाकर सूचना दी और पतली देह और बड़ी नाकवाले गम्भीर नारायण पतकीके गलेमें बाहें डाल लटककर बोली, 'हेलो पतकी, इतने दिनोंसे क्यों नहीं आए? मैं तो तुम्हारी बाट देखती सूख गई!

यारस्कर सकोचपूर्वक अपने चारों तरफ देख रहा था। एमा उडवानी जब जरा पास आई उसने तनिक सानरोध नम्रतासे कहा, 'हमें एक देखिये, एक अलहदा कमरा मिल सकेगा? और कृपाकर कुछ अच्छी शराब भी दीजिए और काफीको भी कह दीजिए। आप तो *जानती ही हैं*।"

यारस्कर होटलके दरबानोंमें, नौकरोंमें अपने कपड़ोंके कारण और विश्वस्त कुलीनोचित, गर्वीली चाल-ढालके कारण सदा आदरास्पद होता

था एसा उडवानी तुरत स्वीकृतिमें पुराने सध माट सरकसी घोडकी तरह सिर हिला उठो बोली

'जी हा, मिल सकता है, जरूर मिल सकता है इधर तशरीफ ले भाए इस कमरेम जरूर आप ही का है—आप ही का क्या, कौन शराब ? वेलेन्टाइन ? हमारे यहा है वही ? जरूर लीजिए जरूर ! और और लडकियोके बारम भी क्या हजूरकी कुछ फरमाइश है ? '

यारश्करने अन्यमनस्क भावसे अपना हाथ फलाया और कहा मगर यह जरूरी हो तो सही '

फिर इस कमरम जिसमें गद्दार फरनीचर था और नाला दामादान, एकके बाद एक सब लडकिया आ पहुची उ ह हाथ मिलाकर अभिवादन करनेकी आदत न थी सो आते ही अपनी बाह फला कर अपना नाम लेती हुई इस उस सबके पास पहुचने लगी—मेरा नाम मनिया है, मेरा क्टिी मेरा लुवी वे किसीको टागो पर बठ जाती गदन पकड करकिसीका आलिंगन लेती, और सदाकी भाति कहती 'मरे छोट बाबू, कैसे अच्छे हो ? हमें नारगी मगा दोग ?"

"पालीवाल, मुझे कुछ सेव ले दो हैं ना ? और कुछ चाकलेट"

जरखरीद चेरीका चेहरा बनाए वीरा प्रोफसरकी टागोपर जा बठी बोली, "मरे मोट बाबू मेरी एक सहेली है वह बीमार है यहा आ नही सकती म उसे कुछ सेव और चाकलट ले जाऊगी मुझे तुम ले दो '

यह सहेलीकी गप वप मत हांको और तुम ग्हमुभपर एसे कम चढी आ रही हो ? यहा ऐसे, जरा बराबरमें, कुर्सीपर ठीक-ठीक बठो हा, एसे और हाथोको फलाओ मत, बन्द रखो "

जो म या न बठू तो!' वीराने अपनी देहमें अवली डालकर रिमान के स्वरम आखोको मटकाकर कहा अजी, तुम कसे अच्छ हो

लेकिन लखनपालने इस व्यवसायगत भिक्षावत्तिके उत्तरम एमाउडवानी ही की तरह सहास्य किन्तु गम्भीरतासे सिर हिलाया और दोहरा तिहराकर, विदेशी ढगसे बोला, 'हा हम दे सकता ऐ, दे सकता ए, दे सकता ऐ

वह बोली, "प्रीतम मेरे, म बहेरा को बुलाकर कह देती हू, कि मेरी सहेलीको सेब और मिठाई दे आए !"

इस तरहकी याचना वृत्ति उनकी दैनिक चर्याका अग बन गई थी उन लडकियोंमें इस तरहकी बच्चोंकी जैसी होड और बदाबदी सी रहती थी कि देख, कौन अपने मदसे ज्यादा पसा हथियाता है अचरज यह है कि इससे उन्हे स्वय कुछ लाभ न था बस इतना था कि सरक्षिका कभी थोडी बहुत शाबाशी दे देती थी कभी मालिकिन स्वय एकआध तारीफ का शब्द कह देती किन्तु उनके निरानन्द, सपाट, व्यथ और हठात आमोदी जीवनमें इस भातिकी हल्की भावुकता भरी खटमिट्ठी बातें बहुत सी थी साइमन कॉफी, प्याले, शराबकी बोतल, फल, मिठाइया आदि लाया, और अपनी अभ्यस्त कुशलताका प्रदशन करते हुए दनादन डाटें खोलने, प्याले सजाने और उनमें शराब भरने लगा

"आप पीते क्यो नही?" यारदकरने पत्रकार पवनजयकी ओर मुडकर कहा, 'मुझे इजाजत दीजिए यदि म भूलता नही कुमार पवनजय, यही ?'

"जी हा"

"कुमार पवनजय, मुझे एक प्याला कॉफी आपको भेंट करने दीजिए यह ताजी लाती है या फिर, यह लेफीइट ही लीजिए"

"जी, नही इन्कार करनेके लिए आपको मुझे क्षमा करना होगा पीनेकी मेरी अपनी बधी हुई चीज है साइमन, लाओ तो "

'कोग्नक, कोग्नक !'नूरी झट बोली

"और एक नास्पाती भी" छोटी मनकाने तुरत कहा

"जो आज्ञा, कुमार साहब, अभी लीजिए" आदरपूवक बिना शीघ्रताके साइमनने उत्तर दिया और झूमकर, कुछ बडबडाते हुए, बोतलकी गदनमें फसी डाट उसने निकाली लखनपालने साश्चय कहा, 'यह पहला मौका है कि मं सुनता हू, यामामें कोग्नक मिलती है मैंने जब मांगी, मुझ सदा इन्कार मिला'

रामसरनने हसकर कहा, "कुमार पवनजय कोई जादूका मन्तर जानते

हू"

"या शायद इनकी यहा खास इज्जत है" सुवेश बनवाल नुवीन पनसे जोर दकर बोला।

पत्रकारने अ-ममनस्क भावसे विना सर उठाय बनवालकी सफद जाक्टके नीचेके चमकदार बटनको गानो तनिक देखा, और कहा, 'इसम कोई तारीफकी बात नही है कि म बैलकी तरह पाता हू पर नशा नहीं होता लेकिन म किसीसे भगडता भी नही न किसीको चोट देकर छडता हू स्पष्ट है, मरे स्वभावकी यह भली बातें यहा प्रगट ह सो यह लोग मुझमें भरोसा रखते ह '

"बहुत खूब मेरे दोस्त !" लखनपालने प्रसन्न होकर कहा पत्रकारके इन थोडेसे शब्दोम जो एक विचित्र विमनस्कता, स्थिरता और सहज आत्म विश्वासका भाव था उसने मानो लखनपालको आकृष्ट किया लखनपालका चित्त प्रफुल्लित हुआ बाला मुझ भी दोगे यह कागक?"

"सहप" पवनजयने सरल सहृदयताके साथ कहा और उसने लखनपालको शिशु जसे निष्कपट मरल, सुदर स्मितसे देखा "तुम्हारी ओर म भी पहलेसे आकृष्ट हू पहले पहल तुम्ह डालूसिंगकी जगह देखा तो म तुरन्त समझ गया कि तुम भीतरस वस कभी नही हा, जरो ऊपरसे'

"अच्छा जी, छोडो परस्पर प्रशसा तो हो गई" लखनपालने हस कर कहा, "लेकिन, यह अचरज है कि हम यहा एक बार भी नही मिले निस्सन्देह तुम यहा काफी आते-जाते रह हो "

'काफी नही, अवसर '

'कुमार पवनजय हमारे सबसे खास मेहमान ह' नूरीने जोरसे कहा, "कुमार पवनजय तो हमारे भाई ही जसे ह'

"बककी कही की" तिमिराने उस चुप किया

लखनपालने कहा, यह अजीव बात है मैं भी यहा आया करता हू यया कहू, तुम्हारे प्रति यहा सद्भाव देखता हू उसपर ईर्षा करनेको जी

हुआ है"

"अजी यहाके सरताज ही जो हू यह !" मुवेश बनवालने ओठोको माना चबाकर कहा किन्तु इतने धीमे कहा कि पवनजय चाहे तो मान सके कि उसने कुछ स्पष्ट नही सुन पाया इस पत्रकारको देखकर आरम्भसे सुवेशके जी में एक प्रकारकी अतवय तीव्र खुजलन सी मच आई कि वह उसकी गिरोहके गुट्टके आदमियो जसा नही है यह तो कोई बडी बात न थी पर सुवेशने जब देखा यही देखा था कि ऐसी मौज सरके वक्त अगर कोई बाहरी आदमी इन लोगोके साथ लग भी लिया है तो वह इन नवयुवकोकी हठात प्रशसा और खुशामद सी ही करता और इनकी रजामें रजामन्दी दिखलाता रहा है इनकी हसीपर वह हसता और इनके मजाकपर उनके साहस और उनके आत्म गोरव-शील भावपर खुद कुछ छोटा और पस्त पडके प्रसन्नता मानता रहा है क्योकि एक प्रकारकी कसक और कुढनके साथ अपने बीते हुए तारुण्य के दिन रह रहकर उसे याद हो आए ह हम युवकोका अनुयायी आज्ञा-नुवर्ती सा ही बनकर वह रहता आया है फौजमें कालिजमें, जहा कही सुवेश था सबका अनुभव ऐसा ही था इसलिए सुवेश आदी था कि बाहरी आदमीको अपने लागोकी अनुगामिता करता देख पर यहा उसने यह नही देखा उसने देखा पवनजय मानो इस नियमम अपवाद है, तारुण्यके आग वह न कुछ दबता है, न उसकी प्रशसा करता है उल्टे उसम हम तरुणोके प्रति एक प्रकारका शान्त, अस्पष्ट, शिष्ट उपेक्षाका ही भाव दीख पडता है

इसके अतिरिक्त बनवालके जी में छोटी छोटी सुइयोकी चुभन जसी गुदती हुई ईर्षामय खीज और झुझलाहट इस बातकी भी थी कि यहा दरवानसे लगाकर स्थूलकाया विपण्णा किटी तक सब इस पत्रकारके प्रति विशेष चिन्ता और विशेष समादरका भाव प्रदर्शित करते थे जिस मलग्न भावसे वे सब उसकी बात सुनती जिस तरह जय मग्न, निश्चि-न्तभावसे तिमिरा उसका गिलास भरती, छोटी मनका जिस तल्लीन भावसे उसे नासपाती छीलकर देती—इस सबसे इस पत्रकारके प्रति इन

लडकियोके मनके भीतरका आदरभाव हठात व्यक्त हो जाता था उसने देखा कि जोहराने अपने बराबर बैठे हुए लागोमे सिगरटका बक्स मागा उनके पास था नही या मया कि पत्रकारने उनकी यह असमर्थता देख ली उसने झट अपना बक्स फक दिया उस चतुरतासे लपककर जोहरामें जिस नूतन हार्दिक प्रसन्नताका प्रकाश खिल आया—उस देखकर बनवालक चित्तको चैन नही मिला कोई लडकी जमे औरोसे सब माग रही थी, वसे इस पवनजयसे पन मिठाई आदि कुछ न मागती थी इनका दलाल दीखता है! जलकर बनवालने मन ही मन सोचा किंतु जस भीतर ही भीतर उमे इसका विश्वास नही था पत्रकार बहुत साधारण कपडे पहने था बहुद घरलू सा उसका बर्ताव था फिर एक असदिग्ध आत्म-सम्मानका भाव भी उसम था

पवनजयने फिर भी मान लिया कि जस उसने इस विद्यार्थीके धृष्ट अपशब्द नहीं सुने बस पास पड एक रूमालपर उसकी बधी मुट्ठीकी उगलिया तन आई रूमाल एक तरफ खिच गया और उसके पलक सुबन बनवालकी दिशामे मानो कुछ झुके

मेजपरके अपने गिलासको अपने हाथासे धीरे धीरे घुमात हुए शांत भावसे उसने कहा, "जी हा ! म यहां कुनबके जसा ही हू सोचिए ता चार महीनतक लगातार हर रोज म अपना खाना यहा रमो घरमें पाता रहा हू "

नहीं!—क्या आप सच कहतह ? यारकर हसा और उम आश्चय हुआ

"जी हां ! बिल्कुल सच यहांका खाना या खराब नहा है हल मा शायद ज्यादा होता है लेकिन स्वाद बुरा नहीं है और पट भाना भर जाता है

लेकिन आप कस

"जी हां ! क्योकि म यहाकी मालिकिन मना मरवानीकी गडरी-को दसवीं क्लासक लिए ट्यूशन पढाया करता था मने यह हिसाब कर लिया था कि मेरे मासिक वेतनमेंसे यह भोजन खच काट लिया जाए

यारस्करने कहा, "खूब ! आपने ऐसा अपनी खुशीसे किया, या क्षमा कीजिए, आप मुझे धृष्ट न समझिएगा, या शायद आप लाचार हो गए थ "

'जी, नही, बिल्कुल नही छात्रावासमें जितना पैसा लगता, अन्ना मरकानी उससे तिगुना तो लेती होगी कहना चाहिए कि इस छोटी सी अलग थलग दुनियाके प्रति म जरा अधिक निकट और अधिक घनिष्ट होकर और रहकर उसे देखना चाहता था "

यारस्करने प्रसन्न होकर कहा, "आह, अब बात समझमें आती है हमारे नए मित्र, इस सम्बोधनके लिए क्षमा कीजिएगा, जीवनमेंसे सामग्री इकट्ठी कर रहे ह और शायद कुछ वर्षोंम हमारा सौभाग्य होगा कि हम समक्ष पाएगे एक नवीन ग्रन्थ "

सुवश बनवाल जोरस एक्टरकी भाति बोला, 'जी हा—वेश्यालयकी रात—मेरे अनुभव "

पत्रकार यारस्करके उत्तरमें कुछ कह कि तिमिरा अपने स्थानसे उठी, मेजका चक्कर काटकर आई और झुककर बनवालके कानाम चुपकेसे बोली, 'प्यारे बाबू कृपया इन सज्जनको छडो मत परमात्माकी सौगन्ध खाकर कहती हू कि तुम्हारा ही इसम भला है "

'क्या कहा ?" बनवालने तन कर आवेशमें दो उगलियासे चश्मेको नाकपर जमाते हुए कहा, 'वह तुम्हारा आशिक है ? तुम्हारा चहेता है ?"

'जो कहो उसीकी सौगन्ध लेकर कहती हू कि कुमार पवनजय हम मेंसे किसीके साथ कभी नही ठहरे लकिन म फिर कहती हू अपने ऊपर कृपा करो और उन्ह तग न करो "

बनवालका मुह बनन लगा और घृणा व्यजक भावसे बोला, 'हा, हा, क्या नही देखो ना, तमाम का तमाम चकला उसकी तरफदारीपर है अब यह पक्की बात है कि यहाके शोहद इसके साथी ह, और इसकी उनस गहरी छनती है '

तिमिराने धीमे स्वरम कहा 'नही, नही यह नही है पर बात इतनी

है कि कभी नही, यह उठ न पड़ें, और तुम्हें गर्दनसे पकडकर मुर्गीके बच्चे की तरह खिडकीकी राह आसमानमें न उडा दें कि फिर जाने कहा धरती पर तुम फूटकर गिरो इससे पहले ऐसी दो एक आसमानी उडान हम देख चुकी है परमात्मा न करे, फिर किसीके साथ यह बीते यह अच्छा नहीं लगता और चोट लगनेका भी डर है"

बनवाल तिमिराकी ओर हाथ फटककर चिल्लाया, 'निकल, दूर हो यहासे कम्बख्त!"

"अच्छा बाबू म जा रही हू' तिमिराने विनम्रतासे उत्तर दिया और हल्की चालसे उसके पासमे चली आई

इस समय पलभर स्तम्भित हो सब बनवालकी तरफ देखने लगे

लखनपालने बनवालको धमकाया, 'जुबानको लगाम दो, हुश, लगाम" और पत्रकारकी ओर मुडकर निवेदन किया "जी हा आप आगे कहिए जो कह रहे थे आप बडा दिलचस्प है"

पत्रकारने शात और गम्भीर भावसे कहना आरम्भ किया जी नही म सामग्री एकत्र नही कर रहा हू पर यहाके तथ्य, विकराल है, विपुल भयकर भरव, लोमहर्षक हमने बडे बडे शब्द गढे हैं हम उन्हे कहते हैं और गौरवान्वित होते हैं हम कहते हैं ओह जीवित नारी मासका व्यवसाय! दासी प्रथा!' और, ओह, मानवताके शारीरिक और नतिक स्वास्थ्यमें घुनकी भाति लगी महामारीकी तरह सवार यह वेश्यावृत्ति! इसी प्रकारके और भी शब्द पर म कहता हू, इनमे दम नही है ऐसे शब्दोके जमघट बहुत हुए मत्र उनसे ऊबे हैं नही वे सब हलके हैं उनमें यथार्थका आतक नही वह विभीषिका नही अरे विभीषिका देखनी हो तो यहाकी छोटी छोटी रोजमर्राकी चीजें देखो, बातें सुनो कैसे बहीके हिसाबकी तरह, मानो कुछ बात ही न हो, घण्टा— मिनटोकी दरसे प्रमके माल तोलका सौदा यहा पटाया जाता है सहस्रो वर्षोंसे चली आती हुई सभोग नामकी विधान और सभोग कलाकी कलाका रूप देनवाली यह प्रणाली बद्ध सस्था अपनी रग रगमें अब पक्की ठोस हो गई है जो पवित्र है उन व्यवहारोमें पवित्रताका भाव नहीं

रहा जो वलुप है, उनम कालुष्यकी चेतना नही रही, जिनका प्राकृतिक आवरण लज्जा है वे वृत्य वहयाइके साथ उघड हुए युग युगका सचित काठिय काम काममे बात-बातम यहा व्याप गया गुस्सा, हया, शम, बोभमे जम गये, या कुचलकर खो गए अब रह गया कोरा व्यवसाय एक मौदा ठीक, परचूनियकी सी दुकानदारी एक पसरहट्टा खुला है—लो जो ले सबस डरकी बात यह है कि इसम अब डरकी बात ही कुछ नही समझी जाती बस यह भी एक धन्दा है, और इस धन्धेकी भी अपनी घातें ह हा, शिक्षालया जैसी सस्कृतिके स्वादके दिखावका और फशनबिल सामायटीम प्रचलित फशनके अनुकरणके ख्याल और रगका लप यहा है"

"हा' जान कहा अनिमप दृष्टिसे दखत हुए लखनपालने समथन किया, बिलकुल यही बात है'

पवनजय उसी दुर्गम्य भावस अपन गिलासम दखत हुए बोला "हम अखबाराके अग्रलेखाम दुखिया आत्माओका विलाप सुना करत ह और सुधारवादी महिलाए भी आग गा रही ह वे जोर शारस काम कर रही ह मेजको मुक्कोसे पीटकर और चीखकर वे कहती ह—'ओह, कानून!' यह अधा दशा!' और स्त्रियाकी यह अधम स्थिति!' ओह, नारी-मासपर य फलनवाले जन्तु! य नदीके जोक!, य मनुष्यताम लगे हुए कीड जो उस व्यवसायसे खूनका पसा चूसते ह!' लेकिन शोर मचानेसे न कोई डरेगा न कुछ बनेगा तुम जानत हो कहावत है, 'थोथा चना, बाजे घना' डरावन शत्रुसे भी डरावनी, सकडा गुना डरावनी कोई छोटी सी बात होती है जो सिरम हथौडेकी तरह एसी लगती है कि आदमी सन्न रह जाए इस साइमन ही को लो, यह जो यहाका दरवान है तुच्छ सूझका प्राणी इससे अधम हो नहीं सकता चकलेके टुकडोपर रह रहा है, निरा पशु है गणिकाओकी जूठनपर जीता है, और फिर उन्हे कूटता है लेकिन क्या तुम अनुमान कर सकते हो कि हम दोनो किस आधारपर मिले और मित्र बन गए? आत्मा परमात्माकी बातोपर सृष्टि और पुनजन्मकी समस्याओपर बाइबिलपर! वह असाधारण धार्मिक

है म उसे उकसाया करता, और वह आसूभरी आखोंसे मुझे वह अतिम समाधिवाला गीत गाकर सुनाया करता

आओ, भाइयो, हम उससे अब विदा लें,

और उसे मट्टीकी गोदमें, शातिके साथ सोन द

'नही? जरा सोचो तो पर म कहता हू, आदमी विचित्र है तिस पर रूसी आदमी एक रूसी आत्माम एसे तीव्र विरोधी भाव एक साथ रह सकत ह "

रामसरनने कहा, "हा, उस तरहका आदमी अभी घुटने टककर, आख मूदकर, भगवत प्राथना करता होगा, आसू आ टूटेंग, वह विह्वल हो रहेगा फिर तभी चुपचाप उठकर जाएगा और गर्दन काटकर एकका खून कर आएगा, आकर हाथ धोकर सामने फिर दीपक जलाने बैठ जाएगा।"

'जी, हा। जहा पापोन्मुख इस दुजय वासना और उत्कट धम प्राणताका एक जगह सयोग होता है उससे अधिक निगूढ रहस्यमय, विश्वमें और क्या वस्तु होगी ? अपन मनकी बात मैं कहू मेरी घण्टो साइमनस बात होती ह पर, जब अकेला उससे बात कर रहा होता हू, अकेला उसकी उपस्थितिमें होता हू, तो कभी-कभी घोर भीतिका भाव मुझपर छा जाता है मानो मैं एक गहन, अगाध गतके ठीक मुहपर हू, जिस सहारे खडा हू वह खोखला है जीर्ण है, और काप रहा है नीचे घना अधेरा मुह फाड उबल रहा है, और गतके तलम सापसे जाने क्या क्या रेंग रह ह जो दीखते नही फिर भी दीख रहे ह पर फिर भी म जानता हू कि वह साइमन सच्चा धमप्राण प्राणी है और मुझे विश्वास है कि वह जरूर साधु बनेगा तब उसका सा आदश तपस्वी और उदार साधक दूसरा न होगा म नही जानता कि तब उसकी आत्मामें घोर धार्मिक उन्माद और कराल बबरताका समन्वय किस विलक्षण भावमें घटित होगा और उसका परिणाम जान क्सा आतककर, विस्मय पूण और लोमहष नही होगा'

पारदकरने अपनी आखोके इशारेसे लडकियोकी ओर प्रच्छन्न सकेत

करते हुए कहा, 'फिर भी देखता हू, अपनी आलोचनामें वर्णित पात्रोंके प्रति आप दया नहीं दिखाते !"

'अह, इससे क्या होता है हमारे सम्बन्धोंमें अब कोई गर्मी नहीं है, न अशान्ति"

विनय पालीवालने बातका छोर पकडा, पूछा, "क्या मतलब ?"

पत्रकारने मुस्कराकर उत्तर दिया, "यो ही, मतलब क्या, कहनेकी कोई खास बात नहीं अह, छोडिए भी मि० यारदकर, अपना गिलास जरा आगे कीजिएगा ?'

किन्तु नूरी है कि मुह बन्द नही रख सकती आगे बढ आकर जल्दी जल्दी बोली, 'मतलब पूछते ह ? मतलब यह कि कुमार पवनजयने एक दिया था उसके मुहपर सब कुछ यह ननकाकी बदौलत था एक बुड्ढा-सा ननकाके पास आया ननका उसके मन चढ गई थी ? रात भर रहा और ननकाको जाने किस किस तरह नही सताता रहा सो वह रोने लगी, और भाग आई'

पवनजय रूक्ष भावसे बोला, 'छोडो छोडो नूरी कुछ बात भी है, जो बक रही हो ?"

तिमिराने ओरसे कहा, 'चुप रह री तू चुप"

पर जब वह चली, तो नूरीको चुप कौन करे

ननका कहती थी नही मै उसके पास नही रहूगी मेरे टुकड-टुकड कर दो, मै नहीं जाऊगी उसने मुझे सारा थूकम सान दिया है सो साहब, बुड्ढा पहुचा दरबानके पास और दरबानने लेकर ननकाको पीटना शुरू किया तब कुमार पवनजय मेरे लिए घरको चिट्ठी लिख रहे थ उन्होंने ननकाकी चिल्लाहट जो सुनी "

पवनजयने कहा, "जोहरा उसका मुह बन्द कर दो"

नूरी कहती रही, 'चिल्लाहट जो सुनी कि एकदम उठे और ऐसा लपककर उसे लिया कि "

नूरीका वाक् प्रवाह सहसा ही रुक गया, जोहराने आकर हथेलीमे उसका मुह बन्द कर दिया था

सब हस पड इस हसीके शोरम सुवेश बनवाल घणा व्य जक दप्टि से वडबडाकर बोला 'क्या कहने ? यह बिगडे रईसजाद बहादुर भी ह !"

उसे खासा नशा चढ गया था वह दीवारका सहारा लेकर अन्भुत हुलिएम खडा था और सिगरेटको मु हम घुमा घुमाकर चबा रहा था यारङ्करने जिनासा भावस पूछा, 'और वह ननका कौन थी ? क्या वह है यहा ?

'नही नहि यहा नही है नन्हीसी, चठी नाकवी, बनारी एक ता की थी जो हसती फिरती थी, और भट चहक भी पडती थी" कहत कहते पत्रकार अकस्मात खिलखिलाकर हस पडा 'मुझ क्षमा कर या ही कुछ ख्याल आ गया ' हसते हसने वह तफसील देता बोला अभी अभी उस वुडढ आदमीकी पूरी तस्वीर मेरे सामने आ गई थी बिचारा छज्जे मसे डरके मार जल्दी जल्दी भागा जा रहा है कपड और जूते बगलमें दब ह! बिल्कुल भद्र, सभ्य इज्जतदार आदमी लगता था चेहर कुलीन म उसे जानता हू यही कही मुलाजिम है क्या असम्भव, आप सभी जानत हो सबस मजदार तो वह तब लगता था, जब सतरमे बाहर एकदम डाइग रूमम पहुच गया देखिए तो—कुर्सीपर बैठ ह पतलून पहनना चाहत ह पर पर वहा पडता नही जहा पडना चाहिए और आप हड बोग मचा रह ह यह बे ज्जती है ! यह बहूदापन है, बहयाई अब म हू कि एक एककी खबर लूगा कल आकर कहूगा निकला, एक एक महास निकल जाओ चौबीस घण्टके अन्दर कोना-काना खाली कर दो!'' उसकी यह दयनीय दशा और चुनौती और धमकीसे भरी यह चिल्ला हट एसी अजीब लगती थी कि सिट पिटाया साइमन भी जारस हम पडा अब अगर साइमनकी बात आप पूछ तो म कहूगा कि जावन पहेली है उसम जाने क्या क्या नही है एसी एसी विलक्षण बातें मिलती ह कि स्तब्ध रह जाना पडता है हम हृदय हीनताके चाहे जो उदाहरण गढ़ चाहे जितनी कल्पनाए दौडाए पर साइमनको नहीं पा सकन वह अपनेम एक ही है जीवन भी कैसा विविध, विचित्र, और अगाध है या

इस अधा मरकानीको ही लो, जो यहाकी मालकिन है नर मास भोजी कहो, बाघन कह दो, जोक कहो जो जी आए उसे कह दो पर इससे वातसल्य मयी माता दूसरी न होगी उसकी एक लडकी है बर्डी हाई स्कूलकी दसवी क्लासमें पढती है क्या हम जानग कि कितनी कोमल चिन्ता, कितना सलग्न ध्यान वह रखती है इस बातका कि किसी सयोगसे बेटीको इस पेशेकी बातका पता न चल जाए जो है सब बर्डीके लिए जो करेगी बर्डीके लिए उसके सामने वह स्वय बालती तक नही डरती है, कोई कही खराब शब्द उसके मुहमे न निकल जाए सब देखी खाई और सब भुगती हुई होनेपर भी इस औरतकी जान अपनी बेटीके सामने नहो में हो रहती है बटीकी निगाहोपर जीती है उसके सामने झुकी-दबी चलती है सब सहना उसका करती है पुरानी छायाकी तरह, वफादार सधे कुत्तेकी तरह नौकरकी तरह वह अपनी बेटीके सामने रहती है इस व्यवसायमें उसे कडी मेहनत पडती है, उमर भी पूरी हो चली है लेकिन नही अभी नही अभी एक हजारकी और जरूरत है और फिर और और! सब बर्डीके लिए सो बर्डीके पास घोडे ह बर्डीके पास एक इगलिश सरक्षिका है बर्डी हरसाल विदेशोकी सर करने जाती है बर्डीके पास बीसियो हजारके हीरे और अगूठिया ह !—किसकी बला जानती है कि यह हीरे किसके ह, कहासे आए ह ? क्या आप एक साथ इस ममता और निममताकी कल्पना कर सकते ह ? आशा और अनुमानकी बात नही, म खूब पक्की तोरपर जानता हू, कि यदि बर्डीको खुश करनेकी बात हो यदि उसकी उगलीम तनिक चोट आ जाए और उसे ठीक करने के लिए जरूरत हो तो यह अ ा मरकानी बिना आखका पर हिलाए हमारी बढिया बहनोका निस्सकोच बचकर पापके गढम धकेल देगी और हमारे बच्चोम सिफलिस फला देगी तनिक सोचिए उस परिस्थितिकी विषमताको जहा यह सम्भावना सम्भव है क्या ? आप कहते ह, पिआचिनी ! म कहता हू, वहा भी मूलम क्या वही प्रशस्त, अलक्ष्य, अध स्वार्थमय वात्सल्य नहीं है कि जिसके लिए समाजमें अपनी माताओको हम माता कहते हैं—उनकी प्रतिष्ठा करते ह !"

"खूब मल मिलाया" दात भीचकर बनवाल बोला

'क्षमा कर पर म तुलना नहीं करता म भावनाओंके मूल उदगम की अपेक्षा एक व्यापक तत्वकी बात कर रहा था म पशु श्रणीके प्राणियो मेंसे चाहता तो माताके इस आत्मोत्सग शील प्रमके उदाहरण दे सकता था म देखता हू, हम जटिल क्लिष्ट विषय ले बठ हैं आइए, छोडिए इसे"

नही नही ' लखनपालने सानुरोध कहा, कहे चलो मुझे अनुभव होता है कि तुम्हारे भीतर कुछ है एक गभरय विचार, जो सोने सा ठोस है और भारी और सप्राण"

'और सरल अभी उस रोज एक प्रोफसरने मुझसे पूछा कि कोई साहित्यिक उद्दश्य लेकर ही तो यहाके जीवनको म देख नही रहा हू? म यही कह सका कि म देखता तो हू पर धारण मुझसे नही होता अभी मन उदाहरणके लिए साइमनकी ही बात कही में खुद नही जानता बस, पर महसूस करता हू कि उसके भीतर भी जीवनके सत्यस निकली एक दुर्विजय, भयावह शक्तिका प्रकाश है पर उसे बता सकू पकड सकू, दिखा सकू—सा मेरा बस नही उसके लिए एक उस प्रगाढ मौलिक प्रतिभाकी आवश्यकता है जो थोडी सी लकीरोसे छोटी नही बातोके वणनसे हल्केसे स्पश भरसे इस भयावह सत्यको ऐसा स्तूपाकार मूतरूपमें खडाकर द कि पाठक देखकर सन्न हो जाए, भूल जाए कि वह उस विकरालताके समक्ष मुह बाए खडा है लोग विकरालता शब्दोम ढूढते ह, उक्तियोमें, चिल्लाहटम उदाहरणके लिए समझो म अभी कहीका वणन पढ रहा हू कहीं पुलिसकी दौड पहुची है या जेलमें बदियोको सगीनोकी नोकपर काबू किया गया है या जनतापर लाठी चाज हुआ है वहा पुलिसके सिपाहियोका वणन है शासन दण्डके ये सूत्रधार, शाति और कानूनके जीवित रक्षक ये बहादुर कसे लहूकी नदीमें, घुटना तक डूब, बढते चले जा रह ह आदि आदि एसे ही तो लोग लिखत ह न? पाठक इससे चोट पहुचती है सनसनी होती है रोष होता है पर यह सब प्रभाव मस्तिष्क तक पहुचता है हृदयमें जसे एक साथ कोई

नश्तर-सा नहीं लग जाता अब, मानो म चला जा रहा हूँ सड़कमें भीड़ खड़ी है देखता हू, बीचमें एक पाच वर्षकी लड़की खड़ी है समझ लो वह कही मा बापसे बिछड़ गई और भटक गई है या समझो, उसकी मा ही उसे छोड़कर चली गई है उस लड़कीके सामने एक पुलिसका आदमी पजोपर बैठा उससे पूछ रहा है, मुन्नी, बिट्टी तेरा नाम क्या है ? कहाकी है बिटिया तू ? अब्बाका क्या पता है, और अम्मीका ? इत्यादि उस बेचारेके पसीना आ उठा है टोपी सिरके पीछे पड गई है उसकी भबरी मूछोवाला चेहरा, खिन्न करुण हो रहा है और वह बड़ी मीठी मीठी प्यारी बालीमें नफ़ीस बोल रहा है और लड़की घबरा रही है रोते रोते उसका गला पड गया है वह शरमा रही है, डर रही है, बस सुबक रही है फिर आप समझ सकते हैं पुलिसवालेने क्या किया ' वह चारो हाथ पाव धरतीपर टेककर बकरीका बच्चा बन गया और लड़कीसे नहेंसे ममनेकी बोली बोलने लगा बीच बीचमे लोरी गाने लगता मने इस सुन्दर दृश्यको देखा, और सोचा, आध घण्टे बाद यही आदमी आख चढाकर, डण्डा तानकर, निर्दयतासे किसी भी ऐसे आदमी को पीटने लगेगा, जिसे न उसने पहले कभी देखा है, न जिसके अपराधका उसे कुछ पता है उस समय म सहसा अवसादसे खिन्न, उदास, पस्त हो गया मस्तिष्क ही नही मानो मेरा सारा चित्त किसी बोझसे दबकर भीतर ही भीतर बठने लगा ऐसी अगाध अबूझ पहेली है यह जीवन लखनपाल लो थोडी कोगनक लो ?"

लखनपालने अकस्मात प्रस्ताव किया, "यदि एक दूसरेको हम 'तू' से पुकारें तो ?"

'हा, हा पर अब भाई यह और ज्यादा नहीं लो, तुम तो पूरे प्यारपर उतर आए छोडो छोडो ! लो, यह प्याला तुम्हारे स्वास्थ्यके नामका अच्छा दूसरा उदाहरण लो मने एक फ्रेंच पुस्तक पढी फासी की सजा पाए एक आदमीके विचार और भावनाओंका उसमें वर्णन था वर्णन श्रेष्ठ था, प्रबल, सगीतमय, ज्वलत और प्रोज्वल पर मन पढा और पढ़ता गया और सच, कोई गहरी छाप मुझपर उसकी नहीं बठी

न क्रोध आया, न आवेश एक शात, निरानन्द अलस, थकानका भाव ही मुझे हुआ किन्तु अभी कुछ दिन हुए कि अखबारम फासके एक खूनीकी फासीका हाल मने पढा कदी तयार हो रहा था कपडे वपड पहनकर जायगा और फासी लटक जाएगा कि वही था एक अफसर कदी बिना मोज पहन नगे परोपर जूता चढाने लगा अब देखो उस चण्डाल अफसर को ! उसने पूछा, क्यो, मोजे नही ?'

"कदीने उसे जरा देखा जस सोच रहा हो फिर पूछा "वह जरूरी है ?" तुम समझ सकते हो, यह दो शब्द कारतूसकी ता गोलीस मुझ चीरते हुए चले गए कानूनके जोरसे दी गई मौतकी सजाकी विभीपिका उसकी मूखता और व्यथता एकदम चित्र लिखी सी मेरे सामन काली काली उठ आई मौतकी बात है तो एक और किस्सा भी ला एक मेरे दोस्त मर गए फौजमें कप्तान थे, आवारा और भार्कके शराबी लेकिन दिल हीरेका था मने वसा जवाहर आदमी नही देखा जाने क्या हम लोग बिजलीका कप्तान उन्हे कहते थे उनका पडोसी था म और यह काम मेरे जिम्मे पडा कि कपडे वपडे पहनाकर लाशको ठीक कर दू मन कपडे लिए और उसपर बज लगाने लगा एक डोरी होती है उसे इन बिल्लोके बीचमेंसे निकालकर कालरके दो छोटे छोट छदामें लेकर बाध देते ह यह सब कुछ तो मने कर लिया बस अब हल्का फन्दा देकर उसे हिलगा देना बाकी था, या क्या कि म खासी परेशानीम हा आया इसी असमञ्जसमें एक बेहद सीदी साधी बात मुझ सूझी सोचा, मामूली सी गाठ क्या न दे दू ? सीधी भी है, जल्दी भी बध जाएगी और आखिर फदा या गाठ, बात तो एक ही है उस कोई फिर ता खोलने बठता है नही बस मनमें इस सूझका उठना था कि एक साथ मौत मेरे सारे जी में, बदनमें बिजली-सी कौंध गई अब तक कप्तानकी पथराई आखोमें देख रहा था, ठण्डी देह छू रहा था पर मौतकी एसी घनिष्ठ अनुभूति मुझ नहीं हुई थी यह गाठकी बात आई कि उस अवश्यभावी अतिम समाप्तिकी अनुभूति छनमें मेरे व्यक्तित्वके रोम रामम समा आई, जब सब सुप्त हो जाएगा, न शब्द रहेंगे न काम, न इच्छाए, न तुम, न कोई, न

कुछ म उदास, झुककर मानो धरतीपर गिरनेको हो गया इसी तरह की सकडो बातें कह सकता ह जो छोटी ह, पर दहला देगी इस गत महा युद्धमा ही लो लोगोन क्या नही सहा ? क्या नहीं देखा ? लकिन इन घटनाग्रोका क्या निर्देश है, क्या उद्देश्य ? म निणयपर पहूचना चाहता हू और मेरे मनम एक बात उठती है हम ऐसी छोटी छोटी बातोकी राह चलत देखत ह और अधे होकर, उपेक्षासे मानो उन्हे कुचलकर, निकलते हुए चले जात ह लेकिन आएगा एक कलाकार कि उन्ह सम्भालकर छुएगा और चुनकर उठा लेगा वह फिर उन्हे कौशलसे बुनकर जीवनका एसा चित्र, ऐसा नमूना पेश करेगा जो मनोज्ञ होगा पर दुद्धष! उसे देखकर हम चौक उठेग, कहेगे—'हे राम यह तो सब हमने भी अपनी आखाम देखा था पर हमें कुछ भी दिखाई नही दिया था हमारे भीतर यह कुछ भी नही पहुचा था !' किन्तु हमारे रूमी भाषाके कलाकार दुनियामें सबसे सच्चे हार्दिक कलावादी ह, फिर भी जाने क्यो अबतक इन वेश्याग्रो और वेश्यालयोको दम्बा—अनदेखा छोडते रहे हू? एमा क्यो हुआ, इसका जवाब मेरे लिए कठिन है शायद उन्ह कुछ सकोच हा शायद किसी सोधका या सोधियोका विचार हो या डर हो, हमें लोग अश्लील लेखक न कह अथवा आशका कि लेखककी रचनाके अतगत वणनोकी अपेक्षामे लोग उसके व्यक्तिगत जीवनका अनुमान न लगाने लगें और फिर उसकी निजी ममगत गोप्य बातोकी कुरेदबीन ग्रार छीछालेदर करें या शायद अवकाश उन्ह कम था या कहो आत्म विसजनका भाव उनमें इतना भरा न था, न इतना आत्म विश्वास, कि एक बार आख मूदकर इस अधेरे गतमें कूद पड और, और तह तक पहुचकर बिना पक्ष, बिना उपाख्यान, बिना व्यथ दया सीधे सादे ज्यो-के त्यों रूपम यहाके राजमर्राके घर्रा देनेवाले सत्यको चित्रित कर जब उस कलाकारका उदय हो तब बने वह पुस्तक जो दुनियाको कपा दे, जो विपल्व कर दे"

रागसरनने विमनस्कतासे कहा, 'लेकिन पुस्तकें तो लिखी जा रही ह"

उसी अनमनस्कतासे पवनजयने भी दुहराया, "हा, लिखी जा रही

ह, किन्तु या तो वे मिथ्या ह या बालकोंको बच्चोंको, बहला रखनवाल थियट्रिकल खिलवाड उनमें छल है, अथवा अलकार वे एसी प्रच्छन्न, गूढ, रूपक बहुल होती है कि उनका भाव भावी सन्ततिके सन्त जन समझें तो भले समझें पर किसीने उस वास्तव जीवनको नग हाथोंसे नही छुआ स्फटिक-सा पवित्र हृदय और असाधारण प्रतिभा लेकर एकबार एक महान् लेखक* उसके तट तक गया, और मानो उसकी आत्मामे सूक्ष्म दर्शी दपणकी तरह वह सब कुछ प्रतिबिम्बित हो रहा जो बाहरसे दीख सकता था लेकिन न वह मिथ्या कह सकता था, न लोगोंको उद्विग्न करना वह चाहता था वह व्यक्ति था जो मानो साइमनको एसे देखता जैसे बिचारा एक जन्तु एक प्राणी, एक अक पर वह सोचता, इसके भी एक मा है, इसम भी कही प्रेम है वह अपनी अन्तर्यामी, सहृदय सही सच्ची निगाहसे इन गणिकाओंको देखता ज्यों का-त्यों खीचकर अपने मस्तिष्कमें धारण करता पर जो उसने नही जाना वह उसने नही लिखा इस लेखकने अपनी सरल सत्यवादिता और कठोर ममग्राही ईमानदारीमें कई बार निम्न वगके किसानको भी अपनी कलमसे छुआ लेकिन उसने अनुभव कर पाया कि इन लोगोकी बोली इनके भीतरकी बात, इनकी आत्मा एकदम उसके लिए अधेरी ह, अज्ञय है और वह सौजन्य पूवक मानो उस अज्ञय आत्माकी प्रदक्षिणा करके रह गया पर जो कुछ उसने देखा उस अमूल्य निधिको वह जगह-जगह भाति भातिके अपने पात्रोंके मुहसे कहला कर इन्द्र धनुषकी भाति खीचकर वह हमारे लिए रख गया मन जानकर यह विषय छेडा है अब लोग जासूसों के बारेम लिखते ह वकीलो इन्सपक्टरो लेखकोंको अटरनियो पुलिस के अफसरो, विधवा सक्त और प्रेमलिप्त और भद्र कमनीय महिलाओ आदि आदिके बारेमें लिखते है और ईश्वरकी शपथ कमाल लिखते है लकिन आखिरकार य सब लोग क्या ह ?— मनुजताकी गन्दह मल है जो इसलिए ऊपर आ गय ह कि हल्के ह उनका जीवन जीवन नही है विकृत मनुजताका विभ्रम है रंगीला पर अवास्तव कृत्रिम, अध

*शायद लेखकका अभिप्राय है चेखव

कितु दो वस्तु ह, जो पत्थरकी चट्टानकी भाति सत्य हैं, अततीय, और स्वय मानवता जितनी सनातन और युग प्रतिष्ठ । एक गणिका, दूसरा किसान और इन दोनोंके बारेमे हम कुछ नही कहने उनके कुछ कुतरे, कट, भ्रष्ट, अतिरजित वणन हमारे साहित्यमें हैं, और बस पूछता हू, इस अमानुषी व्यभिचारके रौरवमेंसे खीचकर हमें रूसी साहित्यने क्या दिया है ? *बस एक—सोनस्का मामलडावा दलित, दास और अछूतके विषयमें हमें आछे, झूठे, और मीठे गद्य काव्योसे अधिक क्या दिया है? हा एक ग्रन्थ है और कुल एक अकेला ग्रन्थ है जो दुनियाकी महान रचना-आम महान है, जिसके सत्यकी शक्तिसे लोगोंके रोगटे खडे हो जाते ह, सास बधे रह जाते ह आप समझ तो रहे होगे, म किसकी बात कह रहा हू ? "

धीमेसे लखनपालने कहा† "वही 'इक गडा नही कि फिर मरे ही निस्तारा है"

"हा !" पत्रकारने कृतज्ञ स्निग्ध भावसे उसे देखा

"लेकिन सोनश्का" यारश्करने विश्वस्त स्वरमे कहा, "सोनेश्का तो एक असाधारण मन स्थितिके टाईपकी द्योतक है एक प्रकारकी मनोवैज्ञानिक पहेली, शिल्प चमत्कार "

धनजय जो अबतक अन्यमनस्क हलकी सामने मानो जबरदस्ती बोल रहा था अब गरमा उठा, "बहुतेरी बार मने यह बात सुनी है, सकडा बार और यह झूठ है इस अश्लील भ्रष्ट पशके नीचे, इन भद्दी वाहियात मा बहनकी गालियोके नीचे, घृण्य मनहूस बेहूदा, बकवास-के पीछे भी मे कहता हू, कुछ है वही सोनेश्का मामलडोवा अब भी

*डास्टविस्कीकी पुस्तक Crime and Punishment (पवित्र पापी) की नायिका

†टाल्स्टायकी पुस्तक The Power of Darkness (पाप और अन्धकार) पुस्तकका उपशीर्षक है एव रूसी देहाती कहावत जिसका यह भाव है

जीवित है रशियन वेश्याका नसीब कैसा दयनीय है, सकटमय, रक्त रजित कसा दुघट बेहूदी है उसकी वत्ति रूसी खदा रूसी उदारता और निरपक्षता, पतनामुखी रूसी निराशा रूसी मस्कृतिकी हीनता, रूसी आडम्बर, रूसी साहिष्णुता, रूसी बेहयाई, मानो यह सभी कुछ एक दूसरेको चुनौती देता यहा मिलकर इकट्ठा हो गया है अरे, जिन्हे देखत ही सयम सकोच ताकपर रख साधिकार हाथ पकडकर तुम सीध पलग की तरफ खीच चलते हो, उन्हे एक बार जरा गौरसे दखो तो व सब निरी बच्ची ह बच्ची अरे, किसीको उनम ग्यारह वपसे बडी न समभो किस्मतने उन्हें यहा ला पटका है और वे इस व्यभिचारक अखाडेमें मानो परियोंकी और खिलौनोंकी अदभुत दुनियामें रह रही ह अनुभवसे अनुभवा वे नही होती विकसित वे नही होती बचारी वे विश्वासी जीव, खिलती खाती, दिखावेके छोटे मोट शौकोमें मस्त अपन रहती चली आती ह इ हें पता नही, अब वय कर रही ह, और आध घण्टे बाद जाने क्या करेंगी निरी बच्ची जा ह तितलीके पर जसा खुशनुमा अबाध यह बचपन मने उन गत यौवना बूढी वेश्याओंमें भी देखा है जिन्होने ऊपरी जिन्दगीके सब साल इसी कीचडमें गुजारे ह, रीढ जिनकी भुक गई है गाल पिचक कर मिल गए हैं फिर भी पीडाके प्रति करुणा, पापके प्रति दया, उनके भीतरके ये कामल भाव बिल्कुल मिट नही गए ह अभी दखो '

पवनजयने जितने बठे थ सबपर धीरसे निगाह फरकर दखा और अकसमात निराशाम हाथ उठाकर थके स्वरमें कहा "खर ओह ! म कितना बोला ह ! आज तो म दसके बराबर बोल लिया और ब म्त लब '

यारस्करने कहा, लेकिन कुमार पवनजय सच, यह सब तुम्ही क्यो न शब्दोमें भरनेकी कोशिश करो ? तुम्हारा मन पूरी वेदनासे इस समस्याम पडा हुआ है

पवनजयने उदास हसीसे कहा, 'मने कोशिश भी की थी पर नतीजा कुछ न हुआ मने लिखना शुरू किया कि 'क्या' कस', 'क्या' म उलझ रहा मेरे विशेषण ओछे पडते शब्द ढीले वाक्योम जीती आग आती नही

थी सब मिलकर भाषा नीरस, सपाट, सूखी घास-सी बन जाती है टरेखोफका नाम आप जानते होंगे वह कहीं जा रहा था, यहांसे भी गुजरा हां वही प्रसिद्ध टरेखोफ म उससे मिला, और मने उसे यहांके जीवनकी सब बात कही हम बहुत देरतक बातें करते रहे... वह भी; बहुत कुछ मने उससे कहा, जो आपसे नही कह सकता आप थक जाएंगे - अतमें मने कहा, 'यह सब मुझसे ले लो, और कृपा कर कुछ लिखो' बहुत ध्यानपूर्वक उसने मेरी बातें सुनी फिर वह मुझसे बोला 'पवनजय नाराज न होना जीवनम म जिसस मिला हू उनम शायद ही कोई ऐसा हो, जिसने अपनी कोई कहानी या अपनी कोई बात मुझपर नही लाद दनी चाही और नही कहा कि उनकी बातपर म कहानी बना दू या उपन्यास लिख दू या जिन्होने मुझ नही सिखाना चाहा कि यह लिखू या वह न लिख पर जो तुमने अभी अभी मुझ कहा है एकदम इतना भारी है, अमूल्य, अतोल, अथाह कि म क्या बताऊ पर मे उसका क्या बना सकता हू ? जो तुम्हारे मनम उठ रहा है उस महाग्रन्थको लिखनेके लिए दूसरोसे सुन शब्द काम नही देग फिर चाहे वे कितने ही यथार्थ हो चाहे नोटबुक लेकर पेंसिलसे वहीके वही क्या न नोट किए गए हो नहीं, इसके लिए पुस्तक लिखनेके किसी प्रच्छन्न उद्देश्यके बिना ही बिना आशा, बिना आकांक्षा, निरीह उस जीवनमें स गुजरना होगा गुजरना क्या, उस जीवनको अपनाना होगा भाई, तब वह तुम्हारी महान पुस्तक बनगी

"उनके शब्दोसे मुझे निरुत्साह हुआ, पर दम भी आया तबस म अपने चित्तमें निश्चय मानता हू कि अब नही तो पचास साल बाद उस प्रतिभाशाली लेखकका उदय होगा ही जो ठेठ रूसी होगा और जो इस जीवनकी तमाम लाछनाको सारी कालिमाको मानो अपने कण्ठमें धारण करके अपनी कलमसे उस जीवनके वह कलामय चित्र प्रस्तुत करेगा जो माद होग सुदर होगे तेजाबसे तीखे तथा मृत्युसे भयकर, और अमिट और अमर होग और हम सब कहगे, 'अरे, यह तो हम सबका देखा जाना है पर उसीमे यह आग! यह विभीषिका !!' इस उदयोन्मुख कला

मारम म अपनी सम्पूण आत्मासे विश्वास करता हू"

ससनपालने गम्भीर होकर कहा, "भगवान करे एसा हा उमीके नामपर, आओ "

अकस्मात छोटी मनकाने कहा, "लेकिन, सचमुच जा कीडाकी तरह लम्पट, अभागा जीवन हम बिताती ह अगर कोई उसे '

कि दरवाज पर खटखट आहट हुई और गुलाब सी पोशाकम छवि मान जनी भीतर आई

११

इस स्थानके प्रमुख व्यक्तिके उपयुक्त नि सकोच स्वच्छद भावसे उसने सबका अभिवादन किया और आकर कुमार पवनजयकी कुर्सीके पीछे लगकर बठ गई वह दान विभागवाले उसी जमनके यहासे आई थी जिसने पहले छोटी मनकाका छाटा था उसके बाद बदलकर सरक्षिकाकी सिफारिशसे पाशाको लिया पर जनीका आरम विश्वस्त दुाभ और लावण्य युक्त सौदय उस जमनके लालसासिक्त हृदयमें बुरी तरह चुभ गया था दो तीन घण्ट अभी-यहा अभी वहा डोल फिरकर उसने साहस-का सचय किया इतन नया दम भी आ गया था फिर लौट कर वही अना मरकानीके यहा पहुचा यहा बठकर इतजार करने लगा कि कब वह चश्मकी दुकानवाला उसका दोस्त उत्तम कालिया जनीको छाड जनी खाली हुई कि भट यह आदमी उसे ले गया था

तिमिराकी आखाम भरे मूक प्रश्नको देखकर जनीने घृणास खट्टा मुह बनाया वह सिहर आई और सिर हिलाकर समथनमें बोली गया कम्बख्त ! थ ?

पवनजय जनीको असाधारण ध्यानम देख रहा था शुरुसे ही और लडकियोस जनी उसकी निगाहमें अलग थी उसके स्वाधीन उद्-दण्ड प्रगल्भ और तीखे स्वभावके कारण पवनजयके हृदयमें उसके लिए

आदर था और अब जो मुडकर देखी पवनजयने उसकी ज्वालासे दीप्त आख, कपालपर चमकती चमक, तीक्ष्ण लालिमा, मिचे ओठ जो ऐसे जोरसे दबे थे कि लहू आ जाय तब उसने जाना कि इस लडकीके भीतर कबकी पकती हुई विषम घणा अब भडककर उसे कमो घोट रही है उसने सोचा (और पीछे भी, इस क्षणकी याद कभी उसे भूली नही) कि एसा जाज्वल्य द्युतिमान सौदय तो उसने जेनीमें भी पहले नही देखा उसने यह भी देखा कि लखनपालको छोडकर वहा उपस्थित सब व्यक्ति एकाएक अवश उत्कण्ठित, साकाक्ष उसे देख उठे कुछ सीधी खुली निगाहसे देख रहे थे, कुछ चोरी चोरी, और कुछ मानो अनजानमे इस स्त्रीका अपरूप सौदय और यह विचार कि वह जिस क्षण चाहा सुलभ है, उनकी कल्पनामे उत्ताप दे रहा था

जनी, क्या है ? मालूम होता है, कुछ बात हुई है !

अत्यन्त स्नेहपूवक जनी अपनी उगलियोका धीमे धीमे पवनजयकी बाहपर फरने लगी

कुछ नही पवनजय यही, अपनी तिरियाओकी बात है तुम्हारे कुछ कामकी नही है'

पर तुरत तिमिराकी ओर मुड कर भावाविष्ट शीघ्रतासे वह बात करने लगी उसकी भाषा समझ न पडती थी अपने दोनोके बीच बोलनेके लिए उ होने यह अदभुत भाषा गढ रक्खी थी उसमें हिब्रूके और जाने किस किस भाषाके, और चोर उचक्कोकी गुप्त भाषाओके शब्द भी विचित्र अनुपातमें मिला मिला रहे थे तिमिराने बीचमे ही बात काटकर आगोमे पत्रकारकी ओर सकेत करके कहा, 'उसे छल नही पाओगी जनी ! वह सब देखता है, और सदा चौकन्ना है"

और पवनजयने वास्तवमें समझ भी सब लिया, जेनी क्षुब्ध आक्रोशसे बतला रही थी कि इस एक दिन और रातमें गाहकी बद जानेसे अभागिन पाशा, दससे भी ज्यादाबार और हरबार अलग अलग आदमी इस बार उसे दौरा हो आया, और वह बेहोश हो गई उसे अभी अभी लाए थे लाकर दवाकी कुछ बूदें और एक गिलास शराब दी,

होशमें किया, और फिर एमा उडवानीने गाहकोंकी खातिरमें फिर उसे ड्राइंगरूममें भेज दिया जनीने उसका पक्ष लेकर विरोध करना चाहा तो उसे गालिया देकर बाहर निकाल दिया गया है सजाकी भी धमकी मिली है

यारस्करने आखें उठाकर असमजसकी वाणीसे पूछा, "बात क्या है ?"

"कष्ट न कीजिए कोई ऐसी बात नही है ' जेनीने उद्विग्न स्वर में कहा, "यही अपने घरेलू मामले हैं कुमार पवनजय, म आपकी थोडी शराब ले लू "

उसने आधा गिलास शराब अपने लिए भरी और गट उसे पी गई

पवनजय चुपचाप उठा और दरवाजकी ओर बढा

जनीने उसे रोकते हुए कहा, कोई बात भी हो, कुमार पवनजय छोडो भी "

"जान दो जनी' पत्रकारने आपत्तिकी, ' म उत्पात नही करू गा मेरा मतलब सीधा है पाशाको में यहा ले आनेके लिए जाता हू जरूरत हुई तो उसकी फीस भी भर आऊगा यहा बिचारी जरा सहारेसे लेट कर आराम कर लेगी थोडा आराम ही सही नूरी दौडकर एक तकिया तो ले आओ ' पत्रकारकी बलिष्ठ देह स्थिर गतिसे दरवाजसे ओझल हुई और किवाड भिडे कि सुवेश बनवाल बोला "भाइयो हम यह गलीके किस हूशको उठाकर साथ ले आए हैं क्या बात है कि हम एसे लफगोको अपने साथ मिलने दते ह ? लखनपाल, यह सब तुम्हारी करतूत है तुम यही किया करते हो '

' लखनपालने नही, मैंने उसका परिचय कराया था ' रामसरनने कहा 'म जानता हू वह बाइज्जत आदमी है और नेक दोस्त !

"हुआ नेक दोस्त ! अच्छा दोस्त है कि औरोंके पसेपर शराब उडाता है तुम्हें दीखता नहीं है कि हर चकलोस लगे जो कुछ टुकड खोर लफगे हुआ करने ह उसी थैलीका एक यह है ज्यादा मुमकिन तो है कि यहीका एजेंट-वेजेंट कोई हो जो लोगाको इस ठिएपर बहकाकर लाता

और अपने पसे सीधे करता हो'

यारस्करन भत्सनापूर्वक कहा 'खामोश सुवेश यह ज्यादती है"

लेकिन सुवेश खामोश नहीं हो सकता था दुर्भाग्यसे उसके साथ दस्तूर यह था कि जब वह शराब पीता तो उसका असर न उसकी टांगों पर होता था, न जुबानपर बस सिर फिर जाता था तबियत चिड़चिड़ी, गुस्सल हो जाती थी और भीतरसे जैसे उसमें कुछ खुजली उठती रहती थी कि अरे, 'लड, लड ! पवनजयपर वह देरसे झल्ला रहा था यह पवनजय जो इस शाइस्तगीसे, खुश इखलाकम पेश आता है और यहा इस चकलेमें भी सब उसका लिहाज करते ह, इसपर उसे बेहद चिढ थी और बनवालने बीचम दो एक जली कटी बात कही भी तो उनको जिस सहज उपेक्षासे उसने अनसुना सा कर दिया, इसपर वह और भी कुढ गया

'और उसका तज देखो जिससे वह हम लोगोंसे बात करता है' बनवाल झल्लाता रहा जैसे नवाब ही हो मानो हम सिखा रहा हो, समझा रहा हो पुचकार रहा हो ! मुफ्तखोर हरामी, गलीकी जूठन कहीका"

जनी जो इस तमाम समयम अपनी उद्दीप्त चमकती काली आखोंसे चिंगारी फेंकती एक-टक उसे देख रही थी यकायक ताली बजाकर बोली 'शाबाश, मर विद्यार्थी बाबू ! यही बात है शाबाश ! शाबाश ! शाबाश ! यही तरीका है खूब लिया है तुमने उसे बेशक वह एक ठूंठ है कि आदमी है ? आएगा, तो म सब उससे कहूंगी'

"जी हां जरूर कहिए खूब कहिए" बनवाल मुह बिचकाकर एकटरकी भाति बोला म खुद य सब बातें उससे कहूंगा ?'

'क्या खूब मेरे बहादुर बाबू! म तुम्हे प्यार करती हूं, बाबू!—" जनी मेजपर घूसा मारकर सहर्ष सकटाक्ष बोली, 'अजी, उल्लू है उल्लू! आप भी भला किसके पीछ पडते है !"

छोटी मनिया और तिमिरा हैरतसे जेनीको देखने लगी पर उसकी आंखोंमें जो आभाकी जोत लहक रही थी और कापते फले नथनोंम से

जो लपट निकल रही थी उस उ हाने देखा तो वह सब समझ गइ और मुस्कराने लगी छाटी मनिया ञसती हुई नि दामूचक सिर हिलान लगा जनीकी आत्मा जान किसकी भूखी रहती थी उसे जब लगता कि कुछ अघट घटनवाला है तब उसके चेहरेपर एसी ही रउकी तप्तिकी चमक आ रहती

नखनपालन कहा सुवश कमर बदल मतर न करा यहा सब बराबर ह '

नूरी तकिया लेकर आइ और दिवानपर रख दिया

बनवाल उसकी तरफ चिल्लाकर बाला यह क्या आया है ? इस फौरन ले जाओ यह समय नही है '

'छाडा भी मेरे पीतम इन पचडाम क्यो पडत हा !' जनीन मधुमयी आवाजम कहा और तकिएका तिमिराकी पीठके पीछ छिपा दिया 'जरा ठहरा, पीतम प्यार ला म तुम्हारे पास बठ जाती हू '

वह मजका चक्कर काटकर गई सुवेशको बलात कुर्सीम बिठाया और आप उसकी गोदमें बठ गई सुवेशकी गदनमें अपनी बाह डालकर उसके आठाका अपने मुह तक खीच लाई, और एस जारसे व्याकुल, देर तक उसका चुम्बन लिया कि सुवेशको साम चढ आया अपनी आखो से बिरकुल सटी हुई उसने रमणीकी आख देखी—दीप्त अस्पष्ट अनिमेष, अधियारी और अथाह क्षणके सूक्ष्म भाग तक, पलभर, जसे उसे प्रतीत हुआ कि इन निश्चल गति हीन आखाम तीखी, उन्मत्त, घणा कुटी हुइ भरी है एक भयानक सिहरन उसम याप गई अनिवाय और भीषण किसी व्याधिका एक पूण सन्देश सा उसके मस्तकका एक बार आकर कौध गया कठिनाइसे जनीकी लता सी लिपटी बाहुआमें से उसने अपनेको छुडाया और उस दूर करके लज्जित हाफना पर हसता हुआ बोला बडी तबियतदार हो ! पूरी मिसलिना हो ! क्या नाम है, जनी ता ? खासी खूबसूरत बला हा तुम !

पवनजय पाताका लेकर लौटा पाताकी मूर्ति दयनीय थी और हैरतनाक चेहरा पीला उसपर नीलिमा छा आई थी कि जस खून

बध गया हो पथराई सी अधमुदी आखें अब भी बेहया बेजात हसी सी हस रही थीं खुले ओठ, फूली फनी दो भीगी, रगी, लाल कनरनसे थ और वह भीता चकिता, अनिश्चित कदमोसे चलती हुई आई कि जैसे डरती हो कि उसका एक पर कही दूसरेसे छोटा बडा तो नही हो रहा है। पालतू पशुकी तरह वह दिवान तक आई पालतू पशुकी ही तरह चुपचाप तकियेपर सिर डालकर लेट गई और वही बदहवास हसी हसती रही इससे प्रगट होता था, वह ठण्डी है

सज्जनो—आप क्षमा कर मुझ इन्हें तनिक निरवस्त्र करना होगा" पवनजयने कहा—और झट अपना कोट उतारकर सामने खडी किस किसीके हाथमें थमा दिया तिमिरा कुछ चाकलट और आसव तो लाकर देना'

सुवेग बनवाल फिर अपनी जगह खडा हो गया टागें आगे पीछ थी, कमर कुछ झुकी हुई और सिर सीधा तना अप्रत्याशित रूपम उस शातिको भग करत हुए पवनजयको सम्बोधन करके तीक्ष्ण व्यगमें वह बोला, 'अह सुनो, तुम्हारा नाम क्या है ? तो यह जरूर तुम्हारी रखल है अब ?' और अपन बूटकी नोकसे लेटी हुई पागाकी दिशामें उसन सकेत किया

'क्या' भवें समटकर पवनजयने हठात् सयत स्वरमे कहा, क्या'

"नही तो तुम उसके आशिक हो बात एक ही है क्या नाम उस धधका यहा ? हा वही वही, जिसके लिए औरत कमीज कातती रही रहती ह और अपन पुत्रकी सारी कमाइ जिनके साथ बाटकर खाना चाहती ह क्या नाम ?'

पवनजय झुक पलकोंके नीचेस एकटक गम्भीर सहास देखता रहा फिर भारी शान्त आवाजमे प्रत्यक शब्दको धीमे और सावधानतापूर्वक मानो एक एक अलग अलग करके बोला, 'सुनो, यह पहली बार नही है कि तुम मुझसे झगडा मोल लना चाहते हो लेकिन एक तो म देखता हू कि तुम जितने ऊपरसे सजीदा बनना चाहते हो उतनी ही बुरी तरह

नशेमें चढ़ हो दूसरे तुम्हारे साथियोंकी खातिर मैं तुम्हारा लिहाज कर रहा हूँ तो भी कह दूँ कि अगर तुम्हारा इरादा फिर इस तरह कुछ बकने बकानेका हो, तो चश्मा उतार लेना"

सुरेशने कन्धे उचकाये सानुनासिक स्वरमें बोला, "क्या कहा! कौन सा चश्मा?—कैसा चश्मा?' और अनायास दो उंगली बढ़ाकर उसने चश्मेको नाकपर सम्भाला

पत्रकारने अमनस्क उन्मन मुद्रासे कहा, 'न हो कहीं मैं पीट पाट बैठा तो चश्मेके टुकड़े आँखमें जा सकते हैं!

झगड़ा सहसा बढ़ गया पर कोई हँसा नहीं बस छोटी मनसा हाथकी ताली बजाती कभी अचम्भेमें आह कर लेती थी जनी उत्कट, और एकसे दूसरेको देख रही थी

वनवाले खिझे हुए ढीट बच्चेकी तरह चिल्लाया "तो समझ बद लेमें मैं भी ऐसा दूँगा कि तुम याद रक्खो पर सोचता हूँ हरेक पर क्या हाथ छोड़ूँ' वह यहाँ कुछ और शब्द कहना चाहता था, पर जाने क्या समझ कर रुक गया कोई बराबरका हो तो? और फिर भाइयो मैं यहाँ देरतक ठहरने वाला भी नहीं मैं कुलीन हूँ ऐसे लोगों के साथ हाथापाईमें नहीं पड़ सकता'

अहंकारसे सिर मतर रख शीघ्रतासे वह दरवाजेकी तरफ बढ़ा

वहाँ जाते हुए पवनजयके पाससे गुजरना होता था पवनजय आँख-आँखमें उसकी गतिविधि देख रहा था एक क्षण वनवालेके मनमें आया कि जाते एकदम बगलसे पवनजयको एक दे, और झट कूदकर दूर हो जाय तब तक उसके साथी लोग बीचमें आ पड़ेंगे हो और लड़ाई न होने देंगे किन्तु पत्रकारकी ओर बिना आँख उठाये भी मानो उसे चेत हो गया मेजपर सिमटे बैठे बड़े साथ, बलिष्ठ और विशाल शरीरवाले इस प्रतिद्वन्दीसे जो कुर्सीपर सिर झुकाये चुपचाप या अनजाने भावसे बैठा है उलझनमें उसकी अपनी कुशलताकी विशेष सम्भावना नहीं है जाने पलक मारतेमें कब उठकर यह आदमी और भी जो चाहे जो उसका नहीं बना सकेगा? उस गम्भीर पत्रकारकी उपस्थितिके प्रति मानो आप ही-

आप भय, आशका, सम्मान, और खतरेकी आहट सी उसमें उग गई और वह जोरकी आवाजसे दर्वाजेके किवाड भडकर छज्जेमसे चलता चला गया

जाते हुए सुवेशकी पीठपर फककर जेनीने कहा, "बुरी बला, भली टली तिमिरा, लाओ मुझ कुछ कोनक दो"

पर दुबला पतला नारायण पतकी अपने स्थानसे उठा और अपने साथीका पक्ष लेना अपने लिये आवश्यक बनाकर बोला "आपकी जो इच्छा सज्जनो अपनी अपनी बात है लेकिन मेरा कुछ कर्तव्य है और सुवेश गया है तो मैं भी जाता हू उसकी भूल थी उसने गलती की, सही हमें अपने बीचमें उसे कह सुन सक्ते थे लेकिन हमारे साथीका जब अपमान हुआ है तब म यहा नही रह सक्ता हू म जा रहा हू

"ओ मेरे परमात्मा' लखनपाल खिजा हुआ तेजीमे बोला, 'शुरुसे सुवश बहूदा गवाराना अहमकाना हरकतें करता रहा है यह क्या हम सबकी इज्जत रखनका तरीका है? राजनीतिक सभाओंम, सम्पादकीय दफ्तरोमें, क्लबोंमें, हम सब जगह आपसमें साम्प्रदायिक एकता चाहते ह खूब! हमें सरकारी अफसर नही बनना है कि अपने साथियोके दोषोका समथन करना सीख"

"तो भी आप जो कह, म दलकी सम्मान रक्षाके खातिर चला जाना आवश्यक समझता हू, और चला जा रहा हू" नारायण पतकीने अहमन्यभावसे कहा और चला गया

जेनीने उसकी पीठपर कहा, 'जाओ तुम्हारे जसोपर हम मिट्टी भी नहीं डालगी'

किन्तु मानवीय चित्तकी वृत्तिया कसी अधियारी ह, कसी व वूझ कसी यातनामय वनवाल और पतकी दोनो, गुस्सेम उन्होंने जो कुछ किया, उसमें सच्चे थे, फिर भी सुवेश हृदयमें सचाई आधी थी, पतकीमें उससे भी आधी वनवाल नश और गुस्सेमें चढा होनेपर भी, अपने मायमें पा रहा था कि एक विचार, एक चाह, भीतर धीमी धीमी चोट देकर, धक्की देकर, मानो अपना सिर उठा रही है कहीं भीतर-ही-भीतर उसम सकल्प सगृहीत

हो रहा है कि वह यहासे उठ चले बाहर पहुचे, वहासे चुपचाप जेनीको बुला भेज और उसे लेकर एकातमें पहुच जाए सबके बीचम यह सहज न होता नारायण भी मानो इसी विचारके स्वादमें बनवालके पीछे पीछे चला उसके पास कुछ था भी नही और वह सुवेशसे लेना चाहता था ड्राइग रूममें आकर दोनोन सब बातें ठीक की और दस मिनट बाद कमरेके द्वारसे सरक्षिका जकियाका छोटा-सा काइया लाल लाल चेहरा झाकता दीखा उसन कहा, "जेनी, तुम्हारे कपड धुलकर आए ह, जाओ उन्ह सभाल लो और तुम नूरी, तुम्हारे एक्टर बाबू एक मिनटके लिए तुम्ह बुलाते हैं एक गिलास कुछ पी जाओ वह हरीता और बडी मनका भी साफ ह"

दर तक पवनजय और बनवालका यह आकस्मिक, अनुद्यत और असमान झगडा चर्चाका विषय बना रहा एसे समय पवनजयके चित्त म सदा ग्लानि, खेद, बचैनी और पछतावेका भाव हो जाता था वह कुछ लज्जित हो रहा था उपस्थित सबलोग उसका पक्ष लरह थ फिर भी उसन उदास, थकित स्वरमें कहा, 'सज्जनो, परमात्माके लिए मुझ जाने दो म गया भला म आप लोगोंमें भद क्यो डालू कसूर था हम दोनोंका म चला जाता हू बिल चुकानेकी फिक्रम न पडियगा, पाशाको लेने गया था तभी म साइमनको सब चुका आया था'

'लखनपाल एकदम खडा हुआ और जोर जोरस बालोंको खुजाते हुए बाला ओह, नही, म अभी जाकर उसे खीच लाता हू म सच कहता हू, वह लडके दोनो भले हैं, सुवेश भी, नारायण भी पर अभी कम उम्र ह जसे पिल्ले अपनी ही पूछको देखकर भूकने लगत ह वही बात है म उन्ह ले आता ह म शर्तिया कहता हू सुवेश माफी माग लगा"

वह चला गया और पाच मिनट बाद वापिस आया 'वे आराम कर रह ह" उसन म्लान भावस हाथोंको निराश फककर कहा, 'दोनो के दोनो आराम कर रहे ह!

१२

तभी माइमन ट्रम दो गिलास सुनहरी झागकी शराब और एक विजिटिंग कार्ड रखे हुए आया

बैठे हुए सब लोगोंपर निगाह डाली, पूछा, "क्या मै पूछ सकता हू, आप लोगोमेसे गणेश प्रधान यारदकर कौन है ?"

यारदकरने कहा, "यह मै हू"

"इनायत है किन्ही एक्टर साहबने यह भेजा है"

यारदकरने विजटिंग कार्ड लिया और जोरसे पढा

> डि० ल० रेमुन
> अभिनेता, मेट्रोपोलिटन
> थियेटर

"क्या खूब !" विनय पालीवालने कहा, "इन थियटरवालोमें सबके ऐसे ही एक तर्ज पर नाम होते है किशन, बिशुन, अरुन, बरुन,"

पत्रकारने कहा, "तिसपर यह कि बडे से-बडे एक्टर तक जाने क्यो उन्हें बिगाडकर चबाकर बोलते है,"

'जी हा लेकिन अचरज तो यह है कि मेट्रोपालिटन थियेटरके इन कलाविद्से परिचित होनेका सौभाग्य मुझे अभी प्राप्त नहीं है पर हा, कार्डकी पीठपर कुछ और भी लिखा है अक्षरोसे तो जान पडता है, कि लिखनेवाले महाशय पिये हुए खूब है पढे लिखे कम

"रशियन विज्ञानके प्रकाश स्तम्भरूप विद्वान श्रीगणेश प्रधान यारदकर महोदयको मै प्रणाम करता हू मने उन्हे सयोगसे छज्जेपरसे जाते हुए देखा, सौभाग्य मानूगा यदि मुझे श्रीमानके साथ एक मेजपर बैठनेकी इजाजत मिले यदि श्रीमानको स्मरण न हो तो कृपया श्रीमान नेशनल थियेटरके तमाशेमे उस अभिनेताकी याद करे, जिसने जगली अफरीकन

का अभिनय करके श्रीमानका मनोरंजन किया था "

गारदरने कहा, "हा ठीक, अब याद आया एक बार इस नेशनल थियेटरमें किसी सावजनिक सभाकी सहायताथ तमाशा हुआ था उसकी व्यवस्थाकी बला मेरे सिर आकर पडी याद आता है एक लम्बा सा मूछ दाढी साफ आदमी था तो लेकिन बताओ भाइयो, क्या करू ?"

लखनपालने प्रसन्न भावसे कहा, "क्यो, उसे यही खीच बुलाइए तमाशा भी रहेगा '

"आप क्या कहते ह ?" प्रोफेसरने पवनजयकी ओर मुडकर कहा

'मेरे लिए सब एक बात है म उसे थोडा जानता भी हू आते ही पहले चिल्लायेगा, 'केलनर शम्पेन—फिर अपनी स्त्रीकी यादम आठ आँसू गिराएगा कहेगा, वह देवी है, सती है फिर देशभक्ति पूण एक लेक्चर आप सुनियगा उसके बाद फिर बिलके दामापर झगडा उठायगा पर सब मिलाकर मजका आदमी है"

"बुलाओ भी" विनयने किटीके कधपरसे कहा जो टाग हिलाती हुई उसकी गोदमें बठी थी

"और तुम वेल्टमन ?"

"क्या ?" वेल्टमैन चौंककर अपने आपमें आया अपने साथियोकी ओर पीठ करके वह दीवानपर लेटी हुई पाशाके बराबरमें बठा था बहुत देर उसकी ओर अत्यधिक सहानुभूति और सौहादसे देखते रहकर अतम उसके ऊपर झुक, कभी उसके कधपर कभी आलोपर और कभी गाल और कभी सफद गदनपर धीमे धीमे अपनी अगुली फर रहा था पाशा अपनी अधमुदी और कापती हुई पलकोंके नीचेसे सस्मित, सलज्ज और निलज्ज, सकाम फिरभी निरथक भावसे देखती हुई हंस रही थी, "क्या क्या कहा ? ओ, हा ! एक्टर को बुलाया जाय या नही ? मुझ कोई आपत्ति नही, जरूर बुलाइय "

गारदरने साइमनको कहकर उसे बुला भेजा एक्टर आया और तुरत अपने तमाशे दिखाने लगा दरवाजेमें वह रुका, हैट उतारकर उसने छातीके पास पकडा, जरा झुका जसे थियेटरमें कोई एक्टर बेंकके एक बडे

डायरेक्टर अथवा राजसी पुरुषका अभिनय करता हो मन-ही मन शायद वह अपने लिए इस हैसियतकी कल्पना कर भी रहा था

'सज्जनो, आपकी इस सम्माननीय निजी गोष्ठीमें क्या मुझे आनेकी इजाजत हो सकती है ।" एक ओर झुककर साभिवादन तथा कोमल स्वरमें उसने पूछा

उसे अन्दर बुला लिया गया और वह अपना परिचय देने लगा हाथ मिलाते मिलाते उसकी कोहनी कभी इतनी ऊची हो जाती कि हाथ छोट पड जाते थे अब वह बक डाइरेक्टर नहीं मालूम होता था पर जसे एक चुस्त, चालाक, फुरतीला, कसरती जवान लेकिन उसके चेहरेपर झुरिया थी, भवो और पलकोके बाल उड गये थे भद्दा, कठिन, कमीना, पियक्कड, बदमाश और बेरहमो का सा उसका चेहरा था उसके साथ दो रमणिया भी आई पहली हरीता, हरीता अपना मरदानीके इस आलयकी सबसे पुरानी पक्की सिकी रमणी थी उसने सब कुछ देखा था और वह सबकी आदी थी आवाज उसकी भारी थी और फट चली थी लेकिन सुन्दरता अभी उसे तज नही गई थी दूसरी थी वडी मनका हरीताने पिछली रातसे इस एक्टरका साथ नहीं छोडा था और वह उसे एक होटलमें ले गया था

यारश्करके बराबरमें बठकर उसने और ही नया चरित दिखाना शुरू किया उसने एक पुराने प्रौढ-वय लिबरल जमीदारका ढग बनाया, जो कभी कालिजमें भी पढा था और अब यूनिवर्सिटीके लडकोको पितृतुल्य सरक्षण और कृपालु भावके बिना नही देख सकता था

'सज्जनो, आप माने कि युवावस्थामें व्यक्ति दुनियाकी झझटोसे मुक्त, मौज और चनसे रहता है" और वह अपने कठोर और विकृत चेहरेपर एक प्रकारका प्रभावोत्पादक अतिरजित और असभाव्य भाव लेकर बोला, 'उच्चादशमें एसी श्रद्धा, सत्यकी खोजकी लगन, ऐसी शुद्ध प्रकृति हमारे विद्यार्थीवर्गसे उच्चतर, श्रेष्ठतर पवित्रतर और क्या है ?'

एक साथ मेजपर जोरसे मुक्का मारकर वह चिल्लाया,' केलनर शॉम्पेन"

लखनपाल और यारश्कर उसके ऋणी नही रहना चाहते थे सो

खासा एक जमघट, एक महफिल सी जुड गई जाने कहा से गायक मिर्जा और जिल्दसाज नन्ने भी कमरेमें आ पहुच और अपनी हल्की आवाजर गाने लगे

पता चल गया है प्यारी तू आ, जल्दी आ

मिया गबदू अबतक जग पड थ वह भी आ गय अदभुत भावसे अपने सिरको एक ओर लटकाकर और अपन मुरझाए हराकैन लालटनसे चेहरेमें वही आखोको जरा ब द और तिरछी करके विनीत स्वरम बाले, 'सज्जन विद्यार्थियो आपको एक बचारे वद्ध पुरुषका ख्याल रखना चाहिए मैं शिक्षासे प्रेम करता हू और उसका महत्व जानता हू मुझ इजाजत दीजिए कि '

लखनपाल इन सबका दखकर प्रसन्न था पर यारम्भ आरम्भम जबतक कि शराब उसके सिरतक नही पहुची तनिक भौं सिकाडकर अप्रसन्न और लज्जित भावसे मानो यह सहता रहा कि तु कमरा दम दम गरमा रहा था शोर चढा, धुआ बढा वहा उमस-सी हो आई साइमनने जोरसे बाहरकी खिडकिया ब द कर ली कामिनिया भी जा या तो अभी मुलाकातसे निबटकर आई थी या अभी नाचकर चुकी थी सब कमरेमें चली आई वे आई और थिरकती चलती इस उसके घुटनापर बठने, गीत गाने और शराब पीने लगी इसस लिपटी, उसस चिपटी, और फिर आई और फिर गइ स्टोरके क्लर्क लोग इस बातपर बिगड कि यह रमणिया ड्राइगरूमस क्या उस दूसर कमरे वालोका ज्यादा लिहाज करती ह इसीपर झगडपर उतारु होकर व विद्यार्थियोंसे ले द करने लगे कि तु साइमनने जो साधिकार स्वरमें कुछ शब्द कहे कि इन छोटा को पाकर सब उफान क्षणभरमें दब गया

कुछ देरबाद नूरी भी आ गई और थोडी दरमें नारायण पतको भी आ गया

नारायण पतकी अत्यन्त गम्भीर होकर बोला, 'म इतनी दर तक बाहर उसी आपसी घटनापर सोचता हुआ गलीम घूमता रहा हू और म इस नतीजेपर पहुचा हू कि वास्तवमें मुवेदाका पक्ष ठीक न था लेकिन

बचारेका अपराध इतना नही है क्योकि वह नशेमें चढ रहा था"

फिर जेनी भी आई, लेकिन अकेली बनवाल थकाकर कमरेमें सो गया था

एक्टरके खेल तमाशाका ठिकाना न था उसने ज्यो-का-त्यो नशा चढे शराबीका अभिनय करके दिखाया, जो काचकी खिडकीपर चढती हुई मक्खीका पकड रहा है और मक्खी भर्रा रही है आरेसे लकडी चीरे जानेकी आवाजकी उसने नकल की एक कोनेमें खडे होकर मुह बना बनाकर टेलीफोनपर बात करती हुई भावुक प्रकृति एक स्त्रीकी बातचीतकी ऐसे बहुत ही कमाल कमालकी नकलें उसने करके दिखाई फोनोगाफके रिकाडके गाने गाये और अतमे हू-ब-हू एक पुरबिये बन्दरवाले मदारी लडकेका और बन्दरका तमाशा उसने दिखाया एक फर्जी जञ्जीरको एक हाथसे थाम, दात निकाले, बन्दरकी नाई बैठकर, पलक मार मारकर, बिल्कुल बन्दर बनकर अभी अपने बालोमें खुजाता, जैसे जूं पकड रहा हो, और अभी नितब भागको खरोचने लगता और बीच-बीचमेंसे नाकमेसे शब्दोको बिगाडकर अजीब उदास स्वरम गाता

जवान ठकुरवा जगपर चला गया है
जवान बहुरिया खेतमें रोती पडी है
एहा, एहा आ, एहा । ।

कि आखिर उसने छोटी मनकाको बाहोमे लपेटकर अचकनके पल्लोमें दुबका लिया फिर हाथ फलाकर सूरत बनाकर सिर एक ओर लटकाकर घुमाने लगा–जसे पुरबिये मदारी छोकरे छोटी-सी बन्दरिया गोदमें पकडकर किया करते है

किटीको यह तमाशा मालूम था और पसन्द था उसने बनकर जोरसे पूछा, 'अरे तू कौन है?"

'म पुरबिया, मालक" करुण स्वरसे नाकमें बोलकर एक्टरने कहा, "खायवेको कछु देओ, मालक"

'और तेरी इस बदरियाका क्या नाम है ?"

"मोहिनिया, मालक जेऊ भूखी ऐ, रोटी देओ मैया"

"और तेरे पास टिकट है ?"

"हा, पूरबी मया कछु देश्रो मालकन, जस होइगो"

एक्टरकी उपस्थिति बिल्कुल व्यथ न थी लागोकी तबियत जरा भारी हो चली थी, वह हल्की हो गई और खूब मचने लगा और मिनट मिनटमें एक्टर वही जोरसे चिल्लाता—"केलनर शाम्पेन ?"

पर साइमनको उसकी सनकका पता था, इसलिए जैसे यह चीख उसके कान तक भी नही पहुचती थी फिर तो एक बम चख मची कुछ ठीक सुन न पडता था और कुछ तरतीब न थी तनवरमिया गत बजा रहे थे और गवदू उसी गतपर नाचता था अपने कन्धाको एक ओर इकट्ठा करके सिकोडकर, और अपनी बाहो और हाथाकी अगुलियोको फलाकर लगडाता-सा, आगे पीछे बढता और फिर एकदम टाग ऊपर को फककर चिल्लाता

नाचे चलो, नाचे चलो, परवाह न करो किसीकी,

नाचे चलो, नाचे चलो

और अपने लम्ब बढे हुए बालापर हाथ फरकर कहता, "एसी फिरकीके लिए अब एक बोतल काफी नही है"

और वे दोनो दोस्त नश से भारी हो रही आखाकी पलकाको धीमे से और कठिनाईसे ऊपर उठाकर हसते

पता आ आ आ आ ! चल गया आ आ आ !

एक्टरन फोहश किस्स कहानिया शुरू की एक एककर उन्ह एसे कहता जाता सब जैसे एक गमें बेहो भरी रक्खी हा और गणिकाए उनपर अट्टहाससे दुहरी हो हो जाती और अपनी कुर्सियोपर उछल उछल पडतीं वेल्टमन इधर पाशासे घुस पुस कररहा था इस शोर शराबेमें चुपचाप उठकर वह कमरेके बाहर चला गया कुछ मिनटो बाद पाशा भी अपनी वही विक्षिप्त-सी भोली हसी हसती चली गई

यही क्या लखनपालको छोडकर बाकी और सब विद्यार्थी भी इसी तरह उठ उठकर चलते बने कोई वे जाने खिसक गए कोई चुपचाप खिसके, कोई बहाना बनाकर गए गए सो फिर देर तक नहीं आए विनय पाली वालके मनमें एक थकान-सी हो आई, उसने नाचकी तरफ देखा तनवर

मियाका भी सिर चकराने लगा था और उसने तिमिरासे कहा, "कोई एसी जगह बताम्रागी तिमिरा जहा म जरा मु ह धो धा लू, सिर चकरा रहा है" पतकौन चुपचाप लखनपालसे तीन रुपये लिये और छज्जे परसे होकर खिसक गया वहा जाकर उसने जक्रिया द्वारा छोटी मनकाको बुला भजा और तो और, जेनीके सानिध्यसे जो एक प्रकारकी विलक्षण, गम, तीक्ष्ण मिर्चीली सी उत्तजना हो रही थी, उसे यह समझदार, लायक रामसरन भी भेल न सका जान पडा, सबेरे अधरे ही उसे भी एक अत्यन्त आवश्यक काम ग्रो आया है इसलिए जरूरी है कि वह तुरत घर चला जाए और जरा सोए किंतु अपने साथियोमे विदा लेकर कमरेसे बाहर होते होते ही उसने पलक मारतेमें अथ भरी दष्टिसे आखो आखोमें जनीको इशारा कर दिया जनी समझ गई, उसने स्वीकृतिमें धीमे धीमे अपन पलक गिराए इन दोनोकी इस गुप्त मत्रणाको बिना देख भी पवनजयने देख लिया फिर जनीने जो पलक उठाए तो पवनजयने देखा—देखा कि उन उठी हुई आखोम तीव्र द्रोह और विद्वेषकी ज्वाला लपट ले-लेकर जल रही है और मानो अपनी आखोकी चढी बाकी कमानसे यह लडकी जोरसे उस लपटका एक तीर जाते हुए रामसरनकी पीठमें भोक देना चाहती है पाच मिनिटके बाद वह उठी, बोली, "क्षमा कीजिएगा, म अभी आती हू" और मानो धरती कुचलती हुई वह चली गई

पत्रकारने मुस्कराकर पूछा, "अच्छा, अब तुम्हारी बारी है लखनपाल!"

'नहीं भाई नही!' लखनपालने कहा, "तुम भूलते हो और यह कोई मेरे लिय प्रण या सिद्धातकी बात हो, सो भी नहीं नही म तो शातिवादी हू नकारवादी हू कहता हू, जितनी हालत बिगडे उतना अच्छा! लेकिन खुशकिस्मती यह है कि म जुआरी हू अपनी तबियतकी सब रगीनी म जुएपर खच लेता हू सो मेरेलिए यह कोई अलौकिक कनव्य परायणताकी बात भी नहीं है आप ही मेरा जी इस ओर नहीं करता लेकिन हमारे ख्याल मिले खूब! म भी तुमसे यही पूछने वाला था"

"म ?—नही बहुत थक जाता हू तब जभी कभी यहा आकर सो रहता हू अपने आया, इसिया साविशसे उसकी कोठरीकी चाबी ली, और तख्तपर तान सो गया यहाकी लडकिया भी सब जा गई ह और मेरी आदी हा गई ह जानती ह, म यो ही हू, जमे मद तक नही हू"

"तो सच, सच कभी नही ?"

"कभी नही"

'हा सच तो सच ही है" नूरीने कहा, "कुमार पवनजय तो पूरे सत ह"

"नही कोई पाच वष पहले म यह भी कर बठा था पवनजयने कहा, "पर सच, जी घिनसे भर सा गया, मिचली सी आने लगी अभी जो एक्टरने तमाशा करके दिखाया था कि बहुत सी मक्खिया खिडकीके शीशपर इकट्ठी चिपटी बठी ह—बस कुछ एमा ही समझा इकट्ठी की-इकट्ठी शीशेपर बठी ह, रह रहकर अपने पाँव भर भर कर रही ह और छोटी छोटी टागोंसे मानो बौखलाई अपनी पीठ सहलाती जा रही ह—ता कैसी मूख लगती ह, बबस, जड ! और फिर होता है कि सदाके लिए अलग अलग चल देती ह ! वैसा हा यहा है और यहीं आकर प्रेमका खिलवाड करना ! छि म वसा उपयासका नायक नहीं हू सुदर म नही, स्त्रियास रजाता हू न कायद जानू न अदब और य ! इनका कठ तीखी चीजाकी प्यासस कटीला रहता है इनको उ मत्त वासना चाहिए और लहूसे लाल ईर्ष्या आसू, जहर, गाली, मारपीट, अपघात बलिदान—जो कुछ तीखा है सब उ हें चाहिए इसका कारण भी दूर नही है समझना सरल है स्त्री हृदय सदा प्रेम चाहता है प्रम के नाम पर इन कामिनियाको प्रतिदिन चरपरे, चटील आख्यान मिलते ह, रसीले रोमास सो स्वभावत इ ह कामना होती है कि प्रेमकी बातोंमें इन्ह कुछ धार मिले, कुछ मिच, कुछ नमक फिर उ मत्त प्रमालापसे भी तप्ति क्षीण होने लगती है तब अनुरूप कत्य भी चाहिए जो वस ही उ मादकर हा, वेदनासिक्त लालसासने परिणामस्वरूप उचक्के चोर, आवारा, डाकू, हत्यारे ये लोग इनके प्रेमी बनते ह"

"और सबसे बड़ी बात यह है," पवनजयने कुछ रुककर कहा 'कि इससे हमारे बीचका मुहृद्भाव उजड जायगा देखते हो, किस सुन्दरतासे वह सौहार्द हमारे बीचमें सुनहरे-सुनहरे कोंपल दकर पल्लवित हो आया है

"मजाक बहुत हुई" अविदनस्त लखनपाल बोला "तो फिर दिन-के-दिन और रात के-रात तुम यहा बिताते ही क्या हो ? तुम लेखक होते, तो बात और थी तब समझना मुश्किल न होता—तब तो हर कोई समझ सकता कि तुम सामग्री इकट्ठी कर रहे हो लोगोको देख रहे हो जीवनका पर्यवेक्षण कर रहे हो जसे वह जर्मन प्रोफेसर तीन साल तक बन्दराम ही रहा था कि उनकी भाषाओ, रीति रस्मको भली भाति देख समझ सके लेकिन तुमने स्वय कहा, लिखने लिखानेका व्यसन तुम्हे नही है"

"नही नही, व्यसनकी बात नही है इतना ही कि म जानता नही, कसे लिखना '

'अच्छी बात यह भी नोट किया तो यह सही कि तुम यहा इन पाप मग्न प्राणियोंके बीचमें, एक उच्चतर एव उत्कृष्ट और सुन्दर जीवनके प्रतिनिधिकी भाति उपदेशक, सुधारक, अवतार बनकर आए हो तुम्हे मालूम ही है कि इसाई धर्मके आरभम पादरी लोग, गिरि कन्दराओमें या वन गुल्मोम, या पर्वत शिखरोपर, वर्षों वक खडगासन तपस्या नही करते थे तो नगरकी हाटम चकलोम, अथवा अन्य इसी भातिके अनर्गल आमोद स्थलोमें जाया करते थे लेकिन तुम वस भी नही दीखते"

नही म कभी वसा नही'

'तब फिर आखिर किस बलाकी खातिर तुम यहा हिलगे हो ? म खूब देख सकता हू कि जो यहा अधिकाश घृण्य है, लाछनीय है ददनाक है, वह तुम्हे कष्टकर है यही, जसे अभी यह सुकेशका किस्सा हो गया इस माइकलको ही देखो, जिसका पशा इन दलितोका दलना है इस चारो ओरकी सडाद दुगन्ध, वासना, पशुता, बबरता, और सुराके वातावरणके चिन्तनसे तुम्हारी आत्माको यातना ही प्राप्त होती है फिर ? तब जो तुम कहते हो सो म मानता हू कि तुम व्यभिचार प्रवृत्त भी

नही हो तब तुम्हारे इस आचारका अर्थ क्या है, उद्देश्य क्या है, तात्पर्य क्या है, मेरी बिल्कुल समझमें नहीं आता"

पत्रकारने तुरन्त कुछ जवाब न दिया

धीमे धीमे रुक रुककर, मानो अपने विचारोको पहले अपनेको ही सुना रहा हो और तौल रहा हो, उसने कहना आरम्भ किया

"म इस जीवनकी ओर आकृष्ट हुआ, इसम रहने लगा—क्या ? कैसे व्यक्त करु ? इसकी नग्न, भयकर सत्ताने मुझ खीचा समझते हो ? मानो यह स्थल है कि जहासे सभ्यताके आवरण, आवेष्टन, एकदम मानो ऊपरसे फाडकर हटा दिए गए ह यहा न कुछ मिथ्या है, न बनावट, न दम्भ, न पर्दा, न धार्मिक आरोप जनमतकी नीति धारणाके साथ अथवा पूर्व पुरुषाओके अनुशासनकी सामाजिक नतिकताके साथ किसी तरहका समझौता भी यहा नही ह न अन्त स्थ विवेकका विचार अविचार ! न रुपक है न श्लेष, न अवगुठन अलकार—सब नग्न है यहा क्या है? एक स्त्री, है, एक मादा, जो कहती है "म अपनी नहीं हू मेरा नाम नही है म पदार्थ हू म सबकी हू आओ, मुझमें नहाओ, और थूको नगरकी अतिरिक्त वासनाकी बची खुची कीचडको बहाकर लानेवाली मोरीके लिए चौबच्चा म हू आए, जो चाहे—इन्कार मेरे पास नही है, म प्रस्तुत हू मेरी यही सेवा है, यही कृतकार्यता है आओ, अपनी क्षणिक विषय तृप्ति मुझमे पा जाओ बस—हा, पसा चुका दो साथ साथ रोग, लज्जा, वितृष्णा, जो हाथ लगे वह भी धातम लेना" बस यह है मानवी जीवनका और कोई विभाग नही है, कोई विभाव नही है जहा वास्तविक मौलिक सत्यता, बेलीपा पोती, बिना मानवी दम्भकी छाया ग्राढे एसी स्तूपाकार वीभत्स, रौद्र, हड्डोके ढाचेकी तरह स्पष्ट और दुर्दान्त, व्यक्त होकर खडी हो

'ओह म नही जानता, यह औरतें चर्खेके सूतकी तरह झठका कसा वे अत तार नही तुन सकतीं जाकर पूछो कि पहले पहल कसे क्या हुआ था ? वह तुम्हें एसी पक्की कहानी गढ सुनाएगी कि क्या कोई कहानीकार बना सकेगा !

"तो पूछो क्यों? मैं पूछूंगा कि तुम्हारा काम क्या है जो पूछो हां वे झूठ बोलती हैं पर बच्चे भी झूठ बोलते हैं और वे झूठ बोलती हैं तो निरी बच्चोंकी नाईं झूठ बोलती है और तुम्ही बताओ, बच्चोंसे बढ़ कर झूठ बोलनेवाला कोई है? कैसी प्यारी प्यारी निर्मूल कल्पनाएं बच्चे गढ़ते रहते हैं लेकिन इस धरतीपर बालकसे सच्चा दूसरा प्राणी भी कोई है? और यह भी खास बात देखो कि दोनों—बच्चे भी, और वेश्याएं भी—हमसे, हम वयस्क पुरुषोंसे ही झूठ बोलते हैं दूसरे किसीसे वह झूठ नहीं बोलते आपसमें, हां, गढ़ते तो वे गढ़ती ही रहती हैं लेकिन हमसे वह झूठ यों बोलती हैं कि हम उनसे झूठ बुलाते हैं हम अपने सवाल-जवाबसे और चालाकीसे उनकी आत्मामें पहुंचकर मानो उनकी मर्म कथाओंपर पैरोंसे चलकर सैर करना चाहते हैं उनकी आत्माएं हमारे लिए नितान्त विदेशी हैं सर्वथा अपरिचित और वे हम अपने भीतर महामूर्ख, दम्भी, बने हुए सभ्यमर्द हैं तुम चाहो तो मैं अंगुलियोंपर गिनकर बता दूं कि किन किन मौकोंपर वेश्याएं झूठ बोलेंगी और तुम भी देखकर समझ जाओगे कि किस तरह आदमी चाहता है कि वे झूठ बोलें"

"अच्छा, बताओ तो"

"पहला वह अपनेको निर्दयतापूर्वक रगते पोत लेती हैं, कभी इसमें अपना बिगाड़ तक कर लेती हैं क्यों? क्यों कि फौजका रंगरूट आता है जो मुद्दतसे रुका हुआ है, विषयाधिक्यके प्रवाहावरोधसे ग्रस्त है और मौसममें कुत्तेकी तरह बहुया हो गया है या, इस या उस दफ्तरका क्लर्क आता है बेचारा दीन है दुखारी, क्यों कि उसके छ्परातलो नौ बच्चे हैं और पत्नी फिर गर्भवती है अब ये लोग आते हैं और अपनी संचित वासनाको अतिशमताको खत्म कर दें, इसीलिए नहीं आते नहीं वे रस चाहते हैं, सौंदर्य चाहते हैं समझे आप?—सौंदर्य चाहते हैं, वे सौंदर्य रसिक हैं लेकिन ये बेचारी गांवकी सीधी भोली लड़कियां, ये धरतीकी जनताकी कन्याएं—इन विचारिकाओंकी सौन्दर्यवादकी परिभाषाकी हद क्या है? वे जानती हैं—जो मीठा वही अच्छा, जो लाल वही सुन्दर! इस-

लिए लीजिए, यह रोगन, पाउडर और लेपका बना जितना चाहिए सौंदर्य लीजिए प्रस्तुत है !

"यह एक हुआ दूसरे उस फौजी उत्तप्त जवानकी चाह सौंदर्य पाकर बस नहीं मानती नहीं, वह अभागा उसके आगे भी कुछ चाहता है वह चाहता है कि दूसरी ओरसे भी उस वैसा ही तपात, आकुल, अकुंठित प्रेम प्राप्त हो चाहता है कि उसका आलिंगन स्त्रीमें एकदम तप्त उद्भ्रात प्रेमकी आग भड़का दे अच्छा, यह भी तुम्हें चाहिए? तो लो !—और ये कामिनी भी अपनी अगभगीसे, ध्वनिसे सी-सी करके और आह भरके घोर मिथ्याचार पूर्वक प्रतीति दिलाती है कि मानो उनका कृत्य हार्दिक है उल्लास भरा है पुरुष वास्तवमें अपने मनके बहुत भीतर इस व्यवसायसिद्ध मिथ्याचरणको खूब समझता है पर, 'ऊँह चलने भी दो' मानो यह कहकर अपनेको बहका लेता है—'आह मैं भी कैसा मर्द हूँ रमणियाँ कैसे मुझपर उफनी टूटती हैं, मेरे सहवासमें कैसी वे अपना आपा भूल रहती हैं! आदमी अत्यंत असम्भव परिस्थितियोंमें भी अद्भुत तर्कसे अपने आपको अपने ऊपर रिझा लेता है और यद्यपि वह मन ही मन इस स्वादके खोखलेपनको खूब जानता है फिर भी जैसे इस मिथ्या नुमतिके रससे उसकी आत्मा भीज जाती है इसीसे यह बात है अब मिथ्याचारका मूल कहाँ है ? उसकी लड़ी कौन आरम्भ करता है ? स्त्री या पुरुष ?

'और लगनपाल, तीसरी बात यह है यह तुम्हीं मुझसे कहलवा रहे हो सबसे अधिक झूठका आसरा वे तब लेती हैं जब उनसे प्रश्न पूछे जाते हैं—तुम यहाँ कैसे आईं ? कन्या कैसे बन गईं ? लेकिन मैं पूछूँ तुम्हें पूछनेका हक ? तुम कौन हो उनके ? तुम बलात् उनके अंतरंग जीवनमें घुस बैठनेवाले कौन होते हो ? वह तो तुम्हारे प्रथम प्रेमकी प्यारी स्मृतिके बारेमें कुछ पूछने नहीं बढ़ती वह तो नहीं पूछती कि तुम्हारी बहिन कौन है पत्नी कौन है, और कैसी है ? आप कहोगे— हम पैसा जो देते हैं ' तो पैसेकी बात है ! ठीक !! तब तो एजेंट दलाल पुलिस बधाई कानून म्युनिसिपलिटी सब तुम्हारे हितोंकी रक्षापर कटिबद्ध

प्रस्तुत ह निश्चिन्त रहो, जो कामिनी किराएपर तुम्हारी खिदमतम है वह तुम्ह प्रसन्न करगी, विनीत रहेगी, अदबसे पेश आएगी तुमन पसा दिया है और इकरारमें तुम्हे यह सब कुछ मिलेगा और तुम्हारा व्यक्तित्व अछूता बना रहेगा एसे कुरेद-कुरदकर प्रश्न करनेके कारण कनपटीपर दूसरी जगह जोरका थप्पड ही चाह तुम्ह मिलता, लेकिन वहा तुम्ह आदर प्राप्त होगा पर तुम पसेके एवजमें सत्य भी चाहत हो ? नही, वह तुम्हारी मुट्ठीकी और सौदेकी चीज नही है पैसा तुम्हें सब खरीद देगा पर सत्य पानेकी आशा मत रखो तुम पूछोगे और वे तुम्ह गढ़ा-गढ़ाया या चौखूट बंधा एसा किस्सा कह देंगी जिसे तुम—क्योकि तुम भी आखिर बने और चौखूट बध रावद सोसायटीके आदमी हो—झट पचा लोगे कारण, जीवन स्वत तुम्हारे निकट ऊटपटांग, निष्प्रयोजन और बस काट देनेकी वस्तु है या वह वैसा अविश्वसनीय पदार्थ है कि जैसा अविश्वसनीय जीवन ही हो सकता है सो तुम्हारी सेवाम वही पुरातन और सनातन कथा उपस्थित कर दी जाती है—एक अफसर था, या एक रईस, या एक पडोसी और एक बच्चा भी हुआ और आदि आदि लेकिन लखनपाल, जो कह रहा हू, उसे अपनेपर न समझ लेना तुमपर वह लागू नही है तुम? सच, अपने हृदयसे कहता हू, तुममें महान और सच्ची आत्माके लक्षण ह आओ तुम्हारे स्वास्थ्यके नामपर—"

व पीने लगे

"म क्या बकता ही रहू ?" पवनजयने अनिश्चित स्वरम कहा—"थकता तो नही गए ?"

'नही नही, भाई" लखनपालने कहा 'मेरी प्रार्थना है, बात तोडो मत कहे जाओ '

"वे मिथ्याचरण करती ह," पवनजय बोला 'और अपेक्षाकृत अधिक निर्दोष भावस व मिथ्याचरण करती है जो उनके सामने अपने राजनीतिक विचारोके रगोकी छटा दिखाने बैठते है, उनके सामने वे उनकी सी बन जाती है जो कहो, वही उन्हे कबूल मै आज कहू, वर्तमान धनसत्तावाद घातक है, सम्पत्तिके मालिकोको मिटा दो, जमीनके मालिको

को बमम उडा दो, नौकरशाहीका सत्यानाश कर दो—तो तत्पर होकर अक्षर-अक्षरम वे भी साथ होगी लेकिन कल दूसरा जारसे कहे इन सामा जिक समतावादियोको फासी लगा दना जरूरी है, क्रातिकारियाको भून दना चाहिए, इन विद्यार्थी और छोकरोको एक एक कर नष्ट कर दना चाहिए जो धमका खून करके उसके रगसे अपनेका रगीन करना चाहत ह—वे तब पूर हृदयसे उसस भी सहमत हा जाएगी किंतु उसकी कल्पना उत्त जित कर दो, अपने प्रति उसमें प्रम जगा दो तो कमर बाधकर तम्हारे साथ जहा जाओ वही जानेको वे तय्यार हा जाएगी तमाशमें ता, क्राति के विस्फाटमें ता, चोरी और हत्याके काममें, तो भी लेकिन बच्चे भी ता एसे ही झट मान जाते ह वे भी क्या एस ही विश्वासशील नहीं होत ? और भाई लखनपाल परमात्माके लिए य भी क्या ह!—बच्ची ही नहीं ह ?

'चौदह वषकी फुसला ली गई और सोलह बरसकी होत-हाते पीला टिकट और योनि रोग लेकर पेटन्ट वेश्या हो गई! अब वह चकलेमें है तब से यही उसकी आयुके सब साल बीते ह यहाकी दीवाराम घिरी और शष विश्वसे वह बिल्कुल कटी, दूर रही है रोजके उसके काममें आने वाले शब्दाकी गिनतीपर ध्यान दो बस, अपने वही तीस चालीस शब्द वह जानती है उन्हीसे अपना सारा काम चला लेती है जसे बच्चे और जगली प्राणी गिनतीके शब्दाम अपना काम चला लेत ह खाना, पीना, साना, आदमी बिस्तर, मालकिन रुपए, गाहक डाक्टर, अस्पताल कपड पुलिस—बस उसके भाषा विकासकी परिधि यह है! उसके बुद्धि विकासकी भी सीमा यही है उसकी कल्पनाए उसके अनुभव उसकी आकाक्षाए उसकी उन्नति इस भाति मौतके दिन तक शराब तलस ऊपर नही उठ पाती बिल्कुल उसी तरह जसे कि उस अध्यापिकाकी हालत होती है जो दस बरसकी होत होते सस्थामें चली गई और वही रुक रही अथवा उस कोरी भगतिन साध्वीकी सी जो बच्ची-सी मठमें पहुची और वही बडी हुई सक्षपमें एक उस वक्षकी दशाकी कल्पना कर लो जिसको धरतीके पातालमें धसकर और आकाशके शून्यमें विस्तार बनाकर बहुत

जगह घेरकर जा फैलना था, वह ही शीशके बर्तनमें उगा और वही बद रहकर बढा उसके अस्तित्वके इसी शिशु-तुल्य विकासावस्थाके कारण, म कहता हू, मिथ्या उनके लिए अनिवाय है ? पर, यह उनका मिथ्याचार निर्दोष है, निरुद्देश्य, एक लगी बान जसा पर कैसी वीभत्स उघडी नगी है वह सचाई जो इस व्यवसायके शरीरके रोम रोमसे पीवकी तरह फूटती हुई दीखती है यह घटोके हिसाबसे या पूरी रातके मोलका सौदा पटाया जाना, रातके ये बधे दस आदमी, नगर पिता-ओंके बनाए नियमोकी छपी हुई खूटीसे लटकी प्रतिया, बोरिकके पानीके प्रयोगकी हिदायत, साप्ताहिक डाक्टरी मुआइना, घृण्य योनिरोग जो यहा वसे साधारण और निश्शक भावसे सुने, समझे और सहे जाते हैं जस जुकाम—इन सबमे कसी बहयाई और प्रगल्भताके साथ नही प्रगट हो जाता वह सत्य ! इन नारियोमें पुरुषके प्रति विषम ग्लानि कुटी भरी रहती है—ऐसी विषम कि उनके किसी हावभावसे वह व्यक्त हुए बिना नही रहती इसी चिरपोषित ग्लानिको वे इस वृत्ति द्वारा चरि-ताथ और तृप्त करती ह उनका यह समस्त अतक्य अनिष्ट जीवन सामने जसे मेरी हथलीपर बिछा है उसकी गदगी, उसका पातक, उस की बेहूदगी म देखता हू सब है, लेकिन उसके अपने निजके और समाजके प्रति उस दभ और पाखडका लेश भी नही है जिसमें और लोग चोटीसे एडी तक डूबे दीखते हैं ! मेरे भाई लखनपाल, एक बार सोच कर देखो हमारे समाजके विवाहित प्रेम और विवाहित सहवासके सौमें से नियानवे मामलोम कितना असह्य, अतुल भयकर मायाचार और तीखी घृणा नही होती ? सोचो, कितना अघ, निदय अनाचार तुम्हारे पवित्र म्मन्य मानुत्वमें नही है ? पाशविक नहीं वह मानवीय है कितना तर्कसिद्ध, गणितसिद्ध, नियममान्य और कितना अतर्वेधी ! पर उसीको हमने कसे सुरम्य रगोंसे रग रखा है उन सब व्यय और बड-बडे पदो और व्यवसायो-को देखो जिन्हें भद्र मनुष्यने मेरा घर, मेरी स्त्री, मेरी सभोग्य, मेरा बच्चा, मेरी जायदाद आदिकी रखवालीके लिए पदा कर लिए ह य आवरसियर कट्रोलर, इन्सपेक्टर, जज, अरदली, जेल, एडवोकेट, अफसर, सरकार,

शाही नौकर, जनरल, सिपाही और इसी प्रकारके अन्य सैकडा उपाधि धारी—य सब क्या ह? सब मनुष्यकी लिप्सा, लालसा, कायरता, मिथ्या भिमान, पामरता, आलस्य, विषय परायणता—इनके पोषए, इनकी तृप्ति के लिए ये बने ह मानवीय दैन्यको ढकनेके लिए य सड ह दय!— यही शब्द है, यही रोग है, यही सत्य है पर हमारे कोष शानदार शब्दोंमे भरे ह मातृभूमि, धमकी वदी, भ्रातृप्रम, उन्नति, कत्तव्य, सम्पत्ति, पावन प्रम! अँह, म अब एसे किसी भी मीठे शब्दमें नही फसता म इन ओछ मिथ्यावादियो, इन कायरो, और इन चूसकर फूलनवालोंसे अघा गया हूं इन निर्वीय पुरुषोसे, स्त्रियोंसे, जो औरोको छोटा समभकर खुद बड बनते ह, म उकता गया हू मनुष्य आनदके लिए बना है वह सष्ट करेगा सिरजन उसका काम है अपनी सष्टिके मध्य वह ईश्वर है प्रम उसकी सार्थकता है निर्बाध, स्वतन्त्र, सबविजयी सवमयी, व्याप्तप्रम वृक्षके लिए प्रम, आकाशके लिए, मनुष्यके लिए कुत्तके लिए, प्राणीमात्र के लिए प्रम शस्यदा इस सुदर पथिवीके लिए प्रम हा, विशष कर इस प्यारी धरतीके प्रति प्रम धरती जो माताओकी माता है जिसके एक ओरसे प्रभातकी प्रभा प्राप्त होती है दूसरी ओरम सध्याकी मीठी अधियारी सबकुछ जिसकी छातीपर होता है और जो सबके परा तले पडी है लेकिन आदमी एसा मायाचारी है ऐसा क्लीव, एसा दीन, ऐसा अपाहिज कि आह लखनपाल, मुझ थकान होती है '

लखनपाल जाने कहा देख रहा था जस उसन सब कुछ सुना फिर भी कुछ नही सुना एक विचार मानो एक सकल्प, उसम गभस्थ होकर धीरे धीरे कठिनाईसे पक रहा था उसने कहा म शातवादी हू और तुम्ह कुछ कुछ समझता हू लेकिन एक बात मुझे समझ नही आती यदि मानवता एसी उपेक्षणीय तुम्हारे लिए हो गई है तो (लखनपालने अपना हाथ मजके चारो तरफ घुमाया) यह सब कुछ यह अति विगह णीय वस्तु जो मनुष्य बना सका क्या झल रहे हो '

हा म स्वय नही जानता ' पवनजयने निर्व्याज भावसे कहा, देखो मेरे घर नही, बार नही मैं फिरता ही रहता हू जीवनसे मुझ प्रम

हो गया है म बस रहना चाहता हू और उस रहनमेंसे अधिक से अधिक रस पा लेना चाहता हू म मिस्त्री रह चुका हू कम्पोजीटर रह चुका हू खनी भी की है, तम्बाकू बचा है एजब सागरपर मल्लाही भी की, मछुआ भी बनकर रहा दरिया नीपरके किनारे राजगीरी की और मजदूरी भी त-बूज ढो ढाकर न जाने होते थ सरकस के साथ भी रहा, थियटरम अभिनय भी किया और मुझ याद नही क्या क्या किया कभी कुछ लाचारीम पडकर किया हो, सो नही जीवनको देखनेकी एक अटूट भूख थी एक असह्य जिज्ञासा सच, जी होता है, कुछ दिनके लिए म यदि घोडा बन सकता था वृक्ष, या मछली ! तबीयत होती है कुछ क्षणके लिए म स्त्री बन पाता और अनुभव करता, प्रसव वेदना और मातृ सुख क्या होता है मुझ जो निरखते ह, जी होता है, उन्हीके भीतर पठकर उन्हीकी आखोम म विश्वको देख सकता म विश्वकी आत्माके साथ एका म्य पाना चाहता हू सो यहा वहा, नगरमें, गावम बिना चिन्ता बिना मतलब और बिना बधन म घूमता रहता हू कोसिया काम जानता हू और मेरा भाग्य जहा न जाए वहा पहुचनेम मुझ आपत्ति नही क्या बडा, क्या छोटा, क्या सुख, क्या विपत , क्या भूख, और क्या भोग— जहा हू, वही जीवनके तलपर म प्रसन्न हू, क्योकि मैं तर सकता हू इसी निरतर चक्रम म इस वेश्यालयके तटपर आकर लगा मने इसे देखा पर ज्यो ज्यो देखा एक अज्ञयभाव, एक भय, आवेश आक्रोश, मर भीतर उठता आया पर, जानता हू, दिनोके साथ यह भी मिटेगा और म अपनी भटकनपर वही फिर आग बढूगा वसत आनेतक काम का हाल भी ठीक हो जायगा और मेरा पयटन आरभ अबके म एक मिलमें जाऊगा मेरा एक दोस्त है, वह इसकी ठीक ठाक कर रखेगा ठहरो ठहरो लखनपाल सुनो, एक्टर क्या कह रहा है तीसरा एक्ट है"

इ० ल० रगुस अब खल तमाशा करते करते थक चला था कभी कुत्ते बिल्लीकी लडाई दिखाई, कभी किन्हीकी आवाजें सुनाई पर वह धीरे धीरे थकानके भावमे झुकता जा रहा था सहसा, मानो आत्म प्रकाशकी अनुभूति उसके भीतर उदय हुई और उसके उद्योतमें अकस्मात्

उसने कईबार यारङ्करके हाथ का चुम्बन लेनकी चेष्टा की पलक उसके लाल हो आए, ओठ हिले से, जसे वह रो उठगा आवाजसे प्रकट होता था कि आंसू उठकर गले और नाकतक आ गए ह

'मै तमाशका अभिनय करता हू" अपनी छातीपर जोरसे मुक्का मारकर उसने कहा म लोगोके दिखावेके लिए लकीरदार पजामा पहनकर नाचता फिरता हू मन अपनी आकाक्षाए जलाकर बुझा दी ह प्रतिभा धरतीमें गाड दी है और आपका गुलाम बन गया हू लेकिन पहले" उसने आत मुद्रासे चीखना शुरु किया, पहले न्यूसकसम जाकर पूछो टूपरम, उस्टजनम ज्वेनीवरडकम भीनोपोलमें, वहा जाकर पूछो म क्या क्या न था कोई था मुझ जसा बजानेवाला ? वेल्टीजनमें किसने वह मारका मारा था ? मन वह थी जीत, जो जीत होती है नूतन चड्डा लाहौर में मेरे साथ साथ था अमजद और अनवरके साथ मैंने काम किया लक्ष्मण प्रसादको किसने बनाया ? मने पर अ अब ? "

वह झुक बाधकर झोकता रहा और उसने प्रोफसरका हाथ चूमना चाहा

'हा, मुझ नफरत करो मुझपर उगली उठाओ, क्यो कि तुम भले आदमी हो और म मुख बना डोलता हू म शराब पीता हू धमको मने पामाल किया, मदिरोकी तौहीन की म मजस कहा बठा हू ? जहा इज्जत बिकती है और प्रम लुटता है ! और मेरी स्त्री सती, पतिव्रता, पानी-सी साफ, दूध सी सफेद राजहसिनी सी पवित्र ओह, अगर उसे मालूम हो जाए ! उसकी उगलिया, ओह कसी प्यारी-प्यारी उगलिया सुईसे छिद छिद जाती होगी और म ! ओह मेरी सती सावित्री रानी, म, लफगा म तेरे एवजम यहा क्या ले रहा हू ? हाय हाय !" एक्टरने जोरसे अपने बाल पकड खींचें, 'प्रोफेसर, मुझे अपने आलिम हाथका एक बोसा लेने दो तुम मुझे समभोगे चलो, म तुम्हरा परिचय कराऊगा देखोगे, वह कैसी देवी है वह मेरी बाट देखती रहती है रातो नहीं सोती मेरे नन्ही-नन्होंके फूलकी पखुडीसे हाथोको अपने हाथोम लकर लोरी गागाकर कानोमें कहती है, परमात्मा, तुम्हारे पापाको बचाए और बडी

उमर दें"

'झूठ बकना है तू झूठा, कुत्ता" उसे कठिन घृणाकी दृष्टिसे देख-कर मतवाली छोटी मनका सहसा चीखकर बोली, "वह कुछ भी अपने बच्चोंमे नही कह रही कमीने वह दूसरे मदको साथ लेकर आरामसे सो-रही है"

'चुप रह, कुतिया' एक्टर आपा खोकर जोरसे चिल्लाकर बोला पाससे बोतल खीचकर पकडी और सिरसे ऊची उठाकर कहा, "मुझे पकड लो, नही तो मै इसका सिर फाड दूगा अपने इस गदे मुहसे कैसे जुर्रत करती है कि तू '

'गदा होगा तेरा मुह मै रोज इस्तोत पढती हू" और ढिठाईसे तनकर मनकाने कहा, 'बेवकूफ अपने सिरपर अबसे सीग रखा कर खुद तो रडियोमे उडता फिरता है और चाहता है औरत उसकी सती रहे! देखो बेवकूफको बकनेके लिए जगह कहा मिली है हो कोई सवार जो आकर उसपर लगाम खीच दे और क्यार निकम्मे बाप कहीके बच्चोको अपनी बातमे क्यो तू सानता है ? या मुझपर आख मत तरेड, और दात मत पीस, मै डर नही जाऊगी कुत्ता तू तू तू !"

यारश्करके बहुत यत्न और बहुत वाक् शक्ति खर्च करनेपर ज्यो त्यो छोटी मनका और एक्टर चुप हुए मनकाने शराब पी नही कि झगडा सूझा एक्टर बिस्सूर बिस्सूर कर रो उठा वह पस्त होने लगा और हरीता उसे अपने कमरेमें ले गई

अब सबपर थकान आ छाई थी विद्यार्थी एक एक कर शयनकक्षों-में से लौटने लगे उनकी तात्कालिक प्रेयसिया भी, मानो कुछ हुआ ही न हो इस भावसे, चलती हुई आई सच, ये सबलोग एसेही लगते थे जैसे खिडकीके शीशेपर भर-भर करती हुई नर और मादा मक्खिया ये जमु-हाई लेते अगडाई लेते और बहुत देरतक थकान, खीज और उबकाहटका भाव उनके चेहरोसे दूर न होता वे चेहरे अनिद्रासे पीले और अप्रिय रूपसे चमकदार थे जब अलग होते समय उन्होने एक दूसरेसे बिदा मागी तब उनकी आखोमे एक प्रकारका परस्पर विद्वेषका भाव चमक रहा था, जो

एक अनावश्यक और कुत्सित कृत्य करनेवाले दो सहयोगियाम हो आता ही है

लखनपालने पत्रकारसे धीमे स्वरम पूछा, "अभी उठकर तुम कहा जा रहे हो ?"

मच म स्वय ही नहीं जानता म रात दसिया साविशव कमरेम काटना चाहता था लेकिन देखो, कसा सुदर प्रभात है इस खाना पाप है म सोच रहा हू बाहर निकलकर जरा समद्रमें नहा लू स्टीमरपर चढ़कर फिर लिप्सकोके मठपर पहुच वहा एक काना नाटा फकीर है म उसे जानता हू टट यूलियनके बारेमें कुछ बात करूगा पर क्यो ?"

म कहता हू जरा ठहरो जबतक सब चले जाए तबतक ठहरो मुझे तुमसे कुछ कहना है '

यह सही '

यारस्कर सबसे पीछे गया कहा "सिरम दद है जरा थक गया हू, जाऊगा " लेकिन वह बाहर गया ही था कि पत्रकारने लखनपालका हाथ पकडा और दरवाजेके शीशोस दिखाया, कहा, ' वह देखा" और लख नपालने खिडकीके पुराने काचम से देखा कि प्रोफसर टपिल वाले वश्या लयमें जा पहुचा है और घटी बजाकर अपन प्रदेशकी सूचना दे रहा है मिनट भरम द्वार खुला और यारस्कर अदर गायब हो गया

लखनपालने साश्चय पूछा, ' और तुम्हे पता कस चला ?'

'ऊह मने उसका चेहरा नाप लिया था यह भी देखा कि वर्काकी बॉडीपर कभी कभी हाथ भी फर लेता है और लोग कम रुक यह जरा शर्मीला था '

' पवनजय, चलो ' लखनपालने कहा, म तुम्हे देर तक नही रोकूगा "

१३

कमरेमें अब दो ही लडकिया रह गई थी जनी और लुवी जनी अपनी रातकी पोशाकमें आई थी और चतन्य थी लुवी बातचीतके बीचमें ही

आराम कुर्सीपर गुडी मुडी पडी सोगई थी लुवीके ताजा पीतवण मुखपर शिशु सम सरल और विनीत भाव मुद्रित था सोते सोते जसे वह कोई छोटी सी हसी हसना चाह रही थी मुस्कराहटका वह स्मित आरभ उसके ओठोपर अकित था तमाखूके धुए मे कमरा नीला और गधीला हो रहा था शमादानमें मोमबत्तियापरसे पिघलकर बहती हुई मोमकी धाराए जम गई थी मेज काफी शराबसे लथपथ और शतरोंके छिलकोसे बिछी बुरी लगती थी

जेनी दिवानपर बठी थी टागोको उसने अपने हाथोंके घेरेम डाल रखा था पवनजयने देखा, उसकी बडी बडी आखोपर पलकें झुकी-सी ह, मानो वे आख दीखना नही चाहती पर उनकी गहराईमें कठिन आच जल रही है उसकी दष्टि नाकके अग्रभागसे होकर मानो पातालम क्या देख रही है

लखनपालने कहा, "म बत्तिया बुझा देता हू"

प्रभातका अधियारा प्रकाश ओससे भीगा, निदासा-सा, पर्दोमसे छन-छनकर कमरेमें भरने लगा बुझी हुई बत्तियोममे हल्का धुआ उठ रहा था तमाखूका धुआ तह पर-तह घना नीला बना खडा था सूरजकी एक पतली हल्की किरन खिडकीके हृदयाकार अवकाशमसे आकर कमरेके छदका धूलिकण निर्मित उजली और तिर्छी कृपाए द्वारा छद रही थी तरल और उष्ण मानो सोनेका पानी दीवारके कागजपर फैलकर खल रहा था लखनपालने बठते हुए कहा "यह अच्छा है बात थोडी है, लेकिन समझ नही आता, शुरु कैसे करू ?"

उसने जनीको ऐसे देखा जसे नही भी देखा हो जनी अनपेक्षित भाव स बोली 'मैं चली जाऊ ?'

पत्रकारने कहा, "नही, तुम बठो" लखनपालकी ओर मुडकर और मानो मुस्कराकर उसने कहा, "वह हरज न करेगी और बात तो आखिर इन्हीके बारेम होगी ना ?"

"हा हा एक प्रकारसे—"

'तो ठीक है और चाहिए, तुम जेनीकी बात ध्यानसे सुनो धार

भी हो, पर उनमें वजन होता है"

लखनपालने कई बार हथलियाका अपने मुहपर फरा, आपसमें अटका कर दो बार अगुलिया चटकाई स्पष्ट था वह उत्तेजित है जो कहना चाहता है, वह उससे नही बन रहा है उसे दिक्कत हो रही है, और सकोच, और दुविधा

सहसा जोरसे, मानो आक्रोषके साथ, उसने कहा "नही वह बात नहीं है तुम अभी इन औरतोके बारेम कह रहे थ.. मने सुना मने सब सुना सही, तुमने नया कुछ नही कहा पर, मुझ लगता है, अपने व्यतिव्यस्त जीवनम समस्याको मने आज पहली बार आख खोलकर दखा है म पूछता हू यह वस्तु, यह वेश्या, यह चकला, अतमें क्या है ? यह बडे शहरोक अतृप्त वासनाका ज्वरविकार है, या स्वत सिद्ध अनादि एतिहासिक तत्व ? कभी यह मिटगा, या सारी मनुष्यताके अतके साथ ही उसका अत होगा ? म इसका जवाब चाहता हू कौन मुझ इसका जवाब देगा ?"

पवनजयने एकात एकाग्र भावसे उसे देखा उसकी आखें हठात् सिमटकर छोटी हो गईं वह जानना चाहता था कि क्या गभस्थ तत्व, क्या सकल्प, क्या विचार लखनपालको इस समय ऐसी आत्म-जनित यत्रणा दे रहा है उसने कहा, 'कब खतम हागा, कोई नहीं बता सकता शायद तब जब साम्यवादियो और प्रनार्किस्टोके स्वर्गीय आदश धरतीपर घटित हों जब पथ्वी सबकी हो, और किसीकी न हो जब प्रमपर बाधा न हो, मर्यादा न हो, और वह अपनी उच्चाकाक्षाओके बल जिए उड और फैले, जब मनुष्य जाति एक दीवार बनकर रहे मेरे तेरेका भद भाव मिट जाए जब स्वग धरतीपर उतर आए और मनुष्य फिर नूतनरूपमें वही दिगम्बर, उज्वल द्युतिमान और निष्कलुष हो शायद तभी यह हो'

"लेकिन अब ?' उतप्त उत्तेजित लखनपालने पूछा लेकिन अब ? क्या अभी म हाथ-बाधकर भविष्यकी ओर ही देखता खडा रहू ? कह छोड् यह अनिवार्य है होनहार है और यह कहकर इस कलकको झलता रहू ? इस सब कुत्साको, कालिमाको, जीने दू और म हाथ धोकर अपनी

उनकी नींद सोऊं ? क्या मैं यही कहूं, 'तथास्तु ?' और मेरे हृदय यही कह, 'तथास्तु ?"

"नहीं, यह पातक अनिवार्य नहीं है पर अविजेय है" पवनजयने कहा और साश्चर्य पूछा, "पर तुम्हें इसमें क्या ? तुम्हारे लिए क्या इससे अंतर पड़ जाता है तुम तो अनार्किस्ट हो क्यों ?"

"मैं खाक अनार्किस्ट हुआ ? हां मैं अनार्किस्ट हूं इसलिए कि जब मैं जीवनके विषयमें सोचना शुरू करता हूं तो मेरी बुद्धि तकका तार पकड़कर जहां पहुंचाती है वहां केवल नकार है लोग एक दूसरेको मारते हैं, ठगते हैं, बकरेकी तरह उनकी खाल उधेड़कर उन्हें खाते हैं मैं सोचता हूं बड़ी खुशीकी बात है, होने दो ! हिंसामें से, बलात्कारमेंसे विद्रोह पनपेगा, निबलता बल पकड़ेगी अबल एक दिन प्रबल होगा कलियासी बालाओंपर होने दो बलात्कार, मानवीय प्रतिमाको कुचलो जाने दो शासनके तले जारी रहे गुलामीका पाप, होवें चोरियां, डकैतियां बटमारियां, हत्याएं उपद्रव व्यभिचार ! हो, खूब हो ! जितना पाप हो, उतना अच्छा अंत उसमें ही निकट आता है क्यों कि नियम एक है, एक सा है जो निर्जीव पदार्थोंके लिए है, असंख्य श्वासों और प्राणोंसे अनुप्राणित मानवताके लिए भी वही है 'एफक्ट इक्वल्स रजिस्टेंस' उद्योगमें उतना बल होगा जितनी बाधाओंमें शक्ति दमन भीषण होगा तो प्रतिरोध दुर्द्धर्ष इसमें जितनी हिंसा होती है, शांति उतने निकट आती है बुराई जितनी अधिक हो, उसमें उतना ही भला है मनुष्यताके प्राणों में उत्साह, विद्रोह उग्र और बढ़ बढ़ते बढ़ते पककर एक फोड़ा हो जाय इतना बड़ा फोड़ा जितना यह गोलाकार वातावरण, जितना यह ब्रह्मांड क्योंकि एक दिन आखिर उसे फूटना है दर्द असह्य है, हो आतंक है, रहे पीड़ा है, बढ़े उसका मवाद और पीब एक दिन सारी दुनियापर फैलकर उसे डुबा देती है, तो भी बुरा नहीं मनुष्यता या तो इस आप्लावनमें घुटकर मर जावेगी और किस्सा पाक होगा नहीं तो इसमेंसे पार होकर एक नूतन, शिव सत्य और सुंदर जीवनका प्रादुर्भाव होगा '

लखनपाल ठंडी और काली काफीका प्याला गटगट नीचे उतार गया

और उसी आवेशम बोलता रहा, "हा, म और बहुतसे लोग अपन कमरो मे बठकर सामने मेजपर रोटी चाय लेकर इसी तरह मनुष्यताके भविष्य-का निपटारा और समाधान किया करते ह एक सप्राण मानवका कागजपर पसिलकी नोकसे दशमलवके जाने कौनसे स्थानका मूल्य आककर हम विश्वके भविष्यकी समस्याका हल गणित प्रश्नके उत्तर की भाति निकाला करते ह आदमी तब कालो बिदीसे भी कम अर्थ तत्व हमारे लिए रखता है पर, एक बच्चेका म अनिष्टका शिकार देखता हू और क्रोधसे मेरी आखोमें लहू आ चढता है एक किसान एव मजदूरकी जी तोड मेहनत और भूखी देहका देखकर मेरा जी बकल हो जाता है तब म अपने कागजी बीजगणिती हिसाबको याद करके शर्मसे रो पडता हू म कहता हू कुछ है, जान कम्बख्त क्या है जो तर्कातीत है, समझको चुनोती देता है असगत है फिर भी है, और हमारे तर्कसे सकडो गुना बलिष्ट और वास्तव है वह अपरिमेय है आज ही

अभी इसी मिनट मेरे मनम क्या ऐसा बोध समा रहा है कि जस मन किसी सोते आदमीको लूट लिया है, मासूम बच्चेको ठग लिया है किसी निहत्थ निरीहपर वार किया है ! मेरे रोम रोमम आज मुझ क्या यह रोमाचकर अनुभूति जान पडती है कि म स्वय इस व्यभिचारके पालनके लिए दोषी हू म दोषी हू क्या कि म चुप रहा हू मने उपेक्षा की है मने सब कुछ सहा है पर प्रतिरोध नही किया है मने एक प्रकार मौन समथन किया है पवनजय म क्या करू ? ' विद्यार्थीने यातना पूर्ण स्वरम चीखकर कहा 'बताओ, म क्या करू ?'

पवनजय चुप रहा अपनी अधिकाश मुदी आखोसे उसे देखता रहा सभी अप्रत्याशित, पने और व्यग्य स्वरम जनी बोली, 'क्या करो ? क्या, म बताती हू जो एक इगलिस महिलाने किया, वही तुम करो एक सुन हरे बालोवाली महोदया यहा पधारी थी जरूर कोई बडी चीज थी लोगोका खासा मेला साथ था वे सब कम या उस तरहके अपसर थ कमिश्नर साहबके असिस्टट मुकामी इस्पेक्टर वर्गरा उनसे पहल यहा हो गए थ वह हमें खूब समझा गए थ देखो लडकियो मुर्गोंकी बच्चियो (आदि-

आदि) एक भी गुस्ताखीका लफ्ज जो तुमने निकाला या कुछ भी किया तो मैं तुम्हारे इस घरको धरतीमें गाड दूगा और तुम सबको थानेमें पहुचाकर खूब बेंत लगवाऊगा और जेलमें डलवा दूगा ' सो वह श्रीमती पधारीं विदेशी भाषामें घटा कुछ कुछ कहती रही बीचमें बार बार आसमानकी तरफ अगुली उठाती थी आखिरकार पाच पाच पसवाली बाईबिल हम सबको बाटी और गाडीमें सवार हो रवाना हो गईं तुम बहादुर हो बाबू और तुम्हें भी यह करना चाहिए '

पवनजय जोरसे हसा पर लखनपाल तल्लीन उदास रहा उसे देखकर जान पडा, वह जनीकी बातका व्यग तनिक न समझ सका है पवनजयकी हसी रुक गई गभीर होकर उसने कहा 'तुम कुछ नही कर सकते लखनपाल पसा है, तो गरीबी भी है अमीर सपत्ति बटोर सकता है, तो गरीब मगेगा भी विवाह है तो वेश्या भी है जानते हो वेश्याका समर्थन और पोषण कौन करते हैं और कौन करते रहेंगे ? वही लोग जिन्हें हम तुम भद्र कहते हैं, जो सद्‌गृहस्थ हैं बडे बडे कुनबे और परिवारवाले उच्च वर्गी लोग, बदाग पति और उनकी पतिव्रता पत्नियोंके भाई बद वे सदा कोई न कोई उपयुक्त कारण खोज निकालेंगे जिससे इस विषयके व्यभिचारवादका आईनी समर्थन और पोषण मिले यह वस्तु मानो बढिया रेशममें लिपटी हुई सहज स्वीकृत और कायम रहे क्या कि वह जानते हैं, अन्यथा उनके विलास भोगकी बाढ उनके अपने घर भीतर छा फैलेगी व्यक्तिकी विषय कामना अपनी निजी, विवाहित और वैध स्त्री सपत्तिकी ओरसे विमुख अथवा अतृप्त होती है तब उसे अपनेमें धारण करनेवाली और इस भाति समाजिक सदाचारको निरापद करनेवाली, सस्थाका नाम उनके निकट 'वेश्या' है अत विस्तृत परिवारोंके धनी य धनी लोग लुके-छिपे इस प्रकारकी गुप्त प्रेमकी हाटमें स्वय गोते मार लेनेमें सकोच नही करते सच भी तो है सदा एक ही एकसे पाला पडनेसे चीजका मजा फीका जो होजाता है ! वह एक गऊ कोई है पत्नी या आश्रिता, या कोई और मनुष्य वास्तवमें बहुभोगी प्राणी है और जैसे बुरी तरह बहुभोगी और उसे इसका सदा बहुत आकर्षण रहेगा कि वह ट्रपिल या

अन्ना मरकानी जस कामिनियाके उद्यानामें अपनी प्रेम वासनाओंकी चित्र विचित्र लीलाए देख और चटपटी सतृप्ति पाए ओह गहस्थीके जूएमें जुता हुआ प्रौढ पति, आध दजन वयस्का कयाओका बाप पूरे परिवार का मालिक, चकलेके चुटीले आकषणसे बच नही सकता उस सस्थाका पोषण वह अवश्य करेगा वह यहा तक करेगा कि लॉटरी निकालकर अथवा और इसी प्रकारके साधन जुटाकर इस प्रकारकी पतिता स्त्रियाके लिए सत साध्वी मेग्डलीनके नामपर वनिता विश्राम और वनिताश्रम आदिकी आयोजना कर दगा पर वश्याका अस्तित्व वह कायम ही रहने देगा और उसका समथन करेगा'

'मेग्डलीन आश्रम !' जनीन दोहराया और वह हसी उसके भीतरकी सचित घणा, जिसकी पीडा अबतक उसके भीतर दबी न थी, उसके हास्यमे अदभुत और उद्धत भावमें व्यक्त हो गई

हा, म जानता हू यह सब जो सुधारके नामपर किया जाता है व्यथ है और व्यग लखनपालन बीचमें पडकर कहा, पर मुझ लोग हस मूख कह, मे नही चाहता कि म बठा का बैठा रहू वह दयालु दशक म नही बना रहूगा जा जलती आगको अपनी जगह बठा देखता है और बस चिल्लाता रहता है हाय, वह जला, वह जला ! अर बचाओ वे आदमी जले जा रह ह !' वह चीखता रहता है और बठा-बठा हीं हाय पर पीटकर अपनी सहानुभूति और वेदनाका प्रकाश करता रहता है

पवनजय कठोर होकर बोला, 'ता क्या तुम बच्चेकी पिचकारी लेकर आग बुझाने चल दना चाहते हो ?'

नही ! आवशतप्त लखनपालने कहा कौन जानता है शायद म एक जीवित आत्माकी रक्षा ता भी कर ही सकू पवनजय यही बात है जिसके बारेमे म तुमसे पूछना चाहता था पवन वधु तुम सहायतासे विमुख नही हो सकाग पर म कहता हू मुझपर व्यग न छाडा छींट न दो कि म ठडा हा जाऊ

पवनजयने उसे ध्यानपूवक देखा लखनपालकी गबतकी बातका मम अब वह समझा कहा 'तुम यहासे एक लडकीको निकालकर उद्धार

करना चाहते हो ? उसकी रक्षा करना चाहते हो ?"

'हा, नही जानता नही चाहता हू कोशिश करूगा" अस्थिर भावसे लखनने उत्तर दिया

पवनजयने कहा, 'वह वापिस आ जायगी'

जनाने तीव्रतासे अनुमोदन किया, जरूर आजायगी'

लखनपाल बढकर जनी तक पहुचा, उसके हाथोको पकडा और सकम्प स्नेहाविष्ट धीमे स्वरमें बोला, 'जनी जेनेस्का, शायद तुम्ही आह नहीं, प्रयसी नही वह नही तुम्हारा व्यक्तित्व रहेगा और म सहयोगी रहूगा आह जरा-सी तो बात है आधा साल भी किसका लगना और फिर तुम कोई हुनर सीख लोगी और कोई कारबार शुरू कर दोगी है न ? और हम साथ मिलकर पढा करेंगे'

जनीने खीझमे जल्दीसे खीचकर अपने हाथ छुडा लिए 'ओह, मारीम पडो तुम" वह चीखकर बोली, म तुम लागोको जानती हू तुम सबको जानती हू तुम चाहते हो, म घर बठी तुम्हारे लिए कपडे सीया करू, चूल्हेमे लगी बठी रोटी बनाऊ तुम जब अपने दोस्तो म बठ बठे गप्प लगा रहे हो, म रातभर जगती पलकोपर तुम्हारी राह देखा करू और जब तुम पढकर डाक्टर बन जाओ, वकील बन जाओ, या सरकारी मुलाजिम बन जाओ तो बस म लातोकी रह जाऊ मेरी पीठपर लात देकर तुम चिल्लाओ' निकल यहासे राड मरी जिदगी तने बर्बाद कर दी निकल, म एक अच्छी, क्वारी नई पैसेवालीसे ब्याह करूगा'

लखनपाल स्तब्ध हो गया असमजसमे लडखडाते स्वरमें बोला 'म भाईकी तरहसे कहता था मेरा मतलब नही, वह नही म भाई बनकर "

'तुम्हारे भाई बननेको मैं जानती हू रात पहली आई कि छोडो-छोडो, ढोंगकी मत हाको ऐसी बातें सुनकर म ऊब जाती हू "

'ठहरो लाखन' पत्रकारने गभीरतासे कहना शुरू किया, 'क्यो तुम अपने हाथो अपने कधोपर सामर्थ्यसे ज्यादा बोझ लादते हो ? मने आदर्शवादी देखे ह कई देखे ह जिन्होंने सिद्धातका सकल्प बनाकर गावकी

लडकियोंसे ब्याह किया इसी पद्धतिसे वे सोचते थे कहते थ, उनमें ताजगी होगी, प्राकृतिक शक्तिका स्फुरण, दभका अभाव, सरल रुचि ।

लेकिन यही स्फूर्ति मीत, सरल रुचिवाली प्रकृति क्या सालभर बाद साधारण हो पडती है दह उसकी फूल जाती है खाटपर पडी पडी फिर वह बिस्कुट चाबती रहती है, उगलीमसे अगूठी बार बार निकालती और बार बार डालती है, और बस इसीमें मगन दीखती है या रसोईमें बठकर, शराब पास ले, कोचवानके साथ प्रेमका व्यापार चलाती है और सुन लो, तुम्हारे साथ और भी बुरी बीतेगी"

तीनो चुप थ लखनपाल पीला पड गया था और भीग माथको रूमालसे रह रहकर पूछता था

एकदम साग्रह स्वरमें उसने कहा, 'नहीं, कुछ हो, म नहीं मानता म नहीं मानना चाहता" और लुबी जो सोई पडी थी, उसे पुकारकर कहा, 'लुबी !'

लुबी जगी मुहपर हाथ फेरा पहले इधर, फिर उधर, अगडाई ली और शिशु सम अबोध और व माइने हसी हसी, "म तो थोडे रही थी मैने सब कुछ सुन लिया जरी देरको ऊघ आ गई थी

लखनपालने उसका हाथ थाम लिया पूछा, 'लुबी, लुबी तुम मेरे साथ यहासे चलना नही चाहोगी ? घर बिल्कुल बिल्कुल हमेशाके लिए एसा चलना कि यहा या और कही, फिर कभी लौटनेकी बात न रहे"

लुबी विमूढ प्रश्नवाचक दृष्टिमें जेनीको देखने लगी, मानो उसमें इस मजाककी बातकी तफसील पाना चाहती है उसने कहा, और फिर तुम क्या बनाओगे तुम खुद पढ रहे हो फिर कसे तुम मुझे ले जानेकी और घर रखनेकी बात कहते हो ?'

'नही, लुबी ! तुम्हारे उद्धारकी बात नही कहता मैं बस तुम्हारी सहायता करना चाहता हू क्योंकि यहा भी तुम्हें आराम नही है कहो, है ?'

"नही, शहद-सी मीठी जगह तो यह है नही मैं एसी गर्वीली होती जैसी जनी या एसी स्वादवाली जसी पाशा तो लेकिन कुछ हो, मुझे तो

यहा कभी आराम होगा नही"

"तो चलो, चलो " लखनपालन उत्कठित आग्रहसे कहा, "और काई न कोई दस्तकारी तुम जानती ही होगी, जैसे सीना, पिरोना, काढना, बुनना ?'

"मै कुछ नही जानती" लुवी सलज्ज होकर बोली और वह लाल पडकर हस पडी और बाहसे उसने अपना मुह ढक लिया "जो गावम काम पडता है म वही जानती हू और कुछ म नही जानती कुछ पका बना सकती हू म एकके घर रही थी, उसकी रोटी बनाती थी "

लखनपाल उल्लसित हो गया

'वाह, फिर क्या है यह तो खूब है म सहायता करूगा और तुम एक ढाबा खोल लोगी एक सस्ता-सा काम, समझी न ? उसके विनापनका जिम्मा म लेता हू स्कूलके लडकोका म जामिन, सब वहीं रोटी खाया करग म कहता हू, यह तो खूब बात रहेगी"

"मेरी बहुत हसी मत करो जी" लुवीने जरा बिगडकर कहा, और प्रश्नवाचक दृष्टिसे जेनीकी ओर देखा

"वह हसी नही कर रहे ह, लुवी' जेनीने कहा उसकी आवाज विलक्षण रूपम काप रही थी "वह झूठ नही कह रहे, लुवी, तू मान वह दुखी ह वह गभीर ह'

'मै अपनी इज्जत बधक रखकर कहता हू म मनकी बात कह रहा हू मेरा परमात्मा गवाह है' लखनपालने हार्दिक उत्साह और चाव के साथ कहा और अनायास ऊगलियास क्रास सकेत किया

"हा सच जनीने कहा, लुवीको तुम ले जाओ मेरी और बात है म तो जसे इक्केम पुरानी घोडी पट गई हू सबकी म आदि हो गई हू मुझ न अब घास दिखाकर पलट सकते हो, न कमची दिखाकर लकिन लुवी सीधी लडकी है और भली वह अभी यहाके जीवनम डूब नही गई है क्यो री, तू बिल्लीकी तरह आख निकालकर मुझ क्या देख रही है ? पूछू तब बोल बता, तू जाना चाहती है या नही जाना चाहती ?"

'अगर वह हसी नही कर रह सच्ची कह रह ह ता जाना क्या नही चाहती और जनेरका तुम मुझ क्या करनेका कहती हो ?'

जनी बिगड गई

'तू बिल्कुल मिट्टीकी लोंदा है ! तू बता तुझ क्या अच्छा लगता है ? दोजखम रहना या ईमानकी जिदगी बसर करना ? कुतियाकी तरह बद पडी सडती रहना या आदमीकी तरह उजतम रहना ? चल मूरख उसके हाथ चूम पर देखती हू तू खुद होशियार है ! "

सुदरी लुवान सचमुच अपन ओठ लखनपालके हाथकी ओर बढाए उस समय सब हस पड उन ओठाने बस जरा उन हाथोंको छू दिया

"ओह वाह ! यह तो खूब पूरा जादूमतर हो गया !" आल्हाद और उल्लाससे भरा लखनपाल बोला, जाओ, अभी जाकर मालकिनसे कह दो कि तुम यहासे बिल्कुल चली जाना चाह रही हो और जो बहुत जरूरी हो सामान साथ ले आओ अब पहले जैसी बात थोड है अब कोई वेश्यालयसे जब चाहे निकलकर जा सकता है, क्या ?'

जनीने उसे रोककर कहा, 'नहीं वसे यह सब नही हो जाएगा वह चली जा सकती है यह तो ठीक है पर अभी जाने कितने झगड तुम्हे सुलटने ह अभी खासी परेशानी तुम्ह भुगतनी है सुनो एक काम करो दस रुपए तुम अभी द सकते हो ?

"जरूर-जरूर जो कहो—'

'लुबी जाकर रक्षिकासे कह कि तुम उसे आजके लिए अपन घर ल जा रहे हो इसकी बधी फीस है दस रुपए फिर बादम, समझो कल ही तुम आकर टिकट और सामान ले जाना कोई बात नही, हम सब ठीक ठाक कर रखग उसके बाद वह टिकट लेकर तुम्हें थानेमें जाना होगा वहा कहना होगा कि मुसम्मात लुबी मेरे यहा किराए पर आई है रहती है और अब म उसके पीले टिकटके एवज असली पासपोर्ट चाहता हू अच्छा लुबी, खुश रहो पैसा लो और जाओ देखो सरक्षिकाके साथ खूब चौकन्नी होकर बात करना नही तो वह कुतिया तुम्हारी आखें देखकर कुछ समझ न जाए और सुन, एक बात मत भूलना जाती

हुई लुवीकी पीठपर उसने चिल्लाकर कहा, "यह चेहरेका लेप पाउडर तमाम पोछ लेना नही तो लाग सब उसे देखकर उगली उठाएगे"

कोई आध घण्टे बाद लुवी और लखनपाल द्वारपर खडी एक गाडीमें सवार हो गए जेनी और पत्रकार पटरीपर खडे थे

पवनजयने अन्यमनस्कतासे कहा "लखनपाल, तुम भारी मूर्खता कर रहे हो पर मै तुम्हारा सम्मान करता हू तुम्हारा चित्त शुभ है, वृत्ति तत्पर इधर सोचा और उधर किया लखनपाल, तुम बहादुर आदमी हो, वीर और कृतनिश्चय !"

"शुभारम्भपर मेरा भी अभिवादन लो" जेनी हसी "देखना, छुट्टी पर मुझे बुलावा भेजना न भूलना"

हसते हुए लखनपालने गाडीमे से अपनी टोपी हिलाते हुए कहा, "उसकी बाट ही देख लीजिएगा, वह दिन आएगा नही '

वह चले गए

पत्रकारने जेनीको देखा उसे अचरज हुआ देखा, उसकी तरल आखोमें आसू डबडबा आए है

वह अपने मनके भीतर मना रही थी, परमात्मा इन्हे सुखी रक्खे परमात्मा वह सुदिन लाए !"

पत्रकारने घनिष्ट स्नेह सकुल वाणीमे पूछा, 'जेनी, आज तुम्हे यह क्या हो गया है ? क्या है मुझे कहो जेनी क्या तुम्हारा दुख है ? क्या मै कुछ नही कर सकता हू ?"

वह मुह फेरकर छज्जेकी रेलिंग पकडकर झुकी हुई जाने क्या देखती रही फिर भावरुद्ध कण्ठसे बोली, "पवनजय, आप पड तो मै तुम्हे किस पतेपर लिख कर याद करू बताओगे ?'

पता ? 'आदेश पत्रका सपादकीय विभाग लिख देनेसे मै जहा हूगा, मुझे पत्र मिल जाएगा पर जेनी '

"मै मै " जेनीने आरम्भ किया और कुछ कहना चाहा किन्तु वह न सकी और एकदम फूटकर सुबक उठी फिर हाथोंसे अपना मुह ढके-ढके वह बोली, "मै तुम्हें लिखूगी'

ग्रौर मुह परस हाथाको बिना हटाए उसी भाति भ्रावत मुख ग्रौर विकम्पित देहको रोकर वह सीढियास जल्दी जल्दी ऊपर चढ गई ग्रौर कमरम पहुचकर जोरम ग्रपने पीछेका द्वार बन्द कर लिया

दूसरा भाग

दस वष वीत गए ह, पर आज भी यामकासके निवासियोको उस दुद्धष वषकी याद है, जब एक पर एक अभागी, कराल, लहूसे लुहान घटनाए हुइ आरभ छोटे मोटे उपद्रवोके मिलसिलेमे हुआ, अत यह कि एक रोज सरकारने सबका खातमा ही कर टाला य जो यहा वेश्यावृत्ति के कानून सम्मत मानो मदिर पर मदिर बने हुए थे सो सब एक दिन ढह गए और उसपर बसर करनेवाले जीव जतु अस्पतालोम, कुछ जलोम और कुछ वडे वडे नगराके गली कूचोम फल गए उन वेश्यालयोकी मालिकनामसे दो-एक अब भी जीती ह वह जर्जर हो गई ह सटिया चली ह और बडे खिन्न, विपण्ण, और नक्ति मनसे उस वषकी सहार लीलाकी याद करती ह

जसे बोरेमेंसे आलू निकल पडे, लगभग उसी भाति जाने कहासे टटे वखड डाके, रोग, हत्या और आत्महत्याए होने लगी पता न चला, आखिर बात क्या है आप ही आप मानो स्पर्द्धामे ये उपद्रव एक पर एक बढ़ते चले गए फलते चले गए जसे उनकी फसलका ही यह मौका हो जाडके दिनोंमें लडके बर्फको लोधा बनाकर उसे जितना लुडकाते ह उतना ही बडा वह होता जाता है तब फिर बडी मुश्किलसे धकेलनेपर नीचे गिरता है मगर सरका कि फिर धडधडाता लुढ़कता ही चला जाता है । वसा ही यहा हुआ बूढी मालिकनो और रक्षिकाओका अलबत्ता उसका पहलेसे कुछ पता न लगा, पर भीतर ही भीतर उस भयकर वषमें घटने वाली दुस्सह विपदाओका कुछ विलक्षण पूर्वाभास हो चला था

वास्तवमें जहा कही जीवन सामुदायिक है पारिवारिक सब धोके

कारण, समव्यवसायी होनेके कारण, अथवा जातीय एकता होनेके कारण जहा पारस्परिक सम्बन्धोकी ग्रथि मानो सामूहिक व्यक्तित्व खडा कर देती है, वहा ही यह देखा जाता है घटनाए घटती ह तो मानो बन्द होना नही जानती एक बीती कि उसके सिरपर दूसरी, फिर तीसरी, विपदाए आती ही चली जाती ह घटनाओंके आकस्मिक विस्फोट उनके व्यापक प्लावन, गतानुगतिकता, उनका तरतम सम्बन्ध, उनकी अविच्छिन्न लडीके रूपमें चलनेमें जो एक अज्ञेय नियम व्याप्त रहता है हम जहा चाहे देख सकते ह पुराने लोगोने जसा कह रक्खा है, कुनबाम, बिरादरियाम यह नियम अधिकतर देखनमें आता है एक मरता है तो देखा गया है कुनबका कुनबा न कुछ समयम कालके गालम चला गया है एक गया कि वही दूसरा फिर तीसरा कई मुहावरे इसी आशयके बन गए ह मठोम, सरकारी विभागोमें रेजीमेण्टोमें शिक्षालयो और सस्थाओंमें, जहा अनेक शताब्दियोसे जीवन मदगामिनी सरिताकी भाति सहज भावसे बहता रहा, दिन आता है कि एक साधारण सी घटना घटती है और बस उलट पलट शुरू हो जाती है लोग मरने लगते ह दिवाले पिटते ह बीमारिया आती ह, और मालूम होता है जसे उस समुदायके व्यक्तियाने आपसमें षडयन्त्र रचकर या ही जान देने और जान लेन पागल हो जाने चोरी करने या और एसे ही काम करनकी ठान ली है जगह पर जगह खाली होती ह, और भरी जाती ह नए, आदमी आते ह पुराने गायब हो जाते ह और माल दो एकम पता चलता है कि सभी नया हो गया है और पुराना कुछ भी नही रह गया है बस, सस्थाकी इमारत नही गिरी तो नही गिरी बाकी पूरा कायाकल्प हो गया है और कौन जानता है कि हमारी सामाजिक सस्थाए सावजनिक सगठन जिस विराट नियमके आधीन हैं, नगर, साम्राज्य जातिया, राष्ट्र और क्या मालूम सौर मडल ग्रह-नक्षत्र-युक्त विश्व उसी नियमके अधीन नही है ? वसा ही कुछ अनिर्दिष्ट दुर्भाग्य यामसकायाकी बस्तीपर टूट कर पडा बस्ती देखते देखते लुट गई और उजड गई उस जनरव सकुल यामाकी जगह आज एक शान्त उजडा, बे बस सा खडा रह गया है जहां छोट

छोटे किसान, कुछ तातार, कुछ गडरिये, आसपासके कस्बाव खानोंमें काम करनेवाले कमाई, और कुछ इसी तरहके लोग रहते हैं यहाके रहनेवालोकी दरख्वास्तपर उस गल्युवाबका नाम दे दिया गया है गोल्यु वाब मुकामी गिरजाघरका मुलाजिम था और पंसारीकी दुकान करता था इस भाग्यके प्रकोपकी पहली लहर यहा गर्मियोंके दिनोंमें माई धार्मिक मेलके दिन थ इस साल मेलेमें खास रौनक थी इस अभूतपूर्व समारोहके कई कारण थ आदमी भी बहुत आए थ और उसमें रुपया भी लाखो इधरका उधर हो गया था कारण यह था कि पास ही खाडकी फैक्टरी खुली थी और इस साल गहू, और खासकर गन्नेकी फसल खूब हुई थी नहर खोदनेका और बिजलीकी ट्राली चलानेका काम भी चल रहा था साथ सो पचास मील लम्बी एक सडक भी बनाई जा रही थी और सबसे बडी बात यह थी कि सारे कस्बमें, सब बक्करो, व्यवसाइयो, और जमीदारोमें मकान बनवानेकी होड सवार हो गई थी गावके आस पास कुकुरमुत्तोकी तरह इटके भट्टे खडे हो गए थ एक विशाल कृषि प्रदर्शनी भी हुई थी दो स्टीमर लाइन नई खुल गई थी एक पहले से थी ही तीनोंमें सामान और मुसाफिरोको ले जानेमें खूब बदा बदी चलन लगी होड इतनी बढ़ी कि मुसाफिरोका तीसरे दर्जेका किराया पाच रु० से उतरकर चार, तीन, दो, और यहा तक कि एक आने आ गया अन्तमें यह सोचकर कि इस असमान लडाईमें काम कहीं बिल्कुल डूब ही न जाए, एक कम्पनीने तो तीसरे दर्जेके मुसाफिरोको मुफ्त ही ले जाना शुरू कर दिया फिर तो मुफ्त सवारीके साथ मुफ्त खाना भी दिया जाने लगा लेकिन इस नगरका खास काम, नदीके मुहानपर इन्जीनियरिंगका था सकडो हजारो मजदूर जाने कहा-कहासे उसके लिए आ गए और परमात्मा जाने कितना रुपया उसके लिये लग रहा था

यह भी कह देना चाहिए कि इसी समय शहर रूसके सबसे प्रसिद्ध और धन सम्पन्न एक मठके महन्तका अर्द्ध शताब्दि उत्सव मनाया जा रहा था रूसके कोने-कोनेसे, साइबेरियासे, वहासे जहा बारह महीने समुद्र जमा रहता है, और बिल्कुल काले सागर और कास्पीयन सागरसे बे

तादाद यात्री उक्त महन्तकी भू गभस्थ अस्थि खण्डके पूजा महोत्सवके लिए यहा जमा हुए यह कहना बस हो कि चालीस हजार आदमी मदिर के बाडमें रहने और भोजन पाते थे और जिह रातको वहा काफी जगह न मिलती वे लट्ठोकी तरह मदिरके बड दालाना और गलिया सीमें ही बरावर बरावर पड जात और रात काट देते थे

इस सालका मौसम एसा था जसे परियाकी कहानीमें हो बाहरक इतने लोग आए थे कि शहरकी आबादी चौगुनी हो गई थी राज, बढई, मिस्त्री, पेन्टर, परदेसी, इन्जीनियर किसान दुकानदार दलाल पत्तबाज, मटटेवाल, मल्लाह और ठाली उच के सरबाज, चोर सबके सब इकट्ठ होगये थ सराय कोई खाली न थी कसी हो कमरोके मुह माग दाम मिलने थ सट्टका बाजार गम था जुएकी दर एसी चढ गई थी कि कभी न हुई हा ! लाखा लाख रुपया इस हाथसे उस हाथ पहुच रहा था घण्टोम अतुल सम्पत्ति बन जाती और उसी घण्टम बहुतेरे कम बठ भी जाते कमके रईस दिवालिय हो गए और मोहताज सठ बन गए राजका मजदूर भी इस बहती सोनकी गगान एक आघ डुबकी लगा लेने का लालच नही रोक पाता था भल्लीवाले, फरीवाने, राज मटटी ढोने वाले टोकरी बुननेवाले, ऐस एसे लोग अब भी याद करते ह कि उन गर्मीके एक एक दिनमें क्या-क्या माल कमाया था गाडीस तरबूज ढोकर लानेवाले हर एरे गरेको चार पाच रुपयस कम मजदूरी नही मिलती थी और यह सब बदनसीब परदसी गवार लाग सस्ता पसा कमाकर शहर की चकाचोधके नशसे मस्त और मग्न होकर रातका सोंधी गर्मीम मत वालेबने फूलाकी महकसे भरकर म तीन लाख मतप्त स्खलित मनुष्य रूप पशु अपनी सम्पूण सचित तप्णाम मागते थ— औरत ! औरत !

एक महीनेके अन्दर अन्दर भाति भातिके मनोरजनके साधन उप स्थित हो गए, थियेटर सरकस कारनिवाल, नाच स्वाग बन्दरे दास्-तान खुल गए खानकी दुकानें, रस्टोरा काफ उठ खड हुए जहा जगह मिली वहां ही शराबखाना, या काफ दिखाई दत जहा चौरस्ता होता वहीं नए नए साइनबोड, नई-नई दुकानें खुलतीं साइनबोडपर

निखा रहता, 'शराब!' लेकिन भीतर शराबके साथ साथ अगनाए स्वय भी प्रस्तुत रहती ढली उम्रकी, एक एक दुकानमें दो दो तीन तीन अपना काम चलाती बहुतेरे माता पिताओको अपने पुत्रोके घृणित रोगोके कारण उन दिनोकी आज भी याद बनी है जो बाहरसे आए, सेविकाए मागते थ सो आसपासके गावोंसे हजारो लडकिया वहा आ आकर जमा हो गइ माग बेहद थी, जरूरी था कि कीमत भी चढ जाती सो बार-साम रोडजसे, ओडीसासे, रीगासे, मास्कोसे, सेन्टपीटस वगसे, यहातक कि विदेशोसे, अनगिनत कामनियोंके झुण्डके झुण्ड वहा पहुचने लगे सीधी साधी, अपढ मामूली साचेकी देशी ही सब नही आई थी पर चढे दामावाली, बढिया फ्रेंच, वीयनावी, जमनीकी, हगरियाकी भी अभ्यस्त वनिताए आई थी पैसेका दौर दौरा था करोडो रुपया तरल होकर जीवनके सब विभागोम पहुच रहा था और उन्हे गला रहा था जसे कि माना सोनेका मीठा भीगा कोडा सारे नगरको तदाह कर पीट रहा था जस कि सोनके पानीकी बाढ नगरपर चढ आई हो और नगरवासो बह रहे हो, पिट रहे हो और मग्न हो चोरी और हत्याओकी सख्या आश्चय जनक द्रुत वेगसे बढ गई पुलिस मौकापर बडी तादादम इकट्ठी होती पर भीडके सामन उसके हौसले खो जाते और पर उखड जाते पर यह भी कह दना होगा कि मोटी घूस खा खाकर पुलिस अघाए अजगरको भाति हो गई थी जो डरावना तो है, पर ऊघता रहता है और कुछ कर घर नही सकता आदमी हर बातके लिए या बे-बात, मौतके घाट उतार दिए जाते एसा भी होता कि चलते चलते कुछ आदमी मिले, एकने पूछा 'तुम्हारा नाम क्या है?' फेडरो 'ओह, फडरो, तो लो' और फड रोका पेट चाकूस वही चाक कर दिया जाता ऐसे चाकुओका अपना अलग नाम ही पड गया था और वहा वे छट छट लोग भी थ जो सरनाम थे और जिनपर मानो इस नगरको गौरव था दोनो भाई मिट्टू और मण्डू, गूजर, बल्दू फिद्दा बढई कप्तान मित्तरू, सेवल, दुजन दर्जी, शरू और इसी तरहके और कई छट गुण्डे वहा थ

और दिन रात बडी-बडी सडकापर बौखलाई जनता सडकको घेरे

हुए खडी रहती, चलती रहती, चिल्लाती रहती, 'वह आग लग गई ! वह मरा ! यह हुआ ' आदि आदि यामकासमें तब क्या नहीं हो रहा था या क्या हो रहा था, कहना असभव है, अगरचे वेश्यालयोंके मालिकाने अपने अपन यहाकी कामिनियोंकी सख्या दुगनी तिगुनी करली थी और उनकी कीमतें बेहद बढा दी थी, लेकिन फिर भी वे बिचारी इन मदमत्त विक्षिप्त लोगोंका पेट नहीं भर सकी जो टीनके टुकडोंकी तरह चादी फकते आते और चादी फेंकते जाते ऐसा बहुधा होता था कि ड्राइगरूमम भीडकी भीड आदमियोंकी इकट्ठी रहती, और एक एक लडकीके पीछे सात, आठ, और कभी दस दस आदमी एक वक्त उम्मीदवारोंम रहते एक उन्मत्त अमानुषी, घोर, क्रूर कलिकाल था वह

और ठीक उसी समयसे यामकासके दुर्भाग्यका आरम होता है इस दुर्भाग्यने उसे खत्म करके छोडा और यामकासके साथ साथ हमारी परिचित पीत,प्रगल्भ पीताक्षी वृद्धा अन्ना मरकोनीके उस वह वेश्यालयको भी

२

दक्खिनसे उत्तरको एक पैसेन्जर ट्रेन प्रसन्नतासे भागती हुई चली आ रही है पके गेहूके सुनहरे खेतो और वक्षोंके कुञ्जोमसे चादीकी उजली नदियोंकी छातीपर छाए हुए लोहेके पुलोपरसे गडगडाती, धुएके उमडते हुए बादल छोडती, वह चली जा रही है दूसरे दर्जेके एक डिब्बेका [illegible] किया खुली ह गर्मी बहुत है और वहा हब्स है धुएसे लोगोके गले खराब हो रहे ह रेल के सफर और गर्मीसे लोग थक रहे ह लेकिन एक आदमी है जो न थकना जानता है न चुप होना चपल है पुष्ट देह, आनबानके कपडे पहने है बातूनी और मिलनसार उसके साथ है एक स्त्री दोनो सग-सग जा रहे ह प्रगट है (स्त्रीके कारण और भी स्पष्टतासे प्रगट है) कि दोनो नवविवाहित ह पुरुष तनिक कुछ प्रेम सम्बोधन अथवा सकेत करता है तो स्त्रीके चेहरेपर झट लाली दौड

भाती है और जब वह आख उठाकर उसकी ओर देखती है, उसकी आख तार भी चमक जाती ह और तरल हो आती ह उसका चेहरा ऐसा सुदर है, जसा प्रेम मग्न तरुणी कुमारियोका ही हो सकता है कामल, सपुटित गुलाबी ओठ ह जिनके चारो ओर अबाध कौमायकी छाया है, और आखें एसी काली कि पुतलियाका अतर वृत पहिचानना कठिन होता है

तीन अपरिचित व्यक्तियाकी उपस्थितिसे जसे उस व्यक्तिको कुछ बाधा नही है वह मिनट मिनटमें स्त्रीसे बेहूदे सकेत करना और बेहूदे सम्बोधन करता है

पतिकेसे निस्सकोच और निर्व्याज और प्रेमीके जैस साधिकार और लोलुप भावसे वह यह सब कर रहा था मानो सारी दुनियाको वह कह रहा है— देखो देखो, हम कसे खश हे देखकर तुम भी खुश हो न ? कभी वह उसकी जाघपर हाथ फर उठना—स्त्रीकी पीन पुष्ट जघाका आकार कपडके भीतरसे मनोरम दृष्टिगोचर होता था अभी उसके गालमें चुटकी भरता, अभी अपनी काली तनी मूछोकी नोकोसे उसकी गदनपर गुदगुदाता पर यद्यपि वह उल्लाससे मस्त और प्रफुल्लित दीख पडता था, फिर भी उसकी चलती हुई आखें, ओठोंके फलाव, उसके साफ चेहरेकी लटकती चोकोर ठोडी, जिसके बीचमें तनिक भी वक्र न दिखाई देता था—इनमें कुछ भाव था जो सदिग्ध अनियत्रित और अस्थिर था

इस प्रेमी युगमके सामन तीन और यात्री बठे थे एक सक्षिप्त देह साफ, वृद्ध अवसर प्राप्त जनरल थ बाल बाकायदा बहे हुए थे, कुछ लच्छ कनपटी तक आ गए थ दूसरा हट्टा-कट्टा जमीदार था उसने अपना नया कालर गर्मीके कारण उतार कर रख दिया था फिर भी मिनट मिनटपर हाफ रहा था और गीले रूमालसे रह रहकर अपना मुह पूछता था तीसरा एक नववयस्क फौजी अफसर था उस बातूनने बहुत जल्दी अवसर निकालकर अपने सहयात्रियोको पता हो जाने दिया था कि उसका नाम मामत यादोराम हीरासिंग है उसकी बातोका अत

न था जैसे बन्द कमरेमें, गर्मियोके दिनोमें काचकी खिडकीपर बैठी मक्खी भिन्न भिन्न करती रहे तो आदमीको बुरा लगता है वैसे ही लोग इसकी बातोसे ऊबकर तग आ रहे थे पर फिर भी वह जानता था, लोगोका दिल कैसे लगा लेना होता है उसने जादूके खेल दिखाए, हसी की नई-नई कहानिया सुनाई जब उसकी स्त्री प्लेटफार्मपर घूमने जाती तो वह एसी ऐसी बातें करता कि जनरल गुप छिप रसीली हसी हसते जमीदार मानो हिनहिना उठता, जिसमें उसका पेट सुनिदिष्ट रूपमें आग पीछे ऊपर नीचे होता दीख पडता, और वह नया चिकना अफसर, अपनी विह्वलता और हसी रोकनेम असमय होकर, एक ओर मुह फेर कर कि लोग देख न लें उत्कण्ठासे लाल हो रहा रहता

स्त्री स्निग्ध, मुग्ध भावसे हीरासिगकी सेवा कर रही थी अवसर निकाल निकालकर वह रुमालसे उसका मुह पोछती पखेसे हवा झलती, उसके कपडोकी सलवटें ठीक करती एस समय उसका चेहरा गर्वसे और रससे निखर आता

'क्या मैं पूछ सकता हू," वृद्ध, क्षीण जनरलने जरा खासते हुए पूछा, 'क्या म पूछ सकता हू आप आप क्या काम करते ह?"

'आह, काम ?" सामत यादारामने अत्यन्त विपद सहृदयताके साथ कहा, बताइए इन दिनो मुझ सा बेचारा आदमी क्या करे? यही है कि घूम घामकर कुछ बच लेता हू और कुछ दलाली कर लेता हू इन दिनो तो जरा उससे छुट्टी है जी हा हि हि हि! आप लोग खुद समझते ह अभी गौना हुआ है—सरसुती लानेकी क्या बात है हमेशा तो यह दिन आते नहीं लेकिन इसके बाद मेरे लिये तो वही घूमना बदा है और वही कसके काम करना हम फिर सरसुतीके साथ लौटेंग सरसुतीके सम्बन्धियोसे जरा मिले जुलेंगे और फिर म रहूगा और मेरा काम पहले सफरमें तो म स्त्रीको साथ रखनेकी सोचता हू देखिये ना, नया ब्याह है साथ साथ थोडी सैर भी न हुई ना क्या बात रही और, म और भी दो इगलिश फर्मोका एजण्ट हू आइए जरा देखेंका तक लीफ गवारा करें तो—"

एक छाटे खुशनुमा कपडेके बवसमसे उसने जल्दीसे कुछ नमूनेकी गत्तेवाली किताबें निकाली और कुशल दुकानदारकी भाति एक सिरा पकडकर उन्हे खोलना शुरू किया एकपर एक करवट लेती हुई, उन किताबोकी जिल्द खुलती हुई लटक आइ और जाकर रेलके फशपर लगी, 'देखिए, क्या नायाब नमूने ह बाहर बहुत कम एसे बच जाते ह यह देखिए, यह इगलिश माल है, और यह रशियन जरा मुकाबला कीजिए जी हा, छूकर दखिए, आजमाकर देखिए आप खुद देख सकते ह, भला किसी भी तरह देशी चीज विलायती तक पहुच सकती है? और इगलिश माल दखिए इसका नाम उन्नति है, इसका नाम सफाई है, इसका नाम कला है यह निरी निराधार बात नही है कि सारा यूरोप हमें जगली कहता है सो बस जनाब, जरा इधर उधर रिश्तेदारियामें जाएग, कुछ देख-दाखगे, कुछ रईसोंसे भी मिलना है इसी तरह जरा चले फिरे, घूमे-घामे, फिर बालमाक रास्ते आदिटजिन और फिर काले सागर होते हुए, अपने वही वापस मोडसा"

"खासी सर रहेगी !" नए अफसरने सलज्ज कहा

"हा, साहब, खूब खासी !" सामत यादोराम सोल्लास सम्मत हो बोला, 'लेकिन साहब, फूल बे-काटे कब हाते ह ? व्यापारीका काम हंसी नही है दस तरहकी दस बात आनी चाहिए उतनी, मैं कहू मालकी परख नही चाहिए, जितनी आदमीकी परख एक आदमी आडर देना नही चाहता लेकिन अब तुम हो कि हार न मानो अपनी बात कहे जाओ एसे कहो और इतना कहो कि आखिर तुम्हारी बातमे उसे अपना नफा दीखने ही लगे और उससे बिना मुड रहा ही न जाए और म हमेशा साफ काम करता हू धोखे धडीका काम म कभी न करू, चाहे कोई मुझे लाखो दे कही जाकर पूछिए, किसी स्टोरमें, जहां कपडेका काम या रेशमकी सच्चियोका, या बटनोका—म इन दोनो फरमोका भी एजण्ट हू—आप पूछिए, सामत यादोराम कौन है ? हर कोई जवाब देगा, ओह, सामत यादोराम वह आदमी क्या है, खरा सोना है इमानदार हो तो ऐसा हो ऐसा पक्का और ऐसा खरा जसे हीरा !"

देखते देखते हीरासिंगने बडे-बड पकेट निकाल लिए और खाल-खाल कर, भांति भांतिकी लच्छियां और तरह-तरहके रगके बटन दिखाने लगा "मजो, जब कही एक जगह बहुतसे एजेन्ट हो जाते ह तब काम जरा बेमजा हो जाता है दाम तो सब खिच चुकता ह और माग पूरी हा जाती है मुश्किल ता तब है—तब कुछ बस ही नहीं चल सकता काई तुम्हारी बात सुनता नही, सब दूसरे हाथ हिला देते हैं लेकिन और और ह, म म हू मेरा नाम हीरासिंग है म व्यापारीको ऐसा लू कि मदारी भी क्या अपने बन्दरको लेता होगा पर बात बिलकुल बदमजा हो जाती है जब एक ही लाइनके दो एजन्ट एक जगह पड जाएं फिर उनमें कोई ऐसा उल्लू हुआ कि जो न खुद जाने और दूसरेका काम भी बिगाड कर रख दे, तब ता कुछ पूछिए मत ऐसे समय तो सभी तरकीबें खेलनी होती ह या तो उसे एसा पिलाया कि पीकर बेसुध हो जाए अटाचित नही तो कही इधर उधर ठिकाने लगा दिया सीधा खल नही है साहब और फिर मेरी एक लाइन और भी है नकली आंख और नकली दात की जरूरत हो तो मुझ कहिए पर उसम कुछ बचत ज्यादा नहीं है मैं उसे छोडनेकी सोचता हू कभी सोचता हू यह सारा ही झगडा छोड दूं म जानता हू, जब जवानी हो, तन्दुरुस्ती हो, तब तुम कहीं भी तितलीकी तरहसे उडन रह सकते हो पर जब ब्याह कर लिया है ता बच्चे भी होंगे, कुनबा बढगा "

उसने स्त्रीके घुटनेपर कई बार थपका स्त्री लाल पड जाती और असाधारण सुन्दर लगने लगती

"जी हा, कुनबा क्योंकि हम यहूदी ह और परमात्माने हम यहूदियोंको जब और बदकिस्मती दी है तब सबके बदलेमें यह बख्शीश दी है कि कम बच्चे न हा तब तुम्हे अपना एक काम भी चाहिएगा एक जगह जमकर बैठना भी पडगा तुम्हारा अपना घर हो अपना फरनीचर, अपनी रसोई,अपने सोनेके कमरे हैं ना रायसाहब ?"

'हा आ जरूर जरूर " जनरलने कृपा पूवक उत्तर दिया

"जी हां, जी हां और सो ही सरसुतीके साथ साथ मने कुछ दहेज

भी लिया यही कुछ थोडी-सी रकम लेकिन साहब, आप लोग जिसकी तरफ निगाह भी न करें, मेरे लिए तो वह भी दौलत है पर यह भी कह दू, अपनी कमाईसे भी मने कुछ बचाया है और मेरी फर्मोमें मेरी क्रेडिट है परमात्माने चाहा तो रोटी-दालकी फिक्र हम न होगी तीज त्यौहारका, परमात्माका शुक्र है, कुछ चुपडी भी खा सकेंगे"

'चुपडी ! वाह, चुपडी ही क्यो साहब, उससे भी ज्यादा !" मालगुजार ललचाए स्वरमें बोला

'और हम भी अपना एक फर्म खोल लेंगे 'हीरासिंग एण्ड सस है न मुझे आशा है आप लोग हम ही अपने आर्डर देंगे कभी आप नाम देख 'हीरासिंग एण्ड सन्स' तो फौरन याद कीजिएगा कि आपको गाडीमें एक आदमी मिला था जो बेचारा प्रेमसे और खुशीसे ऐसा मतवाला हो रहा था कि क्या बताऊ—"

'जरूर जरूर !" मालगुजारने कहा

और सामत यादोराम तुरत उसकी ओर मुडकर बोला, "पर म दलाली भी करता हू जायदाद बचनी हो या जायदाद खरीदनी हो, या रहन रखनी हो, मुझे याद फर्माइए मुझसे अच्छा आपको कोई न मिलेगा और म सस्ता भी खासा पडूगा जरूरत हुई तो इस खादिमको याद कीजिएगा" यह कहकर आदाब अर्ज किया और अपने नामके कार्ड निकालकर एक मालगुजारकी तरफ बढाया और एक एक और पडोसियो को भी दिया

जमीदारने भी जबमें हाथ डाला और एक का- खीचकर निकाला

"जनाब इमामहसन बेग" सामत यादोरामने जोरसे पढा "बहुत, बहुत खुशी हुई आपकी महरबानी है जरूरतके वक्त इस गुलामको "

"क्यो नही भला मुमकिन है ' जमीदारने कुछ सोचते हुए कहा, "क्या नही खुशकिस्मतीने ही हमें इस तरह ला मिलाया है अभी एक मकानकी बिक्रीके सिलसिलेमे जा रहा हू तो आप चाहें कभी तशरीफ लाइएगा मै ग्राण्ड होटलमें ठहरता हू शायद हमारी आपकी कुछ बात बन जाए "

"ओह, जरूर बन जाएगी म अभीम कह सकता हू जनाब इमाम-हसन साहब हीरासिगने प्रफुल्लताके साथ कहा और अपनी उग-लियोके सिरेस जरा जरा उसके घूटनको थपथपाया "जरूर साहब आप यकीन रखिए हीरासिग जिस कामका ल लगा उसके लिए आप हमशा उसे याद कीजिएगा

आध घण्ट बाद सामत यादोराम और वह नया तरुण अफसर डिब्ब की पटरीपर खड साथ माथ सिगरट पी रहे थ

हीरासिगने पूछा 'क्या जनाब अक्सर इधर आया करते ह ?"

'जो नही पहली बार जा रहा हू हमारा दस्ता शरनाबोवमें रहता है मरी पदाइश मास्काकी है '

'ओह हा, ता आप इतनी दूर कसे चले आ रहे ह ?"

'बस कुछ बात ही एसी हुई जब म निकला तो और कही जगह खाली ही नही थी"

"पर साहब, शरनाबोव भी कोई जगह है खासा भिंट कहिए आसपास उस जसी खराब बस्ती और नही"

"हा, पर किया क्या जाए ?"

"तो क्या यह मतलब जनाबका कि आप वहा जरा सर और लुत्फ के लिए जा रहे ह ?"

'जी हा दो तीन रोज ठहरनेका ख्याल है असलम तो म मास्को जा रहा हू दो महीनेकी छुट्टी मिल गई है सोचा, रास्तेका यह शहर भी देखता चलू सुनते ह बडी खुशनुमा जगह है"

"अजी आप कहते क्या ह ? खुशनुमा कि गजबकी खुशनुमा जनाब विलायती शहरोकी टक्करकी है वह सडके बिजलीकी रोशनी बिज-लीकी ट्राम थिएटर—एक बार देखिए तो पता चले कमालकी सर गाहे ह देखें तो आप अपनी राल चाटने लगें आपकी नई उम्र है और म आपको सलाह दूगा कि आनन्द विलास जरूर देख तिबोली भी जरूर जाए और पास ही जो टापू है उसकी सर करना कभी न भूलें वह खास ही जगह है क्या-क्या नाजनीन '

अफसर लाल पड गया उसने आखें फेरी, सकम्प स्वरमें पूछा, "जी, हा! मने सुना भी है कि वल्लाह, वहाकी औरत ऐसी खूब सूरत हैं—'

"खूब सूरत! अजी खुदा न करे, सच पूछिए तो खूबसूरत औरत वहा एक नही है—"

"तो फिर ?"

'फिर क्या ? म्या, खूब सूरती चीज क्या है पर, गजबकी नमकीन होती ह वे देखिए ना, कहा कहाका खून उनकी नसलमे मिला है, पोलिश, दखिनी, यहूदी तुम जवान हो मुझ तुम्हारी जवानीपर रश्क होता है तुम अकेले हो, और आजाद मेरे दिन होते तो, दोस्त, म भी कुछ अपनको दिखाता सबसे बढकर तो यह चीज, कि उन्होने खूनकी वह रवानी और इश्ककी वह तजी पाई है, कि वाह! गोया, जलती शमा हो

और भी कुछ पता है ? " हीरासिंगने भद भरे स्वरमें धीमेसे पूछा

क्या?' कटकित, भीत अफसरने पूछा "पूछते हो, 'क्या? मुझ यह उन्हान बताया है जिन्होने सब शहर छानमारे है जनाब क्या परिस, क्या लन्दन, जो नई नई रतिकी रीने यहाकी कामिनी जानती है वह तुम्हे और कहीं न मिलेंगी यही तो उनकी खास बात है क्या क्या नई तरकीबें उन्हें सूझती ह कि किसीका ख्याल भी वहातक न पहुचे तसव्वुर करता हू तो जी में नशा चढ जाता है '

अफसरका दम वहीका वही रह गया दबे स्वरसे बोला 'सच ?"

'सच नही तो झूठ! लेकिन—लेकिन तुम खुद समझ सकते हो, इशारा काफी होता है तुममें नया खून है पर भाई, कभी हम भी अकेले थे और, तुम जानो, जरा ऐसा वसा काम किससे नही हो जाता अब बात और है अब तो नसोमें लहू धीमा हो गया है और कुनबा साथ बध गया है पर उन दिनोकी यादगारें तो कुछ अबभी साथ रखते ह ठहरो, मैं तुम्हे अभी दिखाता हू ' पर जरा होशियारीसे देखना "

हीरासिंगने झिझककर दाएँ बाएँ देखा और जेबसे एक लम्बा छोटा खूबसूरत खरीता सा निकाला जिनमें बढिया ताश रखे जाते ह और चुपकेसे अफसरके हाथोंमें थमा दिया

"यह लो, देखो पर ज़रा होशियारीसे देखना"

अफसर एक एककर उन कार्डोको देखने लगा उनमें अत्यन्त असम्भव और बीभत्स रति क्रियाओकी, तरह-तरहके आसनोकी, इकरगी और तिरंगी तसवीरें थी वे उस समयके चित्र थे जब आदमीका शरीर पशुसे भी पामर और निलज्ज हो जाता है बीच बीचमें हीरासिंग अफसरके कधो परसे उन चित्रोको देखता हुआ कोहनी मार-मारकर कहता, "न कहोगे! देखा ? और यह असल परिस और वियेना वालिया है"

अफसरने आरभसे अततक उस सग्रहकी एक एक तसवीर देखी जब उसने उन तसवीरोका बक्स लौटाया, उसके हाथ काप रहे थे, माथ और कनपटीपर पसीना आ गया था आखोमें तृष्णाकी ओस थी और सगमरमरसे श्वेत गालोपर लाली

"पर एक बात है" हीरासिंगने एकदम सोल्लास कहा, 'मेरे लिए तो अब सब एकसा है म तो अब, तुम जानते हो, मेरे तो, कहो, दिन बीत गए बहार गई और पख जल गए जो पहले मै पूजता था लौ पर पतगकी तरह जिसपर जा जाकर मरता था—सब जला चुका अब बहुत दिनोसे देखता था कि कोई मिले और मौका हो तो यह सब उसे दे दू इनसे मुझे कोई खास पसे वसेकी चाह नही है कहो, तुम्हें चाहिए ?"

'हा मै नही अच्छा, लाओ" -

'जरूर, जरूर आपस मुलाकात हुई है और हम लोग दोस्त हो गए हैं म बस फी काड पचास पसके हिसाबस दे दूगा क्या ? महगे है ? तो क्या बात है, आप ही कहिए खुदा आपका भला करे आप मुसाफिर है, और म आपको लूटना नही चाहता चलिए, म आपको तीसमें दे दूगा क्या, यह भी महगा है ? तो आइए, पच्चीस पैसे हो सही बस आइए हाथ मिलाइए ज्यादा नही झुकनेकी हद है ओहँ आप भी अजीब जिद पकडे है बीस ? अच्छा, बीस ही सही पीछे आप मुझे धन्यवाद दग और देखिए मै जब ब—पहुचता हू, हमेशा हरमिटज होटममें उतरता हू बिल्कुल सवेरे, या शामको आठके बाद, म वहीं मिला करता हू मिलोगे

कोई दिक्कत नही है और देखिए, म ऐसी एसियोको जानता हू कि जिनमें एक एक नायाव ह, मानिद परी कहो तो म तुम्हे ले चलूगा जी नही, पैसे की बात नही है पसेकी क्या हस्ती है नही, तुम्हारे सरीखे जवान, खूबसूरत, तन्दुरुस्त मर्दोंके लिए ता वह प्यासी रहती है तुम पर तो वह योही लट्टू हो रहेगी नही, किसी तरह कुछ पसेकी जरूरत नहीं है यही क्यो, तुम्हारी खातिर तो वह खुशीसे अपनी तरफसे कुछ शराब या नाश्तेका खच कर देगी तो याद रखिएगा हरमिटज हीरासिंग वह न सही, यो भी याद रखिएगा हो सकता है कि म आपके किसी काम आऊ और ये काड बस ऐसी चीज ह कि कभी तुम इन्हे अलग मत करना एक एकके तीन तीन रुपए मिल सकते ह पैसेवाले बड बूढे लोग अक्सर इनकी खोजमें रहते हैं तीन रुपए क्या, ज्यादा भी मिल जाए ता अचरज नही और सुनो "हीरासिंगने झुककर एक आख चलाई और कानमें कहा, "औरतें भी इन कार्डोंपर मरती ह और तुम जवान हो, और खूबसूरत, जाने अभी कितनियोंसे तुम्हें काम पडगा'

पैसे लिये और एक एक गिनकर उन्हें समाला उसके बाद बडे तपाकसे हाथ बढाकर अफसरका हाथ हिलाया उस अफसरकी आखें ऊपरको नहीं उठती थी फिर उसे वही पटरीपर छोडकर वह डिब्बेमें पीछे चला गया, एसे कि जसे कुछ हुआ ही न हा

वह असाधारण वाचाल आदमी था चलते चलते एक छोटी सी तीन सालकी लडकीके आगे ठहर गया उसे वह देरसे और दूरसे ताक रहा था और उसकी तरफ तरह-तरहकी सूरतें बना रहा था जाकर उसके सामने वह पजोके बल बठ गया, तरह-तरहकी बोलिया बोलने लगा और विचित्र बोलीमें पूछा, "मैं पूछता हू, अमानी बच्ची कहां जा लई ऐ ओ ओ इत्ती बडी बच्ची अकेले जा लई ऐं अम्मा साथ नई ऐ? टिकट अपना आप लिया ? और अकेली जा लई ऐ ? अले कैसी बद-माश लडकी है लडकीकी अम्मा कहा ऐ?"

इसी समय एक सुन्दर, ऊचे कदकी, आत्मविश्वस्त महिला दूसरे डिब्बे से निकलकर आई और बोली, "बच्चेसे दूर रहो अनजाने बच्चे

को छेडना—यहभी तहजीव है !"

हीरासिह चौककर एकदम उठ खडा हुआ और लबलबाने लगा, "अजी म रुक नही सका कसी सुदर प्यारी भोली बच्ची है पूरी खिलौना म, श्रीमती, खुदभी पिता हू मेरे भी बच्चे ह खुशीके मारे मुझसे रहा न गया"

परन्तु महिलाने लडकीको हाथसे थामा, और घूमकर अपनी जगह चली गई हीरासिह वही खडा खडा अपनी क्षमा याचना बकता रहा

दिनके चौबीस घण्टोम वह कई बार तीसरे दर्जेके दो डिब्बोमें आया गया उनम एक गाडीके बिल्कुल आग था,और दूसरा बिल्कुल पीछ एक डिब्बमें तीन सुदर स्त्रिया बठी थी, और एक काली दाढीवाला लम्बा-सा आदमी हीरासिह और वह किसी विचित्र भाषामें कुछ विचित्र बात करते थ और स्त्रियाँ उसकी ओर विचित्र सशक भावसे देखती थी जसे मानो उससे कुछ पूछना चाहती ह, पर साहस नही होता बस एक बार कोई दोपहर पढ उनमसे एक पूछ बठी, "तो यह सच है जो तुमने उस *जगहके बारेमें कहा सब सच है? तुम जानो मेरे जीमें खटका है"*

"आह, आनदी, तुम्हारा मतलब क्या है ? मने कहा है तो सच ही हो सकता है म वही बात कहता हू जो सोनेसी खरी होती है सुनो, लेजू—' और डाढीवाले पुरुषकी ओर मुडकर उसने कहा, 'अभी एक स्टशन आएगा अगर चाहिए तो लडकियोको पूरी बूरी खरीद देना यहा पच्चीस मिनट गाडी ठहरती है"

"म तो पूरी नही लूँगी" हिचकिचाते हुए एक लडकी बोली

'*मेरी प्यारी बला, जो जो चाह लेना* म खुद स्टशनपर उतरकर जो कहोगी ला दूगा लेजू, तुम्हे भी तग होनेकी जरूरत नहीं है म खुद ही सब कर दूगा'

दूसरे डिब्बमें कोई दजन डढ दजन औरत थी उनके ऊपर एक *मोटी ताजी बडी बडी भौंहोवाली एक औरत थी उसकी लटकती हुई* थैलीनुमा ठोढी और कुरतेके नीचे डुलती उसकी छातियाँ और पेट रेलके चलते वक्त एसे हिलते थ कि क्या कहे न इस अधेड औरतको, न साथ

तरुणियोंको अपने व्यवसायके बारेमें किसी तरहकी दुविधा या सन्देह था औरतें बर्थोपर लेट रही थी, शराब पी रही थीं, बक रही थी, सिगरेट पी रही थी डिब्बेमें बैठा हुआ नर वर्ग इन मादाओंसे कभी-कभी छेड़-छाड़ भी कर लेता था तब ये भी चीख चिल्लाकर खुले मुँह टका जवाब पत्थरसे देती थी जवान लोग उन्हें कभी सिगरेट और दारू पेश कर देते थे

हीरासिंग यहा कुछ और ही बन जाता था वह रौब-दाबके साथ पेश आता, लापरवाह हो जाता और कृपापूर्वक बात करता था दूसरी तरफ उसकी प्रजाजन ये औरते जो बात करतीं अत्यन्त दीन और विनीत स्वरमे रोमानियाकी, पोलडकी, यहूदी, और रूसकी स्त्रियोंके इस विचित्र समूहको उसने एकबार एक निगाह देखा उसने मालूम कर लिया कि कोई गड़बड़ नही है उसने यहा भी पूरियाके लिए कहा, फिर उसे वापिस ले लिया जसे गेलगाडियोंमें अपने ढोर ले जानेवाले होते ह जो बीचमें स्टेशनो पर आकर जरा उनकी चारे पानीकी देखभाल कर लेते ह, इस जगह यह व्यक्ति ठीक वसा ही बन जाता था इस निरीक्षणके बाद वह अपनी जगह लौट आता और अपनी स्त्रीके साथ पहले जसा ही खिलवाड करने लगता और उसके मुहसे वसी ही अनगल किस्से कहानिया भडने लगती

कही गाडी ज्यादा देर ठहरती तब वह अपने उस मालकी जरा पडताल करने पहुँच जाता पर अपने पडोसियोसे कहता, "देखिए, मेरे लिए जसे एक चीज, वसे दूसरी स्वादम मुझे स्वाद नही पर मैं अपने पेटका क्या बनाऊँ जाने स्टेशन पर क्या-क्या गद भरा खाना मिलता है पहले अपने तीन चार रुपए उसपर गवाओ, फिर बीमार पडो, और ऊपरसे फिर सौ रुपए डाक्टरपर खच करो तब फिर एसे बनो जसे थे लेकिन क्या, सरसुती ?' पत्नीकी ओर मुडकर कहता, "स्टेशनपर बाहर चलकर कुछ खाओगी, या कहो डिब्बेमे यही तुम्हारे पास कुछ भिजवा दूँ ? बोलो, क्या मगवा भजूँ ?"

पतिकी इस चिन्तापर पत्नी कृतज्ञ आह्लादसे अरुण पड जाती तरल आखोंसे उसे देखती और मने कर देती—"ओ जी नहीं, तुम्हारी कृपा है,

मुझे भूख नही है   म अघाई हू "

तब हीरासिंगने रेलम चलने वाले उपहार गहके मनेजरसे कह कर तरह तरहका खानेका सामान मगा भजा   बिना शीघ्रताके पूरी भूखसे उन्हें खाया, पत्नीका अनुरोध पूवक भाति भातिके व्यजन चखाए, उस छका और फिर बाकी बचे सामानको सभाल कर अलग रख दिया

दूर इजनके आगे शहरकी छतें और मीनारें सुनहरी धूपसे रगी हुई दीखने लगी   इतनेमें ही एक कण्डक्टर आया और उसने हीरासिंगको कुछ सकेत किया   हीरासिंग झट पीछे पीछ चलकर पटरीपर आया

कण्डक्टरने कहा, "अभी—अभी इसपेक्टर आनेवाले ह   सो जरा अपनी स्त्रीके साथ आकर यहा खडे हो जाइए "

"अच्छा, अच्छा, अच्छा "

"और वह रकम भी दिलवाइए जो ठहरी थी "

"आपका क्या निकलता है ?"

'वही जो ठहरा था   अतिरिक्त खचका आधा, दो रुपए अस्सी पैसे "

"क्या ?" हीरासिंग अकस्मात उबल कर बोला, "क्या ? दो रुपए अस्सी पसे ? समझा होगा किसी गबदूसे पाला पडा है   यह लो एक रुपया और खुदासे खर मनाओ "

"माफ कीजिए जनाब, यह बजा है हमारा आपका यह नही ठहरा था ?"

"ठहरा था ! ठहरा था   अठन्नी और लो अच्छा और चम्पत होओ और एक कौडी न मिलेगी क्या ? गुस्ताखी ! अच्छा, आने दो इसपेक्टर को   मैं कहूगा यह आदमी बिना टिकट लोगाको सफर कराता है यह न समझना उस्ताद कि किसी हल्केसे पाला पडा है '

कण्डक्टरकी शाख खुली   वह बेहद गरम हो आया "बदमाश कही का" वह चिल्लाया   "चाहिए कि तुम जसे आदमीको पकडकर रेलके नीचे डाल दिया जाए "

लेकिन हीरासिंग मुर्गेकी तरह उसपर टूट पडा   "क्या ? रेलके

नीचे ! जानते हो, ऐसी धमकीपर क्या किया जाता है ? यह मारनेकी धमकी ! म अभी रेलकी जजीर खीचता हू और हल्ला मचाता हू" और एसी तत्परतासे जजीरकी तरफको हाथ बढ़ाया कि कण्डक्टरने सहमकर उसे रोक लिया और थूककर बोला, "जा, साले मेरे पैसे, उचक्के, चोर"

हीरासिहने पत्नीको बाहर बुलाया, कहा, "सरसुती, आओ, जरा यहा खडे हो यहासे दृश्य कैसा सुहावना दीखता है आह, कैसा सुन्दर, जैसे तस्वीर'

सरसुती आज्ञानुगामिनी पीछे-पीछे चली नये-नये कपड, जो शायद पहली बार उसने पहने थे, उन्हें हाथसे ऊपर उठाए थी कि कही छू न जाए वह सामने दूर सा ध्य अरुण प्रभासे गिरजो की चोटिया और शहरकी मीनारें उद्दीप्त दीखती थीं ऊपर पहाडी पर भवन मानो इस स्वगकी और जादूकी दुनियामें तैरते हुए मालूम होते थे घने वृक्षोंकी पातें पहाडीसे उतरकर नीचे तक चली आरही थीं एक ओर उतु ग नग्न सीधा स्तम्भ सा वह पवत दुग पदस्थ जलराशिके तटपर खडा जाने क्या सोचता था इस नग्न प्रशस्त प्रस्तर तलपर कही-कहीं वृक्षोंकी हरी पाति एसी लगती थी जसे सप्राण दहमे रक्तवाहिनी शिराए परी देश सा सुन्दर यह प्राचीन नगर जान पडता था आप ही आप रेलसे मिलनेके लिए बाह खोले आगे बढा आरहा है

ट्रेन ठहरी हीरासिहने तीन कुलियोको सामान ले चलनेके लिए कहकर स्त्रीको पीछे पीछे आनेको कहा पर वह खुद दरवाजे पर अपनी दोनो जमातोको ठीक बाहर निकल जाने देनेके लिए ठहरा रहा उन दजनसे ऊपर कामिनियोकी सरदारनी उस अधेडनकी ओर उसने कहा "याद रखना मेडम बमन, होटल अमेरिका, इवेनिंग कोस्का'

और उस काली डाढीवाले आदमीको कहा, "भूलना नही, लेजू, लडकियोको अच्छी तरह खाना खिलाना शामको सिनेमा दिखाना रात को ग्यारह बजे मेरी बाट देखना तब हम बात करेंगे लेकिन और कोई मुर्फ पूछ, तो पता जानते ही हो, हरमीटेज फौरन फोन कर देना

किसी वजहसे वहां न हू तो रीमान काफेमें दौड़ माना या सामनेकी हिबरू भोजनशालामें वही कुछ खा पी रहा हूगा अच्छा ? अब चलो"

३

हीरासिहकी यह सब बातें-गप्प थी, और झूठ कपड़ोंके नमूने, रेशम की लच्छियां, बटन, नकली पोत और चश्मे, और—सब उसके असली पेशेको ढकनेके साधन थे पेशा था बुर्दाफरोशी यह सही है कि दस साल हुए अभी वह एक तरहकी देसी दारूका एजण्ट बनकर घूमा करता था इस तरह खूब घूमने फिरनेसे उसकी जबान चल पड़ी कतरनीकी तरह अपनी जुबानसे वह यहां वहांकी सब बातें जल्दी-जल्दी कतरता रह सकता था जुबानमें लगाम न थी इस तरहके सौदागर-खूब बातें बनाना सीख जाते है उस एजण्टी ने ही उसे एक दिन इस पेशेके किनारे लगा दिया वही जारहा था कि एकबार दर्जीकी एक जवान लड़की इसके प्रम पाशमें फस गई वह था अभी पुलिसके रजिस्टरोमें दर्ज नहीं हुई थी, पर अपनी देहके और प्रेमके दानमें बहुत संयमशील और सिद्धान्तवादी भी न थी हीरासिंग अभी नई उमरका अच्छा और रंगीन जवान था इस छोकरीको वह अपने साथ-साथ ले चला उसके मनमें बड़ा उछाह था बहुत रंग छ महीने होते होते वह उस लड़कीसे बेहद ऊब गया वह इस चपल गति तत्पर और चुस्त आदमीके गलमें जस भारी पत्थर बन रही तिसपर सन्देह और डाहके कारण उनमें बहुतेरे झगड़ होने लग, रोना पीटना मचने लगा बहुत दिना तक स्त्री पुरुषोंके साथ-साथ रहनेसे जो होता है, वही सब यहां हुआ धीरे धीरे वह उसे पीटने भी लगा पहल तो लड़की चोट खाकर बड़ी उफनी पर दूसरी बारसे चुप हो गई और सब ऐसी प्रेम प्रवृत्त रमणियां अपने प्रम सम्बन्धमें मध्यम मार्ग नहीं जाना करतीं या तो वे झूठी मायावी दम्भी अपने बासे दिस धोरे अपने मायनें सब भांतिके तिरिमार्जारतोंके विचारोंसे भरी रहती हैं नहीं तो अतीव आत्मोत्सर्ग, अगाध अज्ञाने भरी एसी भोली निरीह बन जाती है

कि न उन्हें आत्मवञ्चनाकी शंका होती है, न आत्मसम्मानकी चिन्ता यह दर्जिन दूसरी काठी की थी और हीरासिंगको इसमें बहुत दिक्कत न हुई कि फुसलाकर उससे गलीमें पेशा कमवाए जिस पहली शामको उसकी यह आज्ञानुवर्तिनी प्रेमिका पहले पांच रुपए कमाकर लाई और उसे दिए, तबसे हीरासिंगके जी में उसके प्रति विषम तीक्ष्ण घृणा व्याप गई उसके बाद जो जो औरत उसके हाथ पड़ी, और सैंकड़ाही उसके हाथमेंसे निकली थी, उन सबके प्रति, स्त्री मात्रके प्रति, उसमें यह मानवोचित दर्प और ग्लानि घर करके बैठ गई वह स्त्रीको बुरी तरह छेड़ता था, मानो सुई चुभा चुभाकर उनके नैतिक भावको खण्ड खण्ड होते देखनेमें उसे रस मिलता था उसे उनके भावोंके कोमल अंशको खोज खोजकर पाने और मानो उन्हें कुचलकर दलित करनेमें विशेष आनन्द आता था औरत विचारी चुप रहती, आह भरती, रोती, उसके सामने घुटनों बैठकर हथली चूमती नारीका यह नीरव, असहाय अबलोचित दैन्य हीरासिंको और भड़काता था वह उसे दूर खदेड़ देता वह नहीं जाती तो बाहर गलीमें धक्का दे देता पर दो एक घण्टे स्त्री विचारी सर्दीमें ठिठुरती, मेंहमें भीगती, और फिर लौट आती आखिरकार एक मनचले दोस्तने सलाह दी कि अपनी स्त्रीको जाकर चकलेमें क्यों नहीं बेच देते बस यहीसे उसे अपने जीवनके पेशेका सूत्र मिला

सच यह है, हीरासिंग के चित्तको भरोसा न था कि इस काममें कोई खास नफा या कामयाबी होगी पर काम ऐसा बैठा कि क्या कहे

एक चकलेकी मालकिन (यह लारनबकी बात है) उसके प्रस्तावमें बड़ी खुशीसे साझी हो गई वह कभीसे सामन्त यादोरामको जानती थी अच्छा पियानो बजाता था, नाचता गजबका था और अपने खुशदिल मजाकसे जितने होते सबको हंसा डालता था तिसपर सबसे बड़ा गुण यह था कि निलज्ज दक्षता के साथ वह जिसको चाहता मिलकर लुभाकर उसीको फंसा लेता था बस बात यहीं आकर अटकती थी कि आखिर कैसे समझा-बुझाकर उससे पिण्ड छुड़ाया जाए कुछ हो वह छोड़ना ही नहीं चाहती थी आत्मघातकी धमकी देती थी कहती थी, अपनी आंखें

जला लूगी, पुलिसम जाकर रिपोट कर दूगी और उसे सच ही सामत यादोरामकी कुछ करतूतोका पता था कि जिससे हजरतको आसानीसे फासी मिल सकती थी इसपर हीरासिंगने तरकीब बदली वह तुरत अत्यत स्नेहशील प्रेमी बन गया, कोमल चिताशील मित्र, सतक अभिभावक फिर एक दिन उसने ऐसा भाव बनाया कि जाने क्या घोर सकट उसपर नही आ पडा है स्त्री पूछती और वह चुप रहता बहुत देरमें एक-आध शब्द कहता, तो मानो वह भी मु हसे निकल ही गया है इस भावसे कहता, "ओह, मुझसे बीते जीवनमें एक भारी दुष्कम हो गया है"

बस फिर झूठके लच्छेके लच्छे उसके मुँहसे निकलते आते कहता, पुलिस उसके पीछे है, ओह, जेलसे अब वह नही बचेगा क्या पता सख्त जेल हो, या फासी कुछ महीनोके लिए यहासे भाग सके यही उपाय है असल बात यह थी कि हजारोंके फायदेकी कोई घात उसके मनके गहरे-में थी दर्जिन बेचारी बहकावेमें आ गई उसके मनम वह करुए सम वेदनाका वह भाव जाग उठा, जो किस स्त्रीम नही है मातत्व किस स्त्रीमें नही है ? अब यह समझाना उसे कोई मुश्किल न था कि उसके साथ-साथ चलनेमे बडी बाधाए ह, बडा खतरा है यहा रहकर इन सकटके दिनोको काट दे तो क्या ही अच्छा न हो म, जरा विपत टली कि थोड दिनोमें लौट आता ही हू इसके बाद ता किसी एकात स्थानम रहनेके बहाने, जहा पुलिस जासूसोकी पहुच न हो उम चकलाम लेजाकर रख देना उसके लिए म कुछ बराबर बात थी एक सवेरे हीरासिंगने उसे जरा ठीक होनेको कहा कपड जरा पहन ले, बाल बाह ले, पाउडर याउडर भी जरा लगाले बस, तब वह उम अपनी जान पहचान वालीके यहा लेकर पहुच गया बात पक्की पहलेसे थी और वह सुदरी थी और युवती बस उसी दिन पुलिसमें उसका टिकट बदलकर पीला मिल गया हीरासिंगने रोते रोते आलिगन और स्नेह पूवक उसस विदा ली, और मालकिनके कमरेमें पहुचकर अपने पचास रुपए सम्भाले माग उसने दो सौ थे पर उसे इन पचासपर बहुत खद न हुआ, क्योकि असल बात यह थी कि उस एक भेद मिल गया था अब क्या था अब सफलता

उसके हाथ थी

यह कहनेकी आवश्यकता नही कि लडकी आखिरी दम तक चकलेके बगुलमें रही हीरासिंग उसे ऐसा भूला कि साल बाद उसे उसकी सूरत भी न याद आती थी पर क्या पता शायद याद आती भी हो अब वह दक्षिणी रूसके सबसे बड़े नारी मासके व्यापारियोमसे है कुस्तुनतुनियासे अरजन्टाइन तक उसका लेन देन है झुण्ड की झुण्ड लडकियो को उडेसाके चकलोसे कीवके चकलोमें ले जाता है कीवे वालियाकी खारकव और खारकव वालियोको फिर उडेसा जो माल बासी हो जाता है गदरा जाता है, उसमें दूसरे और तीसरे दर्जेके मालको यह आदमी यूरोपके और शहरोमें ठीक ठिकाने लगा देता है यहाका माल वहा, और वहाका यहाँ इस तरह करते रहनेमें सब तरहकी चीज खप जाती है जिसकी एक जगह माग नही रही, कही न-कही दूसरी जगह उसका ठौर ठिकाना लगाकर वह अपना पसा सीधा कर लेता है दूर दूर उसका कारोबार फला है, और कई बडे बड नामवाले सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त महानुभावोसे भी उसका व्यवहार खाता है लेफ्टीनेन्ट गवनर, फौजके करनल, बड बडे एडवोकेट, प्रसिद्ध डाक्टर, रईस, जमीदार, व्यापारी, सभीमें उसकी गाहकी है धरतीके भीतरकी दुनिया उसकी ऐसी परिचित है, जस ज्योतिषीको तारो भरा आसमान उसकी स्मरण शक्ति विलक्षण है बिना नाटबुक हजारो नाम, पते हुलिए, गात आदि उसे याद ह अपने थोक ग्राहकोकी रुचियोका पूरा पूरा पता उसे रहता है कुछको एकदम तीखी काम कला विचक्षण चाहियें, कुछ अछूती अक्षत बालाओके मुह माग दाम दनेको तैयार रहते ह कुछके लिए कच्ची उमरकी अविकसित अधखिली कलियोकोही तोडकर ले आनेकी जरूरत है आखिरी बात बहुत मुश्किल और खतरनाक है पर यहा दावभी गहरा लगता है एक सौदेम दसिया हजार सीधे ह सस्था सञ्चालिकाओकी सब भातिकी रुचि-कुरुचिको उसे पूरा करना होता है कभी-कभी ता अप्राकृतिक गहर्णीय वषयिक तृष्णाओकी तृप्तिकेलिए उसे मन चाहा माल जुटाना होता है पर यह कह देना चाहिए कि ऐसे सौदे वह कम हाथमें लेता है

तभी लेता है जब नफा पूरा हो दो तीन बार जेलमें भी उसे रहना पड़ा है, पर यह सौदा भी टोटेका नही हुआ उसका साहस, उसकी शक्ति और उसकी सूझ इससे कम नही हुई बल्कि हर जेलके अनुभवसे और पुष्ट, दुर्दान्त, सम्पूर्ण और कठोर ही होती गई अनुभवके साथ उसके दुस्साहस पूर्ण कार्यकी इस व्यावसायिक दुनियामें चातुर्यकी शिक्षा भी उसे जल प्रवासम मिलती रही

इस कालमें उसने पन्द्रह बार नए नए व्याह किए और हर बार खासी रकम दहेजमें पाई दहेजकी रकम हाथम आई कि हजरत वहासे उड़ चलते थे फिर सूझ लगी और किसी चकलेमें या किसी और जगह जा कर अपनी पत्नीको वेच दिया और एक अच्छी रकम खडी करली यह भी होता था कि लडकीके सबन्धी पुलिसम पहुचते और पुलिस खोज खबर करती, पर अगर पुलिस इधर सुरजोतकी तलाशम होती तो उधर वह महाशय राजेन्द्रपाल बने हुए शहर शहर और गाव गाव घूम रह होते थ यादददाश्त उसकी बहुत अच्छी थी, फिर भी उसको अपने सब नामो की याद नही थी यही नही कि उसे याद न रहा हो कि किस साल वह पृथ्वीनाथ था और किस साल बकुठ वह तक था कि उसे अपना असली नाम भी फर्जी लगने लगा था

यह वणणीय है कि उसे अपने इस पेशेम न कुछ नियम विरुद्ध मालूम होता था, न धण्य उसे लगता जैसे आटा दाल साग भाजीका व्यापार न किया, यह करलिया अपने निजके ढगपर वह धार्मिक था अवकाश मिलता तो हर इतवार सोमवारको वह गिरजे पहुचता उत्सव पवके दिनो जहा भी होता वही उनको मानता और पालन करता उसकी मा थी, और एक कुबडी बहन वह उन्हे बराबर, कभी कम कभी ज्यादह खच भेजता रहता था कुसे उडसा और बासासे समारा जहा कही पहुचता, नियमित नही तो अवसर वहासे वह उनकेलिए अच्छी अच्छी रकमें भेजता रहता एक बैंकमें उसने अच्छा द्रव्य सचितकर रखा था और उसे बराबर बढाता रहता था व्याजको हाथ न लगाता था पर कृपणता या नदीदापन उसके पास नही फटका हाथका वह सदा खुला था इस प्रकार

जसे इस कामके खतरे, इसके मजे और इसके लिए आवश्यक चातुर्यके कारण वह आकृष्ट हुआ था स्त्रियोंके प्रति वह उदासीन था यद्यपि उनकी परख और उनके मूल्यकी उसे पूरी पहचान थी उस हलवाईकी सी दशा उसकी थी जो मिठाई बनाता है, पर खानेकी तबियत जिसमें तनिक नही होती स्त्रीको बहकाना, फुसलाना, जो चाहा जो उससे करा लेना इसमें उसे कुछ यत्न नही करना पडता था स्त्री मानो आपही आप उसके पास आ जाती और उसके हाथोमें *आज्ञाकारिणी अनुगामिनी*, चुप-चुपानी कठपुतली बनकर रह जाती उनके प्रति उसके व्यवहारमें एक प्रकारकी कठिन, अपरिहार्य, विश्वस्त आत्म विश्वासकी भावना आगई थी असन्धिरूपमें जैसे उसे मालूम रहता था कि उसके सामने स्त्रियोंको ऐसे दबक रहना ही है जैसे अनुभवी उस्ताद साईसकी निगाह, आवाज और इशारेपर बिदका घोडा दबक रहता है

वह बहुत कम शराब पीता था वह भी कोई साथ हुआ तभी खाने-की तरफ्स उदासीन था पर जैसे हरेकमे कोई न कोई त्रुटि होती है, उस-में भी थी अपने कपडोका वह बहुत खयाल रखता था अपनी सज्जा पर कुछ कम खर्च वह नही करता था तरह-तरहके फशनके कालर, कोट घडी, चेन, अगूठी इनमें उसका मन बहलता था

डिपोसे वह सीधा हरमिटज गया होटलके कुली झटपट आकर उसका सामान उठा ले चले पीछे पीछे पत्नीकी बाहोंमे बाह डाले वह भी चला दोनोका आनबान निराली थी पर हीरासिंगका तो पूछनाही क्या है हाथमें मूठदार छडी जिसकी मूठ चादीकी एक नग्नस्त्रीकी बनी थी, इंग्लिश ओवरकोट, बिल्कुल अप टू डेट

"आप यहा बिना इजाजत नही ठहर सकते' ऊपरसे एक स्थूलकाय दरवानने कहा

ओह जोख, फिर वही बिना इजाजतके!" हीरासिंहने प्रसन्नतापूर्वक कहा और उसके कधापर थपथपाया, 'इजाजतके क्या माने ह ? भाई किसकी बिना इजाजतके ? हमेशा तुम यही कह दिया करते हो "बिना इजाजतके' म कुल तीन दिन रहूगा नवाब इफ्तखासे किराए

विराएकी बातचीत पूरी हुई कि म चला जाऊगा खुदा तुम्हारा भला करे अपने सब कमरामें तुम्ही-तुम रहना और जोख, देखो तो अड्सास क्या खिलोना तुम्हार लिए लाया हू कि बाग बागहा जाग्राग "

अभ्यस्त हाथामे नट उमने सोनेकी मुहर निकाली और उसके हाथाम थमाई और फिर वह दखत दखते गायब हो गया

ऊपर अपने बड कमरेम जाकर पहली बात उमने यह की कि शान दार छ जोडी जत निकालकर दरवाजके बाहर रख दिए घण्टी बजाई और घण्टी सुनकर जा आदमी आया उससे कहा, देखा, फौरन यह साफ होन चाहिएँ एस चमक कि आईना तुम्हारा क्या नाम है चपत ? तो तुम ता मुझ जानते होग ? अच्छा काम करोग तो तुम भी खुश होग ता सुना ? आईन जस चमकें

४

हाटल हरमिटजम हीरासिंग तीन दिन और रातसे ज्यादह न रहा इस बीचम काई तीनमौ आदमीयोंस वह मिला वह क्या आया शहरम एक जान आगई नौकरा दिलानवाल कम्पनियाक लाग उसके पास नौकरीके लिए और मस्त होन्वाकी मालकिन पुरान धाग एजण्ट और जिनके बाल इस औरताके पशम पक गए है एस बहुतरे लोग उमक पास आए खुद मालम किनप मतलबहो इसलिए नही पर अपनी व्यावसायिक धाक रखनक स्वार्थमें ही वह जितना खीचकर होता सौदा करता बचना ता बहुत नफा लेकर या खरीदता तो कमस कम दाम लगाकर सचमुच दस या पन्द्रह रुपय की अदद कम या ज्यादह लेनेकी उस बहुत चिंता न थी पर यह विचार कि उसका प्रतिस्पर्धी समव्यवसायी पानपाल ज्यादा रकम तो नही हथिया लेता है उसका सतत जागरुक, चौकन्ना रखता

आनेके बाद अगले दिन वह मजर फोटाग्राफरके यहा पहुचा वहा जाकर तरह तरहकी स्थितियाम अपन साथ उसकी तस्वीर खिचाई उसमें हरएक निगेटिवके उस तीन रुपय मिल जिसमस एक रुपया उस

लडकीको दिया उसके बाद बशीरनके पास पहुचा

वह एक औरत थी जिसकी उमर ढलगई थी और जो अब पेशा छोड बैठी थी रूसके दक्षिणम ऐसी औरते मिलती ह अब वह इतनी काम वाली और पसेवाली हो गई थी कि एक पति नामक जीवको पाल ले और साथ साथ अपना कारोबार भी चलाती रहे पति उसका एक सीधा सादा पोल था हीरासिंग और बशीरन पुराने दोस्तोकी भाति मिले बातचीतम मालूम होता था कि इन दानोम न हया है न डर न ग्लानि, न हृदय

'बीबी बशीरन आज म तुम्हारे लिए माल लाया हू माल तीन औरतें ह एकसे एक बढकर सब ताजी, लजीली भरी एक सुनहरी बालोंकी है जरा सकोची दूसरीके बड काले लहराते बाल ह छोटी सी ह, पर तुम जानो बडी चस्त हर बातके लिए तयार तीसरी रहस्य मयी है, मुस्काती है पर बोलती नही खूबसूरत एसी कि क्या कहू काममे खूब निकलेगी"

बशीरन शकापूवक हीरासिंगको देखती हुई बोली 'हीरासिंग, मुझसे क्या इनकी हाक रह हो ? क्या पहले जसा खेल खेला चाहते हो ?'

या खुदा ! म न हू कि तुम्हे धोखा दू और एक खूब पढी लिखी भी मेरे हाथ लगी है वह भी तुम्हारे लिए है जो चाहो उसका बनाना उसका ग्राहक मिलनेम तुम्हे दिक्कत न होगी

बशीरन वक्रतासे हसी "फिर कोई नई दुलहन पकड लाए हो ?"

हीरासिंग हसा 'पर वह बहुत बडे घरानेकी है'

तो मतलब हुआ पुलिस वलिसके चक्करसे भी निबटना होगा"

आह या खुदा, तो म तमम रकम भी थोडी बडी लेता हू बस एक हजारम तीनों दे दूगा"

'ठीक बात करो जी पाच सौ म झमेलेका सौदा नही रखती'

देखो, बीबी बशीरन यह पहला मौका नही है जो हमारे बीच सौदा पटा है म तुम्हे ठगता नही उन्हे अभी यहा ले आता हू एक बात याद रखना कि तुम मेरी चाची हो समझी ? चाची ! वसेही बात करना

मैं तीन दिनसे ज्यादा शहरमें नही ठहरुगा"

बशीरन विशाल छाती, पेट और ठाडियोको लेकर आनन्दसे हिली, "छोटी छोटी बातोपर हम नही झगडग तुम मुझ नही ठगते ता म भी तुम्हें नही ठगती मालकी माग अब चढी हुई है मिस्टर हीरासिंग शराब लीजिएगा ?

"धन्यवाद, कृपा है"

'हम तुम पुरान दोस्त ह हीरासिंग, बताओ, तुम सालमें कितना कमा लेते हो ?

"आह बीबी, क्या बताऊ ! यही कोई बाहर बीस हजारके बीचम कुछ हो जाता है यहास वहा आते जाते रहनेम दखो न कितना खच पडता है ?"

"कुछ बचाते भी हा ?'

"अह क्या बचाता हू यही दो तीन हजार सालमें जमा कर लेता हू"

"म समझती थी, दस बीस "

हीरासिंग सावधान हो गया समझ गया, उसका भद लिया जारहा है पूछा क्या करोगी तुम जानकर तुम्ह क्यों इसमें दिलचस्पी है ?'

बशीरनने बिजलीकी घण्टीका बटन दबाया, परिचारिकाको कुछ लानेका हुक्म दिया पूछा 'आप शमशरका जानते ह ?"

हीरासिंग मानो उसपर टूटकर पडा, शमशरका कौन नही जानता वह है आदमी वह है जो दूकानदारी जानता है भई गजब करता है !'

उसे ख्याल न रहा कि वह फसता जारहा है और अपना भद दे रहा है आवेगपूवक बोलता रहा 'पता है शमशरने पारसाल क्या किया ? पोवनो, विलको त्रिटामीरसे तीस अदद माल वह अरजन्टाइन ले गया हरेकके उसन हजार-हजार रुपए लिए हजार हजार ! जोडो तो, कुल तीस हजार हागए और क्या समझती हो, शमशर इसपर मान गया ? जहाजपर बापसीका खच निकालनेके लिए इस रकमसे उसन बहुत-सी - भीयो औरतें खरीद ली उनको यहा मास्को, पीटसबग, कीएब, ओडसा

ग्रौर स्वारकवमें ठीक ठिकाने लगा दिया मैडम वह आदमी नही, बाज है, बाज वह है आदमी जो व्यापार जानता है"

बशीरनने कोमलतासे अपना हाथ उसके घुटनपर रक्खा, इसी क्षण-की उसे बाट थी, "इसीसे म कहती हू, मिस्टर भूल गई, अब क्या नाम है ?'

' हीरासिंग कहिए "

"तो मिस्टर हीरासिंग, म कहती हू तुम्हारे पास कोई वैसी भी है जो अक्षत ही बिल्कुल कोरी, नवेली एसियोको बडी माग है में खुला सौदा करती हू पसेपर नही हाथ मोचूगी जो मागोगे दूगी पर फशन वसियोका है, क्वारी, कच्ची और सुनो हीरासिंग, जिस हालतमे तुम दोगे *तुम्हारा माल वैसी ही हालतमे तुम्हें लौटा दूगी जरा मनचलोकी दिल्लगी* है जो मेरी समझ भी नही आती"

हीरासिंगने अपनी आख घुमाई, सिर खुजाया, बोला, "देखो, मेरी दुलहन है करीब-करीब तुम समझती तो हो ?'

"करीब-करीब क्या ?'

"मुझे कहते लज्जा आती है पर वह अब कसे बताऊ, वह अबतक दुलहन बनी नहीं है"

बशीरन खिलखिला पडी, "हीरासिंग, मुझेयह आशा न थी कि तुम एसे पक्के धूत निकलोग तुम्हारी दुलहन ही सही, मुझे एक बात है पर यह क्या सच है कि तुम बिल्कुल थमे रहे !"

हीरासिहने गभीरतासे कहा, "एक हजार"

"ऊह, क्या ओछी बातें करते हो ! एक हजार सही पर बताओ, वह काबू में भी आ जायगी?"

"काबूकी भली कही !" हीरासिहने विश्वस्त भावसे कहा, "वही बात है कि याद रखना, तुम मेरी चाची हो और अपनी पत्नीको लेकर तुम्हारे यहा आता हू सुनो तो, वह मुझसे प्रम में फसी है मुझसे बिल्लीसी हिल गई है अगर म उससे कहू कि मेरी भलाईके लिए उसे एसा करना चाहिए, और यह, और वह, तो वह कुछ नही बोलेगी, वैसाही करेगी"

बस बात करनेको और कुछ न रह गया था वशीरन एक कागज का पुर्जा लाई, उसपर मुश्किलसे अपना नाम, अपनी वल्दियत वगरह वगरह लिखा प्रोमिजरी नाट बाकायदा नही था पर इन चोरोंमें इन ठगोंमें, अपनी बातकी एक प्रान होती है   एसे मामलाम इनमका एक कभी दूसरेका ठगता नही   ठगे तो उसे मौत ही मिले   फिर चाहे वह जेलखानेम हो चक्लेमें हो, कही हो

इसके बाद तुरत कहीसे उनके प्यारे प्रीतम भी वहा पधारे   जवान, मझोले कदके एक पील थ, मुछें ऊची तनी थी   सबने मिलकर सुरा पान किया   यहा वहाकी बात चीत की   व्यवसायकी गिरी हालतपर जरा-कुछ बोलते बतलाते रहे इसके बाद हीरासिहने अपने होटलके कम रेमें टलीफोन किया और पत्नीको बुला लिया   आनेपर उसका अपना चाची और चाचीके इन चचेरे भाईसे परिचय कराया   कहा, "कई गुप्त राजनैतिक कारणासे मुझ नहरमे बाहर जाना पड रहा है मेरी प्रियतमा, मेरी रानी, मुझे क्षमा कर देगी   म, देखना बहुत जल्दी ही आ जाऊगा ' कहकर उसने अपनी प्रियतमा पत्नीका चुम्बन लिया आसू गिराए, और बग्घीपर चढकर रवाना हो गया

५

हीरासिहके आते ही (परमात्मा जाने अबतक उसका नाम क्या बन गया था) मतलब, इस आदमीके आते ही यास्मकायाका हुलिया बदलने लगा   परिवतन पर परिवतन होने लगे   टर्विल वाली जगहमे व।म लिया कुछ अन्नामरकानीके यहा आ गइ   अन्ना मरकानीके यहासे एक रुपय वाले चकलोंमें, वहासे निकलकर फिर आध रुपये वालोम   यहा प्रमोशन नही होता एक दर्जा नीचे ही उतरना होता है प्रत्यक स्थान विनिमयम पाचस सौ रुपय तकका नफा हीरासिहका होता था   सच इस आदमीम बेहद शक्ति थी उमी जैसी इमाम्राके जल प्रपातम दोपहरी में अन्नामरकानीके यहा बैठा हुआ, सिगरटसे धुआ उडाता एकपर दूसरो

रक्खी टागको हिलाता हुआ वह कह रहा था "सवाल यह है अब सोनाकी ऐसी जगह जरूरत क्या रह गई है अब वह भली जगहके लायक नही रह गई चलो, उसे नीचे वह चलन दो सौ रुपये तुम्हभी बच जायेंगे पच्चीस मुझे भी मिल जायेंग सच सच बताओ आजकल उसकी गाहकी है या नही ? '

ओह, मि० शाट्जकी, तुमसे तो कोई बातोम नही जीत सकता पर तुम्ही जानो, मुझे छोडत कितना दु ख होगा ! कसी अच्छी लडकी है "

हीरासिंग क्षणभर सोचता रहा कोई अच्छा-सा मुहावरा कहना चाहता था 'क्या ! गिरेको धक्का दो, और क्या ? और मेडम शाप्स, मुझे पक्का भरोसा है, उसकी गाहकी अब तुम्हारे यहा नही है "

इसिया साविश बीमार, जीर्ण, बुड्ढा आदमी था पर वक्तपर पक्का होना भी जानता था बोला, "हा बात तो सही है कि उसकी किस तरह की माग यहा नही रही खुद सोचो, आनस्का, उसके कपडम पचास रुपए लगग पच्चीस मि० शादसकीके हिस्सेमें जाएग और परमात्माका भला हो, सिरपरस एक पिण्ड छूटेगा हमारी सस्थाकी अब भी तो उससे नेकनामी नही होती टल जाएगी तो भला ही होगा "

इस तरह बचारी सोना यहासे गिरी गिरकर आध रुपएवाली जगह म पहुची यहा समाज का सब तरह का उच्छिष्ट वर्ग रातो रात इन कामिनियाका मनमाना प्रयोग और उपयोग करता था यहा के कामके बोझको सम्भालनके लिए बेहद पुष्ट स्वास्थ्य और पत्थर-सी देह दरकार थी एक रात सोना ग्लानि और आतकसे कापने लगी जब उसने देखा कि दो सौ पाउडवाली पहाडकी पहाड मेनका किसी प्राकृतिक शका निवारणके लिए भागी भागी दालानमें गई, वहीं खुड्डीपर बैठी, और बठते-बठत अपनी नायिकासे चिल्लाकर बोली, ' बाई सुनो, छत्तीसवे मुलाकातीका नम्बर है, भूलना नहीं "

सौभाग्यवश सोना भी यहा बहुत तग न हुई यहा आकर वह भी साधा रण बन गई थी कोई उसकी सुन्दर आखोको नहीं देखता था, और जब तक कोई और प्रस्तुत रहती कोई गाहक उसे नहीं मागता था हां,

केमिस्टकी दुकानके उस पुराने परिचित कर्मचारीने फिर उसका पता लगा लिया था और हर शामको वही उसके पास पहुच जाया करता था पर कामरता कहा, या धमभीरुता या वास्तविक मथुनकी कल्पना जय ग्लानि —कभी वह उस उस घरसे निकालकर नही ले गया सारी रात वह उसके पास बठा रहता और सदाकी भाति कोई गाहक आकर उसे ले जाता तो भी चुपचाप उसके लौटनेकी प्रतीक्षा करता रहता वह लौटती तब वही ईर्षा-जय कलह मचती दोना झगडते, एक दूसरको ताने देते और रोत अब भी वह उस वसा ही प्रेम करता था अपनी दुकानमें काउटरके पीछ खडा-खडा दवाइयाकी पुडिया सामने रख उस ही याद करता और आह भरता था

६

एक फानेबल उपहारगह का द्वार घुसते ही दाना ओर गमलोम बिजलियाकी रोशनियाके गुच्छ जगमगा रहे ह बगीचेमें मानो दीपावली का उत्सव मनाया जा रहा है आग एक खुली हुई जगह है वहा रेत बिछा है जिसक बायी तरफ स्टज बना है वहा थियटर है और शूटिंग गलरी सामने फौजी बण्डके लिए शखाकार स्थान बना है बीच-बीचमें यत्र तत्र फूलोके कुञ्ज आस पास शराबकी दुकान, एक ओर भोजना लयोकी कतार उनपर बिजली के हण्ड जगमगा रहे ह प्रकाशके कारण नीचेका वर्गाकार रास्ता चादनी सा सफेद चमकता है हण्डाके दूधिया काचपर पतगोके झुण्डके झुण्ड मडरा कर पडत ह नीचे उनकी छाया बडी होकर अधरेकी बूदो सी धरतीपर डोलती ह और स्त्रिया जो अतप्तकाम है, जो भूखी ह रग बिरगे हल्के नफीस कपडे पहने एसी घूमती फिरती ह जस कि अपनेमें निश्चित हो दुष्प्राप्य, अत्यन्त दुलभ वे दो दोकी जोडीम साथ साथ भ्रमित, आकुल, विभ्रात, बाहभरा, यहा वहां डोल रही ह

मेज सब भर चुकी ह तश्तरियो और कांट छुरियोकी आवाज

उनके ऊपर लहराती हुई बढ रही है सब एक जसे, एक पोशाक पहने, चिकने चुपड, सवारे हुए लगूरसे लगते ह एक गायन पार्टीके डाइरेक्टर अपने साथ आगे पीछे झुककर आन बान दिखा रहे ह और पब्लिकको तरफ ऐसे देखते ह जसे नर वेश्या हो यह बिजलियोकी भरमार, एक तरफ फूलोकी सुगन्धकी अतिशयता, यह बजते हुए बाजे, यह गूजती हुई आवाजें यह भीड़, यह आन बान, यह व्यस्तता—यह सब कुछ, किन्तु, एक व्यथ, निरानन्द निष्प्रयोजन, अवसादमय, तथापि क्षुद्रप्राणताके ऊपर उत्कट, चीत्कारमय एक असन्तुष्ट जीवनका थोथा चित्र था

खुले हाल के चारो तरफ खुली गलरिया पास ही उनसे लगी हुई छोटी बाल्कनी पास कई कमरे इन्हीं में से एक कमरे में चार व्यक्ति बैठे हुये ह दो पुरुष, दो महिलायें एक ह रोबिन्सकाया इनकी कला की तमाम रूस में प्रख्याति है अच्छी, बडी, सुन्दर बडी-बडी हरी-सी इजिप्शियन आँखें, फूल सा लाल, कुछ फैला, विलास प्रिय मुख जिसके ओठ किनारो पर दृढता से बन्द ह दूसरी बरोनस टोप्सन, एक छोटी, कोमल, पीत काया रमणी यह सदा रोबिन्सकाया के साथ रहती ह, तीसरे ह प्रसिद्ध एडवोकेट रेजोनोव चौथे चेप्लिन्स्की यह महाशय अतिशय धनसपन्न ह, युवक ह इधर उधर का बहुत कुछ इन्होंने किया है कविताए लिखी ह और विभिन्न विषयो पर और बहुत कुछ लिखा है

देखो देखो" वह बोली, "कैसा विचित्र हुलिया है ? या कहो कि क्या विचित्र पेशा यह वहाँ जो सात रीड का बाजा बज रहा है"

हर कोई उसके हाथ के सकेत की ओर देखने लगा वहाँ, सच ही अजब दृश्य था आर्केस्ट्रा के पीछे एक पर्याप्त काय मूछ मण्डित पुरुष बैठे थे एक भरे-पूरे कुनबे के वह पिता ही चाहे होगे अजब नहीं दादा भी हो वही वहा अपने इस सात पाइपके बने बाजेमे पूरे जोरसे फूक मारकर आवाज निकाल रहे थे जान पडता था कि ओठोके बोचमे लेकर उस तमाम बाजेको हिलाना उन्हें कठिन होता है, सो अद्भुत कौशलसे यह अपना सिर ही बाजेपर कभी दाए और कभी बाएं

घुमा रहे ह

"क्या खूब कतब है' रोबिन्सकायाने कहा, "अच्छा चपलिस्की, तुम भी जरा वसे सिर हिलाओ तो"

अब चपलिस्की भीतर ही भीतर बुरी तरह इस आर्टिस्ट रमणीके प्रममें फसा था उसने तुरन्त आज्ञानुसार तत्पर होकर वसे करना शुरू किया लेकिन आधी मिनटम रुक गया

बोला, 'यह मुझसे नही बनता या तो लम्बी ट्रेनिंग या पत्रिक योग्यता इसके लिए जरूरी मालूम होती है"

इस बीच वेरानेमके हाथ एक गुलाबके फूलकी एक एक पखुडी नोचकर मदिरा पात्रम फक रहे थे अब एक जम्हाई रोककर जरा खट्टा मुह बनाकर वह बोली 'यहाके लोग भी क्या मनहूस तौरपर अपना वक्त काटते ह और कुछ क्या इह सूझता नही ? देखो न, न हसी, न गाना न नाच जसे किसीने सबको खदडकर यहा बाडमें जमा कर दिया है कि लो, चलो, खुश हो लो !"

रेजनावने थकित भावसे अपना गिलास उठाया, जरा आठास लगाया और अपने उसी मीठे और विमनस्क स्वरमें कहा "आपके पेरिसम नाइस म क्या लोग अपनी खुशिया ज्यादा खुलनुमा तौर पर मनाते ह क्या ? सच कहे तो आनन्द, उल्लास, यौवन, मनुष्यके जीवनमेंसे एक दम उठ ही गए ह शायद ही सम्भव है कि वे फिर लौटे मुझे लगता है आदमीको जरा धीरज सहनशीलतासे काम लेना होगा कौन जानता है कि य जो सब नीचे बठे ह—आजकी य सध्या उन बचारोके लिए सच ही छुट्टीकी, छुटकारेकी, जरा आरामकी ही घडी नही है ?'

चेपिलन्सकी सयत शान्त रहकर बोला, "स्पीच है, साहब, स्पीच पक्षसमथनमें क्या बढिया स्पीच है

लेकिन रोबिन्सकाया मुडी उसकी लम्बी बडी डोरीली आखें कुछ सकुचित हुई पलक पास पास आई उसके साथ यह आवेगका लक्षण था और उसका आवेश वह वस्तु थी कि जिससे राजसी वशके लोग भी जो न मनकरनी कर डालें थोडा पर जसे तुरन्त उसने अपनेको थाम

लिया और कुछ थकानके भावसे बोली, "म नही जानती कि आप किसकी बात कर रहे हें म यह समभती हू कि हम यहा क्यो आए ह क्योकि दुनियामें अब देखनेको मुझ *क्या रह गया है* देखिए—मने सेविले, मड्रिडमें साँडकी लडाई देखी देखकर क्या घृणाके अतिरिक्त कुछ और भाव हो सकता है ? वह दृश्य ही ऐसे क्रूर ह घूमे बाजी देखी है, दगल देखेह सबम वही बबरता है, वही पशुता फिर एक बार एकत्र शिकार मे भी जानेका मौका हुआ एक बड सफेद सधे हाथीकी पीठपर झालर दार होदेमें मैं बठी आप खुद ही जानते हो, एसे वक्त क्या होत है अपने इस लम्दे व्यतिव्यस्त उलझ सुलझे जीवनमें, जिससे पार होकर आजम वद्धा हुई हू "

'ओह, वृद्धा ! एलीन विक्टोरिया तुम कह क्या रही हो ?" चम्प्लि सकीने हार्दिक आपत्तिपूवक किन्तु हल्केसे कहा

"छोडो, चेम्प्लि सकी, *मुसाहिबी छोडो म खुद जानती हू कि म देहसे* शायद अभी जवान, अभी सुदर बनी हू लेकिन सच, वक्त होते हें कि जान पडता है कि म नब्बे वष की हू एसी जीए मेरी आत्मा हो गई है लेकिन म कहे चलू म कहती हू कि जीवनमे तीन घटनाए, तीन दश्य घटे ह जो गहरे जाकर मेरी आत्मामें अकित हो गए ह पहला, जब म लडकी थी मने देखा एक बिल्ली दबे पाव कबूतरकी तरफ बढ रही है भयसे, कटकित उत्सुकतासे बिल्लीकी एक एक हरकत और पक्षीकी भी वह बधी और अचल दृष्टि म एकटक देखती रही अबतक नही जानती, मेरा किसके साथ अधिक जी था, किसके साथ अधिक सहानुभूति बिलावके चातुय और कौशलके प्रति अधिक आकृष्ट थी, या पक्षीकी मत्र बद्धता और चपलताके प्रति जीत पक्षीके हाथ रही बिल्ली झपट मारे कि पक्षी उडकर दरख्तपर जा बठा और वहासे अपनी भाषा म जाने क्या-क्या गालिया नीचे बिल्लीपर फेंकने लगा म जानती हू उसकी भाषाका एक शब्द म समझ पाऊ तो लाजसे लाल हो जाऊ ऐसी गालिया वे रही होगी और बिल्ली ! मानो उसके साथ भारी विडम्बना बीत गई हो ! उसके साथ छल हुआ हो, धोखा हुआ हो फिर अपनी

पूछ सतरकर खड़ी वह ऐसे देखने लगी जस 'मह, कोई कुछ बात हुई हो नही ' दूसरी बात—एक ओपेराम एक प्रतिभाशाली प्रसिद्ध सगीतकारके साथ मुझ गानेका मौका मिला '

'कौन ? किसके ?' बरोनसने पूछा

'खैर, अब किसीके साथ सही और अब क्या सब कुछ एक-जसी ही बात नही है नामसे क्या बनता है तो हा जस म कुल-की-कुल उसकी प्रतिभाके, उसके प्राणाके बसम होकर बेबस बस हिलारें ले रही हू, भूमि जा रही हू जसे उस क्षण म लीन हो गई लुट गई, ऐसी विस्मृति उस पल मुझपर छा गई थी हमारी ध्वनिया किस अद्भुत रूपमें पार्थक्य खोकर एक दूसरेम रम गई खो गई थी ओह! उस क्षणका वणन अस-म्भव है शायद जीवन म एक और कुल एकबार वह क्षण आता है अपने पाट के अनुसार मुझ उस स्थलपर रोना होता था, और म तब अपने जीवन के सबसे सच्चे, खरे, खारे आसू रोई और जब पट-क्षपके बाद वह मुझ तक चलकर आया, अपने बडे हाथोकी हथेलियोसे मेरे सिरके बालोको उसने थपका और उस विमोहक विमुग्ध, मुस्कराहटके साथ देखकर उसने कहा, 'म तुम्हारा कृतज्ञ हू, ऋणी हू जीवनम पहली बार म ऐसा गा सका हू,' तब म—हा तुम्हारे सामनेकी गवस्फीता, दर्पोद्धता प्रगल्भा म पानी पानी हो वही बह सी पडी मन उसके हाथोका चुम्बन लिया, आसू मेरी आखोमें खड थ "

'और तीसरा मौका—?" बरानेसन पूछा, और उसकी आखें ईर्ष्या-जन्य चमक से चमक उठी

'ओह, तीसरा !" उदासीके साथ उसन उत्तर दिया "तीसरा तो एसा साधारण है कि क्या कहू पिछली गर्मियोमें म नाइस म थी वहा मने सेसील किटिनको देखा देखा, और पाया भी कुछ दिन हम साथ रहे किटिन'—उसकी आवाज धीमी और आद्र होगई और उसन आहिस्ता से शून्यमें त्रासका चिह्न किया "जो अब नहीं है म, सच, नहीं जानती कि यह भला है या क्या, कि वह अब दुनियामें नहीं है लेकिन, कोई क्यों मरता है ?"

अकस्मात् एक क्षणमें, उसकी बड़ी बड़ी आखें आसुओंसे भर आईं वे तरल आखें जाने कैसी एक जादूकी ज्योतिसे जगमग कर उठी जैसे ग्रीष्म की सध्याका वह एकाकी साध्य तारा उसने अपना चेहरा स्टेजकी ओर घुमाया और कुछ कालतक उसकी लम्बी उगलिया कुर्सीके हत्थे पर कसी रहीं फिर जब अपने मित्रोकी ओर वह मुड़ी उसकी आखें सूखी थी और मद भरे मीठे हठीले ओठ निस्सकोच मुस्कराहटसे खिल रहे थे

तब रेजनावने कोमल पर साथक और सयत वाणीमें धीमेसे पूछा, "लेकिन एलीन विक्टोरिया, तुम्हारी यह अतुल ख्याति, तुम्हारे प्रशसको की अपरिमित सख्या, लोगोका तुम्हारे लिए हर्ष निनाद और अतमें उस आल्हादका बोध जो तुम्हारे दर्शक तुमसे पाते है, क्या सम्भव है कि इस-से भी तुम्हारी धमनियामें जस रसका, जीवनका सचार नही होता ?"

'नही रेजेनाव" थकित वाणीमें उसने उत्तर दिया, "मुझमें कम तुम नही जानते कि इस सबकी क्या कीमत है भेट करनेवाला वह चलता पत्रकार जो अपने मित्रोके लिए तमाशेका पास चाहता है और लगे हाथ इटरव्यूके लिए बीस पचीस रुपया भी, हाईस्कूलके लडके और लडकिया, युवक व युवतिया जो मेरे आटोग्राफड फोटोग्राफ पानेके कृपाप्रार्थी रहते है, वे बुडढे जो बडे पेट और बडी प्रतिष्ठाके लोग है और जो हर जगह मेरे साथ दीखनेके इच्छुक रहते है, प्रतिष्ठा सूचक वह अगुलि निर्देश जो जहा जाती हू वही तीरके नोककी तरह मेरे पीठ पीछे कहता चलता है "वह रही ! वही तो है, वह मशहूर ," अनगिनत गुमनाम पत्र, लोगोकी विनय अनुनय अभ्यर्थना ओह कहातक कोई गिनाए लेकिन क्यों ? तुम भी तो दर्बारकी इन और उन भद्र रमणियोसे घिरे रहते हो"

रेजेनॉवने कहा 'हा, तो—'

'बस, वही बात मेरी समझो हा, इतना और है और यही मेरी स्थितिकी विडम्बना है कि जब जब मुझे मौलिक स्फूर्ति होती है कोई सच्ची अनुभूति, तभी तब मैं अभागिन पाती हू कि मैं दर्शकोके सामने कुछ गाती खडी हू जो झूठ है, कुछ कर रही हू जो कोरा अभिनय है और

अपने प्रतिद्वन्दीके बाजी ले जानेका भय भी मुझ हरदम सताता रहता है तिसपर यह शका कि कही आवाज उखड न जाये, बिगड न जाय, कहीं सर्दी गर्मी न लग जाए और फिर यहकि गलेकी बराबर ऐतिहात रखो, परवाह करते रहा और उसे पट्टिया और दवाआम सेते रहो इन चिन्ताओको नाकके नीचे रखना ओह ! सच, प्रसिद्धि बहुद भारी चीज है, बहुत फिजूल और बाझल '

'लेकिन वह कलाकारकी प्रख्याति" वकीलने कहा, "वह प्रतिभाकी ज्योति, वही ता वह असदिग्ध नैतिक शक्ति है जिसके सामने राजा की शक्ति हेच है "

"हा हा, प्रिय ठीक है सब ठीक है लेकिन शोहरत, नामवरी, जब तक इन्हे दूर से देखा, इनके सपने लो, तभी तक अच्छी रहती है पर इन्हे एक बार पाकर पकडो ता काट ही काट हाथ लगते ह तब भी जब उस ख्याति म से रत्ती भर की भी कमी होती है ता हम कसी मनोवेदना होती है और म एक बात तो कहना भूल ही गई हम कलाकारो को कठिन महनत की सजा जा भुगतनी होती है सबेरे अभ्यास और तयारी, दिन में रिहर्सल, और खाने से वक्त मिना कि चला स्टेज के लिए भाग कर पहुँचो पढने पढाने या किसी और काम को मन चाहे, और घण्टे दो एक निकालने की सोचो तो कौशल् स ही छीन कर पा सको बस तो हमारी मौज के शगल भी इस तरह निरे बेमौज और नीरस ह । उसने श्रमित और उपेक्षित भाव स उसी कुर्सी के हत्थे पर पडी उगलिया को हिलाया

इस बातचीत म उत्तेजित होकर चर्पालिस्की ने सहसा पूछा, 'अच्छा तो मुझ बताओ गलीन विक्टोरिया, अपनी कल्पना का रिझाने और अपनी उपमा का ताडने के लिए तुम क्या मानती हो क्या चाहती हो?"

उसने अपनी कटीली आखो स तनिक चर्पालिस्की को देखा और उसे तनिक अरुणिमा के साथ उसने कहा— 'पहले लोग रहते थे आनन्द से वह जानते थ, जीवन क्या ह किसी तरह के विधि निषेध उनमें आप न थे तब वहाँ और उस काल में, जान पडता ह, मेरा स्थान

या वहा म ठीक रहती तब शायद म अपने उपयुक्त अधिक पूर्ण, अधिक प्रस्फुटित जीवन जीती ओह ! प्राचीन रोम की वह स्वतन्त्रता, वह निबधता !"

रेजेनाव को छोड किसी ने उस न समझा रेजेनाव ने बिना उसकी ओर देखे अपने लहजे म, जसे एक्टर की भाति धीमे से कहा 'सीजर ओ सीजर, तेरी स्वर्गीय आत्मा को मेरा शतशत प्रणाम

'ओ रजनॉव, तुम तुम हो' रोविन्सकायाने कहा 'म तुम्हे कसा प्रम करती हू तुम खूब हो! विचार उडता है कि तुम सदा उस पक्ड सकते हो, और पख समेटकर उसे धरती पर ले लेते हो यद्यपि म कहूगी यह सामर्थ्य मस्तिष्ककी कोई महिम्नताकी द्योतक नही है और सच दो प्राणी साथ मिलते ह कल वे मित्र थे, साथ हस बोल रहे थ, खा पी रहे थ कि पीछे से चला आता है एक 'आज, जो उनम से एकको हर ले जाता है, दूसरेको छोड जाता है! समझते हो न? एक, दूसरेके जीवन मेंसे एक बारगी ही बिल्कुल लोप हो जाता है और तब उनके बीचम न भय रहता है न मैल, न कोई गाठ, न कोई नाता यह अत्यन्त, वास्तव उदार, ज्योतिष्क दृश्य है, जिसको म बस अपने सामने कल्पना से खींचकर देख सकती हू '

"तुममें कितनी हृदयहीनता है, राविन्स्काया ?' बरोनसने विचार पूर्वक कहा

'तो म अब इसका क्या उपाय कर सकती हू हमारे पूवज ही जगली थ, आजाद और बहादुर लूट और छीनपर उनका काम चलता था लेकिन, क्या हम चल ?"

सब बागके बाहर गए चर्लिप्सकीने हुक्म दिया कि उसकी मोटर आए एलीन विक्टोरिया उसकी बाहोंपर झुकी थी सहसा उसने पूछा 'चर्पलिस्की, मुझे बताओ जिन्ह सभ्रात कहे वसी औरतोंसे जब छूटते हो तब अवसर तुम कहाँ जाया करते हो ?"

चर्पलिस्की रुका और झुका पर वह जानता था कि रोबिंसकाया से झूठ कहे, इतना उसका बस नही है

म—ऐं वहने डर होता है, तुम्हारे कान व्यय मैले हो और वहा जाऊगा, यही तमाशे मजलिसमें "

'क्या, उससे आगे और कोई नही ?"

"अब तुम मुझे लज्जित कर रही हो सच कहता हू, जबसे तुम्हार प्रमम पडा हू "

"अच्छा, अच्छा, औपन्यासिकता जान दो'

'ओह म कसे कहू" चपलिसकी मरमराया उसने अनुभव किया कि उसका चेहरा नही, उसकी सारी देह लाजसे लाल पडी जा रही है कहा 'यही अभी बाजारम चला जाता हू लेकिन मे, म खुद—'

रोविसकायान चपलिसकी की कोहनी जस विरक्त आसक्तिसे अपनी ओर खीची, पूछा, "चकलेमें ?"

चपलिस्कीने कुछ उत्तर न दिया

तब उसने कहा, 'तो आप हम फौरन अपनी इस कारम वही ले चलिए चलें, यह दुनिया भी देख, जो मेरे लिए बि कुल अनजानी बिदनी है पर याद रखिए, मेरी रक्षाका भार आपपर है"

आप दोनो अनमन मनस आखिर इनसे सहमत हुए एलीन विक्टोरिया का विरोध करना उनके लिए सम्भव न था वह हमेशा वही करती थी जो चाहती थी और उन्होने यह भी सुन रखा था कि पाटसवगम सोसायटीकी मन चली सभ्रात महिलाए, यहा तक कि लडकियाँ, स्व तत्र प्रमकी झाकमें इससे कही उच्छ खल, भीषण, मजेदार खल खेल जाती ह

७

यामकासके रास्तेमें रोविसकायाने चपलिस्कीसे कहा देखो, सबसे पहले तो हमें सबसे बढिया जगह ले चलो फिर मध्यम, फिर सबसे नीचे दर्जेवाली जगह"

साग्रह उद्यततासे चैपलिस्की बोला, 'मेरी प्रिय आदरणीया एलिन

विक्टोरिया, तुम्हारे लिए म सब कुछ करनेको तयार हू यह कोई डीग की बात नही कि म तुम्हारे हुक्मपर प्राण निछावर कर सकता हू तुम्हारे जरा इशारे पर अपनी सारा मान, प्रतिष्ठा और धन बहा दे सकता हू लेकिन ऐसी जगह तुम्ह ले जानेका मुझे साहस नही होता रशियन बद तमीज होते हैं, उनकी आदतें गन्दी कभी तो निरी पशु ही हो जाते ह मुझे भय है कही एसी वसी बात कोई तुम्हारी इज्जतम न बक दे, या तुम्हारे सामने ही कोई कुछ बेहूदगी न कर बठ '

'ओ मेरे राम," तुनककर बीचमे ही रोबिसकायाने कहा, जब म लन्दनम गाया करती थी तब बहुत थ जो मेरी कृपा याचना करते थ और म तब इन बडे से बडे लोगोके साथ इन गन्दी से गन्दी जगहाको देखने जानेस नही डरती थी सब वहा लिहाजसे ही मेरे साथ पश आते थे उस वक्त मेरे साथ दो इगलिश रईसजादे रहते थ, दोनो लाड थ खलके शौकीन और दोनो देह और मनसे समथ और पुष्ट और वे कभी गवारा नही कर सकते थे कि किसी महिलाकी उनक समक्ष तनिक भी अवना हो सके ! पर शायद चर्पानिस्की, तुम कायर जातिके हो"

चर्पालिस्की चमक उठा 'नही, नही, विक्टोरिया वह तो मैंने तुम्हें पहलसे आगाह किया है क्याकि म तुम्ह प्रेम करता हू पर यदि तुम्हारी आज्ञा ही है तो जहा चाहो म चलनेका हाजिर हू इस सन्दिग्ध काम पर ही क्या, कहो तो मौतमें तुम्हारे साथ चला चलू"

अबतक गाडी ट्रुपिलस्क आ गई थी यामस्काया भरमें यह चकला सबस बढकर था एडवोकेट रेजेनावने अपनी उसी व्यग भरी मुस्कराहटस कहा, "तो शुरू हो चिडियाघरोका निरीक्षण'

व एक कमरेमें ले जाए गए दीवारोपर गुलाबी कागज चिपका था और उसपर सुनहरी चित्रकारी हो रही थी रोविसकायाने तुरन्त कलाकार सुलभ प्रतीक्ष्ण स्मृति द्वारा पहचान लिया कि ठीक यही कागज उस कमरेमें भी लगा था जिसम अभी कुछ देर पहले वे बठ थे

बाल्टिक प्रान्ताकी चार जमन स्त्रियां आइ सभी पुष्ट देह पीन वक्ष थी पाउडर लगा था भारी भरकम थी और जसे अपनेको आदर

णीय मानती थी वातका सिलमिला आरम्भमें तो कुछ न जमा लड किया अचल, स्थिर पत्थरम खुदी मूर्तिकी याई बठी रही, जसे कि वे अपने मनम जानती ह कि वे प्रतिष्ठित सभ्रात कुल महिलाए ह रेजनाव ने शराब मगाई, पर उससे भी स्थितिम सुधार न हुआ आखिर रोविस कायान मदद की उनमेंसे पुष्टतम, सुन्दरतम, की ओर मुडकर जो डबल रोटीकी तरह फूली बठी थी उसने अभ्यथनापूवक जमानमें पूछा, मुझ बताओ तुम कहाकी हो ? कहाका जन्म है ? जमनीकी हो ? '

' नही महोदया म, म रीगामे हू "

' तो किस लाचारीसे तुम यहाँ पहुचो ? गरीबी के कारण तो नही?"

"जी नही गरीबीसे क्यो होती देखिए मेरा खाविन्द एक रेस्टो रेन्टम काम करता है खाविन्द ? हा पर हमारे पास इतना पसा कहा है कि हम विवाह कर म जो बचता है बकम जमा करती जाती हू वह भी ऐसा ही करता है जब हमारे पास दस हजार हो जाएग और हमें चाहिए भी कितना ?--तब हम अपनी निजकी दारूकी दूकान खोल लेंगे और तब परमात्माने चाहा तो बच्चोंकी बात भी हो जाएगी म तो चाहती हू, एक लडका, एक लडकी "

राविसकायाको अचरज हुआ ' लेकिन सुनो तो तुम युवती हो, सुन्दरी हो, दो भाषाए '

तीन महोदया ' मगव टोककर उसने कहा, ' म लेटिन भी जानती हू मने प्राइमरी सब क्लास पास की ह हाई स्कूलकी भी तीन क्लासें पढी ह

' ओह ! तब, तब देखो-- रोविसकाया मानो भीतर से भरी आ रही थी ' देखो, इतनी शिक्षामे तो तुम्ह कोई एसी जगह मिल सकती है जहा सब खचके अलावा तुम्ह ऊपरम तीस रुपए और मिल जायँ यही कही हाउस कीपर ही हो सकती हो कही स्टोरमें सीनियर क्लक या कैशियर या और अगर तुम्हारा भावी पति फिटज ? "

' जी, हज

' हां, अगर हज भी उद्योगी और चतुर साबित हो तो तीनचार साल-

के अन्दर तुम्हारे लिए कुछ मुश्किल न होगी कि तुम सिर उठाकर अपने परोंपर खडी हो जाओ क्या कहतीहो ?"

आह श्रीमतीजी आप जरा भूलती है आप इस बातको ओझल कर जाती है कि अच्छीसे अच्छी जगह जाकर भी अपनेपर कुछ न खरचू और सब कुछ बचाऊ तो भी पन्द्रह बीस रुपएसे ज्यादह म नही बचा सकती और यहा जरा होश्यारीसे म सौ रुपए मजमें बचा लेती हू और सीधे जाकर सेविग्स बैकमें जमा कर लेती हू और श्रीमती जरा सोचिए कि किसी घरमें जाकर नौकरी करना कसी तोहमतकी बात है हमेशा मालिकोकी तबियत और मर्जीपर नाचते रहो और मालिक तुम्हें ऐसे समझें जसे परकी जूती और छेडछाडमे भी वह बाज न आए फि, और मालकिन इसपर तुमसे बबात जला करे और सदा तुम पर दुतकार ही पडती रहा करे"

'नही म नहा समझती ' राविन्सकायाने मनोनिवेश पूर्वक कहा वह उस जमानकी आखोकी ओर आखे उठाकर नही देख पारही थी, और नीचे फर्शपर उसकी निगाह जमी थी मैंने तुम्हारे यहाके तुम्हारे इन घरोम बीतनेवाले तुम्हारे जीवनके बारेमें बहुत सुना है कहते सुना है यह जीवन भीषण है बीभत्स कहते सुना है, तुमको बुरेसे बुरे बुड्ढे, बदसूरत मनहूस आदमियोकी खातिरमें मजबूरन पेश होना पडता है यह कि तुमको तोडा जाता है, चूसा जाता है, लूटा जाता है, निर्दय, नृशंस

जी नही श्रीमती हममेंसे हरएकके पास अपनी अपनी पास बुक है जिसमे हमारा ठीक ठीक आमद खर्च लिखा रहता है पिछले महीने मने पाँचसौ रुपएसे भी कुछ ऊपर कमाए दोतिहाई तो [illegible], [illegible], रोशनी, कपडे ईंधन वगरहके हिसाबमें मालकिनको चले गए, और फिर भी म कोई डेढसौ बचे ठीक है न ? पचास मने दूसरोंमें और [illegible] बातोंमें खर्च कर दिए सौ अलगके अलग मेरे पास बचे [illegible] [illegible] से हू लुटनेकी चुसनेकी क्या बात है ? [illegible] पसन्द करती, और सच, आज काज [illegible] हो रहे हैं।"

सकती हू म बीमार हू और मेरे बजाय कोई दूसरी नई लडकी भजदी जायगी '

'लेकिन माफ करना मैं तुम्हारा नाम ?"

एलसा '

"एलसा, कहते ह, तुम से बडा सख्त, बेहूदा वर्ताव किया जाता है मारा तक जाता है वह करने को लाचार किया जाता है जिससे कि तुम्हारा जी घबराए, घिन हो" '

एलसा ने तनक कर कहा 'कभी नही श्रीमती, हम सब यहाँ एमे रहते ह जसे एक ही कुनबे की हा, हम सब एक ही तरह की रहने वाली ह आपस में रिश्ते भी निकल सकते ह परमात्मा करे बहुत स कुनबे एसे रह जस हम रहते ह सच यहाँ याम्सकायामें बहूदगिया भी होती ह, दग, बलडे, गलतफहमिया लेकिन यह सब कुछ वहाँ वहाँ उन रुपए वाली जगहो म होते ह वे रुसी औरतें, गवार भोली, खूब शराब पीती ह और अपना एक एक प्रमी बना बठती हैं उन्हे अपने भविष्य का ख्याल ही नही होता

रोविन्सकाया के मन को वेदना ने दबा लिया धीमेसे बोली, "तुम चतुर हा, एलसा यह सब ठीक है, लेकिन बीमारी लग जाय तो ? कोई छूत ? क्या, वह तो मौत है । और तुम पता कसे रख सकती हो ।''

'नही श्रीमती म आदमी को तब तक अपने पलग पर नही लेती जब तक उसकी पूरी तरह पडताल न करलू पचहत्तर फी-सदी के बारे म मुझ यकीन है कि म गलती नही करती',

'बेहया, चुडल" एक दम गम होकर और मेज पर मुक्का मार कर रोविन्सकाया चिल्लाइ, बोली ' लकिन तब तुम्हारा एलबट '

जमन ने विनीत सशोधन किया, जी, हज

"हा हज तो हज को म समझती हू शायद बहुत खुशी तो न होती होगी कि तुम इस जगह रहती हो और उसके प्रति अपने पतित्व को आए रोज इस तरह भाभा करती हो ।''

एलसा सच्चे और अबोध विस्मय से उसकी ओर देख उठी "आप

वह क्या रही ह श्रीमती अब तक मने उसके साथ कभी कोई दगा नही किया कोई छल नही किया यह तो फाहशा होती है, जो एसा करता है खासकर रशियन, जो अपने लिए प्रेमी बना लिया करती ह और उनपर फिर अपना गाढा पैसा बर्बाद करती ह मेरा राम जानता है जो म कभी एसा करती ह छि छि '

रावि-सनायाका जी खट्टी घिनसे भर गया जोरसे बोली "ऐसी नशसता ? इससे गहरे पतनकी मै कभी कल्पना भी नही कर सकती थी (चपलिस्की स) इन्ह कुछ दो दिलाओ और चलो, यहा से बाहर चलो "

जब वे सड़कपर बाहर पहुँचे, चैपलिस्कीने उसकी बाँह हाथोमें लेकर प्राथनाके स्वरम कहा, 'परमात्माके लिए क्या यह एक जगह हमारे लिए बस नही है ? यह एक तजुर्बा तुम्हारे लिए काफी घूट नही है ?"

"ओह ! कसा कडवा ! कैसा घिनौना, विपला !"

"इसी स म कहता हू इसको छोड और हम सब लौट"

"नही, अब तो इस बैतणीके पार तक हमें जाना होगा मुझ अब कोई नीचे दर्जेकी सीधी सादी जगह दिखाओ"

चैपलिस्की जा विक्टोरियाके ऊपर न्योछावर था, और इसलिए जो अब उससे बेहद निजला रहा था सिवा इसके क्या कर सकता था कि दस कदम आगे अन्नामरकानीके चक्लेमें उसे ले जाए लेकिन यहा कुछ अप्रत्याशित कुछ तीखा घट पडनेके लिए मानो उनकी प्रतीक्षामें ही था पहुचे, तो पहले साइमनने उन्हें अन्दर जानेसे रोका रेजेनॉवने कुछ सोनेकी मुहरें उस थमाइ तब वह पिघला ट्रेपिल जैसे ही एक कमरेमें यहाँ भी वे पहुँचाए गए कमरा उसी साज-बाजका था बस, माल जरा वहासे उतरा हुआ घटिया था

एमा उडवानीकी आज्ञापर लडकियाँ सब उस कमरेम इकट्ठी हो गइ लेकिन यह वसे ही हुआ जसे किसी खिले बागमें चिड़ा जानवर छोड दिया जाए, या सोडेमें ऐसिड मिला दिया जाए मानी यह कि

जेनी को भी यहां आने दिया गया यही बड़ी भूल हुई छिड़ी कुड़, उसकी आंखाम आगकी लपट उठ रही थी विनीत शान्त तिमिरा भी सलज्ज, आमन्त्रण बसरती हुई स्खलित मुस्कराहटके साथ सबक पीछ पीछ आई अन्त में लगभग सब प्राणी उस कमरमें जमा हो गए यहाँ रोविन्सकायान नही पूछा कि तुम इस जिन्दगीमें कसे आ पड़ी ? और यह भी कहना होगा कि इन लडकियोने विशद आदर और अभ्यथनाके साथ प्रतिपिया का स्वागत किया विक्टोरियाने उनम कुछ अपना गाना सुनानेके लिए कहा और खुशी खुशी उन्होने गाया—

सामवार अब फिर आ गया है
उन्हें चाहिए कि व मुझ बाहर ल जाए
पर डाक्टर है कि बाहर नही जाने देता,
उसकी एसी तसी
और भी
म बचारी, म बचारी, म बचारी,
दारूखाना बन्द है,
और मरा सिर मुझ दद द रहा है,
उचक्के की मुहब्बत
मसाला है, मसाला,
लेकिन रण्डी
एसी ठण्डी हू जसी बरफ
ही हीं, ही
वे साथ-साथ आये,
कसी जोड़ी है ! कि वाह !
एक है रण्डी, वह गठ कतरा,
हीं, हीं ही !
सबेरा अब आ रहा है,
वह चोरी की तदबीर में है,
इधर वह अपने पलग म पड़ी है,

हस रही है जस क्या न हो,
ही, ही, ही !
सवेरा आ गया,
वह चल पडा अपने काम पर,
लेकिन उसकी माशूका की
उसके साथी अब घात में है,
ही, ही ही ?

और उसके बाद एक कदियो का गीत —

म बिगडा जवान हू
बिगडा हू कि अब नही सुधरू गा
साल के बाद साल आते है
और दिन अपने चले जाते है
मेरी मेरी रोओ मत प्यारी,
तुम मेरी हो, मुझ मिलोगी,
लाम का काम निबटा
कि म तुमसे ब्याह करुगा

अकस्मात सबको देखकर विस्मय हुआ कि स्थूलकाया किटी, जो सदा बन्द, गुम, अनमनी रहती थी अब एकदम ठहाका मारकर हस पडी वह उदासाकी रहनेवाली थी बोली—

'म भी एक गाना गाती हू हमारी तरफ आवारा छोकरे और ताडी-खानाकी रानिया यह गाया करती है" और अपने भद्दे फटे वेढगे आलाप-में उसने गाना शुरु किया साथ शरीरकी अजब बेहूदा हरकतें भी करती जाती थी

आह म डिफोवकफा जाऊगा
मेज पर बठूगा,
एक हाथसे हैट उतारकर
फेंक दूगा—
तब अपनी प्यारी रानीसे पूछूगा

'प्यारी क्या लोगी ?'
और जवाबम वह कहेगी
मेरा सर दर्दस फटा जाता है
अरी म नही पूछना
तेरा दद क्या है ?
अरी म पूछता हू
तू पीना क्या चाहती है ?
बीअर वाइन या मगाऊ ?
या लाल शराब ? या कुछ भी नही ?"

सब ठीक चल रहा था कि एकदम छोटी मनका आधी बाहाकी कमीजम वहा आ धमकी हाफ रही थी और वदहवास थी एक दूकान दार कलकी सारी रातकी मौज बहारका पेशगी इन्तजाम कर गया था उसीके जोश बहलाव के काममें वह आ रही थी

लकिन अभागी बेनेडिक्टाइन शराब ज्योही मनकाके भीतर पहुचती है कि उसके सिर चढ बठती है तब यह मनका कुछ और मनका बन उठती है तब उसम लडाई का भूत जाग जाता है यह छोटी मनका यह छोटी भूरी मनका, तब वेढब मनका हो जाती है कमरेमें आते ही वह अचानक फश पर चित पड गई, और, पीठके बल पडी पडी खूब जोरस बतहाशा ठट्ठा मारकर हसने लगी बाकी और भी सब हसने लग हा ! पर— हसी देरतक न रही मनका एकदम फशपर उठ बठी और चिल्ला उठी 'ओहो यह तो कोई नई जनी हमारे यहा दाखिल हुई दीखती ह"

यह असगत एकदम आशातीत बात अब तो घट ही गई पर वरा नसने उसपर और भी भारी मूखता कर डाली वह—बोली 'नही, जा पतिता है तुष्ट हो गई है, वैसी बहनोके लिए एक सस्था खुली है म उसकी सरक्षिका हू इसी हैसियतसे कतव्य समझकर म तुम लोगोंके बारेम कुछ पूछताछ करने यहा आ गई हू"

पर इस स्थल पर जनी एकदम भभक-कर जल उठी 'निकल जा अभी यहासे, इसी दम बुढ़िया खूसट छिनाल कही की तुम्हारे आश्रम,

तुम्हारी सस्था ! म जानती हू उह जलसे बदतर चीज है वे तुम्हारे मत्री कुत्तेके मुहकी हड्डीकी तरह हम बरतते हैं तुम्हारे बाप, तुम्हारे खाविन्द, तुम्हारे भाई, हमारे पास आते हैं और हमसे तरह-तरहकी बीमारिया ले जाते हैं हा, जान बूझकर और वे फिर हमारी बीमारियां तुमम प्रविष्ट करते ह तुम्हारी आश्रमाकी सुपरिटेंडेंट संचालिकाएं ड्राइवरो और दलालो और पुलिसमनोंके साथ मौज मारती है, और हम जरा आपसम हसी, खुलकर बोली तो हमें काठरीम मूद दिया जाता है सुन लो एसे हैं तुम्हारे निवेतन और आश्रम इसलिए अगर तुम यहा ऐसे आई हो जैसे थियेटर देखने जाती हो तो तुम्हारे मुहपर म यह असली सच बात कहती हू, सुनलो और अपना मु ह धो आओ"

किन्तु तिमिराने शान्तिपूर्वक उसे रोका, 'ठहरो जेनी, मैं उन्हें सब कहे लेती हू क्या यह हो सकता है, बरोनस, कि तुम सचमुच सम्भ्रान्त कुलशीला समझी जानेवाली महिलाओंसे हमें नीचा समझती हो ! एक आदमी आता है, एक मुलाकातक दो रुपए या पूरी रातके पाच रुपए देता है और हम पाती है! म इसे दुनियामें किसीसे छुपानेकी जरूरतम नही हू लेकिन मुझे बताओ बैरोनस, कि तुम घर कुनबवाली एक भी ऐसी विवाहित स्त्रीका बता सकती हो जो भीतर ही भीतर अपनेको वासनाके खातिर किसी युवक के, और पैसाके एवज किसी अधेडके हाथो अपनेको नहीं सोप देती मैं खूब जानती हू कि तुममेंसे एक सौमें पचास तो अपने प्रेमी बनाकर उनके यहा जाती ह और बाकी पचास जिनकी उमर ज्यादा है अपने पास जवान लडकोको रख छोडती ह मैं यह भी जानती हू कि तुममें बहुत— आह काफी बहुत,—अपने बाप भाई, अपने बेटो तकसे मिलती हैं हा, इतना है कि इन चोरियो इन बेहयाइयोंको तुम भली भाति तरह-तरहके मखमली लफ्जो ढकनामें बन्द करके रखती हो यही हममें तुममें फर्क है हम पतित हों पर झूठ नही बोलती, बहाना नही करती तुम सब पतित होती हो और ऊपरसे झूठ भी बोलती हो अब खुद सोच देखो, फर्क है तो किसके हकमें फर्क है !"

"शाबाश, तिमिरा ! ठीक कहा ठीक इनकी ऐसीही खबर लेनी

चाहिए" फर्शपर बैठ ही बैठे मनका चिल्लाई, अस्तव्यस्त सुदर केश फहराते हुए, वह इस समय एक तेरह वर्षकी नवीना दीख पडती थी

'यही यही' जनीन भी प्रोत्साहन दिया उसकी आखकी लहक ज्वाला फेंक रही थी

तिमिरान कहा, 'क्यो है न, जनी ? म उससे भी आग जाती हू म कहती हू, हममेंसे हजारोमेसे मुश्किलसे एक गर्भपात करती होगी और तुममेंसे हरएक कई कई बार—क्या यह सच नही है ? और तुममेंसे जो यह करती ह निराशामें पडकर नही, दरिद्रकी दारुणतामें घिरकर ऐसा नही करती! नही वह अपना यौवन अपना रूप कायम रखना चाहती ह, तुम अपना यौवन अपना सौन्दर्य बिगाडने से इसलिए डरती हो, क्योकि वही तुम्हारी सम्पत्ति है वही तुम्हार जीवनका मूलधन है या तुम्हे सिर्फ पाशविक शारीरिक, मौजकी चाह रहती है मात्र सभोग तुम चाहती हो आग बखडा पालना नही चाहती और गर्भावस्था और मातत्व तुम्हारी इस अनगल लिप्साम बाधक होत ह'

रोबिन्सकाया हतश्री हो गई और बरानस की ओर मुखातिब कर अग्रजी में बाली 'सुनो बैरोनस, लडकी यह अपनी स्थिति के लिहाज पढी लिखी मालूम होती है'

साचती हू, मेरी भी निगाह म उसका चहरा पडा है मने उसे कही देखा है! लेकिन कहा ? सपन में ? या ख्याल ही ख्याल में ? या बिल्कुल छुटपन में ?'

तिमिराने लापरवाही के साथ धृष्ट बनकर बीचमें कहा, 'स्मृति पर जोर न डालिए बरोनस म आपकी मदद करती हू खारकोव में कोनियाकिनस होटल का कमरा, थियटर मनेजर और किसी कोरस गायन की याद कीजिए तब आप बरोनस न थी लेकिन माइए अग्रजी छोडिए तब आप और साथियो की तरह साधारण कोरस गल थी'

लेकिन कृपा कर बतलाओ तो, श्रीमती मागरेट यहा तुम कसे आ पहुची ?'

'ओह रोज लोग यही पूछा करते हैं बस म यहां आ पहुची,

और क्या ?" और एक मम भेदी व्यग के लहजे में उसने पूछा "म समझती हू, जितना आप हमारा समय ले रही ह उतन दाम आप हमे देंगी "

अचानक मनका चिल्लाई, 'नही, नही चाहिए दाम और तुम जाकर सब भाड म पडो' और एकदम अपनी जुर्राबो में से दो सोने की मुहर निकाल कर उसने मेज पर फक कर मारी 'यह लो तुम्हारे गाडी के किराये को देती हू अभी इसी वक्त सीधी चली जाओ नही तो मैं यहां के सारे शीश सारी बोतल तोड दूगी, जो समझा हो'

रोविनस्काया खडी हुई उसकी आंखो म सच्चे आंसू थे भारी वाणी से बोली, 'हां हम लोग चले जायेंगे, और श्रीमती मागरेट की दया से हमारा कल्याण ही होगा अपने समय की पूरी कीमत आप हम से लीजियगा चपलिस्की देखो ख्याल रखना फिर भी आप लोगो ने इतना मुझे गाकर सुनाया है, तो क्या मुझे आप इजाजत देंगी कि म भी आप को कुछ सुनाऊं !"

रोविन्सकाया पियानो पर गई तनिक उसे परखा, कुछ स्वर निकाले और एक दम यह सुन्दर गीत गाना शुरू किया

हम फिर अभिमान म अलग हो गए,
एक शब्द ईर्ष्या या निंदा का नही
न उच्छवास, न आह
अलग हो गए जसे सदा के लिए
पर जो बस कि म तुझ मिल पाऊ !
आह, कि जो म तुझ मिल जाऊ !
रोता नहीं हू, न शिकायत है,
भाग्य के आगे बस ही क्या?
मालूम नही कि क्या वह प्रम था
जिसम तुमने मुझे इतना दु ख दिया,
पर जो बस कि मैं तुझे मिल पाऊ !

आह कि जो तुझ मिल जाऊँ !

रोविसकाया जमी गुणी कलावतके वीणाविनिंदित कण्ठमे निकल कर इस कोमल करुण गीतने उन महिलाओंके भीतर वह जगा दिया जो उनके मर्ममें सोया था उनके प्रथम प्रेमकी स्मृतिने छिड़कर उन्हें विह्वल विमुग्धकर छोड़ा वे क्षण जिनमें पहली बार लुटकर उन्होंने सब कुछ पा लिया था वे क्षण जब पहली बार किसीके अंकमें टूटकर वह बह गई थी और धन्य हुई थीं वे क्षण जब वे सब कुछ गवाकर कृतार्थ भाव से पतित हो गई थी, वे ही क्षण अब उनमें मचलकर हरे हो गए बसतकी ऊषामें, प्रभातकी गुलाबीमें, जब घास ओससे भीगी थी और आकाश और वनस्पतिके छोर अरुणिमासे छू गए थे, उस समयकी विदा, वह आलिंगन जब वे दो एक थे और जो अंतिम था, और जब छातीके भीतर कोई धुक धुक करके कह रहा था, 'यह फिर न होगा, फिर न होगा, और सुबहका ठण्डा कोहरा जब सिरपर छाया था और बाल बिखरे थे ओह !

तिमिरा मौन थी मनका स्पन्द और सब जैसे थम गया था तभी जनी हठीली निरंकुश जनी, दौड़कर गायिकाके पास गई घुटनोंके बल बैठी और उसके चरण पकड़कर सुबक-सुबककर रोने लगी

रोविसकाया का जी भी छू गया उसने उसके सिरको अपनी बाहों मे लेकर कहा, 'जेनी, मेरी बहन, मै तुम्हारा मस्तक चूम सकती हू ?"

जनीने उत्तरमें कुछ धीमे उसके कानमें कहा

रोविसकाया बोली "एह यह भी क्या छोटी सी बात है जरा इलाज किया कि सब दूर हो जाएगा"

'नहीं, नहीं नहीं', मै ठीक नहीं हूंगी अरे क्यों तो मै और सबमें रोग प्रवेश करूंगी, कि वे सब सड़ते और गलते रहें"

"आह मेरी बहन," रोविसकायाने कहा, "तुम्हारी जगह मै होती, मै ऐसा न करती"

और तब जनी, गर्वस्फीता वह जेनी रोविसकायाके हाथोंको घुटनोंको सिसक सिसककर आवेगपूर्वक चूमने लगी, बोली "तब लोगोंने मेरे साथ यह

क्या कर डाला ? अरे, क्या ऐसा किया ? क्यों ? मुझे बताओ, क्या ?"

यह अतुल सामर्थ्य जीनियसकी है, हां, प्रतिभाकी हां यही सामर्थ्य है अपने निमल हृदयके वक्ष खोलकर जब उसकी पुकार बाहर आती है, तब उसके स्पर्शसे मनुष्यकी आत्मापर आद्रता छा जाती है, वह अपने आमन्त्रण द्वारा जैसे सबको अपने भीतर के स्नेहमें खींच लेना चाहती ह उसके पास निम्न तर्क नही, अहवादी बुद्धि नही, वह प्रतिभा है

आत्मसम्मानमें भरी जनी, रोविसकायाके दामनमे अपना चेहरा छिपाकर हुडक हुडककर रो रही थी छोटी मनका आद्र, विनीत, चेहरे का रूमालसे ढके कुर्सी पर बठी थी तिमिरा एक कोहनी घटनोंपर टिकाए झुके चेहरेको हथेलीम लेकर बडी निगाहसे नीचे देख रही थी दर्वाने सादमन भी जो सिर्फ इस ताकमें वहा खडा था कि कब उसकी जरूरत हो आय उसकी भी आख न जाने क्यों खुली ही रह गई थीं

रोविसकाया जनी के कानों म धीमे से कह रही थी, निराश मत होओ बहन कभी नही कभी होनहार एसे हो जाता है कि आदमी का वस नही चलता और आदमीके लिए सिवा सिर झुका लेने के और चारा नही रहता लेकिन देखो आज, आज ह और कल होते होते जीवनिया बदल गइ ह मेरी प्यारी, मेरी बहन, आज दुनिया म मेरा नाम ही नाम है लेकिन तुम अगर जानो कि कैसी गन्द, कमे मन, कम ग्लानिक सागरों म से मुझे पार होना पडा है ओह ! सो, मेरी बहन, ढाढस बाधो, खडी हो जाओ अपने नक्षत्र में विश्वास रक्खो" वह जेनी की ओर झुकी, उसके माथ का चुम्बन लिया,

इस क्षणके बाद इस दृश्य को चैपनिस्की, जो अनिमेष बद्धदृष्टि और रुद्ध यातना के साथ सब देखता रहा था, कभी नही भूल सका नही, नही भूल मका उन आद्र, सुदर ज्योतिष्क किरणो को जो उस प्रतिभा शालिनीकी बडी हरो सी इजिप्शियन आखो से इस समय विकीर्ण हुई थीं

दल कुछ प्रशात भारी भावम विदा हुआ लेकिन रेजेनाव अनजान भाव से कुछ क्षण पीछे रह गया

वह जनी के पास गया आदर पूवक उसके हाथो को उठा कर चूमा कहा सभव हो ता हमारी यह मूखता भूल जाना यह अब दुहराई नही जायगी लेकिन, बहन जब तुम्हे जरुरत हो, मुझ याद करना, मुझ सदा उद्यत पाओगी यह मेरा काड है इस सिफ रख मत लो पर मान लो इस स ध्या स म तुम्हारा मित्र हू सेवा के लिए तुम्हारा हूँ फिर जनी का हाथ चूम कर सब के पीछ जीना उतर कर वह चला गया

१८

बृहस्पतिवार सबरेम धीमी वषा हो रही थी वृक्षाम हरी कोपल निकल आई थी झडी सवेरेसे अजस्र पड ही रही थी तभी सहसा कुछ अलस तद्रिल, भाव सा व्याप्त हा गया, मानो निस्पन्दता छा गई मब सुन अचत, आद्र, हो उठा

एस समय सदाकी भाति सब जनीके कमरेम आ इकट्ठी हुइ पर जनीके भीतर जान क्या हा रहा था वह इस टोलीकी हँसी मजाकमें सदा अग्रणी रहती थी पर आज न वह हँस रही थी न छड छाडम भाग लती थी न ही हमेशाकी तरह अपना वह पीली जिल्दका उपन्यास पढ रही थी वह पुस्तक अब ढाली भावमे चित्त पडी हुई जनीके पेट या छातीपर पडी थी पर इस अलस विक्षिप्त भावमें भी एक तजोमय दीप्तिकी छाया थी उसकी आखोमे घृणाभरी एक पीली आग सी जल रही थी छोटी मनकाने जो जनीपर लट्टू थी जनीका ध्यान अपनी आर खीचना चाहा पर उस जेनीका उसकी उपस्थितिका बाध तक न होना था सा, बातचीत उखडी उखडी, ऊपरी रही सब कुछ अनमना सा था, और सबके मनपर त्रास छा रहा था हो सकता है लगातार सात दिनसे अविराम बरसती रहनेवाली इस सावन भादोकी फुहियाका भी यह प्रभाव हो तिमिरा जनीक पलगपर गई कोमल प्रेमस उस आलिगन

किया और उसके कानके पास मुह ले जाकर धीमेसे बोली, "जनी, क्या बात है ? इधर दिनोसे देखती हू तुम्हारे भीतर कुछ हो गया है तुम्हारी मनका भी हैरान है देखो न, तुम्हारे प्यार बिना बिचारी कैसी हो रही है सूखकर पीली हो गई है मझे बताओ जनी शायद किसी तरह म तुम्हारे काम आ सकू "

जनीने आखें ब द की और इकारमे अपना सिर हिलाया तिमिरा जरा और ऊपर सरक गई, और थपकी देकर उसका कधा सहलाने लगी

'अच्छी बात है जनिका, तुम जाना तुम्हारे ममका म नही छेडूगी तुम्हारी आत्मामे घुसनेवाला म कौन हू मने इसीसे पूछा कि तुम्ही एक हो जा "

जनी निश्चयपूर्वक अचानक बिस्तरमेंसे उठ बठी साधिकार भावसे तिमिराका हाथ पकडा और कहा, "आओ यहासे एक मिनट के लिए जरा बाहर चल म तुम्हे सब कहूगी लडकिया ठहरे, हम दोनो अभी आती है "

पिछले बरामदेमे पहुचकर जनी अपनी सखीके कधेपर हाथ रखकर बोली उसका चेहरा फक हो गया था और उसपर जाने क्या वेदना अकित हो गई थी "तिमिरा सुना किसीने मुझे सिफलिस दे दी है "

'ओह ! मेरी जनी क्या इसे मुद्दत हो गई ?

'हा कुछ समय हो गया तुम्हे याद है जब वे लडके यहा आए थ वही जो पवनजयस उलझ पडे थ तब मुझे पहली बार पता लगा था अगले रोज ही दिनमे मुझे यह मालूम हो गया "

'जानती हो ' तिमिराने कहा "मुझे भी इसका गुमान था खासकर जब तुम उस गायिकाके बदमाश घुस्ताक बल बैठ गई थी और उसके कानमे कुछ कहा था, तब गुमान मेरा पक्का बन गया था लेकिन मेरी प्यारी मेरी बहिन जनिका तुम्हे अपना खयाल रखना चाहिए '

जनीने गुस्सेसे फर्शपर ठोकर दी और जो रेशमी रुमाल अपनी कापती ऊगलियोंमें वह थामे थी उसे फाडकर दो कर दिया

'नही बिलकुल नही कभी नही हा म अपनेमसे किसीको यह छूत

न लगने दूगी तुमने खुद देखा होगा पिछले कई हफ्तोंसे म सबके साथ एक मेजपर खाना तक नही खाती हू और अपनी थाली अलग ही धो पोछ लेती हू तुम तो जानती हो, मनका मुझ कसी प्यारी है पर इसीसे मैं उसे अपनेसे तोडकर दूर रखती हू मगर म इन दो टागके जानवर मरदुओंसे, इन कम्बख्ताम जान मानकर मिलती हू भाई शाम म दस प द्रहको तो अपना मह जहर द ही देती हू गलने दो, सडने दो उन्ह उनसे उनकी बीवियां उनकी प्रमिकाओ, उनकी माओ बहनो बेटियाके भीतर पहुचे यह विष हा—हा, माताए और बहनें और उनके बाप और उनकी पढानेवालियाँ, और उनकी बहुए और उनकी दादियाँ और बेटियां सब य भलीमानस कहलानेवाली जातिकी जाति मरी तरफसे कलकी मिटती आज मिट जाय और गल जाए '

तिमिरा और आग्रह और प्रेमपूवक सदय भावसे जनीका सिर सहलाने लगी और बोली, 'जनिक्का, क्या सच, तुम अपने ऊपर क्या नहीं करोगी ? तुम हदतक जाकर ही मानोगी ?'

'हा म हृदयको मसलकर और ममता को कुचलकर रहूगी पर तुम सबको मुझसे डरनेकी जरूरत नहीं है म अपने आदमीको आप छाट लेती हू सबसे सुन्दर, सबसे धनिक, सबसे गर्वीला और जो अपनेको बडा मानता हो, वही मरा है वही मेरा शिकार है लेकिन तुम निश्चिन्त रहो, एसा कभी न होगा कि मेरे बाद वह तुममसे किसीके पास जाय ओह म एसी कामातुर, मतवाली बनकर उनसे मिलती हू कि तुम देखो तो हस पडो म उन्हें काटती हू, सराबती हू चिल्लाती हू, सिसकी भरती हू रह रहकर कापती हू, जस मदमत्त हो हाऊ और वे सब सच सममन ह,'

'तुम जाओ तुम जाना जनिक्का,' 'विचारमग्न हो नीची निगाह रखकर तिमिराने कहा शायद तुम ठीक हो शायद यही ठीक हो कौन जानता है ? पर बताओ तुम डाक्टर के हाथों कसे बची ?'

जनी करवट परे जाकर खिडकीके शीशेपर मुह झुका, एकदम सुबक सुबककर रो उठी वेदनाके, क्रोधके, असहायताके प्रतिहिंसाके आसू

हो थ वे कापती हाफना वाली, कसे बची ? क्यो म ऐवि पर-मा माने इस मामलेम मुझ सौभाग्यवती बनाया है म बीमार वहा हू जहा कोइ डाक्टर नही पहुच सकता, नही देख सकता जिसपर हमारा डाक्टर तो एक बुड्ढा और जाहिल है ही "

और तभी मनकी प्रबल सावेग शक्तिके साथ उसने एकदम वैसे ही अपने आसू रोक लिए जस कि वह रो पडी थी कहा, "आओ तिमिरा चल यह तो है न कि तुम कुछ कहो सुनोगी नहीं ?"

"कभी नही '

और दोना शान्त, सयत, बन्द जेनीके कमरे म लौट आइ

साइमन कमरेमें आया वह औराके साथ जो था जनीके साथ वह न था मानो अपने विपरीत होकर भी जेनीके प्रति, वह हठात् आदर-शील था उसने कहा, "बीबी जनिश्का, वह सरदार साहब वेन्डाको याद फमाते ह दस मिनटके लिए जानेकी उसे इजाजत दोगी ? '

नीलोत्पल लोचना सुन्दरी वेन्डा अपने बडसे लाल मुहको लेकर निवदन भावसे जेनीकी ओर देखन लगी अगर जनिमा कह देती नही तो वह इस कमरेमें ही रहती पर जनीने कुछ नही कहा बल्कि जानकर उल्टी अपनी आखें बन्द कर लीं वेन्डा आना समझकर कमरेसे चली गई

यह सरदार महाशय महीनेमें कोई दो बार ठीक पन्द्रहवें रोज यहाँ आते ह ठीक उसी तरह एसे एक दूसरी लडकी जोहराके लिए एक और सम्भ्रान्त महाशय, हर वर्षी शामको आ धमका करते ह उनका नाम इस आवासमें डाइरेक्टर पडा हुआ है

जनीने अचानक वह पुरानी फटी किताब पीछे फेंक दी उसकी मनियाली आखें लगी सुनहरी आगमे जल उठी बोली, 'तुम इस जन-रलको नफरत नहीं कर सकती करती हो तो गलत है मने इससे बन्दर लोग देखे है एक मुलाकाती एक बार आया आदमी क्या गधा ही उस कहो वह मेरे साथ सिवाय ठा उसयानी उसे मेरी छातियो-

म खूब आलपिनें चुभानेमें मजा आता था और विलनोमें एक पालिश ईसाई पादरी आया करता था वह मुझे निवस्त्र करता, फिर सिरसे पावतक सफेद कपडा उढाता, लाचार करता कि म पाउडर लगाऊं और बिस्तर पर लिटा देता फिर मेरे पास तीन मोमबत्तियां जलाता और जब इस तरह म पूरी तौर पर उसके निकट बिल्कुल मुर्दा लाश हो जाती तब वह मुझपर टूटता

छोटी भूरी मनका अब चिल्लाकर बोली 'सच कह रही हो जेनी मेरे पास भी एक बुड्ढा आता था वह मुझे लाचार करता था कि म मानूं कि म क्वारी हूं और इसलिए मुझे सभोगके समय खूब चीखना, चिल्लाना पडता था जनिक्का तुम हम सबसे होश्यार हो, लेकिन म शर्त बदती हूं कि तुम भी नही बता सकती कि वह कौन था ?

'जलका जमादार !'

नही, नही वह आगवाला अफसर'

अचानक तभी किटी खिलखिलाकर बोली 'और मेरे पास भी एक अध्यापक आता था वह किसी तरहकी गणित वणित पढाता था मुझे याद नही क्या पढाता था वह कहता था, म मान रखूं कि म तो पुरुष हू और वह स्त्री और म उसे—क्या जोरसे, बलात्कारसे समझी न ? और देखो बेवकूफको जरा सोचो तो वह तमाम वक्त हिलकी भर भर कर सिसकी ले लेकर रोता जाता था कहता था म सब तुम्हारी हू म तुम्हारी प्यारी नन्ही सी रानी हूं ओ मुझे ले लो, कलेजे से लगा लो ननानिया कही का !'

चुस्त चर्राक वर्काने भी एकदम कहा हिजडा, सनकी !

धीर गभीर तिमिरा ने उत्तर दिया 'क्या ? इसमे सनकी होनेकी क्या बात है ? बाकी और सब आदमियोंकी तरह बस वह भी विषयलोलुप था जसे जीभके चटोरे होते ह वैसे ही वह चसका था घर पर उसे कुछ मसालेदार मिलना न होगा, सो यहा पैसा देकर जो जी चाहे, वही पानेके लिए यहा आ जाता और पा लेता था '

जनी जो अबतक चुप थी एकाएक मानो एक झटकेके साथ, मानो

बात छीनकर, बिस्तरपर उठ बैठी 'बोली, तुम सब मूरख हो तुम उन्हे यह सब चुपचाप माफ क्यो कर देती हो ? पहले म भी मूरख थी पर अब म उनको उल्लू बनाये बिना नही छोडती अब म उन्ह चार हाथ टागो पर चलाती हू, मजबूरन अपने पराके तलुवे चटवाती हू यो ही एकको भी नही जाने देती और वे वे यह सब खुशीस करते ह तुम सब जानती हो लडकियो, पैसा म नही चाहती पैसा कम्बख्त लकिन आदमीका, जस हाता है, नाचकर ताड डालू, और यह मै करती हू नीच, नकेनबध वे जानवर अपनी बीवियाकी, अपनी माम्रोकी, बटियाकी, अपनी दुलहिनोकी, प्रमिकाम्रोकी, फोटो उपहारमें दे जाते ह हा तुमने देखा न हागा मेरी छोरीके पास जो पडी रहती है वही फोटो है लकिन मेरी प्यारी लडकियो जरा सोचो स्त्री एकबार प्रेम करती है पर सदा के लिए और आदमी का प्रेम एक बनले कुत्तके जसा प्रम है, फसली और निरा कामुक वह बफादार नही होता, इतनी ही कुछ बात नही पर उसके पास तो, क्या पुरानी क्या नई, किसी अपनी प्रेम पात्रीके प्रति साधारण कृतज्ञता तकका तनिक भाव कभी नही रहता सुनती हू अब नई सततिके युवक भी होने लग ह जो प्रेमकी निष्ठा जानते ह म स्वीकार करू कि मुझे कोइ एसा युवक अबतक नही मिला, पर मेरे मन में है कि यह ठीक है मन जो भुगत हैं सब लफगे, लुच्चे, कायर, जानवर थे बहुत रोज नही हुए कि अपनी ऐसी बेहूदी जिन्दगीके बारेमें मने एक उपन्यास पढ़ा था उसम भी वही लिखा था, जो मेरे अनुभव ह"

वेन्डा लौटी धीरे-धीरे आकर आहिस्ता से जेनी की खाट के वहाँ छोर पर बैठ गई जहाँ लैंप की छाया पड रही थी वक्त होत ह जब व्यक्ति के चारो ओर ऐसी अभेद्य घनी मूक वेदना का वलय छा जाता है कि उसे भेद कर प्रश्न करने का साहस किसी को नही होता आदमी को फाँसी की सजा सुनाई जाती है तब, लम्बी सजा का कैदी अपनी सख्त मशक्कत स हाँफ कर बैठता है तब, अपनी मर्म की पीडा को वेश्या अपनी सूखी आखो के आगे लेकर बठती है, तब उन को निगल कर बैठे हुए, उनके चारो ओर जमे व्यथा मण्डल को जिज्ञासा

द्वारा भी भद घर प्रवेश करन की प्रवृति सहसा नही होती वसे ही अब वेंडा से कुछ पूछन का किसी का साहस न हुआ वेंडा न पच्चीस पय निकाल कर मेज पर पटके और कहा, 'लो, मुझे शराब लादो और एक तरबूज !' वह घर मेज पर बाहू फैलाई, और उनमे अपना सिर ले कर वह चुप चाप सुबकने लगी उसके बाद फिर किसी को हिम्मत न हुई कि कुछ पूछे बम जनी क्रोध से पीली पड़ गई उसने अपने निचले ओठ को एस जोर से काटा कि वहाँ सफेद दाग रह गए बोली, "हाँ, अब म तिमिरा की बात सुनूगी, मानूगी सुनो तिमिरा, म तुमसे क्षमा मागती हूँ म उस चोर सेंका' के प्रेम में तुम्हारे पागल हाने पर अक्सर हसा करती थी लेकिन अब मै कहती हूँ की इस धरती पर आदमिया म अगर भले है तो व, जो चोर ह हत्यारे ह अगर वह किसी स प्रम करते ह तो खुल कर प्रेम करते ह वे उस पर लजाते नही, छिपाते नही और होता है तो अपने प्रेम के लिए आपदाएँ भी उठाते ह, पाप भी करत ह चोरी भी करते ह प्रेम के लिए उनके लिए सब सभव है उसके आग सब तुच्छ है लेकिन बाकी सब कमीने झूठे, टच्चे, कायर, बदकार जानवर होते ह अब इस जानवर के तिहरा परिवार है एक बीबी और पाँच बच्चे दूसरे, दो बच्चे उसके साथ जो जिन्हें में गवर्नेस कहाती है और, तीसरा, पहली शादी स एक लडकी ह, जा सब से बडी है पर जिसकी गोद म बच्चा है। वह क्या है फिर मी है कस माँ है ? इस बात को शहर के सब लोग जानते ह, बस बच्चे नही जानते और शायद है कि उनका भी कुछ गुमान हो और इस बारे में वे आपस म गुप चुप, कुछ चर्चा भी करते हो अब यहाँ आदमी कल्पना तो कीजिये, दुनिया म प्रतिष्ठित है भला है मेरी लडकियो मेरी बच्चियो मालूम होता है कभी आपस म हम सब की तरह अपने मन की बात कहने का मौका नही हुआ फिर भी म तुमसे कहती हू कि मैं दस वष छ महीने की थी कि मेरी अपनी पेट की माँ ने एक डाक्टर तार्विकिन के हाथ मुझे बच दिया मन उसके हाथ चूमे, रोई मिन्नतें कीं कि मुझे रहने दो

चिल्लाई कि मैं अभी बहुत छोटी हूँ, म कुछ नही जानती लेकिन वह जवाब देता 'सो कुछ नहीं, सो कुछ नही तुम बडी हो जाओगी सो, क्या बताऊँ, कैसा मुझे दर्द हुआ, मिचलाहट हुई, मरी तबियत जसे फोड की तरह पक गई और उसने पीछ से अपनी इस कारगुजारी का ढोल भी कम नहीं पीटा मेरा आत्मा म स निराश यातना की चीख उठती पर किसके लिये ?'

'बात शुरू हो गई है, तो हम सभी अपनी क्यो न कह डाल कब के लिए बचाएँ" कुछ रुक कर सघन भाव स जोहरा ने कहा और अन अपेक्षित, उदास, उसने मानो मुस्कराने की चेष्टा की 'म, मैं स्कूल में थी वही एक मास्टर ने मुझे बिगाड दिया उसका नाम ईवान पेट्रोविश था उसने मुझे एक राज अपने घर बुलाया क्रिसमसके दिन थ उसकी बीबी बाजार करने गई हुई थी पहले तो मरी खिला पिला कर खातिर की फिर अपनी मशा जाहिरकी बोला कि दो बातें ह, या तो म ज्योंकी त्यों उसकी सब बातें मान लू नही तो बिगड चाल चलनके लिए स्कूलसे मुझे निकाल दिया जायगा तब हम अपने मास्टरो-से कितनी डरती थी कि कहनेकी बात नही अब वे यहाँ हमारे लिये डरावने नही रह गए हैं, यहाँ हम उनका जी चाहा जसा उल्लू बना लेती ह पर तब हमारे लिये वही जार थे वही परमात्मा थ"

"और मुझे कालिजके एक लडकेने पहल पहल बिगाडा वह हमारे मालिकके लडको को पढाने आता था और म वहा काम करती थी"

बीचमें नूरी चिल्लाई, 'और म" लेकिन उसका मुह एकदम खुलाका खुला ही रहा और भौचक्की-सी वह गुम हो रही उसकी निगाह की सीधमें देखा तो जेनी भी हाथ मल उठी देहलीजम लुबी खडी थी दुबली, आखोके चारो तरफ काले छल्लेसे छाए थे वह एसी खडी थी मानो आखें खुली तो हे, पर वह अब भी खडी ही खडी नींदमें खोई है वह सहारेको पकडनेके लिए मानो रास्ता खोज रही थी

जनीने ओरसे चिल्लाकर कहा, "लुबी, ओ पगली क्या बात है ? तुझे क्या हो गया है ?"

'क्या बात है! कुछ भी बात नही है उसने मुझे लिया और अब निकालकर बाहर कर दिया है"

किसीके मुहसे शब्द न निकला जनीने हथलियासे अपनी आखें ढक ली उसका सास जोरसे आने जाने लगा दीख पडता था कि उसके जबडेकी नसे खिचकर तन गई है

विनीत शिथिल असहाय भावसे लुवीने कहा, 'जनिश्का, मेरा सारा भरोसा बस तुममें है सब तुम्हारा लिहाज करते है तुम्हारी बात मानते है तुम कहना वह मुझे वापस ले लें'

जनी बिस्तर पर सतर हो बैठी अपनी सूखी प्रखर जलती फिर भी मानो रोती हुई आखें लुवीपर गाडकर टूटे स्वरमें उसने पूछा

'तुमने सुबहसे आज कुछ खाया है लुवी ?"

"नही न कल, न आज कुछ भी नही"

वेण्डान चुपकेसे पूछा "सुनो जेनेश्का अगर हम उसे ताकतके लिए कुछ शराब दे तो ? और वर्का इधर भागकर रसोईसे कुछ खानेको ले आए ? क्या ?'

"हा हा जो ठीक करो, ठीक तो है, जरूर जाओ और देखो, लडकियो, देखो वह बिल्कुल भीगी हुई है कैसी पगली हो, देखती खडी हो! पगलिया, झट उसके कपडे उतारकर अलग फेको और ओ री मनका, या तुम तिमिरा उसके लिए इतने नए कपडे लाकर रखो"

'अच्छा, अब लुवीकी ओर मुखातिब होकर उसने कहा, "अब तू बता री पगली, तेरे साथ क्या हुआ, क्या बीता ?"

६

उस रोज जब सवेरे ही सवेरे लखनपाल उस अप्रत्याशित रूपमें, शायद स्वय बिना भलीभाति जाने, अन्ना मरकानीके उस काम कलुषित स्थानसे लुवीको ले चला था गर्मीका सुहावना दिन था वृक्षोपर परो

लहलहा रहे थे और वायुके सतरणमें, पत्राके कम्पनमें, घासकी कोपलाम व्याप्त सुरभि में, आसपास हर जगह मानो कहींसे उतरकर एक अलस तद्रिल भाव फैल गया था धरतीके गर्भसे एक उष्मा निकलकर मानो वर्षाकी नीरव प्रतीक्षाम बाहें फलाकर आकाशकी आर उठ रही थी उसन अचरजसे वृक्षाको देखा कसे स्वच्छ, भोले, शान्त जसे परमात्माने एक ही रातमें, आदमियाके अनजान यहा उह उगाकर अडिग खडाकर दिया है और वे भी मानो स्वय चारा ओरके चुपचाप सोत जलके नीले तलको, और आसमानकी नीली गोदको अचरजस सभ्रमसे देख रहे थे इस सद्य स्नात बड आसमानी चन्दोवेका, जिसम मानो अभी जागरण की लहरे अगडाई लेती उठ रही थी, जो आधा जगा और आधा सोया मानो उनीदी, गुलाबी, तृप्त, अलस मुस्कराहटके साथ देदीप्य सूरजका अभिवादन कर रहा था

उस विद्यार्थीके हृदयम सहसा उस असीमके प्रति तन्मयता भर आई उसका जी अपनको लाघकर विशद व्यापक हो गया वह आनन्दसे कापा कुछ तो इस सुदशन प्रकृतिकी छविके स्वर्गीय सौदयके स्पश मात्रसे, कुछ मात्र जीवनके उल्लासके कारण, कुछ इस कारण कि वहा उस धुए-भरे, घुट, घने वातावरणमेंसे निकलकर वह अब यहा प्यारी स्वच्छ हवाम अपनेको पा रहा था उसका मन ऐसी विमल अवस्थामें था, पर सबसे अधिक अपने कामकी गरिमा और उत्सग सौदयके बाधके कारण ही उसका अन्तर इस भाति स्फूर्ति और आल्हादसे भरा था

हा, उसने यह पुरुषोचित्त कम किया है सच्चे उत्कृष्ट पुरुषकी नाई अपने कतव्यका पालन उसने किया है हा जो किया, अब भी उसके लिए उस पछतावा नहीं है व (वे कहकर लखनपाल किस सम्बाधित कर रहा है, यह वह खुद न जानता था) चाहे जिन शब्दाम उन स्त्रियाका याद करे, व्यभिचारिणी रण्डो, या जो अकथनीय कहकर उह कलकित कर, मेजपर चाय और हाथम बिस्कुट लिए भली, शिष्ट, पवित्र कुलीन सम्य कन्याओंके सामन उन विचारियोंके नामपर जो गन्द उनसे फकते बने फेंके, उनके लिए सब ठीक है लेकिन उनमस किसी एकने भी उस

नरकसे किसी अभागिन नारीको निकालनेकी चेष्टा की है? और अब—हाँ, मै जानता हूँ अब ऐसे लोगोकी कमी नही जो इसी सोनिश्काके पास आएगे, तरह तरहके आदर्शके उपदेश देंगे, उसके भ्रष्ट जीवनकी लाख लाछनाओका वर्णन करेगे, उसकी आत्मामे जैसे अपनी उगली कुचोएगे, यहा तक कि वह विचारी रो पडे, तब फिर खुद भी आँसू बहाने लगेगे उसे सान्त्वना देगे, पुचकारेंगे सिरपर थपकेगे और उस सबके बाद करुणा करुणामे पहले गालोपर और, और फिर ओठोपर चुम्बन लें उठेगे उसके बाद जो होगा सब जानते है छि । लेकिन लखनपाल ऐसा नही है जो मुहपर है वही उसके कर्मोमें होगा वह दोगला नही है

उसकी कमरमे बाह डालकर उसने लुवीको लिया माना सदय कहो सस्नेह आखोसे उसे देखा उस क्षण वह अपनेको बता रहा था कि वह उसे पिता या भाईकी आखोसे ही देख रहा है न

नीद बुरी तरह लुवीकी आखोमे समाई थी उसकी पलके बद हो हो रहती थी लेकिन वह यत्न पूर्वक आखे फाड फाडकर खोल लेती थी कि नीद न आए उसके ओठो पर वही बाकी शिशुसम अबोध भोला थकीसी मुस्कराहट खेल रही थी वही जो लखन पालने वहा चकलेके कमरेमे देखी थी और उसके मुहके एक कोनेमे लारकी एक गाढी धारा बहतेरी हारही थी

'लुवी आ मेरी प्यारी लाली, लुवी तुमने बहुत दुख झेला है देखो चारो ओर कैसा सुन्दर है ओ राम, मैने पाच बरससे अब सूर्योदय देखा है ताश पीटने खाने पीने और फिर झपटकर यूनीवर्सिटी चल देनेमे मुझे फुरसत न मिलती थी देखो मेरी प्यारी उधर देखो प्रभात खिल रहा है सूरज अब उदय हुआ यह तुम्हारा प्रभात है लुवी यह तुम्हारे नए जीवनका प्रभात है, नए जन्मका आरभ नवीन उदय तुम निर्भय होकर मेरी बाहुओका अवलम्ब लो आओ, मै तुम्हे यहासे निकालकर उस सच्चे जीवन पथपर लेचलू जहा जीवनके साथ साहस पूर्ण युद्ध करना तुम सीखोगी वह युद्ध जो सत्योन्मुख जीवनकी टेक है जहा खरा परिश्रम तुम्हारी साधना होगी चलो, जीवनके उस अभ्युदय पथपर मै तुम्हे

मे चलू "

लबो ने प्राखो के किनारों से उस देखा, सोचा उसके सिर में अभी उफान भरा है पर, खर, कुछ नहीं आदमी नेक है और ईमानदार है हाँ जरा बातें बडो करता है तो क्या—और मद्ध मुग्ध मुस्कराहटमें मुस्कातीसी और कुछ खीज से खिजी सी वह बोली थी, 'हा, तुम मुझे बनाना चाहते हो अच्छी बात है, काइ डर नहीं मै जानती हूँ तुम सबके सब एक स होन हो पहले तो तुम लोग अपनी खुशीके खातिर काम बने तब तक खुशामद करते हो, फिर—फिर चाहे कुछ होना फिरे तुम्हें क्या परवा।"

"म? ओह म, और ऐसा करू ।" लखनपालने जोर से छाती पर मुक्का मारकर कहा, 'तुमने मुझे जाना नही मैं इतना धूत नहीं कि तुमसी अरक्षिता को लेकर धोखा दूँ नहीं, मैं अपनी तमाम शक्ति, तमाम आत्मा, तुम्हें शिक्षा देने, तुम्हारे मस्तिष्क को विकसित करने, दृष्टिकोण का विस्तृत करने और तुम्हारे टूटे नस्त दिल पर से उन सब घावो को धो डालने में खच कर दूँगा जिन्हें उस अनिष्ट जीवनने तुम्हारे अन्तर का दारुण आघात देकर पहुँचाएँ हैं मैं तुम्हारे लिए पिता भी रहूगा और भाइ भी पग पग पर म तुम्हारी रक्षा करूँगा और अगर तुम किसीको कभी उस सच्चे पवित्र भावसे प्रम करोगी तब म उस दिन को याद कर धन्य होऊगा कि जब यहा इसके गडसे निकाल कर म तुम्हें ले आया था'

इस जाज्वल्य वक्तृता पर बूढ़ा गाडीवाला चुपचाप साभिप्राय हँसी हसा हँसी में उसकी कमर दुहरी हो गई इन गाडीवानो बुड्ढोंके कानो-में दुनियाँकी चटुकरी बात रहती ह अपनी जगह बैठ-बैठ य चुपचाप सब पीते रहते ह जो भीतर होता रहता है सब इनके कानोमें पडता है भीतर वालोको इसका गुमान भी नहीं होता शहरमें भीतर भीतर जो कुछ होना है पौने सोलह आना य जानते ह और क्या मालूम इन बुड्ढ के कानाम कब कब इससे भी नशीली और इससे भी आवेग भरी वक्तृताएँ पडी हागी

आओ इस मेरे घर म निस्सकोच निश्शक [ओ मेरी प्यारी]
आओ, इसकी रानी बन कर प्रवेश करो

और तब उस गाडी वालेके पके और लकीरो भरे चेहरे पर एक विषम, निरथक किन्तु साथक, एक गहरी मुस्कराहट फैल गई

१०

जिस कमरेमे लखन पाल रहता था वह साढ पाँचवी मजिलपर था साढे इसलिए कि पाच या छ या सात मजिलवाले मकानोके ऊपर फिर टीनकी चद्दरें डालकर कुछ और भी बरसातियासी छा दी जाती थी वो ज्यादातर कवाड कूडेके काममे आती थी कभी वहा कोई रह भी लेता था सर्दियोम वहा बहद सर्दी रहती थी और गर्मियाम वहद गर्मी लुबी ज्यो त्यों ऊपर चढी उसे लगता था कि अब, नही तो अब वह गिरी, गिरी ! दो सीडी और, और वह एसी नीदमें गिर पडगी कि पातालके तलमें हो गिर गई हो फिर क्या वह उठगी ? लेकिन लखनपाल बराबर कहता जाता था, 'मेरी प्यारी, मैं देखता हू तुम थकी हो पर कुछ बात नही, प्यारी, यह लो मेरा सहारा लेलो हम बराबर ऊपर जारहे ह ऊपर ऊपर, उससे भी ऊपर देखो, मनुष्यकी उच्चाकाक्षाका क्या ही यह प्रतीक नही है ? मेरी बहन, मेरी सखा, मेरी बाहोका सहारा थामे रहो"

बेचारी लुवीके लिऐं यह और भी मुश्किल हो गया वैसेही उस अकेलीके लिए चढना भारी था अब, सहारा लेनेके बहाने यह तो लखन पालका बोझ भी उसपर पडने लगा और लखन पाल अब स्वय भारी हो रहा था उसके वजनकी भी खैर ऐसी कोई बात न थी, पर उसकी सफ्फाजीसे धीरे धीरे लुवीके जीमें खीज उठरही थी कोई डाढके दर्द पासमें बराबर कराह रहा हो, या बच्चा निरतर चिचिया रहाहो, या पासमें कोई बेसुरा गा ही रहाहो, रुकता न हो, या बाहर टप-टप देरसे

लखनपाल हक्का बक्का हतबुद्धि-सा हो गया इस चुप निदासी सी लडकीका यह बीचमें पडना उसे एसा अनहोना, अमगत, अनधिकृत सा जान पडा सोते आदमीको जगानेमें जो एक प्रकारकी हृदयकी परुपता चाहिए, इस स्त्रीका हृदय उससे ही बचना चाहता है, लखनपाल सचमुच यह नही समझ सका इस स्त्रीका हृदय इस अपरिचितकी नीदके प्रति सदय था, या यहभी हो कि दूसरेकी नीदके प्रति यह आदर उसके लिए व्यवसाय प्राप्त हो पर लखनपालको लुबीकी इस आपत्ति पर अतव्य अचरज ही हुआ जान क्यो उसे यह बुरा लगा उसे गुस्सा हो आया सोते आदमी-का एक हाथ धरतीकी ओर लटका था एक बुझी सिगरेटका सिरा उग-लियोम थमा था इसने उस हाथको भकझोर कर जोरसे झिडक कर कहा, 'सुनो नजरस, म तुमसे सख्तीसे कहता हू सुनो, मैं अकेला नही हू मेरे साथ एक औरत है सुना, सूअर ?"

जैसे कोई जादू हो गया! जसे उसी क्षण उसकी पीठ के नीचेसे खाट म से कोई स्प्रिग जोरसे खुल पडा हो वह लेटा हुआ आदमी सहसा उछल पडा उठकर तख्त पर बठ गया, जल्दी जल्दी हथलियो से अपनी आखें मली, माथा मला, मुह मला, सामने स्त्री देखी और मूढ कतव्य हा रहा, और अपनी कमीज के बटन बद करते हुए जल्दी जल्दी बोला 'क्या तुम हो ? लखनपाल ! और यहाँ म तुम्हारा इतजार किये बठा रहा उसीमें मुझ नीद आ गई जरा, इन मेरी अपरिचित महाशयाम कहो, एक मिनिटके लिए मुह फेर ल"

उसने जल्दीसे रोज पहननेका कोट बाहोम चढाया दोनो हाथ फर कर अपने लम्बे-लम्बे बाल ठीक किये लुबी स्त्री सुलभ प्रशसापेक्षाके साथ [स्त्रिया चाहे जितनी अवस्थाकी हो जाए और जिस परिस्थतिमें हो यह बाध कि वह सुदर लग रही है न, उनसे कब छूटता है ?] एक ओर बढकर दीवार में लटके एक आइनेम देखकर अपना केशविन्यास ठीक करने लग गई

नजरसने आखके जरा इशारेसे लखनपालको यह दिखाया और निगाह निगाह म मानो कुछ प्रश्न पूछना चाहा

"परवा न करो, कोई मुजायका नहीं" लखनपालने जोरसे कहा "लेकिन अब चलो जरा बाहर चलो म अभी तुम्हें सब कुछ बता देता हू लुवी माफ करना, बस एक मिनटके लिए माफी दो अभी लौटकर आता हू तुम्हारा सब ठीक-ठाक कर दू गा और फिर तुम रहोगी और यह कमरा, और म गायब"

लुवीने कहा 'क्या क्यो, तकलीफ न करो म बिल्कुल ठीक हू यह तख्त मेरे लिए बहुत है, तुम पलग पर अपनी जगह जमाओ"

नही नही, मेरी बीबो यह बहुत अच्छा न लगगा मरा यहा एक साथी है म सोन वही चला जाऊगा खर, मिनट भरमें म लौटता हू"

दोना विद्यार्थी बरामदे में बाहर निकल आए आखें फाडकर नज रसे पूछा, "यह क्या सपना है ? इस सबका क्या मतलब है ' पेटीकोटम यह परी कहासे उतर आई ?"

लखनपालने अथपूर्णत भावसे अपना सिर हिलाया मुह उसका जरा रूखा हो आया रा रातके सन्नाटको तोडकर हल्की धूप और नित्यन मिसिक कर्मोंसे भरा यह दिन खुलकर चढ रहा था, वस ही कम लखन पालका उत्साहभी मद होता जाता था उसे लग रहा था कि जो किया क्या वह बिल्कुल ठीक ही था, अनिवाय ही था ? जसे उसम अपने मत्सा-साहस और उत्सग कमकी निरथकताका बाघ उठने लगा था उसने अब अपनको लोगोकी निठल्ली और उत्सुक निगाहोका पदाथ बना डाला है उसीके साथ अपने और उस स्त्रीके जिसका वही इस भाति यहा ले आया था, दोनोंके प्रति उसमें कुछ अनजानी सी खिजलाहटका, बेचनीका भाव भी उसम उठ रहा था उसे अभीसे लग रहा था कि दोनोका साथ-साथ रहना क्या बडौल-सी बात होगी चिन्तायें बढेंगी खच बढेगा, और बद मजगिया भी बढेंगी लोग भेदकी हसीसे हसेंगे और जाने क्या-क्या सवाल करेंगे वह खयाल कर रहा था कि किस भाति उसके इम्तहानमें इससे बाधा उपस्थित होगी लकिन नजरसमे जब एक बार एक बात हो ही ली तब फिर वह उस पर कमजोर बन रहा है, इस पर उसे खेद भी हुआ और बातोका सिलसिला जब बढा तब अतमें वह अपन कृत्यके सत्साहमकी

डीगें ही मारता पाया गया

'दखल हो म प्रिंस ?" उसने कहा हठात उसके हाथ साथीके कोटके बटनको मरोड रहे थ और साथीकी आखोकी ओर उसकी आख नही उठती थी, नीचे फश पर गडी थी कहा 'तुमने गलती की यह हमारी साथिन नही है लेकिन यही कि म अभी कुछ दोस्तोके साथ जरा यानी यही एक मिनटके लिये यामकास अगा मरकानी के यहाँ चला गया था"

'साथ और कौन कौन थ ?" नेजरुस ने दिलचस्पीके साथ पूछा

'अब साथ कोई भी सही सब एक बात है वह तनवर था, रामसरन, एक नए प्रोफसर ह यारश्कर, वह, सुवेश वणवाल, और, और औऱोंके नाम याद नही हम शाम तक किश्तियाकी मैर करते रहे फिर तमाशम चले गए जरा शराब उडी तब उसके बाद जानवरोकी तरह यामाकी तरफ चल पडे तुम जानते हो, म परहेजगार आदमी हू सो म वहा स्पजकी तरह बैठा बैठा बस प्याले पर प्याले सोखता रहा साथ जान पहचान का एक पत्रकार भी वहाँ था सो सवेरा होते होत न जाने कैसे मेरी बुद्धि जस छिन भिन हो गई सुन्न हो गई, म इन अभागी नारियोको देखते-देखते दुख, अनुताप और करुणा से एसा भर गया मैंने सोचा, हमारी बहनें हमारे कैस आदर और प्रम और रक्षा की पात्र हैं और हमारी माताऐं किस प्रकार हमसे सादर भक्ति पाती ह कोई जरा उन्हे कुछ कह, जरा छेडे, जरा आँख दिखाए हम उसे कच्चा खानेको तयार हो जाते ह क्या, यह सच नही है ?"

"हाँ आ" दूसरे ने कुछ कहने के लिए कहा जैसे उसकी आख आधी प्रश्न करती और आधी स्वय उत्तर दे रही थी उनमें सन्देह भरा था

"तब मन सोचा, क्या ? यह क्या अनय है ! कोई शोहदा, लफगा, कब्र म पर लटकाए कोई बुड्ढा तबियत के मुताबिक, टन से पैसा पटक कर, चाहे तो रात भर के लिय चाहे मिनट भर के लिय सवथा

निस्शक और निभय भावसे इनमें से एक वा या सब को ले डाल सकता है फिर दूसरी बार, तीसरी, चौथी, लाखवी बार उस स्त्री की कायाको लेकर उस वस्तु से खिलवाड कर सकता है जो मनुष्यके भीतर दैवी है अमूल्य है सुनते हो ? उसी को वह भ्रष्ट करता है, तिल तिल नष्ट करता है, पैरोंमे कुचलता है और मुलाकात की रकम चुका कर पतलूनकी जेबोमें हाथ डाल तप्त छका शात, मुहसे सीटी बजाता मजमें चला आता है सबसे भयावह बात तो यह है कि यह उनके साथ निरी टव हो गई है, मात्र कृत्य स्त्रीके लिए भी केवल व्यापार पुरुषके लिए भी वही मात्र व्यवसाय भावना दोना ओर बुझ गई ह आत्मा मर गई ह ! एसा ही है, क्या है न ? फिरभी उनमेंसे प्रत्येकके भीतर आदरणीया बहन है पूजनीया मा है उनमकी उसी बहन और मां को हम नष्ट कर देते है ऐंह क्या यह सच नही ?"

हा आं " नेजेरसके आठा ने कुछ कहा

'सो मने साचा, शब्दोसे क्या फायदा है ? चीख चिल्लाहटसे क्या बनना है? क्या होना है लेक्चरोंसे जा लच्छेदार, सुदर, रगीन जगह ब जगह झाडे जाते ह ? और भाडम जाए प्रस्ताव और रेग्युलेशन और नियम (यहा अनायास उसे पत्रकारवाला शब्द याद आगया) और मेगड लीन आश्रम, और यह धार्मिक पुस्तकाका निशुल्क वितरण छि, इन सबसे क्या बनता है ? नही, मै खडा होऊगा वीर, सत्यव्रती पुरुषकी भाति हाथमें साहस लूगा उस कीचडमेंस एक नारी जीवको ता खीचकर निकाल ही लूगा निकालकर फिर सत्यकी स्वच्छ और पक्की धरतीपर उसे जगाउगा उसे शान्ति दूगा प्रोत्साहन दूगा मुझस आदरका व्यवहार उसे प्राप्त होगा और तब वह अपने पैरोपर खडी अपना निजकी जीवन जिएगी "

नेजरस इतना ही कह सका 'ह ऊ ' नखन पालने कहा ' ओ प्रिंस तुम्हारे सिरमें जाने क्या रहता है समझा म एक स्त्रीकी बात नही एक मानव प्राणीकी बात कर रहा हू नारी देहकी नही, मानव आत्माकी '

'हा, ठीक है ठीक है आत्माकी जरुर आत्माकी आग फिर "

"और फिर—? फिर क्या ? सोचा, और किया सत्प्रेरणा-प्राप्त हुई और म तत्पर व टिवद्ध हुआ म उसे अजा मरकानीके यहास निकाल लाया अब, अभी तो वह मेरे साथ ही है आगे—आगे जो परमात्माकी दया हुई तो पहल म उसे पढा ा सिखाउगा लिखना सिखाउगा फिर उसके लिए छोटा सा उपहार ग्रह सा खोल दूगा, या छोटा मोटा स्टोर समझो म समझता हू कि हमारे भाई लाग इसम मेरी सहायतासे विमुख न होंगे प्रिन्स, मेरे भाई, हृदय हृदयका भूखा होता है एकको एककी सहानुभूति चाहिए मानव हृदयको और हृदयोका स्नेह चाहिए, और सहानुभूति दो सालम म समाजके लिए एक वह नवीव सदस्य प्रस्तुत कर दूगा जो नेक होगा, उद्यागी, योग्य, सदाशय उसके विकासके लिए सब ओर माग खुले होंग क्योंकि उसने अब तब केवल अपनी देह दी है, आत्मा उसकी पवित्र है और निमल"

प्रिन्सने जसे अपनी जीभ चाटी और उस जीभस ही आवाजकी, 'स्स्स स्स्म"

'इसका क्या मतलब ? यह क्या गधापन कर रहे हो ?"

"और तुम उसके लिए एक सीनेकी मशीन लेकर दाग न ?"

'सीनेकी मशीन ? क्यो, वही क्यो ? म नही समझा'

'भाई साहब उपन्यासोंमें ता सीनेकी मशीनही दी जाती है जसेही नायक एक बेचारी ीना हीना, पतिताके उद्धारका बीडा उठाता है ता पहल सीनेकी मशीन उसे लेकर दता है'

बकवास न करा' लखन पालने एक हाथसे उसे धकेलते हुए कहा "पागल !'

ज्योजियन सहसा गभीर हा गया, उसकी काली आख चमक आइ, बोला, 'नही साहब, यह बकवास नही है यहा दोमें एक बात है और दोनोका परिणाम एक है या तो तुम दोना साथ इकट्ठ रहोगे और पाच महीने हुए नही कि अपने कमरेसे उसे गलीम खदेड बाहर करोगे और वह वापिस चकलेमें चली जायगी या तो गली-गली फिरेगी हा यही होगा दूसरी बात यह कि तुम इकट्ठे न रहोगे, पर उस पर दारो-

रिक और मानसिक परिश्रमका बहद बोझ लाद दोगे और उसके अधेरे अजान दिमागको विकसित करनेका यत्न करोगे और वह ऐसे उकताकर अपनेसे तुम्ह छोडकर भाग जायगी और यही, या तो वापिस चकलेमें नही तो गलीमें आवारा फिरती दीखगी यह भी पक्की बात समझो हा, एक तीसरी बात यह है आयरकी किताबके नाइट लामलटकी भाँति तुम जब भाई बनकर उसके सम्बन्धम कमशील और आदश सेवी रहोगे तब वह इधर छिपे छिपे किसीके प्रमके घूट पिया करेगी मेरे भैया, मेरो मानो कि स्त्री, जब वह स्त्री है तो सदाके लिऐ स्त्री है और वह दूसरे महाशय उसके यौवनसे भरपेट खा खेलकर उसे खदेडकर चकलेमें या उसी आवारगीम पहुचा देंगे "

लखनपालने एक भरी गहरी साँस ली कही गहरे म, मस्तिष्क म नही चेतनाके वही गुप्त अधेरे कोने में, लखनपाल को यह बोध घर करता जान पडता था कि नेजरमने जो वहा अयथाथ नही है पर उसने झट अपनेको थाम भी लिया सिर हिलाया, और प्रिसकी तरफ अपना हाथ बढा कर कहा, 'म कहता हूँ शत बद कर म कहता हूँ, आध सालम तुम अपने लफ्ज वापस लोग, माफी मागोगे और शिकस्तके तौर पर, अजी, तुम ही इसे एक बढिया दावत दे रहे होगे'

'अच्छा, रही पक्की" प्रिसने पूरे जोर से अपनी हथेली स लखनपालका बडा हाथ झकझोर कर कहा "तैन खुशीके साथ, यह शत रही लेकिन अगर मेरी बात सही रही तो दावत तुम्हारे सिर रहेगी'

'जरूर जरूर अच्छा प्रिस अब चल विदा अच्छा तुम रात कहाँ रहोगे ?'

यही, पास ही सोमन्य के यहा और क्या लेकिन क्या ? क्या तुम सचमुच उस प्राचीन हीरो की तरह अपने और सुन्दरी के बीच म दुधारी तलवार रख कर साने की सोचते हो? क्या ?'

'क्या बहूदा बकत हा ! म खद सोमन्यके यहाँ रात गुजारनेकी सोचता था पर अब जरा बाहर इधर उधर गलियाकी हवा खाऊँगा

और फिर जिसके यहाँ होगा पढने पहुँच जाऊँगा जैद रावश या सीता-रामके यहाँ या कही भी अच्छा विदा'

वह कुछ कदम चला ही था कि तेजरम न कहा 'ठहरो ठहरो, एक बात तो कहना भूल ही गया था अरे, परतमन की कुछ बात सुनी ? वह आ गया लपेटे में ।"

'हाँ ! लेकिन परतमेन' लखनपालने अचरजसे कहा, और तभी सुदी मे एक लम्बी बडी जमुहाई ली

'हाँ हाँ पर कोई एसी डरकी बात नही है यही जरा कुछ ऐसी-वैसी चीजें उसके यहाँसे बरामद की गइ यह—एक सालसे ज्यादाकी ता उसे सजा जरूर ठुकेगी

"अह, एक साल उसके लिय क्या है कुछ नही तयार, मजबूत लडका है, एक साल तो यो निकाल देगा"

तैयार तो है ही अच्छा, प्रिन्स न कहा, 'आदाब"

'तसलीम, हीरो ए आजम !"

'तसलीम व चपर गट्टू !"

११

लखनपाल अकेला रह गया इस अँधियार बरामद म मट्टी के तेलके दीये में से तेल के धुएँकी बास आ रही थी वहाँ पुरान बुसे तम्बाकूकी भी गन्ध कम न थी दिनकी रोशनी छतके पासके रोशन-दानोंके शीशोमसे लड झगड कर थोडी थोडी आ ही थी लखन पालकी विचित्र अवस्था थी उसम स्फूर्ति थी और निरुत्साह भी उसमें तब क्षुद्रप्राणता भी थी और आदर्श प्राणता का आवेग भी था किसीको दिना तक न खाना मिले, तो ऐसी हालत अवसर हो जाती है कुछ ऐसा लगता था कि वह दनिक व्यावहारिक जीवनकी परिधि के पार होकर कही और पहुँच गया है और यह जीवन जग उसे कुछ

बहुत दूर झिलमिला, अनजाना-सा दीखता है लेकिन विचारों और भावनाओं में उसे एक विशेष प्रकार की शांत स्पष्टता एक अपूर्व विमलता का भी बोध उस होता था इस गायब्य, स्वच्छ स्वप्न की सी अवस्था में एक नशा था एक आमन्त्रणीय मोह वह अपने कमरे के पास दीवारका सहारा लिए खड़ा रहा आस-पास, ऊपर, नीचे उसे लगा बहुतसे लोग सो रहे हैं और जैसे वह उनकी नींदको देख रहा है सुन रहा है अनुभव कर रहा है मुंह खुले है, निश्चित विरामने गाढा सांस आ जा रहा है, नींद में खोये मग्न हैं चेहरो पर एक विचित्र थकान एक विचित्र आरामका भाव है और वे सवेरे की नाप मीठी गाढी नींद में बहोश हैं तभी उसके सिरमें एक विचार कौंध कर पार हो गया बचपनमें वह उसमें गड़ा था, फिर भी मानो अनन्त दूरसे आया हो, सर्वथा अपरिचित, अनन्य, विभीषिका मय मानो उस क्षण उसे प्रगट हुआ कि ये सोते पड़े लोग कैसे बहूदा कैसे मकोड़ेसे दीखते हैं मुर्दोंसे भी मुर्दे, शवसे भी ग्लानिकर, असहाय तब उसे लुबीकी याद आई उसका अन्तरतर सोया, दबा, रहस्यमय अहम मानो उसके कानमें जल्दी जल्दी कहने लगा चल कर देख लेना चाहिये कि लडकी आरामसे तो सोई है न और हां, सवेरे की चायके बारे में भी तो उससे पूछना है पर अपने आपमें जैसे उसने मान लिया कि नहीं, वह इस तरह की कोई भी बात नहीं सोच रहा है और बढ़ कर गली में चला गया

वह चला ही चला जो चीज उसकी निगाह में आती, बारीकी से, निठल्ली पर विशद जिज्ञासासे वह उसे देखता था और जो दीखता उसका प्रत्येक अंग, दृश्यका प्रत्येक अंश ऐसा अति प्रधान ऐसा स्पष्ट उभरा सा उसे लगता जैसे उन्हें उंगलियों से छू सकता हो एक देहाती स्त्री पास से गुजरी उसके कन्धे पर एक बांस था जिसके दोनों तरफ दूध की बडी मटकियां लटकी थीं वह नवयुवती न थी कनपटी पर उसकी झुर्रियों का जाल सा बना था और दो गहरी लकीरें उसके नथनों से मुंह के किनारों तक खिंची थीं पर उसके गाल अभी लाल

थे क्या अचरज, छूने म बहुत पके भी न हो आखो में देहात सुलभ सादी प्रफुल्लता खलती थी चलते चलते और कधे पर रक्खी बहगीके झोके के साथ, उसके नितब द्वय माना ताल देकर दाएँ और बाए हिलते थ उनके इस लहरदार आन्दोलनमें एक प्रकारका आकर्षक, उद्दीपक, बर्यिक, मनोरम सौन्दय था

'ओह औरत चलती हुई मालूम होती है इसने जिन्दगी में खाया खाया देखा जान पडता है, लखनपालने सोचा और तभी सहसा अप्रत्याशित रूपमें इस स्त्रीके प्रति जाने उसमें कैसी एक उत्कट चाह पदा हो आई इस सवथा अपरिचित, अधेड शायद जगह जगह की जूठी असुन्दर नारी देहको वह एक दम एसा चाह उठा कि अभी पा लू उसे लग रहा था कि जसे एक बडासा बदनुमा मेव पडसे गिरकर धरती पर पडा हो, बासी भी हो, कही से कुतरा खाया भी हो, यहां वहा दगीला भी हो पर फिर भी उसमें काफी रसीला गूदा हो और निखरा रग भी—वसेही यह है पर

आगे देखा, जसी जनाजके कामम आती है वसी खाली गाडी पाससे सरसे आगी निकली चली गई दो घोडे आग थ, दो पीछ एक मशालची और कुदाली लिये कुछ खोदने वाले मजूर उसपर जमे बठे थे अपने यूनीफामके कपडे नीचे डाले, ऊपर इकट्ठे डट, अपनी फटी बेडोल आवाज म कुछ गीत रेंकते हुए चले जा रह थे सोचा जरूर किसी मुर्देको दफ्नान यो आगे जा रहे ह, या दफना कर लौट रहे होगे अलमस्ता जीव ह

बाघपर आकर लखन पाल रुक गया और वहा पडी एक बेंचपर बैठ गया देखा, बेंच हरी है और सामनेकी सडकके दोना ओर उन्नरसीदा दरख्तोकी कतारें सीधी दूरतक चली जारही ह वहा दूर वे एक होकर तीरकी नोक बनी, माना अस्पष्ट अनतके ममर्में पहुचना चाह रही हैं हरे फल उनपर लग है लखन पालको अनायास याद आया कि वसन्तके आगमनपर वह एकबार यहीं इसी जगह बैठा था तब सन्ध्या, मन्थर अधियारी सजीली सन्ध्या, एक श्रान्त शमित मन्दस्मितसे मुस्कराती बधूकी

भांति निद्रामें डूबीसी जारही थी तब दरख्त हरे पत्त ओढे थे और फूलोसे छाए थ उस समय उनकी नोकीली चोटियां सन्ध्याके अंतिम प्रकाशसे श्वेत और अरुण होकर आकाशकी ओर मुह उठाए खडी थीं लगता था कि किसीने इन सब दरख्तोंके शीर्षपर क्रिसमसकी मोम बत्तिया लगादी हो और तभी, सहसा आकस्मिक उद्योतकी भांति, उसके भीतर एक नवीन अनुभूतिका स्फुरण हो आया (और एसे क्षण प्रत्यकके जीवनमें आते ह) उसने जसे अभी हाल जाना कि वक्षोमें इस समय फल लग ह और वे पकनेको ह पहले उन्हींकी जगह फूल थे इसी भांति इससे पहले कितने न वसत आए होंगे, बाद कितने न आएँग फूल खिलेंग, फल लगगे लेकिन वही वसन्त जो बीत गया है, वही जो था, क्या इस दुनियामें कोई भी, कुछ भी उसे वापस ला सकेगा ? इस विचारके साथ निरुद्देश चली जाती हुई घनी वक्षोंकी पातकी ओर वह उदास निगाहसे देखता रह गया सहसा उसे पता चला कि उसकी आखोंके आग धुध-सा आगया है और उसे कम दीखने लगा है

वह उठ खडा हुआ और आगे बढा वह हर चीज अनिमेष और घनी निगाहसे दखता था मानो परमात्माकी इस सष्टिको वह पहली बार देख रहा है पत्थरका काम करने वालोका एक दल सडक परसे उसके पाससे निकला और वह सब अजीब रग और विचित्र अतिरंजित रूपम उसके अन्तस्तलपर खिच रहा फोरमैन, जिसकी लाल डाढी थी (एक तरफसे घनी) और नीली और कठिन आखें, एक और पुष्ट युवक था, जिस की बाईं आख किसी चोटसे सूज आई थी और जिसके माथसे गाल तककी हड्डी तक और नाकस कनपटी तक काली नीली रेखाएँ बनी थी, एक नवयुवक जिसके देहाती उत्सुक चेहरेपर मुह सदा खुला रहता था और पीछे वह बुडढा जो पिछड जानेके कारण अजीब हुलिया बनाए भागा आ रहा था, इनके कपड जो चूने मिट्टीसे मले होरहे थ, इनके कुदाली फावडे, यह सब ज्योका त्यो रगीन और व्यतिव्यस्त, फिर भी निर्जीव और अचेतन दृश्यकी भांति उसके चित्तपर अंकित हो गया

उसका मार्ग नई मण्डीके रास्तेसे आता था वहा सोधी-सोधी कुछ

भुनने पकनेकी महक उसे आई नथनोकी राह चावस उसने वह सुगध जो अपने भीतर ली तो उसमें याद उठी कि उसन कल दुपहरसे कुछ खाया नही है और एकदम तेज भूख उसे लग आई वह दाईं ओरको मुडकर मण्डीमें चला गया

अपन पहले दिनामें जब भूख उसकी आए दिनकी जानी पहचानी चीज थी वह यही आजाता था और मुश्किलसे पाए कुछ पसोकी एवज कुछ रोटी भाजी पा लेता था अवसर एसा जाडोमें होता था ढावेवाली कपडोकी तहोम लिपटी बहुधा अगीठी तापती उसे मिलती थी, उसी अगीठी पर कुछ पकाती भी जाती थी रोटीके यहा दो पसे लगते थे, बाकी सामानके दस

आज मण्डी में भीड थी वह अपनी उसी पुरानी दूकान की ओर राह बनाता जा रहा था तभी दूर से गाने की आवाज सुनाई दी एक दूकान के आगे घिर कर लोगो की भीड एक ञत में खडी थी उसने झाक कर देखा, बीच में दस पद्रह लडकिया थी ये जो खाली रह कर गाली-गलौज और म तू म मशगूल रहती थी, अब सुन्दर और शिष्ट प्रतीत होती थी शाम से ही आज समारोह मन रहा था और रात भर इसी तरह जशनमें बीती थी गाती बजाती अब वे यहाँ मण्डी मे आ पहुँची थी किराय के तीन साजिन्दे भी उनके साथ थे वे अपने बाजो से उनका साथ दे रहे थे कुछ उनमें से अपने गिलास आपस में बजा बजा कर एक दूसरी पर ताडी उछालती और मग्न हो कर एक दूसरे का चुम्बन लेती थी कुछ यो ही शराब को गिलास में और मेज पर बिखरा रहीं थी कुछ ताली बजा बजा कर हा गाने में साथ दे रही थी वे नाचती, आहें भरती चीखती, चिल्लाती वहाँ होली सी मचाय थी कुछ यो ही पसरी बैठी थी इन सब के बीच म एक पतालीस वषकी भरी काया की प्रमदा, जिसका सौदय अभी चला न गया था, ओठ जिसके भरे और लाल थे, आँखें उन्मत्त और सरस थी और उनमें से मद विलास की विह्वलता छलक रही थी, फिरकिनी ले-ले कर नाच रही थीं नृत्य की सम्पूर्ण कला और समस्त सौदय इस के करतब पर खत्म

भाति निद्राम डूबीसी जारही थी तब दरख्त हरे पत्त ओढ य और फूलोसे छाए थ उस समय उनकी नोकीली चाटियाँ सन्ध्याके अन्तिम प्रकाशसे श्वेत और अरुण होकर आकाशकी ओर मुह उठाए खडी थीं लगता था कि किसीने इन सब दरख्तोके शीपपर क्रिसमसकी मोम बत्तिया लगादी हो और तभी, सहसा आकस्मिक उद्योतकी भाति, उसके भीतर एक नवीन अनुभूतिका स्फुरण हो आया (और एसे क्षण प्रत्यक्के जीवनमें आते ह) उसन जसे अभी हाल जाना कि वृक्षोमें इस समय फल लग ह और वे पकनेको ह पहले उन्हीकी जगह फूल थ इसी भाति इससे पहले कितने न वसत आए होगे बाद कितने न आएँग फूल खिलग, फल लगग लेकिन वही बसन्त जो बीत गया है, वही जो था, क्या इस दुनियामे कोई भी कुछ भी उसे वापस ला सकेगा ? इस विचारके साथ निरुद्दश चली जाती हुई घनी वक्षोंकी पातकी ओर वह उदास निगाहस देखता रह गया सहसा उसे पता चला कि उसकी आखोंके आग धुध-सा आगया है और उस कम दीखने लगा है

वह उठ खडा हुआ और आगे बढा वह हर चीज अनिमेष और पैनी निगाहसे देखता था मानो परमात्माकी इस सष्टिको वह पहली बार देख रहा है पत्थरका काम करने वालोका एक दल सडक परसे उसके पाससे निकला और वह सब अजीब रग और विचित्र प्रतिरजित रुपम उसके अन्तस्तलपर खिच रहा फोरमन, जिसकी लाल डाढी थी (एक तरफसे घनी) और नीली और कठिन आखें, एक और पुष्ट युवक था, जिस की बाई आख किसी चोटसे सूज आई थी और जिसके माथसे गाल तककी हड्डी तक और नाकस कनपटी तक काली नीली रेखाएँ बनी थी, एक नवयुवक जिसके देहाती उत्सुक चेहरेपर मुह सदा खुला रहता था और पीछे वह बुड्ढा जो पिछड जानेके कारण अजीब हुलिया बनाए भागा आ रहा था, इनके कपड जो चूने मिट्टीस मले होरहे थ, इनके कुदाली फावड़े, यह सब ज्याका त्यो रगीन और व्यतिव्यस्त, फिर भी निर्जीव और अचेतन दृश्यकी भाति उसके चित्तपर अकित हो गया

उसका माग नई मण्डीके रास्तेसे जाता था वहाँ सोंधी-सोंधी कुछ

भुनने पकनेकी महक उसे आई नथनोकी राह चावस उसने वह सुगंध जो अपने भीतर ली तो उसमें याद उठी कि उसन कल दुपहरसे कुछ खाया नही है और एकदम तेज भूख उसे लग आई वह दाईं ओरको मुडकर मण्डीमें चला गया

अपने पहले दिनामें जब भूख उसकी आए दिनकी जानी पहचानी चीज थी वह यही आजाता था और मुश्किलसे पाए कुछ पसाकी एवज कुछ रोटी भाजी पा लेता था अक्सर ऐसा जाडोमें होता था ढावेवाली कपडोकी तहाम लिपटी बहुधा अगीठी तापती उसे मिलती थी, उसी अगीठी पर कुछ पकाती भी जाती थी रोटीके यहा दो पमे लगते थे, बाकी सामानके दस

आज मण्डी में भीड थी वह अपनी उसी पुरानी दूकान की ओर राह बनाता जा रहा था तभी दूर से गाने की आवाज सुनाई दी एक दूकान के आगे घिर कर लोगो की भीड एक उत्तम खडी थी उसने झाक कर देखा, बीच में दस पन्द्रह लडकिया थी ये जो खाली रह कर गाली-गलौज और म तू में मशगूल रहती थी, अब सुन्दर और शिष्ट प्रतीत होती थी शाम से ही आज समारोह मन रहा था और रात भर इसी तरह जशनमे बीती थी गाती बजाती अब वे यहाँ मण्डी मे आ पहुँची थी किराय के तीन साजिन्दे भी उनके साथ थे वे अपने बाजो से उनका साथ दे रहे थे कुछ उनमें से अपने गिलास आपस में बजा बजा कर एक दूसरी पर ताडी उछालती और मगन हो कर एक दूसरे का चुम्बन लेती थी कुछ यो ही शराब को गिलास में और मेज पर बिखरा रही थी कुछ ताली बजा-बजा कर हा गाने में साथ दे रही थी वे नाचती, आहें भरती चीखती, चिल्लाती वहाँ होली-सी मचाय थी कुछ यों ही पसरी बठी थी इन सब के बीच में एक पतालीस वषकी भरी काया की प्रमदा, जिसका सौन्दय अभी चला न गया था, ओठ जिसके भरे और लाल थे, आँखें उन्मत्त और सरस थी और उनमें से मद विलास की विह्वलता छलक रही थी, फिरकिनी ले-ले कर नाच रहीं थी नृत्य की सम्पूण कला और समस्त सौन्दय इस के करतब पर खतम

कुर्बान समझिए, वह फिरकनी की तरह जोर से घूम जाती और कभी
सिर झुका कर अनोखी चितवनसे लोगों को ऐसे देखती कि, आह !
और फिर एक दम से सिर पीछे फेंक कर पलक मींच कर अर के साथ
दोनों बाहें दाऐं बाएं फैला लेती उसकी छीटदार वेस्ट के नीचे स्व
तन्त्रता पूर्वक आन्दोलन करते हुए दोनों उसके प्रशस्त वक्ष भी हिल हिल
कर नृत्य पर ताल दे रहे थे कभी एडियां और कभी प जाक बल
उचक-उचक कर वह नाच रही थी और बीचमें गाती भी जाती थी

बाहर बासुरी बज रही है
कैसा मधुर उसकी लय सुन पडती है
मा मेरी गहरी नींदमें बद है
पर प्यारी राह तो देखती हो, म
मैं मिल न सकूगा

यही थी जिसे लखनपाल जानता था यही वह थी जिसके यहां
सिर्फ वह खाना खाता था पर जहां उसे उधार भी खा ना मिल
जाया करता था उसने एक दम लखनपाल को पहचाना, द ौडी आई
से चिपटा लिया, और जोर से अपने अकस कस कर सीधे उसके ओठो
। चुम्बन ले डाला फिर उसने अपनी बाह सामने फैलाइ, उ गलियोंका
नचाया, हथेलियों का मला और मिठास से कूजना शुरू किया, 'ओ
ऐ न ह मालिक, ओ मेरे सोने चांदी के बाबू मेरे प्यारे म तुम्हारी
बी हूँ, हूँ न ? और तुम मुझे माफ कर देना हमने खूब पी है और
मस्त हो रही हूँ हो रही हू तो क्या है, आज बहारका अ दिन है'
र वह उसके हाथ चूमनेकी कोशिश उसकी तरफ तीरकी तरह छूटी
'आह, म जानती हूँ, तुम मगरुर नहीं हो जैसे और बाब लोग होते
प्यारे, लाओ, हाथ बढाओ म इन तुम्हारे छोटेसे हाथो का चूमना
हती हूँ नहीं, नहीं नहीं म कहती हूँ, म चाहती हूँ "
"यह क्या कहती हो, गुलाबा चाची लखनपालने टोक कर कहा,
र अप्रत्याशित रूपसे उसकी तबियतमें रंग चढ आया 'ऐसे नहीं
भी, यही ठीक है ओठो का बोसा ही ठीक है तुम्हारे म ीठ मिसरी

हो रहे ह, चाची, मिसरी"

ओह, मेरे जिगर, मेरे सूरज, मेरे चाद, मेरे फरिश्ते," गुलाबो अतिशय स्नेह सिक्त हो गई

'लाओ मुझे अपने ओठ दो प्यारे, लाओ आह, कसे नन्हें नन्ह ओठ " उसने जोर से उसे अपनी छाती से कस लिया और उसके मुह का भरपूर चुम्बन लिया और उसके बाद वह उस घरे के बीचमें ले आई और बड गव के साथ धीमे धीमे कदमो से अदाके साथ कमर झुका कर उसके चारो ओर परिक्रमा देती हुई गाने लगी

आह, हरेककी अपनी अपनी चाह है,
मुझ वही चाहिए, और यहा
पजामेके अदर मेरे ननान जगा है,
और उसके घाघरे में भी कुछ है

और फिर एकाएक बाजक स्वर से उतप्त होकर वह उन्मत्त नृत्य नाचने लगी—

ओ दैय्या, यह तो ज्यादती है,
कपडा तुम्हारा सन गया है, बहद सन गया है
पर, बीरन, बिगडो नही
भीग गए हो तो साफ कर डालो
तिरालला, तिरालला
सोई रह, छिमिया, हिलजुल मत
तू जानती है कोई तेरे सग सोया है,
सब जानती है, क्या बनती है ?
अपने को ठग मत, चल
त था, त था, तिरालला

सतनपाल की धमनियोंमें खून गर्माकर तेजीसे दौडने लगा था और वह खूब मदमस्त हो गया था वह भी बकरेकी तरह उसके आसपास कूदने लगा लम्बें हाथ, लम्बे पैर, कमर झुकी, उसका अजबसा हुलिया बन आया था उसके प्रवेशपर चारों ओरसे स्वागतका हुपनाद हुआ उसे

एक मेज पर बिठाया गया, उसकी खातिर की गई उसने अपनी तरफसे कसर नही की एक पहचानवालेसे उसने भी शराब मगा भेजी और भरा गिलास हाथमे ले वही तीन गरमा गरम भाषण दे डाले पहला तो प्रबन्ध प्रान्तके आत्म निर्णय की स्वाधीनता पर दूसरा इस प्रान्तकी अगनाओके सौंदय और स्वास्थ्यकी अपेक्षा यहाके भोजनकी प्रशसामें और तीसरा जाने क्या, दक्षिणी रूसके व्यवसाय और व्यापारके सबधमे गुलाबोके बराबर बैठकर वह रह रहकर उसकी कमरमे हाथ डालकर उसे अपने अकमें कसनेका यत्न कर रहा था वह भी इसका विरोध नहीं कर रही थी पर उसकी लम्बी बाहोमें भी उस स्त्रीकी स्थूल देह समा नही रही थी लेकिन तो भी मेजके नीचेसे स्त्रीने अपने दड मुलायः गमगिरम हाथोसे लखनपालका हाथ पकडकर खूब जोरसे दबा दिय एसे जोरसे कि

इसी वक्त इन औरतोमें, जो अबतक एक दूसरेको प्रमालिगन क रही थी, कुछ पुराने चले आए वमनस्यकी बातें उठ आई उनमस दो नं एक दूसरे की तरफ मु हकर, जसे पालेम छुटी दो तीतरी हो, बाहे फल एक दूसरेको बन्यिासे बढिया, छटो सेन्छटी गालिया देकर कोस रहं थी और बढी चढी चली आ रही थी

एक चिल्लाती, बुढिया, बदकार, कुतिया ! तू यहा, यहा भी मुभ जबानसे चाटने लायक नही है, छिनाल ! ' अपने दुश्मनकी तरफ पीठ फर कर अपना अधाभाग दिखाकर और वहा हाथ थपक थपककर कहती, 'यहा, यहा, यहा !'

दूसरी क्रोधम तपी हुई जवाबम चीखकर कहती, "तू झूठी है झूठ बकती है हरजाइन मैं हू लायक म लायक हूँ"

लखनपाल जाग गया और उसने इस मिनिटको गनीमत माना जस उसे कोई बात याद आ गई हो, वह बेंचसे कूद पडा और बोला, "चाची गुलाबो ठहरना म अभी पाच मिनिटम आता हू, अभी' और खडे लोगोंके दायरेमेंसे गोता लगा कर पार हो गया

"बाबू बाबू,' उसकी पडोसिन उसके पीछ बोलती रही, 'जल्दी

वापस आना जितनी भी जल्दी हो उतनी मुझे तुमसे एक बात कहनी है"

मोडसे पार होकर वह जैसे सोचनेके यत्नमें लगा, 'इसी मिनिट क्या खास बात है जो उसे करनी है' फिर भी कहीं अपने बहुत भीतर वह खूब जानता था कि उसे क्या करना है किन्तु उसे अपने समक्ष स्वीकार कर भी मानो उसे वह टाल रहा था अब दिन साफ चमकीला हो चला था नौ दस बज गए होंगे, सडक पानीसे साफ की जाने लगी थी फूल वालिया अपने फूलोंकी डालिया ले बाहर निकल आई थी शहरमें जान पड रही थी, सब कुछ हिलने और खिलने लगा था सडक परसे धड-धडाती एक गाडी निकल कर चली गई उसपर सीकचेदार एक बन्द पिंजडेमे हर उम्र, हर रग, और हर नस्लके कुत्ते बन्द थे, और कोच-बक्स पर म्युनिसिपलिटीके दो कुत्ते पकडने वाले जमादार रौब दौब से सतर बठे थे वे अपने आज सवेरेके मालके साथ इस तरह लौट रहे थे

'अबतक वह जग गई होगी' लखनपालकी प्रच्छन्न इच्छा अब विचार बनकर स्वरूप धारण कर रही थी, 'और, अगर वह न जगी हो तो तो मैं भी वहीं जरा तख्त पर लेटकर आराम करना चाहता हू'

बरामदेमे टिमटिमाता तेलका दीपक काली रोशनी देता पहलेकी तरह धुआ उगल रहा था, और उसमें दिनका भीगा सा अधियारा प्रकाश मुश्किल से रोशनदानोंसे आता जाता था कमरेका दरवाजा आखिर बे ताले खुला ही रहा था लखनपालने, आहट न हो ऐसे, दरवाजा खोला और अदर घुसा हल्की, धीमी, नीली-सी रोशनी खिडकी और परदोंके दरवाजोंमसे छनकर आ रही थी कमरेके बीच आकर लखनपाल ठहर गया सोती लुबीके श्वसोच्छ्वासकी शांत आहट उसने ली मानो कोई तीखी भूख उसे सता रही थी उसके ओठ ऐसे खुश्क और गम हो आए थे कि वह उन्हें स्वय बराबर चाट रहा था, और उसके घुटने काप रहे थे अकस्मात एक सूझ उसमें चमककर उठी, 'पूछू, कि क्या उसे कुछ चाहिए?'

शराबीकी तरह, मुह खुला, ओर जोरसे सांस लेता, कांपती टागो

लडखडाता हुआ लखनपाल उसके बिस्तरकी ओर बढा

लूवी चित्त सो रही थी एक हाथ बराबर म फला था, दूसरा छाती पर रखा था लखनपाल झुका, पास झुका, और पास झुका उसके ओठोंके किनारे तक ही उसका मुह आगया वह ठीक गहरे सास लेती लेटी थी उसके युवा स्वस्थ देहमसे आता हुआ यह श्वास, नीद मे थी तो क्या, मिठास और सुरभिसे भीना था उसन धीमे धीमे उसकी खुली बाह पर अपनी उगलिया फरी देहमें बिजली सी दौड रही थी उसने उस सोती हुईकी छाती पर, जरा नीचे, हलकेसे छूआ यह म क्या कर रहा हू ?' मानो उसके भीतरसे कुछ वस्तु, भयाक्रात, जसे उत्तर मागती हुई नीरव चीख स चिल्लाई लकिन तत्क्षण ही न जाने किसने लखनपालकी जगह बैठकर जवाब दिया, 'अरे, तुम तो कुछभी नहीं कर रहे हो तुम तो सिफ पूछना चाहते हो कि वह आरामस ता सो रही है न उसे कुछ चाय वाय तो नही चाहिय ?'

पर उसी समय लूबी ने आचानक आंख खोली आखें खुली, फिर झपी, फिर खुल गइ इद्र धनुषकी भांति उसने अगडाई ली फिर अगडाई ली, और अनजान, अनायास, तप्त पीत मुस्कराहट से वह मुस्कराई और उसी प्रकार अनायास निंदासे स्नेहक झोकमें अपनी दोनो बाह लखनपाल के गले में डाल रही

पुचकार कर कुछ निन्दासी आवाज में प्रम पगी बोली म कूज कर उसने कहा 'मेरे प्यारे, मेरे राजा क्यो रूठ हो ? म तो तुम्हारी राह ही देखता रही देखते-देखते मुझे तो गुस्सा भी आ गया था तब फिर मुझे निंदिया आगई नीदम सारी रात तुम्हें ही देखती रही मेरे पास आ जाओ, मेरे राजा, मेरे गुलाब' और उसने उसे खीच कर अपने छातीके निकट ले लिया

लखनपाल ने विरोध किया एसा न जान पडा उसकी देह सारी काप रही थी जसे सर्दी लगी हो और भिचे दात और उखडी धीमी आवाज में दोहरा दोहरा कर उसने कहा 'नही, नहीं लूबी यह नहीं,

'सच ल्युबा, यह न करो आह, छोडो ल्युबा, मुझ जाने दो

_ देखो, लाचार नही किया करते यो न करो देखो, फिर मैं नही जानता रहन दो लुबा, परमात्मा के लिए "

'मेरे भोल, मर पागल प्यारे," हस कर कपोलीके से स्वरमें उसने कह', "आओ, मेर प्रान, आओ" और अन्तिम लगभग अनमन विरोध को जीत कर उसने लखनपालके मुहको अपने से सटाकर लगा लिया और जार म एक जलता हुआ चुम्बन रो लिया चुम्बन ! जैसा कि अपन इतन जीवन म पहली बार उसने पाया सच्चा, सम्पूण, अगारे सा लाल

आह, ढोगी, तू क्या कर रहा है ? अरे, मैं क्या कर रहा हूँ ?' किसी सच्ची, हित वादिनी, पर फिर भी पराई वाणी ने लखनपालके भीतरस कहा

कुछ देर बाद, साभार, सस्नेह लुबी ने लखनपाल के ओठो को उपसहार भावसे चूम कर कहा "अब कुछ तुमको सच चैन पडा कि नही, क्यो, मेरे भोले बाबू, ओह, मेरे राजा 'लो, अब जरा सो लो "

१२

दारुण अन्तर्वेदनाके साथ अपने प्रति, लुबीके प्रति, मानो सारे जगतके प्रति घोर वितृष्णा और घृणाका भाव लिए लखन पाल वैसेही बे कपडे उतारे उस तख्तपर पड गया लज्जाकी चोटसे वह दात भीच रहा था उसे नीद नही आती थी विचार वही इस लुबीको ले आनेके मूल कृत्यके चारो ओर आवत देकर घम रहे थ उस कृत्यमें यदि एक गम्भीर गहन तथ्य था तो साथही कैसा दुर्बोध माया मोहका जाल भी उससे लिपटा था वह दृढताक साथ बार बार अपने भीतर दुहराता था "खैर हुआ एक बार जो मने वचन दिया उसे निभाना होगा और जो अब हो गया है फिर न हो पायगा मेरे परमात्मा, अवरुद्ध कामावेगमें कुछ क्षणोके लिए कौन स्खलित नही होगया है ? किसी विचारकने कैसा गम्भीर गहन सत्य प्रतिपादित किया जब उसने कहा, 'मानवीय आत्माकी महत्ताको नाप

उसके पतनकी गहराई और उसके स्वप्नाकी ऊंचाईके अतरसे होती है '
लेकिन तो भी इस मूर्खताका म क्या बनाऊँ उस विचित्र तार्किक पथ
कार पवनजयके जादू और अपने विजयके अनथ आवेशका म क्या बनाऊँ
जैसे कि यह सब कुछ वास्तविक नही है, घटनात्मक नही है मानो यह
सब किसी समस्यात्मक (क्या किया जाय नामक) उपन्यासमें वर्णित
काई कहानी है और किस मुहम, किन आखास अब कलम उस लडकीका
तरफ सिर उठाकर देखूगा ?"

उसके सिरमें आग लग रही थी, धूआ भर रहा था उसके पलक माना जल रहे थे ओंठ सूख रह थे सिगरेटपर सिगरेट पीकर फूक रहा था, बार-बार अपनी जगहसे उठकर गिलास मजस उठाकर वे तहाशा पानी पीरहा था आखिरकार ज्यो त्यो भटकेसे अपनेको बीते कृत्यके जालसे तोडकर वह स्वयको अलहदा कर सका तब स्वप्नहीन, चिताहीन घनी, काली रुई सी मुलायम नींदने उसे आ घरा

दोपहर बीते दो या तीन बज वह उठा पहल तो कुछ देरतक अपने आपेमें नही आ सका उस कुछ सुध न थी उसने आठ भिगोय और भारी चाधियाई आखोसे कमरकी तरफ देखा जो रातमे हो गुजरा था अब सब उसके सरमसे गायब होगया था पर जब उसने लुवीका देखा, देखा कि वह शान्त, निश्चल, घुटने पकड बिस्तरपर बठी है सिर झुका है और हाथमे उस थामे है तब वह भीतरही भीतर घबराहटमें विमूढहाकर गुर्राने सा लगा अब तक उसे सब कुछ याद आगया था और उस क्षण उसने अपने भीतर अनुभव किया कि अपनीही आखोसे अपनेही रातके दुष्कमके परिणामको इस उजले होकर उगते हुए दिनके प्रकाशमें देखना कितना असहनीय होता है

लुवीने स्नेहस पूछा, "तुम जग गए प्यारे '

वह बिस्तरमे उठ आई और तख्त तक आकर लम्बन पालके पायत बठ और कम्बलसे ढकी उसकी टागाको धीमे धीमे थपकने लगी

'क्यो म ता बहुत देरकी जगी हू हा तबस बठी थी तुम्हे जगानेकी तबियत नही हुई तुम गहरी नींद सोरहे थ

वह उसके मुखकी ओर बढ़ी और उसका चुम्बन ले लिया लखन पालने खट्टा मुह बनकर धीरेसे उसे अपनेसे परे हटाया

"ठहरो लुबी, ठहरो यह जरूरी नही है समझी ? इसकी कभी, बिल्कुल जरूरत नही है, बिल्कुल नही जो कल होगया था न, वह सयोग समझो, एक दुर्घटना मेरी कमजोरी थी समझी न ? मेरी नीचता कह सकती हो हा, मेरी ही नीचता थी लेकिन परमात्मा साक्षी है, मेरा विश्वास करो, म मैं यह नही चाहता था म तुम्हे अपनी वह नही बनाना चाहता था मै तुम्हे अपनी सुहृद अपनी बहन, अपनी सखा खैर, जाने दो, हुआ हुआ अब सब अपने आप ठीक हो जायगा बस हमें हिम्मत नही हारनी होगी और इस बीच प्रिय क्या तुम जरा उस खिडकीकी तरफ जाकर बाहरकी बहार देखोगी म इतने अपने कपडे वपडे ठीक पहन लू'

लुबीने जरा ओठ निकाले और लखनपालकी तरफ पीठ मोडकर खिडकी की तरफ चली गई मित्रता, सत्य सुहृदभाव और भ्रातृ भाव की बातोका एक भी शब्द वह अपने नन्हेसे सीधे-सादे दिमागके बल पर नही समझ सकी यह कि एक कालेजमे पढनेवाला विद्यार्थी जो अभी तक कुछ नही है तो क्या, जो पढा लिखा है, एक रोज वकील, डाक्टर, जज, कुछ भी बन सकता है उसीके साथ वह रह रही है इतने भरसे उसकी कल्पना कही अधिक गौरवान्वित होती थी पर अब उसे यह दीख रहा है कि यह महाशय उसे ने तो आए और उससे अब अपना मन चाहा पा जो चुके सो अब छूटकर निकले जा रहे है ! ये सब एसे ही होते है, सब मर्द

लखनपाल जल्दीसे उठा जल्दी जल्दी कुछ अजुल पानी फेंककर मुँह धोया, एक पुराने तौलिएसे मुह पोछा और पर्दे उठाकर खिडकिया खोल दी सुनहरी धूप नीला आसमान शहरकी गडगडाहट, पेडोकी हरियाली, घोडोके गलाम बधी घण्टीकी आवाज, धूपके स्पर्शसे धरतीमसे निकली मिट्टीकी सोधी गध—य सबकी सब खिडकी खुलते ही मानो एक साथ उसकी छोटी-सी कोठरीमें भागकर भर आईं लखनपाल लुबी

के पास गया, प्रेमसे उसके कधे थपके कहा, कुछ परवाह नहा, मेरी फूल जो हुआ वह अनहुआ तो हो नहीं सकता पर आगके लिए उसम हम सीख ले सकते ह क्या तुमने अबतक अपने वास्ते चायक लिए नहीं कहा, लुबी ?'

नहीं म तुम्हारी बाट देखती थी और जानती नहीं किससे कहती अच्छा बताओ, तुम मुझसे नाराज हो ? क्या, जब तुम अपने मित्रके साथ गए थ तब थोडी देर बाद लौट भी थ क्या नहीं लौट थ ? मने आहटसे जान लिया था, तुम लौट हो और तुम दरवाजके पास ही कुछ देर खड रहे फिर चले गए क्या, तुमने मुझ नमस्त भी नहीं की ? यह ठीक है ?'

लो, घरलू झगडा नबर एक ! लखनपालने सोचा हसी हसीमें अपनेपनके साथ ही सोचा, पर मनमें मल न था,

अभी जो हाथ मु ह धोकर ताजा हुआ था उससे, आकाशके सुनहले नीले सौदयके कारण, कुछ राजी कुछ नाराज लुबीके मनोहर चेहरेकी वजहसे, और इस चेतनाक परिणामस्वरूप भी कि वह मद है और यह जो कुछ यहा बना बिखरा है, वह उसकी ही करनी है लुबी उसकेलिए जिम्मेदार नहीं —इनसब बातोस उसके भितर ताजगी और क्षमता आई हठात उसने अपनको सभाला दरवाजा खोल कर बरामद में जाकर उस अधेरेमें से ही चिल्लाया, सिकदरा, चाय दो रोटी, मक्खन और सोसेज सुना ? और एक बोतल भी"

चट्टियो की आवाज बरामदम से ही सुनाई दी और दूरसे ही किसी ने उसरपके स्वरम कहा 'चिल्ला क्यो रहे हो जी, शोर क्या मचा रहे हो ? हो हो, जसे अस्तबलम घोडा हिनहिनाता हो तुम अब बच्चे नहीं हो खासे बडे हो गए हो, फिरभी क्या उजड्ड से बने रहते हो ? बताओ क्या चाहिए ?'

और कहत कहत कमरमें छोटीसी देहकी एक वृद्धा स्त्रीका प्रवेश हुआ छोटी छोटी लाल पलकाके बीचम आख एसी थी जैसे दो तग दरार मुह सफद कागज-सा कोरा था, जिस पर बस नाक उठ कर

नुकीली नीचे को लटकी जारही थी इसका नाम एलक्जन्दा था, विद्यार्थियोंके रहनेके कमरोंमें ही वह पल कर बूढी हुई थी लडका की सहायक भी यह थी और महाराजिन यही बातून, भक्की, एसी यह पैंसठ वष की बुढिया थी

लखनपालने अपना आडर दुहराया और एक रुपए का नोट उसके हाथो थमाया पर हमारी वह बुढिया इसपर चली नही गई, खडी खडी, नही तो इसी कमरेमे इधर उधर चल चला कर यह समय बहलाती रही और ओठ चबाती बड बडाती और दरवाजे की तरफ पीठ किय बठी लुबीकी तरफ द्वेष पूवक दखती रही

लखन पालन हसकर पूछा, "सिकन्दर, क्या हो गया है तुम्ह जो एसी भूतसी बन रही हो? या तबीयत आगई है! तो सुनो, यह मेरी मेरी बहन है ल्यु ल्युबोव ' क्षणभर जैसे वह खागया और फिर बोल चला, 'ल्युबौव दैमेलेवना लेकिन मेरेलिए बस लवी म उम तबसे जानता हू जब वह इतनीसी थी" उमने हाथके इशारेस फुटभर ऊचा होनेका सकेत किया "और म उसके कान खीचा करता था बडी दगई थी और मैं उसे चपतियाता था और और म रगबिरगी तितली पकडकर उसे देता था और फूल और लेकिन तुम तुम अपनी बात तो कहो पत्थर-की मूरतसी जमी क्यो खडी हो ? चलती फिरती नजर आओ"

लेकिन बुढिया वही रही, गई नही चारो तरफ परोंसे मानो फश कुचलती हुई वही डोलती रही, दरवाजकी तरफ नही बढी उसकी तिरछी पनी चिपली निगाह बराबर लुबीपर गडी थी और अपन पोपले मुहसे बड बडा रही थी, 'बहन ! इन चचेरी मुमेरी बहनोको हम खूब जानती ह कस्टन बाग्राके आसपास एसी बहन बहुतेरी घूमती रहती ह पर इन मुई कुतियाका जी कभी भरता हो तब ना '

'ओह बुढिया, बदजात चुप रह बक मत" लखन पालन डपटकर कहा, 'नही तो म भी उस ट्रसवकी तरह तुझ कोठरीमें मूद दूगा और चौबीस घट तक तुझ मूदे रहना पडगा '

सिकन्दरा चली गई और बहुत देरतक उसके पके धीमे कदम और

उसकी बड़बड़ानेकी आवाज बरामदेमेंसे सुनाई देती रही अपन बुढ़ापेमें वह पढ़नेवाले लड़कोंको बहुत कुछ माफ कर देती थी कम ज्यादह चालीस बरस वह इन्हीं लड़कोंकी खिदमतम रही है वह शराब पीते, ताश खलते भगड़ते चिल्लाते बकबक करते—इस बुढ़ियाके निकट उन्हें सब माफ था लड़कोंके लिए उसके दिलम बड़ी जगह थी पर, अफसोस उसका विवाह न हुआ था वह उम्रभर क्वारीही रही और इसलिए एक बात थी जिसके लिए उसकी मनपित अछूती आत्मामें कोई जगह, कोई माफी न थी और वह—यही चरित्रकी खराबी ?

१३

"वाह, भई वाह क्या खूब" लखन पाल स्फूर्तिकी अनिवार्यतामें एक तीन टागकी मेजके चारों तरफ उचक कर और फुदककर और बेजरूरत चायके सामानको इधर उधर हटाता हुआ कह रहा था ' आह, कबसे, मुद्दतसे मने चाय नही पी यानि वह कि जिसे चाय पीना कहे बाकायदा, आरामसे, भले मानसकी तरह घर बैठकर जो चाय पी जाती है वह चाय बठ जाओ लुवी बठ जाओ लो, यहा तख्त पर आ बैठो देखो, अब सब काम तुम्ही हाथम लो बाहका तो शायद तुम सबेरे सबेरे पीती नहीं ! इजाजत हो तो म दो एक घूट लेलू इससे जी खिल जाता है मेरी चाय, दखो तेज बनाओ म तेज पीता हू वाह गरमागरम चायके गिलाससे बढकर भी क्या कुछ चीज है ? और जब साकी तुम सी हो, तब बस '

लुवी उसकी सब चपर चपर सुनती रही उसकी बातें वाचाल मुखरता और वेगसे एसी भरी थीं कि स्वाभाविक नही मालूम होती थी लुवीकी मुस्कराहट जो पहले शकाशील और जरा सदिग्ध थी अब कोमल हो कर खिल चली पर वह ठीक तरह चायके साथ नही चल सकी अपने देहातके घरमें यह चीज उसके लिए शौककी चीज थी वहा सपन्न घरोंके लोग भी उसका शौकिया ही उपयोग करते थे परिवारोंमें खास

महमानोंके आनेपर तीज त्योहारके दिन ही चाय तयारकी जाती थी तब बाकायदा घरके सब जन जमा होते और कुटबका सबस प्रधान व्यक्ति मेज पर बठकर लोगोको मानो साधिकार, चाय देता उसके बाद जब लुवी एक शहरमें पहले एक पादरीके यहाँ रही और फिर इ श्योरेन्स एजेन्टके यहा (यही था जिसने उसे पहले पहल वेश्या वृतिके माग पर डाला) तो वहा अक्सर मेजपर बची कुची ठण्डी चाय और मालकिनकी कृतरी कभी कभी चीनीकी एकाध डली उसे मिल जाती थी वह मालकिन पहले उस पादरीकी पीली दुबली डाह भरी औरत थी फिर मोटी कजूस भली और नीची जातिवाली एजेन्टकी पत्नी उसकी दूसरी मालकिन हुई इसलिए जसे बचपनम हम सबके लिए दाएँ और बाएँ हाथको पहचानना जैसी सुगम बात असभव होती है, वसेही यह चाय बनानेका सीधा-सा काम उसे दूभर होता था तिसपर यह उत्कठित चपलगति लखन पाल और भी उसकी मुसीबत और मुश्किल बढा रहा था

'प्यारी, चाय का बनाना भी एक कला है इसे तो कोई बस मास्कोम सीखे पहलेतो सूखे एक खाली चायके बतनको जरा गरम किया फिर उसमें कुछ चायकी पत्ती रक्खी और झट जरा उबलते पानीसे उसे धो लिया धो लिया,-समझी न ? यह धोवन अलहृदा फेंक देना चाहिए चाय इस तरह साफ हो जाती है और खुशबू देने लगती है और फिर अपना तरीका तरीका है सुनते ह, चीनी आदमी यो ही अपनी चाय बना बनू लेते ह जगली जो ठहरे इसके बाद फिर नया पानी डालना चाहिए कोई चौथाई चायके बतनको उबलते पानीसे भर दिया और ऊपर तौलियामे ढक कर उसे तीन चार मिनटके लिए योही छोड दिया, छुडा नही फिर और उबलता पानी डाला यहाँ तक कि ऊपर तक भर दिया फिर उसे ढक देना चाहिए, और कुछ देर नही छेडना चाहिए तब वह चाय तयार होगी कि तुमभी कहो, हाँ ! खुशबूदार, लहलहाती, ताकत वर"

लुबीका सु दरसा देहाती चेहरा सुन सुनकर लम्बा और तनिक पीला साही पडता दीखा "परमात्माके लिए देखो, तुम क्या ? क्या

लखनपाल ? यही न ? तो देखो मेरे प्यारे लाखन, मुझसे नाराज मत होओ मैं जल्दी सीख लूंगी मैं सब झट सीख लेती हूँ अब तुम मुझे सदा 'तुम तुम' क्यों कहते हो ? हम आपस में अनजान तो नहीं रहे' कहकर उसने सकरुण दृष्टिसे उसे देखा सचमुच, अपनी इस अभागी छोटी जिन्दगीमें आज पहली बार सबेरे उसने स्वच्छास अपनी देह किसी को दी थी, जब न पसका कोई ख्याल था, न बलात्कार, न लाचारी, न बरखास्त होनेका डर और न और कोई बाहरी कारण यदि सचभी हो कि अबभी उस समर्पणमें आनन्द और कृताथ भावकी सपूर्णता न थी फिरभी हार्दिकताके साथ अपने भीतरकी कृतज्ञता और स्नेहके आवेगके कारण ही उसने अपनेको इस विद्यार्थीके अरम समर्पित किया था उस का स्त्रीहृदय प्यासा सपुटित प्रमके सूर्यके प्रति सदा सूरजमुखीकी भाँति उन्मुख हृदय इस क्षण पवित्र, स्नेहके उल्लाससे भर रहा था

किन्तु तभी एक दम इस नारीके प्रति, जो कल उसकेलिए कोई न थी और आज उसकी परिगृहीता है, इस स्त्रीके प्रति लखनपालमें निरादर और द्वेषका भाव हो आया एक विषम ग्लानि और तज्जनित सकोच में वह घिर उठा 'यह गृहस्थ सुख (?) का आरभ होता है — उसने हठात सोचा फिरभी वह कुर्सी से उठा, लुबीके पास गया और उसका हाथ लेकर अपनी ओर खींचा, उसे सिरपर थपथपाया और अत्यन्त स्नेह से (दम्भपूर्वक) कहा, 'मेरी प्यारी बहन सच, जो आज हो गया है अब कभी न होने पाएगा कसूर सब मेरा है मेरा ही दोष है कहो तो घुटना गिर करमें तुमसे क्षमा मागनेको तयार हू सुनो लुबी, यह सब मेरी मर्जीके खिलाफ, मेरे बावजूद, जाने कैसे अचानक बेजाने हो गया मैं नहीं जानता था कि ऐसा हो जायगा पर तुम समझ सकती हो, मुद्दतसे मैं मैंने किसी स्त्रीको पास से नहीं पाया नहीं जाना सो जाने क्या जालिम बेबस मेरे भीतर से उठ आया और लेकिन हे राम, मेरा अपराध क्या इतना बड़ा है ? पवित्रजन त्यागी सन्त सन्यासी गुहावासी—इनकी सयम साधनाके आगे मैं क्या चीज हूँ पर ये तक इस शरीरके दानवी प्रलोभन के सामने कब

कब ठहर सके हैं ? पर जिसकी चाहो उसी की सौगंध, मैं कहता हूं कि अब फिर यह नहीं होगा, नहीं होगा, ठीक है न ?"

लुवी बराबर अपने हाथ से उसका हाथ अलग दूर करने की चेष्टा कर रही थी उसके ओठ जरा निकल आए थे और झुकी पलकें बार-बार मिच रही थीं "हां," उस रूठे बच्चे की तरह वह बोली जो मानने से इकार करता है, "मैं देखती हूँ, मुझसे कुछ नहीं होगा तो, अच्छा हो तुम मुझसे सीधे यह कह दो, मुझे गाडीका भाडा दे दो, और ऊपरसे जो तुम चाहो एक रात के दाम तुमने चुका ही दिये हैं, बस मैं बैठ फिर वहीं पहुँच जाऊगी "

लखनपाल दोनों हाथोंको अपने सिरके बडे-बडे बालोंमें उलझाए कमरे में इधर उधर डोलने लगा बोला, 'ओह नहीं, वह नहीं मुझे समझो लुवी जो आज सवेरे हो गया है, उसे उसे जारी रखना बेहयाई है, गधापन है किसी आत्माभिमानी के लिए असभव है प्रेम ? प्रेम, यह दो भिन्न धाराओंके, दो हृदयोंके, आत्माओंके, दो व्यक्तियोंके मिलकर एक हो जानेका नाम है सिर्फ शरीरोंका सयोग नहीं प्रेम एक जबरदस्त प्रबल भावना है विश्व व्याप्त, वैसी ही शक्तिमान साथ बिस्तर पर पड रहना प्रेम नहीं है, लुवी वैसा प्रेम हम दोनोंमें नहीं है यदि वह आएगा तो मेरे तुम्हारे लिए परस्पर स्वर्ग उपस्थित हो जायगा लेकिन तब तक मैं तुम्हारा मित्र हू तुम्हारा स्नेही, सखा, जीवनके मार्गपर सदी यत तुम्हारा निश्छल सगी और बस उतना ही पर्याप्त है और अगरचे मैं मानवीय दुर्बलताओंके प्रति अजेय नहीं हू, फिर भी मैं अपनेको ईमानका और नीयतका साफ आदमी गिनना चाहता हू "

लुवी सोच में पड गई वह समझता है मैं चाहती हू कि वह मुझसे शादी करे और मैं कहती हू, मुझे उसकी बिल्कुल जरूरत नहीं खिन्न होकर उसने सोचा—क्यों जी, ऐसे ही रहे आना भी तो सभव है और भी तो हैं जो इसी तरह रह रहे हैं और वे कहते हैं, आगके चारों तरफ फेरे डालनेके बाद जैसे वे रहते शायद उससे और मजेमें ही रह रहे हैं इसमें तब ऐसी क्या खराबी है, क्या पाप है ? कैसा भला, प्यारा, अच्छा

सुंदर जीवन है वह म उसके लिए बढ़ी मोज बुना करूं गी, घर साफ रखूं गी, खाना बनाया करू गी पर, खाना सादा होगा और ब्याहकी बात है, तो किसी भले मालदार घरकी लडकी उसे मिल जायगी और ब्याह हो जायगा और ठीक है, हो जाय तब, सच, वह मुझे कपडे लत्ते छीनकर तो एकदम बाहर निकाल ही नही देगा नहीं, वह बहुत भला भोला है और जरा बातून है तो क्या, इसमें भूल नही हो सकती कि वह नेक आदमी है वह जरूर मेरा ख्याल रखेगा मेरा कुछ बन्दोबस्त जरूर कर देगा और शायद है कि धीरे धीरे वह मुझसे निभ भी जाय और मुझ नापसन्द करना छोड दे म सीधी सादी हू मेरे जी में कोई साध, कोई अरमान भी नही है, और मैं कभी उससे झूठी नहीं हो सकती मैं कभी उससे छल नही करूं गी क्योंकि लोग कहते हैं ऐसा होता है लेकिन म कुछ नही कहूंगी, कुछ नही वह रातमें फिर मेरे पास आयगा और आज ही रात आयगा, यह तो पक्की बात है इसमें मुझे रत्ती भर भी शक नही है, जैसे परमात्मामें शक नही"

और लखनपाल भी विचारोमें डूबा था चुप, विपण्ण, वह अपनेको उस बडे दायित्वके भारी बोझके नीचे दबा अनुभव कर रहा था जो उसने हठात् उठा तो लिया है, पर जो उसके बूते के बाहर है इसलिए जब उसने सुना कि बाहर कोई थपथपा रहा है तो उसे आराम मिला और उसने अनायास उत्तरमें कहा "आओ भाई" दो विद्यार्थी अन्दर आए एक सोमदेव और दूसरा वही नेजरस, जो उस रात यहीं सोया था

बलिष्ठ देह और तनिक स्थूल आकृति, चौडा चेहरा, नीचे छोटीसी नुकीली डाढी—यह सोमदेव था हँसमुख, हार्दिक, नेक दिल विद्यार्थी था हर एक यूनिवर्सिटीमें ऐसे कुछ लडके होते ह वह अपने खाली वक्तको—और दिनके चौबीस घटे उसके लिए खाली ही थे—शराब खानोंमें चक्कर लगाने घूमने घामने, बिलियर्ड ह्विस्ट खेलने, अखबार उपन्यास पढ़ने या सरकस दगल देखनेमें काटता था इन्हीं के बीचमें जो वक्त मिल गया उसमें खाने, सोने, सुई धागा लेकर अपने कपड़े सीने समालने और घरके और छोटे मोटे धंधे समेटनेमें लगा देता था और

कहीं राहमें या कमरेमें या रसोईमें कोई स्त्री मिल गई तो उससे नितान्त पार्थिव प्रमका व्यापार चलानेका काम भी वह इसी वक्तमें कर लिया करता था अपने सकिलके और सब लडकोकी तरह वह भी अपने को क्रातिवादी मानता था मगरचे राजनैतिक झगडो और दलबन्दियो से और आपसी कहासुनी या टटे बखडो से वह दूर रहता था और उन्हें सख्त नापसन्द करता था क्राति वादियोके अखबारो और ट्रैक्टोको पढ़नेकी उसे फुरसत न थी, इससे वह क्रातिके काम धाममें एक तरह निरा कोरा ही था इसीसे पार्टीकी पहली सीढी पर भी वह नही पहुच पाया, यद्यपि कई बार उसे कई भदकी बातें भी बताई गई जो उसे स्पष्ट तो न समझ पडी, पर जो जोखिमकी थी लेकिन उन्हें याद रखनेकी जरा ऐतिहात वह न रख सका पर उसकी निश्चल दृढ़ताका सबको भरोसा था वह जो काम करता, झट, सही और सीधे बढकर करता जो हाथ में लेता उसे पूरा करके छोडता साहसिक उद्यम और प्रस्तुत कार्यकी महत्त्व-पूर्णतामें निर्भीक, अटल विश्वाससे वह भरा रहता था सख्त से-सख्त वक्तमें मुह पर उसके मुस्कराहट ही रहती भय जानता न था आपत्ति की सभावना होती और उपेक्षा से वह हस देता मफरूर साथियोको वह छिपाता था, जब्त लिटरेचर और गर कानूनी छापेखानो को वह महफूज रखता था और पक्षा और पासपोर्टको यहा वहा भजनेका भी वह काम करता था देहमें खूब शक्ति थी, तबियतमें खुली हार्दिकता और आदतोमें स्वभाव सिद्ध सादगी अक्सर कभी दूर देहातसे उसके पास खर्चके लिए खासी अच्छी रकम आती रहती थी एक विद्यार्थीके मामूली खर्चके लिहाजसे वह काफीसे कही ज्यादा होती थी लेकिन सत्रहवी सदीके फ्रेंच रईसकी-सी लापर्वाहीसे वह दो दिनमें उसे यहा वहा बखर देता और जाडोके दिन अपने उसी एक रोजमर्राके कोट में और एक जोडी दकिया नूसी जूतो में काट देता जूतों को अपने हाथसे सीकर ठीक ठाक हालत में रक्खे रखता था इन आदरणीय उपहास्य उच्च और अस्थिर विशे-षताओंके आग भी—जिन्हे हम नहीं जानते कि वे वाछनीय ह, पर जो औसत रूसी विद्यार्थीकी इतिहाससिद्ध पुरानी विशेषताएँ ह—उसमें

एक और आश्चर्यकारक गुण था वह पता पता कर नेनम एक ही था रेस्टरॉमें, भोजन शालाओमें, सब जगह जस उसका खाता चलता था नीलामकी दूकानाके सब नोकर, दलाल, कज देनेवाली सब सस्थाएँ सब महाजन पुराने कपडके दूकानदार, इन सब लोगासे उसका गहरा मेल था

लेकिन अगर किसी कारण इन सबके पास न भी जा सकता तो भी सोमदेवके लिए ठिकाना की कमी न थी और उसके कौशलका पार न था निठल्ले और बेपसे साथियोका अधिनायक बनकर, तरह-तरहकी जिम्मेदारिया अपने सर लेकर जसे इस आदमीम अनुपम मेधावी स्फूर्ति जाग जाती थी दूरसे कोई काबुली कमरपर गठर रखा जाना दीखता तो यह सोमदेव जान क्या इशारा करता कि वह बेचारा सडकके उस पार कन्धोपर मालका बकुचा सभाले रुक जाता तब यह कुछ देरके लिए साथियोको यही छोड अदृश्य हो जाता और थोडी देर बाद फिर वहीं आकर आविर्भूत हो जाता उस समय साथी लोग देखते कि उसका या तो कोट नदारद हो गया है और पतलूनपर बस एक जाकट सी पहने वह शानसे चला आ रहा है या दिन जाडेके हुए तो ऊपरका कोट ही गायब हो गया है और बस वह एक झीना सा सूट बदनपर लटकाए आ गया है कभी अभी नई ताजी टोपी पहनकर जाता और देखते कि टोपी के नामपर एक पुरानी सी टुपिया चादके ऊपर एसी टिकी है कि जस जादूके बल वहा बैठी हो, और वह नई टोपी वहासे उड गई है और वह इस सबमें उसी तरह मस्त दीखता

हर कोई उसे चाहता था क्या साथी, क्या नौकर, क्या स्त्रियाँ क्या बच्चे और सब उससे हिले मिले थे यह अफगान लोग तो उसे बेहद चाहते थे समझते थे, बच्चा है, फरिश्ता कभी गमियोंमें बढ़िया नरा बका उपहार वे उसके लिए लाते कभी अपनी दावतोंमें निमत्रित करते अविश्वसनीय कितना ही मालूम हो पर सच यहा तक है कि बहुत आड वक्त महफूज रखनेके लिए अपनी कीमती किताब और जरूरी कागज तक उन्हें सोप आता था एसे मौका पर वह लापरवाह और गभीर बनकर

उन्ह बताता, 'देखो, जो किताब म दे रहा हू, बडी जबरदस्त है इसमें लिखा है अल्लाहो अकबर और इसमें लिखा है मुहम्मद नबी था और लिखा है, दुनियाँ में बहुत कुफ्रो गुनाह है, और इमानको एक दूसरेकी तरफ हमेशा रहमदिल होना चाहिए '

उसमें दो खूबिया और थीं वह किताब पढ़कर तो खूब ही सुनाता था और गजबकी शतरज खेलता था शतरजमें अजब उसको महारत थी मानो उसका खास भद कोई उसके हाथ हो बडे-बडे खिलाडियोको वह हसी हसीमें हरा देता उसकी पहली चढाई बडी जबरदस्त और दुर्जय हानी बचाव सभना हुआ, और सकुशल वह तिरछे बाजू में अपनी ताकत इकटठी करता था और सामनेके खिलाडीको छोटी मोटी रियायतका ऐसा प्रलोभन देता कि जसे उस इसकी परवाह नही है, पर उन्हीम फसाकर खिलाडीको वह बमौत ले डालता अचूक उसकी चाल होती गुप्त उसका निशाना निभय उसकी चाट वह ऐसे चाल चलता था मानो सब उसका पहलेसे जाना हो सोचनेकी उस जरा जरूरत न होती खेलके विज्ञानकी सदा अवज्ञा करके बढता, और मान्य तरीको कायदोकी अवहेला करके उन्ह तोडता ही हुआ चलता उससे आसानीसे लोग नही खेलते थ उसके खलका लोग जगली कहते थे लेकिन फिर भी खेलते ही थे और बडी बडी रकमकी शत रक्खी जाती थी सोमदेव जीतता और पैसा अपने हारे साथीके हकमे ही खच कर देता लेकिन बडे बडे टूर्नामेंटामें उसने कभी हिस्सा न लिया लेता तो शतरजकी दुनियामे उसकी जगह बनी बनाई थी वह कहता कि इन फिजूलियातके लिए न मुझमें तबीयत है, न चाह, न इज्जत वह तो एक तरहकी बनी-बनाई सूझ मेरे पास है, यही समझो एक तरहकी दिमागी खराबी ही उस कहो बस ही जैसे कुछ लोग खब्ते हुआ करते ह बाए हाथसे ही काम कर सकते ह इस लिए इस खचम जातनके बारम मेरे दिलमें कोई व्यावसायिक सफलता का भाव नही है न जीतने पर मनमें फख्र, न न जीतने पर जी में रज मुझे होना है

एसा यह सोमदेव था उदार लापरवाह, सक्षम और स्वच्छन्द,

ग्रौर नेजरस था इसका सबसे घनिष्ट मित्र मित्रता इ ह सुबहसे रात तक ग्रापसम खूब लडने भगडने नाम रखने, ताने कसने ग्रौर गाली देनेमें बाधा नहीं बनती थी परमात्मा जाने ये ज्योजियन प्रिन्स कहाँसे ग्रौर कैसे रह लेता था वह ग्रपने बारेमें कहा करता था कि ऊँटकी तरह म कई हफ्ताके लिए एक बार ही खा सकता हूँ ग्रौर फिर महीने भर तक मुझे खानेकी जरूरत नही रहती ग्रपने घर ज्योजिया स उसे नाम भरको ही कुछ ग्राता था वह भी जिस की शक्ल म क्रिस मसमें या ईस्टर की छुट्टियोमें या ग्रगस्तम उसके जन्मदिनके रोज उस ग्रपने गाँवके ग्रादमियोके हाथो तरह-तरहका खाने का सामान ढर-का ढर मिल जाता था तब यह प्रिन्स ग्रपन किसी साथीके स्थान पर (क्योकि उसके पास कभी ग्रपना रहनेको कोई कमरा होता ही न था) ग्रपने सब दोस्तों ग्रौर ग्रपने तरफके लोगोको बुलाकर वह शाही दावत देता कि ग्राया सामान रत्ती रत्ती उसी रोज खच हो जाता ज्योजियन गीत गाये जाते, नाच होता, महफिल जमती, खूब बहार रहती ग्रौर इस सबमें खुद नेजरस ही प्रधानता से भाग लेता बात करनेम वह एक ही था गम हो ग्राय तो एक मिनिटमें तीन सौ शब्द फर्राट में बोल जाय उसकी शैलीम भाव बिखरे होते, ग्रनुप्रासो की भरमार होती ग्रौर विद्वत्ता से ग्रोतप्रोत उसकी भाषा होती पर वह कुछ भी कहे, कहीं स ग्रारभ करे, ग्रतमें वही ग्रा पहुचता था ग्रपनी ज्योजिया की प्रशसा पर सब सुदर, वह शस्यदा, फलदा, वह ग्रग्रणी, वही वीर प्रसूता, पर हाय, वह ग्रभागिनी, दीना, हीना भूमि ज्योजिया! ग्रौर ग्रनिवाय रूपमें ज्योजियन कवि इसाकेलाके एक गीतकी पक्तियों स उसकी वक्तताका उपसंहार होता उस निश्चय था कि तमाम शक्सपीग्रर ग्रौर तमाम होमरस उसके ज्योजियन कविकी पक्तियाँ ऊँची ही नहीं कहीं-कहीं ऊँची ह

वह जरा चिडचिडा ग्रौर तेज मिजाज तो था पर मनम उसके कीना न था ग्रौर ग्रपने व्यवहारमें वह रमणाकी भाँति कोमल, शिष्ट सलज्ज ग्रौर दिलचस्प था हाँ, ग्रपनी जन्मभूमिका गौरव हर जगह उसके साथ चलता था बस एक बात थी जो उसके साथियोंको नापसद

थी वह, वामागियो में उसकी लगन स्त्रियोंकी ओर अवश, उत्कट, प्रवृति उसमें थी उसमे अचल श्रद्धान था—ऐसा अचल कि उसे निरी जडता कहो, या अनुपम महिमा—कि रूपमें वह अजेय सुदर है, कि सब आदमी उससे डाह करते हैं, कि ससारकी सब रमणियाँ उसके प्रेममें घुली पडती हैं और उन सबके पति उससे बेहद ईर्ष्या करते ह और तो के सबधमें उसका यह आत्मदभ और स्वाथवृत्ति उसे मिनट भरके लिए न छोडती थी शायद नीदमें भी नही सडक पर चलते चलते मिनट-मिनट में लखनपाल और मोमदेव को वह कोहनी मारता, और होठ चटका कर किसी पाससे निकली प्रमदाको दिखाकर गवसे उधर अपना सिर फक कर कहता, 'िस्स्स कहता', "वाह, बाकी औरत है देखा, क्या निगाहसे मुझे देखती थी चाहूँ, तो चुटकी बजातेमें वह मेरी है "

उसकी यह उपहास्य कमजोरी सब पर विदित थी सब खुल कर उसकी इस आदतका मजाक उडाते थे लेकिन उसे इसके लिए क्षमा भी कर देते थे किसीको दिये अपने वचनके निर्वाहमें वह पक्का था कुछ हो, मित्रताका ऋण चुकाने और किसीके काम आनेसे वह विमुख न होता था यह साहस और दृढता की देन उसमें प्रकृतिदत्त थी इससे उसे वह चरित्र की त्रुटि माफ थी और कहना होगा कि औरतो के मामलेमें, दरअसल, वह खासा कामयाब था भी टेलीफोन गर्ल्स, कोरस गर्ल्स, स्टोर में कामकरनेवालियाँ, सीनेवालियाँ, आदि आदि, उसकी चमकीली नीली नीली आँखोकी झपती सी, गहरी मीठी स्निग्ध निगाह की टकटकी के तले कुछ खोई घुल सी रहती थी

'इस आश्रम के उन सब अधिवासियोको जो निष्पाप और साधु-जीवन व्यतीत करते ह " "सोमदेव ने धर्माचाय की भाँति बोलना आरम्भ किया और देखा बात बन नही रही है कुछ झप और अच-रजम पड कर भी अपने असमाप्त परिहासको जारी रखनेकी कोशिशमें वह आग भी बढा, बोला, "उपस्थित महानुभावो—" पर सहसा उसके मुँहसे निकला, "अरे क्यो यह यह तो सोनिया है नहीं, मैं

भूला, मडिया अरे नही नही, हाँ, अनामरकानीकी लुवी "
लुवी मारे लज्जाके गडनेको हो गई आँखोमें आँसू भर आए और हथलियों से उसन अपना मुँह ढँक लिया लखनपालने यह देखा, इस लडकीकी आत्माको मथने वाली श्रीडाको समझा और सहायता पर प्रस्तुत हुआ
बिना लिहाज बीचमें ही सोमदत्तको रोक कर बोला, 'सही पहचाना सोमदव एसे सही कि जसे--खिताब यामकासवाली लुवी ही तो है हाँ पहले वेश्या थी पहल क्या कल तक वश्या थी-- लेकिन, आजसे मेरी साथिन ह मेरी बहना इसलिए जिसे मेरी इज्जत मजूर है उसे इ ह भी मानना होगा, इनका भी लिहाज रखना होगा नही तो "
भारी भरकम सोमदेवन झटपट खुले दिलस लखनपालको कसकर आलिगन म बाँध लिया बहुत ठीक है मेरे दास्त बिल्कुल सही, एन दुरुस्त बस, बस मुझमे जल्दीमें बवकूफी हो गई अब ऐसा न होगा स्वागत बहन, स्वागत' कहनेके साथ उसने मेजके आरपार अपना हाथ बढाया और कुतरे न ह नहोवाली उसकी बारीक और छोटी अचेत सी पडी लुवीकी उगलियोको पकड कर दबाया "बडी खुशी है कि तुम हमारे इम वे सरोसामान और गरीब झोपडम आई हो इसस हमम जिंदगी आएगी, और हम सलीका सीखग हममें अदव, इखलाक और इसानियत पदा होगी सिकन्दरा!' उसने चिल्लाकर कहा, 'सिकन्दरा शराब हम जगली हो गए ह शराब में और काहिलीमें और बकवास में, और तरह तरह की खुराफात में दल दलकी मानिंद हम फसे ह वजह? वजह यह कि हम महरूम ह उसकी सगतस जो हमारे बीच दवी हो औरताकी साहचर्यसे जो ताजगी, जवानी जो तन्दुरुस्ती, और खुश इखलाकी नीरोगता मिलती हम वह कहा मिली! मैं फिर तुम्हारा हाथ दबाता हूँ यह तुम्हारा सलोना खूबसूरत हाथ ऐ, शराब!"
"आ तो रही हूँ' दर्वाजेके दूसरी ओरस सिकन्दरा की भनभनाती आवाज सुनाई दी "आती तो हूँ चिल्ला क्या रहे हो? कितनी चाहिए?
कितनी चाहिए यह बताने सोमदेव बरामदे का तरफ बढ़ा, कि

लखनपाल उसके प्रति कृतज्ञता पूर्वक मुस्कराया यह देख जाते-जाते ज्वाजियनने उसे कन्धे पर थपथपा कर धन्यवाद दिया दोनोंने सोमदेव की इस, यद्यपि तनिक विलम्बित और सामान्य फिर भी, हार्दिक शालीनता को समझा

लौटकर सामदेव आया और सावधानीके साथ एक पुरानी कुर्सी पर बैठकर बाला, "अच्छा, अच्छा, अब कामकी बात हो बताओ म अभी तुम लोगोंकी क्या खिदमत कर सकता हूँ आध घण्टे का वक्त हो तो जरा एक मिनट के लिए काफी हाउस की दौड लगा आऊँ जो बढ़से बढ कर शतरंजका खिलाडी वहाँ होगा उन्हीं हजरतको दमभरम खाली करके लौटता हूँ यानी या समझा कि सब तरह यह बदा ताबेदार है और हाजिर है"

"आप तो खूब तमाशा आदमी हैं!" लूवी बोली वह हस रही थी और अपने आपमें विश्वस्त न थी इस विद्यार्थीकी बातचीतकी शैलीको उसने पूरी तरह तो न समझा, पर कुछ था जिसने उसके अकृत्रिम हृदय को उसकी ओर सद्भावसे उन्मुख कर दिया

'नहीं नहीं, उसकी कुछ जरुरत नही," लखनपाल बीचमें बोला "पैसा तो अभी मेरे पास सुलतान का खजाना है म सोचता हूँ चलो, हम सब कहीं आसपास खान पीनेकी जगह चलें मुझे कुछ चीजों के बारेमें तुम लोगोंसे जरुरी मशवरा भी करना है तुम्हीं लोगों तक मेरी पहुच है और तुम लोग, उपरसे कुछ बनो और दीखो मैं जानता हूँ ऐसे मूरख और नातजुर्बेकार भी नहीं हो उसके बाद म फिर इनके इनके पास-पाटके व दावरत म लगूँगा तुम देखोगे यहाँ ठहरना बहुत दर न लगेगी मुख्तसरन समझते तो हो कि इस सबके क्या मानी हैं? और तुम अब फिजूल मजाकमें वक्त बरबाद न करना म-म" उसकी आवाज भावातिरेक के कारण कांप गई, पर उसमें कहीं मिथ्याभावका सलेश भी न था म चाहता हूँ मेरी चिन्ताका कुछ भाग तुम लोग भी बाट लो बोलो पक्की ठहरती है?"

पक्की, बिल्कुल पक्की,' प्रि मने कहा और अकारण, पर सकारण,

उसने लुवीकी तरफ देखा और उसके हाथ मूछोंके सिरे ऊपरी मरोडने लगे लखनपालने आखोंके किनारोसे उसे देखा सोमदेवने साफदिलीसे कहा 'सही बात है तुमने कुछ भारी जिम्मेवरी उठा ली है प्रिसने रात मुझे उसके बारे म बताया था म कहता हू, तारुण्य क्या है ? अगर हम कोई इस तरहकी पवित्र मूखता नही कर सकते तो हम तरुण क्यो है ? इधर नाओ बोतल, सिकन्दरा नही म खुद खोल लूगा तुम अपने कही मार न लो एक नवीन जीवनकी ओर–लुवी, क्षमा करना, क्या, ल्यूब ल्यूबोव ? "

"निकोलवना पर जो कहते हो, वही ठीक है, काफी है लुवी ही कहो"

'अच्छा, हाँ लुवी प्रिस अल्लावर्दी"

"वाह बहादुर", नेजरसने उत्तर दिया और अपने भरे गिलासको उसके साथ बजाया

"और म यह भी कहूँगा, मित्र लखनपाल, कि तुम्हारे प्रति भी हम कृतज्ञ ह, आभारी ह, आनन्दित ह" सोमदेवने गिलास मेज पर रखकर और मूछो पर जीभ फिराकर कहना जारी रखा "आनन्दित ह और तुम्हारे सामने नतमस्तक ह तुम, तुम्ही अकेले हो जो इस सच्ची रशियन उत्सग वत्तिको, आदशवादको, इस तरह सीधे सादे ढग से, बिना शत, बिना दभ, बिना प्रशसा, या कायमें परिणत कर सकते हो—"

"छोडो, छोडो बलिदान उत्सग की भला क्या बात है ? ' लखनपालने खट्टा मुह बना कर कहा

"ठीक तो है ' नेजरसने कहा ' तुम मुझे हमेशा कहते हो कि म बहुत बोलता हूँ अब देखो तुम्ही कसी बढ चढ कर हाँक रहे हो"

'अँह सो क्यो ? इससे कोई फक नही पडता , सोमदवने उत्तर दिया 'शब्द बहुत शानदा रह भी तो उससे फक क्या पडता है मान इस दरिद्रावासके सधके सबसे वयप्राप्त सदस्यकी हैसियतसे म घोषित करता हूँ कि लुवी अबसे पूण अधिकारोके साथ उसकी एक प्रतिष्ठित सदस्या है' वह खडा हो गया, हाथको दूरतक हवाम तराया और भाव भरे

स्वरम दुहराया—

> ग्रोर ग्राग्रो सु दरी,
> मुक्त ग्रौर निर्भय,
> घर तु हारा है,
> तुम्हारे स्वागत में प्रस्तुत
> ग्राग्रो —ग्रदर ग्राग्रो

लिखानिनने भली भाँति याद किया कि ग्राज ही सबरे इसी पद्यको एक ग्रभिनेताकी भाँति उसने भी दोहराया था ग्रौर उसकी ग्राँखें शमसे झिप ग्राईं

"बस बस, तमाशा बहुत हुग्रा हमें ग्रब चलना चाहिए कपडे पहन लो, लुबी"

१४

रेस्ट्रा 'स्पेरोज' वहाँसे दूर न था यही कोई दो सो कदम होगा राह में लुबाने ग्रौरोंके ग्रनदेखे लखनपालके कोटकी ग्रास्तीन पकडकर ग्रपनी तरफ खीचा इस तरह जरा यह दोनो पीछे रह गए ग्रौर सोमदेव ग्रौर नेजरस ग्रागे बढ गए उसने ग्रपनी काली प्रश्नवाचक ग्राँखें लखनपाल की ग्रोर उठाकर करुए ग्रौर ग्रविश्वस्त भावसे पूछा, "तो प्यारे, तुम्हारा क्या सचमुच यह मतलब है ग्रौर तुम सचमुच मेरे साथ मजाक नही कर रहे हो ?"

'मजाककी बात क्या करती हो, लुबी ग्रगर म ऐसी मजाक करूँ तो मुझस नीच ग्रादमी ग्रौर कौन होगा ? मैं फिर कहता हूँ, ग्रपने मित्र भाई ग्रौर ग्रभिभावक से भी ग्रधिक मुझे मानो ग्रौर छोडो, इन बातो को ग्रब मत उठाग्रो ग्रौर जो ग्राज सबरे हममें हो गया है, तुम विश्वास मानो ग्रब फिर कभी न होगा, ग्रौर म ग्राज ही तुम्हारे लिए एक दूसरा मकान किराए ले लूगा '

लबी ग्राह भर कर रह गई यह नही कि लखनपालके इस पवित्र

सकल्प पर उसे शाक था और सच तो यह है कि उसकी इस बातमें उसे कुछ कच्चा पक्का सा ही भरोसा था पर बात यह थी कि उसका अधेरा सकीण दिमाग किसी तरह भी पुरुष और स्त्रीके मध्य इद्रिय विषयके सम्बन्धके अतिरिक्त कोई और सम्बन्धकी कल्पना तक नही कर सकता था फिर जिसका प्रेम स्वीकृति नही पा सका है वह, और जिसका प्रेम परिणय बद्ध हो गया है वह भी इन दोना प्रकारकी स्त्रियोमें जो सनातन भावसे एक असतोष विद्यमान रहता है वह भी इसमें था यही असतोष जो अनामिकातीके यहा प्रमदाभाभी आपसकी चढा बढी और प्रति-स्पर्धा के रूपमे प्रगट होता था अब जरा मद्धम पड गया था वही यहाँ अब छिडकर उत्तप्त हो गया किसी अनात प्रेरणासे लखनपालके शब्दोमें उसे पूरी तरह विश्वास नही जमता था उन शब्दोमे जो कही असत् मिथ्या दभका आभास था माना अनायास वही उसके दुलक्ष्यकी पकडमें पडता था जो कही सोमदेव होता तो उसके शब्दोको लूवीको ज्यादा भरोसा हो सकता या तो सभी लडके आपसमे या स्त्रियोके पास पाकर, या होटल और रेस्ट्रांके किसी कमरेमे इकट्ठे होकर एकसी ही अनर्गल सच झूठ कहते दूनकी हाकते और वसाही व्यवहार करते थे फिरभी सोमदेवका विश्वास वह कही आसानी और रजामन्दीके साथ कर सकी थी चेहरे पर दूर दूर लगी उसकी चमकीली भूरी आखोमे कुछ एक एसा ही निश्छल आनन्दका भाव खेलता रहता था

'स्पेरोज' में लखनपाल अपनी नेकनीयती, भलमनसाहत, और जिम्मेदारीके एहसासके लिए माना जाता था पसके मामलेमे उसकी बदाग ईमानदारी का यहा सिक्का था इसलिए आते ही अलहदा एक खास कमरा उसे दे दिया गया लडकोमें बहुत कम थे जिनका एसा लिहाज वहा रक्खा जाता हो इस कमरेमे दिनभर बत्ती जलती रहती थी क्यो कि वहा रोशनी आनेका दूसरा माग बस एक छोटी नीची खिडकी थी वहाँसे बाहर चलते लोगोंके जूते छतरिया या छडिया दीखा करती थी

अपनेमें उन्हे एक और विद्यार्थी सोम वास्तोको भी शामिल करना पडा बाहरके कमरे में अचानक इन लोगोकी उससे मुठभेड हो गई थी

लुवीने सोचा, यह मुझे जैसे तमाशा सा बनाकर लिए डोल रहे हैं इसमें इनका मतलब क्या है ? मालूम होता है अपने को जरा दिखाना भी चाहते हैं और अवकाश पाकर लखनपालके कानमें उसने कहा, 'लेकिन प्यारे, यह इतने सारे और लोग यहाँ किस लिए ह मुझे लाज आती है इतने लोगोंके सामने म कैसे बठू ?"

"ओह, यह कुछ नहीं, कोई बात नहीं मेरी प्यारी लुवी' कमरेके दरवाजे पर ठिठक कर जल्दी जल्दी लखनपालने उससे कहा, "कोई बात नहीं, मेरी प्यारी बहन ये सब नेक आदमी ह मेरे अ तरग साथी ह वे तुम्हारी मदद करगे, हम दोनोंकी मदद करेंगे कभी कभी यह मजाक करें या कुछ अनकहनी कहें या डींगकी हाँक तो बुरा न मानना दिल उनका खरा सोना है, सोना"

"लेकिन यह मुझे अजब लगता है मुझे तो शम आती है और ये सब जानते हैं कि तुम मुझे कहाँ से लाए हो'

"ओह सो क्या बात है कोई बात नहीं जानते ह तो जानने दो" लखनपालन स्निग्ध भावमे उत्तर दिया, "अपने अतीतसे घबराओ क्यो? उससे चुप चाप बचकर चलना क्या चाहो ? गाल भरम तुम देखोगी कि हिम्मतके साथ हर एक आदमीकी आँखोमें सीधे भरपूर देखकर तुम कह सकती हो, जो गिरता है वही उठता है गिरा नहीं वह कब उठा है ? आओ, लुवी आओ"

जब छोटी मोटी यों ही शुरूआतकी चीज मेज पर परसी जा रहीं थीं और हर कोई कुछ-न-कुछ फरमायश पेश कर रहा था, तब सोम वास्ती को छोड़कर और सब अन्दर ही अन्दर कुछ सकोचमें थे, प्रकृतिस्थ न थे और सोम वास्ती ही किसी कदर उसकी वजह था वह हमेशा क्लीन शेव्ड रहता था, बडी उठी लाल नाक पर पिंसनेज, सिर सफाट और जरा पीछेको फिका हुआ, और बन्द ओठोंके किनारे पर गभीर उपेक्षाकी छाप अपने साथियोंमें उसका कोई बेतकल्लुफ, हार्दिक और अन्तरग मित्र न था उसकी बात का वजन था और राय का महत्त्व उसकी एक धाक थी इसमें सन्देह था कि उनमेंसे कोई बता सकता था कि इस

धाकका कारण क्या है जो और लोग चाहते और मानते है पर स्पष्ट नही कर पाते, उसीको रूप और शब्द देकर सामने रख देनेकी क्षमताके कारण यह बात थी, या इस वजहसे कि वह अपनी बातोको ठीक उप युक्त अवसरके लिए बचा छोडता था—यह कोई ठीक न जानता था किसी भी सोसाइटीम इस तरहके बहुत लोग मिलेंगे कोई उनमें अपनी दोहरी, अहपूर्ण आदतो से अपना असर पैदा कर लेते है, कुछ अपनी बात पर जिद करके, कुछ केवल जोरस डपट कर बोलनेकी वजहसे ही, चौथे औरोको नीचे गिराकर और सबको बुरा भला कह कर, पाचव, सिर्फ मौनमे जिसके पीछे लोग समझते हा, जाने कितना प्रौढ चिन्तन है, छठ वाचाल मुखर पाण्डित्य दिखा कर, कोई तीखी विषैली जीभ से, और कुछ और अपने विरोधीकी बाता को उपेक्षापूर्ण क्लिष्ट मुस्कुराहट से टाल दनेकी आदतके कारण कुछ लोग अपनी कार्यसिद्धि उस राह से करते है जिसम घृणा ही अस्त्र है और उसकी व्यजना ही भाषा है कोई बात हो, वह अत्यन्त अनादर उपेक्षा पूवक उत्तर देंगे, 'ऊँह!' बात सच्ची हो, सही हो, सीधी हो, वह कहेंगे, 'ऊँह' क्या भई, यह 'ऊँह क्यो?' वह कच उचका कर कहेंगे वह भी कुछ बात है? वाहियात, निकम्मी, ऊँह! वाहियात निकम्मी शि जमे कि वह यह 'ऊँह' का गुम्मा पत्थर किसीके सिर पर देकर मारते है तो उस पर बडा एहसान करते हैं और भी इस तरहके बहुतसे लोग ह जो विनयशील, सकोचशील निरभिमानी और कभी कभी महान् विचारशील लोगो पर भी अपना बडप्पन जमाय हुए समाजमें दिखाई देते हैं इन्हीमेंसे एक सोम वास्ती था

तो भी खाते पीत सकाच कम हुआ और सबकी जबानें खुल गईं बस लूसी ही चुप थी हा और ना' से अधिक वह कुछ न बोलती थी और उसके सामनेका खाना ज्योका त्यो पडा था लखनपाल, सोमदेव नेजरस सबसे ज्यादा बोल रहे थे लखनपाल निर्णायक भावमें काम काजी आदमी जसी बात कर रहा था भीतरम क्लेश देता हुआ, नुकीला वास्तव कुछ और था, जिसे शिष्ट और लच्छनुमा शब्दोसे वह मानो ढकनेकी चेष्टा कर रहा था सोमदेव उत्सुक प्रसन्नतासे, पुष्कल अग सचालनपूर्वक मेजको

मुक्कोंसे मार मार कर प्रतिपादन कर रहा था, और नेजरस जरा दुवि घासे, मानो जानता तो है पर कहता नही, कहनेका मौका नही समझता, इस तरह रुक रुक कर थम थम कर बात कर रहा था उस लडकीके अनोखे भाग्य और उसके भविष्यके चिंतनको लेकर य सब लोग व्यस्त और विवादग्रस्त थे हर कोई अपनी बात कहते कहते जाने किस कारण अनिवार्यरूपमें सहमति पानेकी आशासे माम वास्तीकी तरफ मुखातिब होता था पर, अपनी नाक पर चढी पिंसनेजमेंसे उ ह एक एकको देख-कर वह अधिकतर मितभाषी ही बना रहता था, बोलता न था

'सो-सो, सो' मेजको अपनी उगलिया से बजाता हुआ, आखिरकार वह बोला 'लखनपालने जो किया उज्ज्वल है, आदरणीय, साहसपूण यह कि सोमदेव और प्रिंस हाथ बढाकर उसमें मदद देंग यह भी धन्यवाद की बात है आप जो कर उसके लिए अपनी ओरसे भी म अपना उद्यत सहयोग सहर्ष प्रस्तुत करता हू जितना बनगा म साथ हू लेकिन क्या यह अच्छा न होगा कि अपनी सखा, इस रमणीको अपने प्रकृतिदत्त झुकाव और अपनी क्षमताके अनुरूप माग पर हम चलने देवे और चलावें" लुवीकी ओर मुडकर उसने कहा "अच्छा, बताओ तो, तुम क्या-क्या जानती हो, क्या-क्या कर सकती हो कोई किसी तरहका काम सीना, पिरोना, बुनना, कुछ काढना, या और कुछ ?"

'म कहा कुछ जानती हू,' लुवीने ओठा ओठो मे कहा उसकी आखें नीचे झुक गईं तमाम देहमें वह लाल पड गई मेजके नीचे अपनी उग लियोको एक दूसरेमें उलझाकर उ हें मलती हुई बोली, 'मुझ आपकी बात समझ नही आ रही है"

"हाँ, ठीक तो है," लखनपालने बीचम पडकर कहा,"हमने ही बात ठीक तरहसे नही उठाई उसकी उपस्थितिम उसके सम्ब घम चर्चा चला कर हम उसे सकोचमें डालते हैं देखो न, घबराहट में उसकी जबान नहीं खुलती आओ, लुवी, मे तुम्हें थोडी देरके लिए घर ले चलू वहासे दस मिनटमें लौट आना इधर हम तुम्हार पीछे सोचे-साचेंगे कि कैसे करना, क्या करना ठीक है न ?"

बहुत धीमेसे लुबीने कहा, 'पूछते हो तो मैं अपने बारेमें कुछ नहीं जानती जो तुम कहोगे, लखन, वही म करूगी पर म घर नहीं जाना चाहती"

"क्यो ? सो क्यों ?"

"अकेले वहां अच्छा नही लगता अच्छा, इसमें तो कुछ हज नहीं है कि म वहा बाबके पास दरवाजमें पडी बेंचपर जाकर बैठ जाऊ वहा म तुम्हारा इतजार करूगी"

"आहा हा' लखनपालने सोचा, 'सिकन्दराका, मालूम होता है उसे डर बठ गया है चलकर म उस बुढियाकी खबर लूगा' कहा, "अच्छा, चलो लुबी '

कातर सकुचित लुबीने ज्यो त्यो अपना हाथ एक एक करके सबकी ओर बढाया और फिर लखनपालका हाथ थामकर चल पडी

कुछ मिनटो में वह लौटकर आ गया और अपनी जगह बठ गया उसे अनुभव हुआ कि उसके पीछे उसके बारेमें कुछ बातचीत हुई है और उसने सदिग्ध दृष्टिसे अपने साथियोके चेहरे पर निगाह घुमाई तब फिर मेजपर हाथ रखकर उसने कहना शुरू किया "दोस्तो म जानता हू आप सब मेरे भलेके और मेरे शतरगके मित्र ह" उसने एक निगाह सोम शास्त्रीको देखा, "और कामके समय विमुख होनेवाले नहीं ह म दिलसे चाहता हू कि आप इस वक्त मेरी मददको आए यह काम मैं कहूगा, मुझसे जल्दीमें हो गया सही, लेकिन हृदयकी सत्य और पवित्र प्रेरणाके वशवर्ती होकर ही मने किया है '

"और यही मुख्य बात है" सोमदेवने बीचमें कहा

'मेरे लिए सब एक जैसा है कि मेरे बारेमें अजनबी क्या कहते फिरते ह या परिचित लोग क्या चर्चा करते ह लेकिन, जो मेरा इरादा है वह कि मैं एक पतित प्राणीका बचाऊँ—आह इस दमके शब्दके लिए मुझे क्षमा कीजिए जो यो ही निकल गया—नहीं बचाना नहीं, इस लडकीको सान्त्वना दू, उत्साह दूँ मौका दूँ इस अपने इरादेसे मैं इकार नही कर सकता, उससे विमुख नहीं हो सकता हूँ, उसके लिए,

एक छोटासा मदी लागतका कमरा अलग किराये ले दूँ, शुरूमें खाने-पीनेके लिए उसका बन्दोबस्त कर दू यह मैं कर सकता हूँ लेकिन आगे क्या होगा ? यह सवाल है जहाँ दिक्कत आनी है बात दर असल पसेकी उतनी नही है पैसा तो हमेशा म उसके लिए कुछ न-कुछ जुटा ही सकता हूँ लेकिन उस लाचार करना कि वह खाए भी, पीए भी, रहे भी फिर भी कुछ न करे, यह तो उसे काहिल, सून, निरानन्द और उपेक्षणीय हीन जीवनमें पटक देना होगा और आप लोग यह भी जानते ह कि इसका अन्तमें परिणाम क्या होगा इसलिए हमें उसके लिए कुछ न-कुछ काम ढूढ लना चाहिए और यही बात है कि जिसपर हम सोचन की जरूरत है आप लोग कोशिश कीजिय, कुछ सोचिय, सलाह दीजिए

सोम वास्तीने कहा, 'हमें पहले मालूम हाना चाहिए कि वह किस कामके लायक है ! आखिर चकलेम जानसे पहले वह कुछ तो करती ही होगी'

निराश भावमे हाथ फैलाकर लखनपाल रह गया, कहा,'—यही समझिय कि कुछ भी नही एक देहाती अपढ लडकीकी तरह कपडोमें दो एक टाके बस लगा सकती है अजी, वह पन्द्रह बरसकी तो थी ही जब उसे सरकारी मुलाजिमने ले बिगाडा वह कमरा बुहार सकती है कुछ घा माज देगी बहुत कहो, कुछ रांध बाध लेगी ज्यादा तो कुछ नही जानती म समझता हू'

'इतना तो कुछ नही है " साम वास्तीने कहा और जीभ टिटकाई "और तिसपर वह एकदम अपढ'

सामदेवने पक्ष लेकर कहा, 'लेकिन पढना लिखना कोई बिल्कुल जरूरी बात तो नहीं है अगर उसकी जगह कोई अच्छी पढी लिखी होती या परमात्मा न करे कोई-आधी पढी होती, तब जो कुछ हम करनेको सोच रहे ह उसका कुछ फल न निकलता साबुनके बबूलेकी तरह सब फूट जाता और अब हमारे सामने अछूती बिन बोई धरती की तरह क्वारी लडकी है"

"ही ई-ई " नेजरसने द्विविध भावसे हिनहिना दिया

इस बार निरे मजाकमें नहीं सत्सकल्पसे भरा हुआ सोमदेव यह बात कह रहा था सच्चे गुस्सेम भल्ला कर वह नेजरसपर टूट कर पडा, "सुनो प्रिंस, हर चीज तुम बुरी बना सकते हो हर पवित्र विचार, हर नए विचारका मजाक उड सकता है उसे उपहास्य, उसे लाछनीय बनाया जा सकता है इसमें देर नही लगती न यह कुछ बहुत चतुराईकी बात है न इसमें बडप्पन है जो हम करने जा रहे ह, मगर तुम उसे इसी गधकी तरह समझ सकने हो तो जाओ, वह दरवाजा है खुदा तुम्हारी खर करे हमसे दूर हो, जाओ

अप्रतिभ होकर प्रिंस बोला,—"और—और अभी हाल तुमने ज उस कमरेमें ",

"हाँ, मन भी' सोमदेव एकदम ठण्डा और मुलायम पड गया "मने भी बवकूफी की और मुझ अफसोस है लेकिन अब,—म सहर्ष यह मानता हूँ कि लखनवीर आदमी है, बहादुर आदमी है नेक आदमी है और मे अपनी तरफसे जो बने उसकी सहायता करनेको तयार हूँ और म फिर कहता हूँ पढना लिखना गौण बात है यह तो खेल-खलमें आ जाता है और इस लडकीके जसे अविकृत मस्तिष्क व्यक्तिके लिए पढना लिखना और गिनती सीखना, और खास कर ऐसी हालतमें जब स्कूलकी पाबन्दी नही अपनी निजकी प्ररणा ही अवलब हो, एसा सहल है जसा जसा कि एक चिकनी सुपारीको दाँतसे तोड कर दो कर देना और दस्तकारीकी जो बात है एसा काई काम जिसमे आदमीका गुजारा चल जाए और जीवन सभव हो जाए सो क्या, सकडो छोटे मोट एसे व्यव साय है जो दो हफ्तम अच्छी तरह सीख लिये जा सकते ह

जसे—? प्रिन्सन पूछा

जसे जमे जैसे यही समझो, नकली फूल बनाना या इससे आग फिर—जसे वही फूलवालेके यहाँ वलर्कीका काम क्या खूब काम है साफ और सुथरा'

"इसके लिए टेस्ट चाहिए', सोमदवने लापरवाहीसे कहा

'टेस्ट कोई पैदा होते ही नहीं आ जाता न कोई योग्यता जन्मसे हो जाती है ऐसा हो, तो काबलीयत और प्रतिभा बस कुलीन और बड़े घरानोंम ही हुआ करे आर्टिस्ट फिर आर्टिस्ट कुटुम्ब मेंसे ही हाँ, गायक गायकोंमेंसे लेकिन ऐसा देखनेमें नहीं आता और, मैं विवाद नही करूँगा न फूलका सही और काम सही जैसे अभी कुछ दिन हुए, जाते-जाते एक स्टोरकी बाहर की खिड़कीमेंसे मने देखा—कि एक मिस बैठी सामने मशीन रक्खे उसे पैरोंसे चला रही है—"

"वाह, फिर वही तुम्हारी मशीन आ गई" हसकर लखनपालकी ओर देखकर प्रिन्सने कहा

"चुप करो, नेजरस" सयत किन्तु दृढ़ भावसे लखनपालने उत्तर दिया, 'तुम्हें शर्म आनी चाहिए'

'गधा !' सोमदेवने उसकी तरफ मानो फेंककर यह कहा और कहना जारी रखा "हाँ तो मशीन फिरती थी, आग पीछे होती थी उसके नीचे एक चौखूटा फ्रेम बिछा था जिसमें कपडा तना हुआ फैला था मालूम नही कैसे क्या हो जाता था, मे उसे ठीक तरह नही समझ पाया यह ऊपर चुटकीमें लोहेकी जाने क्या चीज पकडे, जाने किस किस तरह घुमाती थी कि नीचे रेशमी कपडे पर वह रग बिरगी कढाई खिच आती कि वाह ! सोचो तो जरा देरमें देखते देखते उस कपडपर एक नीली झील ऊपर तर आती है ! उस झीलमें फिर नीलोफरके फूल लहर रहे हें और लाल कमल और भी तरह-तरहके फूल खिले ह चारो तरफ पेड हें, घास है, बनस्पति है और झीलकी छातीपर दो सफद हस एक दूसरेकी ओर तरते हुए बढ रहे हें और झीलके पीछे वह एक हरियाली घनी पाँतकी सडक भी दीख रही है और यह सब कुछ एसा ऐसा बना है कि सच्ची जीती तस्वीर ही हो मुझ उसमें एमी दिलचस्पी हुई कि मने भीतर जाकर पूछा, इसके दाम क्या ह और दाम कुछ भी खास ज्यादा न निकले मामूली सीनेकी मशीनसे बस कुछ ही ज्यादा और वह किस्तो पर अदा कर सकते हो और उसका सीखना भी कुछ नहीं, जो सीनेकी मशीन चलाना जाने, एक घण्टेमें इसे भी सीख सकता है जनाब,

जितने चाह एक स एक खुशनुमा डिजाइन आप उससे निकाल लीजिए और सबसे बढ कर बात तो यह कि इस काम की मांग खूब है परदा पर, रुमालोपर लम्पके शेडोंपर और इसी तरहकी चीजोपर य डिजाइन खूब ही फबत ह और इस काममें उजरत भी खासी मिलती है

"हाँ वह भी है,' लखनपालने महमत होकर कह दिया और चिन्ता पूवक अपनी दाढी खुजलाई 'लकिन, अपनी कहूँ तो म कुछ और सोचता था म उसके लिए एक एक छोटी-सी दुकान खोलना चाहता था एक उपहार गह काफ एक ढावा सा पहले पहल बहुत छोटा-सा हो उसम खाना सफाईसे मिल और सस्ता और बढिया, क्योकि इसस लडकाको कुछ मतलब नही रहता कि वे कहा खाते ह, क्या खाते ह और अक्सर लडकाके खानकी जगह आजकल इतनी भरी मिलती ह कि वहा चलना फिरना तक दूभर होता है इस लिए मैं समझता हू अपने दास्ता और साथियाका सबको यहा खीचकर बुला लानेमें कोई मुश्किल हम न हागी"

'है ता ठीक पर प्रिन्सने कहा, अव्यवहारिक भी है शुरूसे हमें उधार खाता खोलना पडगा और जैस भले कज अदा करने वाले हम लोग ह, तुम जानते ही हा एक पक्का दुनियादार आदमी, अजी एक धूत ही एसे कामके लिए चाहिए और अगर औरत हो तो एसी चाहिए कि जिसके दात लोहेके हों और फिर उसकी निगरानीके लिए एक आदमी ऊपरसे और भी चाहिए सचमुच लखनपालके बसकी यह बात नही है कि वह काउटर पर सदा देखता रहे कि खूब छक पीकर कोई आदमी बिना पसा दिए तो कही नहीं खिसका जा रहा है ?

लखनपालन रोषपूवक सीध उसकी तरफ देखा पर मुह भींचकर और चुप थामकर रह गया

सोम वास्तीने अपनी तुली और नपी आवाजम उँगलियोंसे पिन्सनेज के शीशोंसे खलते हुए कहा सज्जनो आपका सकल्प शुभ है निर्विवाद प्रशसनीय है लेकिन आपको प्रश्नके दूसरे, कहिये कि तनिक कम उजले पहलूपर भी ध्यान देना होगा क्योंकि ढाबा, खोलना या और कोई काम

शुरू करना, इन सबमे पहले पैसेकी जरूरत है और मददकी यानी बाहरी मददकी भी जरूरत है पैसेपर हम लोग हाथ नही भीचते, यह ठीक है म वहा लखनपालमे सहमत हूँ और उन्हे धन्यवाद दूगा लेकिन इस प्रकारके व्यवसायिक जीवनके प्रारम्भसे कि जब हर पगपर सब कुछ करा-कराया मिल जाता है, ऐसे प्रारम्भसे अन्तमें एक प्रकारकी अनिवार्य, शिथिलता, लापरवाही, और पीछे जाकर काम धन्धेके प्रति ही उपेक्षाका भाव तो व्यक्तिमे नही आ जायगा ? पचासो बार गिरे बिना बच्चा भी चलना नहीं सीखता नही, अगर आप इस बेचारी लडकीकी सचमुच सहायता करना चाहते ह, तो आपको चाहिए कि उसे मौका दें कि वह अपने पैरो खडी हो अपने उद्यमके बल वह बढे रानी मधुमक्खीकी तरह रानीगिरी सिखानेमें उसका हित नही मानता हूँ, प्रलोभन यहा बहुत है, परिश्रमका बोझ है फौरी जरूरत है और भी दस बात लेकिन अगर वह उन्हे पार कर जायगी तो बाकी सब भी पार है

'तो आपके लिहाजसे उसे क्या बनना चाहिए ?—बरतन माँजने वाली नौकरनी ?" अविश्वस्त सोमदेवने पूछा

'हा, वह भी मुस्तकिल," सोम वास्तीने जवाब दिया "माजने वाली, धोनेवाली, खाना पकाने वाली या और कुछ सब श्रम मनुष्यको ऊँचा उठाता है"

लखनपालने अपना सिर उठाया,"सोनेके शब्द ह तुम्हारे सोम वास्नी, सोनेके स्वय बृहस्पति तुम्हारे मुहसे बोलते हैं कहारिन, रसोईदारिन, नौकरानी, जो कहो लेकिन पहली बात यह है कि इसीमें शक है कि क्या वह इस सबके लायक भी है ? दूसरे नौकरानी वह पहले भी रह चुकी है तब दरवाजोकी ओटमे और जीनोंके कोनोमे या अकेले सुनसान में वह मालिकके कृपा कटाक्ष और छेड छाड भी चख चुकी है मुझे बताओ कि क्या यह मुमकिन है कि आपको नही मालूम कि नब्बे फी सदी वेश्यायें इन्ही नौकरानियोमे से बनती ह ? इस तरह तो यह बेचारी ल्यूबा फिर पहलेके जैसे अन्याय और बलात्कारको भुगत कर, अगर कुछ उससे भी बदतर न बना तो आसानी और तैयारीके साथ वही पहुँच

जायगी, जहांसे बाहर निकालकर उसे म ग्रभी लाया हूँ क्योंकि वह उसकी ग्रादी हो गई है ग्रौर वहांका ग्रातक उसे नही है ग्रौर कौन जानता है मालिकके निपट दुव्यवहारके बाद चकला उसके लिए वाछनीय ही न होगा इसके ग्रलावा म पूछू कि इसमें कुछ भलाई है ? मतलब है ? एक गुलामीम से निकलनेके बाद ग्रगर किसी दूसरीमें ही उसे पटक देना है तो म पूछना चाहता हूँ कि मेरे ग्रौर हम सबके तकलीफ उठानेमें मतलब ? यहा हमारे सोचने विचारने ग्रौर चिंचित होनेका भय ? क्यों न हम सबको धता बताए, यही बात तो हुई न ?'

ठीक कहा''

सोमदेवने समथन किया

सोम वास्तोने उपेक्षाकी जमुहाई ली ग्रौर कहा,''—तो जसा ग्रापलोग चाहे '

"तो जहाँ तक मेरी बात है", प्रिन्स बोला "म दोस्त हू ग्रौर मुझे नया सब कुछ ग्रच्छा लगता है इससे इस प्रयोगम सहायताके लिए मुझे प्रस्तुत समझे मै जरूर शामिल होनेको तैयार हूँ लेकिन जसे ग्राज सबरे भी मने कहा, मै कहता हूँ कि एसे तजुर्बे पहले भी हुए ह ग्रौर सब बुरी तरह नाकाम रहे ह कम-से-कम वे तो नाकाम रहे ही जिन्हें हम जानते ह ग्रौर जिनके बारेमें सुन कर जानते ह उनको सफलता भी सदिग्ध है ग्रौर प्रामाणिकता भी सदिग्ध है लेकिन जब तुमने काम उठाया है—तो जरूर चलो ग्रौर ग्राग बढो हम तुम्हारे साथ होग"

लखनपालने जोरसे ग्रपना खुला हाथ मेज पर पटका, 'नही'' उसने जिदसे कहा, 'सोम वास्तीकी बातमें सचाई भी है किसीकी गदनम रस्सी डाल कर लिए चलनेमें बडा खतरा भी है लेकिन मुझे ग्रौर राह भी नही दीखती शुरूम म उसके लिए कमरे ग्रौर खानका बदोबस्त तो कर दूंगा ग्रौर ग्रौर कोई ग्रासानसा काम भी तलाश कर दूंगा फिर हो जो होना हो तब हम धीरे धीरे उसकी बुद्धिके विकासमें ग्रपना हिस्सा लेना होगा उसका हृदय सुदर है ग्रात्मा स्वच्छ इसका मुझे निश्चय है फतवा तो म इस बारेमें क्या दे सकता हूँ लेकिन उस विषय

में मनमें मेरे बिल्कुल घाव नहीं है कह लो, में यह जानता हूँ नेजरस भोंडपन न करो" एकाएक पीला पड़कर उसने चिल्ला कर कहा, "मैं तुम्हारी बेहूदा हरकतोंपर कई बार तरह दे गया हूँ गुस्सा आया है, पर जब्त करके रह गया हूँ मने अब तक तुम्हें एक वसा आदमी समझा जिसमें एहसास है, दिल है अब कुछ बेजा मजाक तुमने की, तो, तुम्हारे बारेमें मुझे अपनी राय बदलनी होगी और समझ लो कि हमेशा के लिए मेरी राय बुरी हो जायगी"

"क्यों ? मने क्या किया ? मेरा मतलब यह नहीं था, सच और मेरे यार, एकदम ऐसे भड़कते क्यो हो ? तुम नहीं अगर पसन्द करते कि में हमेशा खुशदिल-परशाद बना रहूँ, तो लो में चुप हूँ लाओ लखन, इसी बातपर अपना हाथ आओ पीए'

"अच्छा, अच्छा अब ठीक है नहीं-नहीं, तुम वहाँ दूर ठीक हो लो, यह तुम्हारी तन्दुरुस्तीके नामपर बस, यह शरारती बच्चेकी सी आदत छोडो सुना न, आघ वैल ! अच्छा तो में क्या कह रहा था, सज्जनो ? अगर हम लोग कोई ऐसा काम पा सकें जिससे परिश्रमके सम्मानके बारेकी सोम वास्तीकी उपयुक्त सम्मतिकी भी रक्षा हो जाय और बाहरसे हमें कम-से-कम सहारा देनेकी जरूरत पड़े, तो म अपनी बातपर पक्का रहूँगा ल्युबाको जितना हो सके सिखाऊगा थिएटरोंमें व्याख्यानोंमें, पब्लिक जल्सोंमें, अजायब घरोंमें उसे ले जाया करूँगा किताबें पढ कर सगीत सुनाऊँगा, सगीत, समझमें आने लायक सगीत बहुत ऊँचा शास्त्रीय नहीं सुननेका उसे अवसर दूँगा अलबत्ता में अकेला यह सब नहीं कर सकूगा म चाहता हूँ आप लोग मेरी मदद करें उसके बाद परमात्मा शुभ सकल्पका रक्षक है ही"

"हाँ, हाँ," सोम वास्तीने कहा, "काम नया है और रेखा गणितकी शक्ल सा नपा तुला साफ भी नही है फिर भवितव्यको कौन जान सकता है लेकिन मुझे अचरज न होगा लखनपाल जब में पाऊँ कि, एक प्राणी तुम्हारे आध्यात्मिक स्पर्शसे उद्धार पा गया है और नेकीकी तरफ आ लगा है मेरी खिदमत भी हाजिर है

'और म"

"और म भी', शेप दोनोंन भी कहा और ठीक वहीं मेजपर बिना उठ चारो विद्यार्थियाने मिलकर लुबीकी शिक्षा और बुद्धि विकासके लिए एक विशद सम्पूर्ण अद्‌भुत कार्यक्रम रचकर खडा कर लिया

लडकीको व्याकरण और सुलेख सिखानेका काम सोमदेवने अपने ऊपर लिया कठिन पाठोकी मरमारसे वह एकदम थक न जाय, सो उसकी प्राथमिक सफलताओंके पुरस्कारस्वरूप वह रूसी और विदशी भाषाओंके सुबोध सरल पर कलामय और उच्च उपन्यास पढकर उसे सुनाया करेगा गणित भूगोल और इतिहासका अध्यापन लखनपालने अपने ऊपर रखा

प्रिसन इस बार सदाकी तरह मखौलमें नही प्रत्युत हार्दिक और तत्पर भावसे कहा, "और म भाइयो, म तो आप जानते ह कुछ जानता नहीं और जो जानता हू वह बुरी तरह जानता हू म अपने ऊपर लेता हू कि उसे महान ज्योर्जियन कवि इसाबेलाकी अनुपम रचना 'दी पेन्थर स्किन' पढकर सुनाया करू गा, उसकी पक्ति पक्ति अनुवाद करके समझाया करू गा मैं आप लोगोंके सामने मानता हू कि किसी भी तरह बडा विद्वान मैं नहीं हू मैने शिक्षक होना चाहा लेकिन शिक्षणके दूसरे दिनसे मुझे निकाल बाहर किया गया तो भी सितार और बांसुरी और दिलरुबा मुझसे अच्छा कोई नही सिखा सकता"

नेजरस पूरे मनसे और सचाईके साथ बात कर रहा था इसलिए लखनपाल और सोमदेव दोनों तबियतके साथ हसे सबको अचम्भमें डालकर सोम वास्तीन नितान्त अप्रत्याशित समर्थन किया, कहा 'प्रिस का कहना ठीक है सगीतसे व्यक्तिमें सौन्दर्य-बोधका भाव उन्नत होता है शारीरिकता मद होती है, रुचि परिष्कृत होती है जीवनमें उससे सहायता भी मिलती है और मैं, सज्जनो म अपने लिए सोचता हू कि मैं उस लडकीके साथ मार्क्सके केपीटल और मानव सभ्यताके इतिहासका पारायण चलाऊगा साथ-साथ रसायनशास्त्र, पदार्थ विज्ञान, विश्वविज्ञान और राजनीतिक अर्थशास्त्रका भी म उसे शिक्षण दूगा"

अगर सोम वास्तीके व्यक्तित्वके प्रति एक प्रामाणिकता और धाकका भाव उनमें न होता और स्वय उसने अपनी बातको इस गुरुता और महत्त्वपूणताके साथ अदा न किया होता तो दोनो उसके मुँहपर हस ही पड़ते अब वे उसकी तरफ आखें फैलाकर ताकते ही रह गए

"हां, हा," बिना अप्रतिभ हुए सोम वास्तीने कहना जारी रखा, "मैं रसायनिक और वज्ञानिक तरह तरहके प्रयोग, उसके सामने उपस्थित करूगा वे जो घरपर सरलतासे किये जा सकते हैं, और जिनसे तबियत भी बहलती है, मस्तिष्क पुष्ट होता है और भ्रान्त धारणाए नष्ट हो जाती ह इसी तरह उसे म सृष्टिकी प्रक्रिया और उसके सगठनका रूप और परमाणुका महत्व समझाऊगा और काल मावसकी जहा तक बात है आपको समझना चाहिए कि बड़ी-बड़ी किताबें भी, क्या विद्वान और क्या प्रारम्भ कर्ता, सबके लिए एक-सी सुलभ ह बशर्ते कि समझानेवाला हो और सुबोधरूपमें उन्हें पेश कर सके और क्या मैं कहू कि महान विचार सदा सरल होते ह"

लखनपालने लुवीको उसी निश्चित जगह बाघके पास बेंच पर पाया अनमनी उसके साथ साथ वह घर गई जसा लखनपालने समझा था, सिकन्दराके सामने पड़ते उसे डर लगता था, और उस बेचारीको इस तरहकी नित्य नैमित्तिक अप्रियताओंको अगीकृत करके चलनेकी आदत अब न रह गई थी और फिर यह बात कि लखनपाल उसके अतीत जीवनको ढका नहीं रहने देना चाहता, उघाड़-उघाड़कर चलता है, उसे त्रास और आशकासे घेरे रहती थी लेकिन वह जो अन्ना मरकानीके आवासमें कभीसे अपनी निजकी इच्छा और अपने निजके व्यक्तित्वसे वचित रक्खी जाती रही थी और जो हर किसीकी मांगपर उसके पीछे चल देना ही सीखी थी, इस समय भी कोई प्रतिवाद या विरोधका शब्द मुँहसे निकाल न सकी और चुपचाप लखनपालके पीछे पीछे चलती रही

धूत सिकन्दरा इस बीच छात्रावासके सुपरिन्टेन्डेन्टके पास जाकर

खूब कह सुन आई थी कि लखनपाल एक लडकीको ले आया है और रात भर उसीके साथ कमरेमें रहा है और यह और वह भला यह सिकन्दरा क्या जाने कि वह कौन है, कौन नहीं ? लखनपाल ही कहता था कि कोई बहन सहन है लेकिन उसका पास पोट तो उसने दिया नहीं इस सुपरिटेडेन्टको सब बातें इतने विस्तारसे कहना जरूरी यो भी था कि यह उद्दत, बदतमीज आदमी जो हवेलीके और रहने वालोकी तरफ ऐसे पेश आता था जसे विजयी सेनापति अपने परो तले पड विजित नगरवासियो के साथ पेश आए, इन विद्यार्थियोसे जरा चौंक कर ही रहता था क्योंकि ये लडके उसे कभी कुछ दुरुस्त बनाते रहा करते थे

लखनपाल उसके सामने हुआ तो उस आखिर तभी शात कर पाया कि, जब अलग एक छोटासा कमरा लुवीके लिए और लेनेका उसने वचन दे दिया

'लेकिन मिस्टर लखनपाल, देखिये कल जरूर उसका पासपोट आप मौजूद कर दीजिये," चलते वक्त सुपरिन्टेडटने आग्रहपूर्वक कहा । "आप बाइज्जत आदमी है और मेहनती ह और हम लोग आपसमें पुराने वाकिफ हे । किराया वक्तपर दे दिया कीजिये । आपहीकी खातिर म यह कर रहा हूँ नही तो आप जानते ही ह कि क्या बुरा वक्त है आज कल किसीने मेरी शिकायत कर दी तो न सिफ मेरी खबर ही ली जा सकती है, मुझे शहरसे निकाल भी दिया जा सकता है और आजकल बडे अफ्सरोकी कडी निगाह है'

शामको लखनपालने लुवीको प्रिन्स पाकम घुमाया, एक बडे क्लबमें जाकर उसे बाजा सुनवाया और घर जल्दी लौटकर आ गया लुवीको उसके घरके दरवाजे तक पहुँचाकर वहींसे उससे रुखसत ली तो भी मानो पिता ही हो मस्तक पर सस्नेह चुम्बन लिए बिना वह न रह सका

लेकिन दस मिनटके बाद जब वह कपडे उतारकर बिस्तरम लेटा सरकारी कानूनकी किताब पढ़ रहा था, लुवी उसके दरवाजपर बिल्ली

की तरह खसोट कर कुछ आहट करनेके बाद, अचानक उसके कमरेमें घुस आई

"मेरे प्यारे, तकलीफके लिए मुझे माफ करना, तुम्हारे पास सुई धागा है ? नही मेरे ऊपर गुस्सा मत होओ, म अभी चली जाती हू"

"ल्युबा, मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ तुम अभी, नही इसी घडी चली जाओ म तुमसे माँगता हू "

"मेरे प्यारे राजा बाबू, मेरे देवता", करुण और कुछ परिहास भीनी वाणीमें वह बोली, "तुम मुझसे हमेशा यो चिल्ला कर क्यो बोलते हो ?" और क्षण भरमे मोमबत्ती को फूकसे बुझाकर अधेरेमें जोरसे हँसती और कूजती हुई वह उसके बिस्तरमें ही आ दुबकी

"नही ल्युबा, यह नही होगा ऐसे नहीं चलेगा—" दस मिनट बाद कम्बलमें लिपटा दरवाजे पर खडा लखनपाल कह रहा था, "अब ज्यादा से ज्यादा कल म तुम्हें कहीं दूसरे मकानमें कमरा ले दूँगा अवस कभी ऐसा नही होने देना होगा परमात्मा तुम्हारा भला करे जाओ जाओ, खुश रहो लेकिन मुझे वचन दो कि हमारा सम्बन्ध बस सखा भावका होगा"

'म देती हूँ, मेरे पीतम में, देती हूँ, म वचन देती हूँ" वह हँसती हुई बोली और चट पहले उसके ओठोपर और फिर उसके हाथपर उसने चूम लिया यह उसका कृत्य बिल्कुल आन्तरिक, हार्दिक, स्वय लुबी के लिए एक दम अप्रत्याशित था अब तक जीवनमें एक पादरीको छोड उसने किसी पुरुषका हाथ नहा चूमा था शायद इस प्रकार लखनपालके प्रति, जैसे किसी लोकोत्तर पुरुषके प्रति हो, वह अपनी कृतज्ञता, अपना कृतार्थ समर्पण निवेदन करना चाहती थी

१५

जैसा बहुतोंके अनुभवमे आया है एशियाके बुद्धिजीवी वर्गमें काफी सख्यामें ऐसे व्यक्ति मिलते हैं जो असाधारण होते हैं, बिल्कुल अद्भुत

मातृभूमिके गौरवके खरे नमूने, उसकी सस्कृतिके पुंज वे लोग माथे पर बल आए बिना साहसके साथ मौतके मुँहमें घुस जा सकते है उनमें शक्ति है कि एक सकल्पके खातिर अकल्पनीय कष्ट और मुसीबतें झेल सकें, लेकिन य ही एक दरबानकी त्यौरी देखकर दुबक रहेंगे, नौकरानी की झिडक और डपटपर कांपने लगेंगे, और पुलिस थानेमें पहुचते ही उनके दम खुश्क हो जायेंगे इसी तरहका व्यक्ति था लखनपाल अगले रोज (पहले रोज तो छुट्टी और देर हो जानेके सबब यह सभव न हो सका था) सवेरे उठकर और यह याद करके कि आज लुवीके पासपोटका बन्दोबस्त करना है उसका वह हाल हुआ जो छुटपनके हाई स्कूलके दिनोंमें इम्तहानके लिए जाते वक्त हो जाता था उसके मनमे धुक धुक होता रहता था कि वह फेल ही होगा अब भी उसका सिर दुख आया उसे लगा कि जसे यह हाथ यह पर उसके नहीं किसी और के ह तिसपर बाहर सडकपर सवेरे से लगातार कम्बख्त पानी बरस रहा था सो धीमे धीमें हठात् अपने कपडे पहनते हुए लखनपालने मन में कहा कि देखो मुसीबत हुई कि तभी ऊपरसे यह पानी बरसने लगता है ! क्या आफत है !

उसकी जगहसे याम्सकाया कोई खास दूर न था यही पाँच छह फर्लांगसे ज्यादा न होगा वह वहाँ बहुत ही कम जाता हो सो भी न था लेकिन कभी खुले दिनमें वहा पहुचनेका साबका न हुआ था सो रास्तेमें जब कोई मिलता, कोई पुलिस वाला या गाडी वाला, तो उसे रह रहकर यही ख्याल होता कि वह उसको बडे गौरसे देख रहा है उसे लगता कि जसे सब जानते हैं कि वह कहाँ जा रहा है जैसा अक्सर किसी मनहूस दिन बन जाया करता है, जो चेहरे उसके आखो आगे आए सब भद्द, बेडौल जान पडे बार-बार कल्पनामें वह भीतर दोहरा रहा था कि वहा पहुँचकर क्या क्या कहेगा और फिर पुलिस थानेमें जाकर कसे क्या करू गा पर इस तरहकी कोशिशका परिणाम लगता कि उल्टा हो रहा है ओह, तो पहलेसे आखिर एसा म क्यो सतक होऊँ ? ऐसी क्या आफत है? बलात् यह सोचता और अपनेसे ही नाराज बनकर

वह रास्तेमें ठिठक रहता

ऊँह, तुम्हें पहलेसे सोचनेकी, पहलेसे मान रखने की, कि वहां यह कहोगे, यह न कहोगे जरूरत क्या है ? सब पहलेसे कुछ तयारी नहीं की जाती, तब अक्सर जो बात निकलती है, ठीक निकलती है

पर, फिर उसके सिरमे वही कल्पनाजन्य अनुमानित वार्तालाप घूमना और घुनना शुरू हो जाता

"तुम्हे उस लडकीको उसकी मर्जीके खिलाफ रखनेका कोई हक नही है"

"जनाब तो उसे अपने जानेकी मर्जी खुद जतलानी चाहिए म उसीके कहनेमे यह कर रहा हूँ"

"माना लेकिन तुम यह कसे साबित कर सकते हो ?'

और मनही मन उलझकर मानो उत्तर सोचता हुआ वह फिर अटक जाता

इसी तरह शहरकी वीरान पडी जमीन आई गाय वहां खडी जुगाली कर रही ह घेरेके पासका लकडीका वही रास्ता आया, जो उसे याद है नालियो और नालोपर छोटे छोटे पुल बने ह जो उसके परो तले कापम उठते ह यहासे वह याम्सकायाकी तरफ मुड गया अन्ना मरकानीके यहाँकी सब खिडकिया बन्द थी बाकी चकलोम भी सन्नाटा था जसे सब उजड गया है सो गया है सकम्प हृदयसे उसने बाहरसे घण्टीकी रस्सी खींची

नग पर दामन हाथोमें उठाए हाथम भीगा लत्ता थाम मुह वाले बाल पर धूल लपेटे जवाबमें एक स्त्री आ मौजूद हुई वह इस वक्त अन्दर फश साफ कर रही थी

डरते हुए विनम्र भावसे लखनपालने कहा, "म जेनीसे मिलना चाहता हूँ"

"जी, मिस जनी खाली नही ह उनके मुलाकाती अभी सोनेसे जगे नही ह"

"अच्छा तो तिमिरा"

स्त्रीने तनिक अविश्वस्त दृष्टिसे उसकी ओर देखा, "मिस तिमिरा म ठीक जानती नहीं मैं समझती हूँ, वह भी खाली नहीं है लेकिन आपको क्या चाहिए ? मुलाकातके लिए आए हैं या ?"

"जो समझो। अच्छा कहो, मुलाकातके लिए आए ह"

"मुझ मालूम नही म जाकर देखती हूँ जरा ठहरिय"

लखनपालको उस धुंधले प्रकाशसे मले ड्राइंग रूममें छोडकर वह चली गई रोशनदानोके शीशोमेंसे आती हुई रोशनीकी कुछ लकीरें इस भारी अन्धरेको इधर-से उधर भेट रही थी वहाँ रक्खा रगा और चिकना फर्नीचर और जसे पसीनेसे भीगी भारी तस्वीर और अन्य सामान—सब मिलाकर माना किसी व्यतर लोकका आभास दे रहे थे कोई जसे भुतही जगह हो वहाँ कलके तम्बाकूकी सीलनकी खट्टी बास सी भरी थी और जाने कसी एक मलिन अकथनीय अमानुषी गन्ध वहाँ से निकल रही थी जसे खाली नाटक घर, नाच घर आदि हाते ह न वहाँ यो आदमी रहते नही, पर मौके-ब मौके सकडोकी भीड जमा हो जाती ह ! तो सवेरेके बद दरवाजोंको खोलते वक्त अदर पहुँचकर हस से कसा दम घुटता सा मालूम होता है वसा ही यहाँ था शहरम कही दूर, रह रह कर किसी जाती गाडीकी खड खड आवाज आ रही थी दीवारपर घडी सोती टिक टिक कर रही थी उद्विग्न और उत्तेजित अवस्थामें लखनपाल इस डाइंग रूममें दानो हाथोको रगडता और मलता हुआ टहलने लगा जाने क्या उस वहाँ सर्दीसी लगी और वह वहाँ सतर होकर नही चल सका

'मुझे सच यह सब जहमत उठानी ही क्या चाहिए थी' झल्लाहटके साथ मन ही मन उसन कहा यह कहनमे अब क्या बनता है कि सारी यूनीवर्सिटीमें जहाँ देखो मेरी ही चर्चा है सब शतानकी कारवाही है और कल दिन तक भी क्या बिगडा था वह कह ही रही थी मुझे वापस पहुँचा दो मने पहुँचा क्यो न दिया? मुझ करना ही क्या था उस गाडी के पस दे देता दो चार ऊपरसे और वह चली जाती और सब ठीक ठाक हो गया होता बखडा टलता और किस्सा खतम म इस वतन

अपने आजाद होता, स्वच्छन्द होता यह बवाल, यह आफत यह परेशानी तो सिरपर सवार न होती लेकिन अब मुडनेका वक्त कहाँ है ? और कल और भी नही और परसों और भी नही और फिर—बिलकुल नही एक बेवकूफी कर गुजरे हो तो उसे फौरन रोक देना चाहिए। पर, अब वक्त निकल गया है अब तो उधर ही बढ़े चलो तब चने एक झूठ किया है ता दो और, और उनके बाद बीस और, और लेकिन क्या ? अभी एसा सब क्या बिगड गया है वह बेचारी अनजान है कच्ची बुद्धि जसे पगली ही न हो जैसे उस जैसी और होती ह, वह भी बिचारी जानवर है बस खाकर पेट भर लिया और मदके साथ खाट पर लेट रहीं पर ओह म यह क्या सोचता हूँ ? म—'दोनो हाथोंके बीचमें लकर जोरसे उसने अपनी कनपटी और माथको दबाया और आँखें बन्द कर लीं, 'म अगर उस काम, पाप भोग प्रलोभनसे बचता ? देखो, वह अपने आपसे कह रहा था 'देखो, अभी यह दो बार हो चुका है और फिर होगा, और फिर और फिर

और साथ साथ इनके प्रतिकूल विचार भी उसके सिरमें दौड़ रहे थ

'लेकिन क्यो ? म आदमी हूँ म अपने शब्दका स्रष्टा हूँ, भाग्यका विधाता हूँ क्या वह प्ररणा जिसने मुझे इस कृत्यकी ओर प्ररित किया महान् न थी, प्रशस्त न थी उज्वल न थी ? मैं जानता हूँ कसा विमल आनन्द मुझ उस क्षण अ नुभव हुआ जब यह सत्प्रेरणा कृत्यमें उतरी ? वह कमी निमल, प्रबल, अनुभूति थी या वह सिफ मदसे उत्तेजित मस्तिष्ककी एक अतिरिक्त भ्रान्ति थी ? एक मरीचिका माया ? या रातभर की लम्बी तात्विक चर्चाका और निद्राहीन रात और थकित शिथिलावस्थाका यह परिणाम था ?"

और तभी उसके सामने अनन्त दूर, कालके अवगाहनके पारमेंसे मानो उठती हुई लुबीकी मूर्ति उसके सामने आ ठहरती सकुचित स्नेहाकाक्षासे कातर सलोनी और सुन्दर वह लुबी, जो अविलम्ब उससे घनिष्ट और सन्निकट हो गई चिरपरिचित, चिरप्राप्त किन्तु तभी अकारण

और अविहित भावसे वह उसे कुत्सित और जघान्य भी लगी

'क्या ? क्या यह है, कि म कायर हूँ ? निकम्मा हूँ ?" भीतर उसके चीख उठी और उसने जोरसे अपन हाथ मल मुझ किसका भय है ? किससे सकोच किसकी आशका ? क्या मने स्वय अपने भाग्यका मालिक होने का सदा गव नही किया ? मान लो एक स्वप्न, एक कल्पना एक सूझ ही थी ? मानवीय आत्माके साथ एक मनस्तत्व सबधी प्रयोग—बस आश्चय कर विरल प्रयोगोंमेंम एक प्रयोग जो सौमें निन्यानव असफल होते ह मान लो वैसे प्रयोगकी ही बात मेरे मनमे उठी, तो भी क्या ? क्या यह जरूरी है कि इसका हिसाब मुझ किसी को देना ही हो ? किसीकी ओर मुझे दखना ही हो ? किसीकी सम्मतिका लिहाज या डर मुझ करना ही हो ? लखनपाल ऊँचे रहो उच्चासीन हो मनुष्य जातिको देखो'

जनी कमरेम आई अस्त व्यस्त निंदासी, रातके ही कपडोमें वह आई और जमुहाई लेते हुए उसने अपना हाथ लखनपालकी तरफ बढाया, 'कहो बाबू क्या हाल है ? अपने नए घरमें हमारी ल्युबा कसी है ? कभी हमको दावत नही दोग ? या चुपचाप अपने सुहागके दिन लूटनेका इरादा है कि कही कोई बाँट न ले '

"बकवास छोडो, जनी म पासपाटके बारेमें आया हू

'सा—पासपोटके बार म?'

जनी विचारमें पड गई, "यहां तो पासपोट है नहीं तुम्हें यहाँसे एक खाली फाम ले जाना होगा समझे न? हमारा वेश्या वाला तिकौना फिर शहर कोतवालीमे उसे दाखिल करना होगा एवजमें वहीं से तुम्हें सही पासपोर्ट मिलेगा पर देखो इस काममें मे तुम्हारी ज्यादा मदद नही कर सकती क्या जाने वे मालिक लोग इस मामलेको सूंघ लें, और कुछ दख, तो मारपीट बठें लेकिन मे बताती हूँ सो करो अच्छा हो, नोकरानीको सरक्षिकाके पास भजो उससे कहना कि कहे कोई कामसे तुमसे मिलने आए ह, कहे कि एक गाहक है, बधे थोर गाहक ह और यह कि मिलना बहुत जरूरी है लेकिन मुझ इसमेंसे दूर ही रहने दो और

देखो, नाराज न हो तुम खुद जानते हो भलाई घरसे शुरू होनी चाहिए लेकिन यहाँ अकेले अंधेरेमें क्यों खडे हो, चलो, वहाँ कमरेमें चलो कहो तो म तुम्हे वहाँ बीग्रर भेज दूँ या शायद तुम काफी पसन्द करोगे ? और या"—उसकी आँखें व्यंग और शरारतमे चमक आई, "या कहो, किसी नई नवेलीको भेज दूँ ? तिमिरा तो खाली है नहीं लेकिन शायद नूरी या बर्कासे काम चल जाय—'

'चुप करो, जनी म यहाँ कामकी जरूरतमे आया हूँ और "

"अच्छा अच्छा, तो म नही कहती, म नही कहती मने तो यूँ ही कह दिया था देखती हूँ कि तुम पत्त निबाहोगे यह बडी बात है अच्छा, तो चलो—" वह उमे कमरेमें ले गई और भीतरसे खिडकीको पूरा खोल दिया दिनकी धूप जमे खिन्न अलस चुपचुपाते भावसे सुनहरी और गुलाबी दीवारोंपर, फानूसोपर, मुलायम, लाल और मखमली फर्नीचर पर छलक कर बिखर गई

लखनपालने मनस्तापपूर्वक याद किया—कि यही, ठीक यही, उसकी शुरुआत हुई थी

'मैं जा रहा हूँ,"—जनीने कहा,

'और देखना, उसके सामन बहुत झुकना मत और यहीव त साइमनके लिए भी याद रखना उन्हें खूब खरी खरी सुनाना यह दिन का वक्त है और उन्हे हिम्मत न होगी कि तुमसे कुछ कहें या कुछ कर अगर कुछ हो ही पड तो सीधे सीधे उनसे कह देना कि मैं अभी गवनर के पास जाता हूँ और सब रिपोट करता हू कहना कि चौबीस घण्टके अन्दर अन्दर उन्हे ब द न करवा दिया और शहरमे बाहर न निकलवा दिया तो मेरा नाम नही वे एस ही ह उन्हें सेरको सवासेर सुनाओ, और जोरसे डटकर, तो वह भीगी बिल्ली बन जाते हैं अच्छा म जाती हूँ परमात्मा तुम्हे सफल कर "

वह चली गई दस-बारह मिनट गुजरनेपर वहा आई एमा उडवानी नीले साटनसे ढकी स्थूलकाया, चोहरा चेहरा जो आयसे नीचे उतारके साथ चौडेपर और चौडा हा होता गया था, विशाल ठोडी और

विशालतर वक्ष छोटी, घनी बनौहीन आँखें और पतले दब दुबत ओठ,—यह थी उड़वानी लखनपालने उठकर अपने सामने उसे अँगु ठियोस लदे मोटे और मुलायम हाथोको दबाया और अकृत्रिम घणाके साथ सोचा—अगर इस मोटी भेंस इस फूली डायनमें कहीं दिल-जसी चीज हो और वह दिल किसी तरह टटोला जा सके, तो राम जाने कितनी हत्याए वहा छिपी हुई नही मिलगी

यह कह देना होगा कि घामकास चलने वक्त लखनपालने उसके साथ एक रिवाल्वर भी पास रख लिया था सडकपर चलते चलते जब में हाथ डालकर वह उसकी धातुकी ठडी देहको छूकर जाच लिया करता था सोचता था जाने क्या मौका हो आशका थी कि कुछ गडबडी कहीं न कहीं होगी उसके पूरे मुकाबलेके लिए वह तयार होकर चला था पर अपने भयमें जो उसन पहलेसे सोच-साच रखा और गढ रखा था सब फिजूल निकला उसे अचरज हुआ कि बात इतनी सीधी-सादी अति सामान्य और नीरस जसी निकली हां उसमें अप्रियता और बदमजगी कम न थी

लापरवाही और कुछ अतिरिक्त शालीनताके साथ एक नीची आराम कुर्सीमें बठकर सिगरट सुलगाते हुए उस प्रमदाने कहा, 'कहिए महाशय, आप एक रातकी कीमत देकर गए और एवजमें लडकीको उसके बाद भी और एक रात और एक दिन रक्खा तिसपर अभी आप पर पच्चीस रुपया और बकाया है हम एक रातके लिए लडकी उठाते ह सो दस रुपए लेते ह, और चौबीस घण्टेके पच्चीस रुपए चुगीकी तरह यहा तो बधी दर है लीजिए, सिगरेट लीजिएगा ?" उसने अपना केस आगे किया और लखनपालने बिना कुछ ठीक तरहसे समझे एक सिगरेट उठा ली

'म कुछ बिल्कुल और ही कामकी बात करना चाहता था '

ओह, आप कहनेकी तकलीफ न कीजिए म सब खुद समझती हू शायद आप इस लडकीको, यानि ल्युबाको बिल्कुल अपने साथ लेकर —क्या कहते ह उसे आप लोग ?-जमाना ?—जी हा, उसे जिंदगीमें

घर गिरिस्तीम जमा देना चाहते ह हा, आ, वसा होता है मैं बाईस साल इस धंधमें ह और मैं जानती हूँ कुछ कच्चे,नातजुर्बेकार लडके ऐसा कर बैठते ह लेकिन म आपको कहती हू कि इसका कुछ नतीजा नही होगा"

नतीजा होगा, या नतीजा नही होगा—वह अब मेरा काम है" लखनपालने काँपती टाँगमि, उँगलियोंके नहोकी तरफ देखते हुए, मन्द भावसे उत्तर दिया

"हाँ हा, वह तुम्हारा काम है, मेरे जवानो' और एमा उडवानोके फूले गाल और विशद ठोडिया नीरव हास्यसे कूदने लगी "म दिलसे तुम्हारी कामयाबी चाहती हूँ और तुम्हारा भला चाहती हूँ मुझे तुमसे मुहब्बत है लकिन जरा तकलीफ करके मेरी तरफसे उस लडकी ल्यूबासे वह दीजिए कि जब वह आपके घरसे खदेडकर निकाल बाहर की जायगी, तब खबरदार जो वह अपनी मनहूस सूरत लेकर यहा पहुँचे वह चाहे तो कही पडी भूखी मर सकती है, या नही तो फाँसी रगरूटोके लिए चवन्नी वाली जगह पहुँच सकती है"

'यकीन कीजिय, वह लौटेगी नही म आपसे सिफ उसका सर्टी-फिकेट दे देनेके लिए कहता हूँ देर न कीजिए"

'सर्टीफिकेट ओह, लीजिए जरूर लीजिए, इसी मिनट लीजिये लेकिन जरा पहले आपको यह तकलीफ देनी है कि जो यहाँ का उसकी तरफ वाजिब निकलता है, वह अदा कर दिया जाय दखिये यह उसकी हिसाबकी किताब है मै खयाल रख कर उसे साथ ले आई जानती थी कि हमारी बातके आखीरम जरूरत किसकी पडेगी" कहकर उसने अपने कुर्तीकी जबमसे एक छोटी सी काली जिल्दकी कापी निकाली और अपने विशाल पीत वण मासल वक्षकी निक झलक लखनपालको मिलने दी किताब पर मोटे शीपकमें लिखा था—

अन्ना मरकानी द्वारा सचालित वेश्यावासकी नम्बर मिस ल्यूबाके हिसाबकी कापी नीचे लिखा था—याम्सकाया स्ट्रीट नम्बर मेजके उस तरफसे लखनपालकी ओर कापी बढ आई लखनपालने लेकर पहला

सफा पलटा और छपे नियमोंके चार पाँच पैराग्राफ पढ गया सक्षपमें जरूरी शर्तोमें दर्ज था कि इस हिसाबकी किताबकी दो प्रति होगी एक मालकिनके पास रहेगी दूसरी वेश्याके पास सब आमदनी और सब खर्च दोनो किताबोमें दर्ज होगा शर्तोके मुताबिक वेश्याको यहाँसे खाना, रहनेकी जगह, जाडोके लिए कोयले, रोशनी, बिस्तर, बाथ वगरहका बन्दोबस्त होगा और एवजमें वेश्याको अपनी आमदनीका दो तिहाई तक, ज्यादह नही, मालकिनको देना होगा बाकी पसेमसे जरूरी है कि वह साफ कपडोमें और ठीक तरीके पर रहे कम से-कम बाहर जानेके लिए दो ड्रेस उसके पास होना लाजमी ह आग इसका भी जिक्र था कि पसकी अदायगी स्टाम्पकी मददसे होगी, जो कि मालकिन पैसा लेकर उन्हे मुहय्या करेगी हिसाब हर महीनेकी आखिरी तारीखको सही किया जायगा अत में यह भी था कि कोई वेश्या किसी वक्त चकला छोड सकती है, अगर उसकी तरफ कुछ बकाया लेना रहता है तो एसे कर्जको कानूनके मुताबिक अदालतसे मसूख या चुकती करानका जिम्मा उसे उठाना होगा

लखनपालन इस नुक्ते पर उगली रखकर गौरसे देखा और किताब-को रक्षिकाकी तरफ घुमाकर विजयी भावसे कहा, "जी देखती ह आप, उसे हक है कि यह यह जगह जब चाहे छोड सकती है चुनाचे वह किसी भी वक्त तुम्हारी इस बदनसीब और कम्बख्त नरककी नालीका जिसम तुम " लखनपाल इस तरह बढ बढ कर कहता रहा

लेकिन सरक्षिकान शात भावसे उसे बीच ही में रोक दिया बोली, "ओह इसमें मुझ शक नही है वह चली जा सकती है लेकिन अपना कर्ज पहले अदा कर जाय"

'दस्तावेज हो तो ? कागज वह लिख दे सकती है

शि उसका कागज ! पहले तो वह अनपढ है फिर उसके प्रोमि-जरी नोटकी कीमत क्या है, पूरे जितनी भी नहीं हाँ, कोई उसका जामिन हो, जिसका ऐतबार मैं कर सकू तो मुझ कोई शिकायत न होगी"

"लकिन कायदोमें तो कोई जमानतकी बात लिखी नही है"

"बहुतेरी बातें होती हैं जो लिखी नही जाती कायदेमें तो यह भी नहीं लिखा कि लडकीको यहांसे मालिकाको बिना खबर दिए ल जाया-जा सकता है"

'खर, कुछ हो तुम्हे मुझे उसका ब्लॅक देना ही होगा"

"तो जनाब मैं एसी बवकूफ नही हूँ कि यो ही दे दूँ किसी मुअज्जिज शख्सको लाइय, हमराह पुलिस हो और पुलिस सिफारिश करे कि आप के दोस्त बाइज्जत ह, और वह आदमी फिर आपकी जमानत दे और इसके अलावा पुलिस गवाह हो कि आप लडकीसे पेशा नही करायेंगे, या किसी और जगह न बेच देंगे, तब जो आप कह म हुकमकी ताबेदार हूँगी"

"ऐसी तैसी तुम्हारी !" लखनपालने कहा, "अगर जामिन म होऊँ, म खुद ? और तुम्हारे प्रोमेजरी नोटपर यही दस्तखत कर दू ? "

'मेरे जवान दोस्त, मुझे नही मालूम तुम्हारी यूनिवर्सिटी में क्या सिखाया जाता है ? लेकिन क्या तुम सचमुच मुझे ऐसा बेवकूफ समझते हो ? खुदा करे, जो पहने हो उसके अलावा भी तुम्हारे पास और कुछ कपडे हो खुदा करे कलके बाद परसो भी तुम्हारा कुछ खानेका ठिकाना हो लेकिन प्रोमिजरी नोट ! उसकी क्या बात करते हो जाओ, मेरा सिर और न खाओ'

लखनपाल बिल्कुल बिगड उठा उसने जेबने मनीबॅग निकाला और जोर से मेजपर पटका

"तो म अभी हाल सब नकद देता हूँ"

"ओह, तो यह दूसरी बात है" मीठी पडकर, फिर भी तनिक अविश्वाससे सरक्षिकाने कहा 'म आपको तकलीफ दूँगी कि जरा सफा बदलकर देखिए कि आपकी माशूकापर क्या बकाया आता है"

"बक मत, कुत्ती"

"म बक नही रहीं हूँ, जाहिल," स्थिर भावसे सरक्षिकाने उत्तर दिया

लकीर खिंचे किताबके पन्नेमे दाईं तरह आमद दर्ज थी, बाई तरफ खर्च

स्टाम्पमें वसूल पन्द्रह अप्रल," लखनपालने पढा, "दस रुपए, सोलह तारीख—चार रुपए सत्रह—बारह रुपए अट्ठारह—बीमार उन्नीस—बीमार बीस—छ रुपए इक्कीस—चौबीस

हे राम! सताप और खीज और ग्लानि और अवश क्रोधके भावसे लखनपालने सोचा 'एक रातमें बारह आदमी!

महीनेके अतमें लिखा था "जोड -तीनसौ तीस रुपए!'

"ओ भगवान्! यह क्या मै कयामत देख रहा हू? या सपना? महीनेमे एकसौ पैंसठ आदमी' अनायास मनमे हिसाब मिलाकर लखनपालने सोचा और उसी भाँति सफे पलटता रहा

लाल रेशमकी ड्रेस बनाई, गोटदार, चौरासी रुपए ड्रेसमेकर हेलेन सबेरे पहननेके कपडे पत्तीस रु० ड्रेसमेकर हेलेन, रेशमी मोजे छ जोडी छत्तीस रुपए गाडी भाडा, टायलेट, सट और इतर इत्यादि जोड दो सौ पाँच रुपए उसके बाद तीन सौ तीस रुपएमेंसे दो सौ बीस घटाये गए य दो सौ बीस रुपए, रहनेकी जगह और खाना देने वाली मालकिनके हिसाबके थे इस तरह एक सौ दसकी रकम बच रही माहके आखिरमें हिसाबके गोशवारेमे लिखा था ड्रेसमेकरको और अन्य खर्चका चुकता करनेके बाद एक सौ दस रुपए बकाया बचे सिवा नवे रुपए लुबीके उसकी तरफ वाजिब है और चारसौ अठारह रुपए पिछले सालके उसकी तरफ चले आ रहे है कुल मिलाकर पाँच सौ तेरह रुपए'

लखनपालके दम खुश्क हो गए पहले तो उसने कोशिश की कि बिलोके बहद तूल-तवील होने और खर्चकी अन्धा धुन्धीपर आपत्ति करे लेकिन रक्षिकाने साफ कह दिया कि उससे हमारा कोई सरोकार नही है हमारे यहाँकी तो इतनी भर माँग है कि हर लडकी साफ कपडे पहने और एसे रहे जसे भले घरकी लडकियाँ रहती है हम कसूरवार है तो इसके कि हमने उसके खर्चोंके लिए सिरपर कर्जा ओढ लिया है

"लेकिन, यह तुम्हारी ड्रेसमेकर पूरी ठग है आदमीकी शकलमें मक्खी फसाने वाली मकडी है' लखनपाल आपेसे बाहर होकर चिल्लाया, "और तुम सबकी सब एक थैलीकी चट्टी-बट्टी हो एक कुनबेकी ठग बहया क्पटिनो, तुम्हारे दिल भी है कि नहीं ?"

जितना जितना वह गर्म होता था, एमा उडवानी उतनी ही ठण्डी पड कर कँटीले ताने कसती थी "म फिर कहती हूँ कि जनाब यह मेरा काम नही है और देखो ऐ जवान दोस्त इस तरीकेसे बकना शुरू न करो नही तो चपरासी आयगा और तुम्हें इसी दम दरवाजसे बाहर उठाकर फेंक देगा"

लखनपालको लाचार इस हृदयहीन औरतसे सौदेमें पडना पडा बहुत देर तक भक-भक चिक-चिक हुई, तब जाकर वह राजी हुई कि अच्छा, ढाइसौ रुपए नकद ले लेगी, बाकी ढाइसौका दस्तावेज और राजी भी तब हुई जब अपने टस्टके सर्टीफिकेट दिखा कर लखनपालने उसके सामने यह प्रमाणित कर दिया कि इस साल वह अपना कोस खतम कर लेने वाला है और अगले साल वकील बन जायगा

रक्षिका टिकट लेने गई, इधर लखनपाल उठ कर कमरेमें टहलने लगा वह दीवारो पर लगी सब तस्वीरें देख चुका था हसके साथ क्रीडा करती रम्भा को, समुद्र तटवर्ती स्नानके मनोरम दृश्यको, किसी एशियाई देशके हरमकी बहारको और उस दानव देवताको जो एक निवस्त्रा अप्सराको अपनी बाँहोमे भर कर उडाए जा रहा था—इन सब को वह देख चुका था • फिर भी उनपर एक निगाह घूम गई किन्तु तभी सहसा एक छोटे छपे प्लेकाडने उसकी निगाह खीची शीशेके पीछे मढा हुआ वह लटका था उसका कुछ हिस्सा ढका था पर काफी दीखता था पहली बार यह लखनपालकी नजर पडा और उसे जारा पढकर वह भौंचक रह गया पुलिस थानोकीसी कानूनी भाषामें लिखी छपी उन वलाग बेलाज, बजाग लकीराको पढकर एक बुझी ग्लानिसी उसमें हुई वहाँ व्यावसायिक सदरूही और बेहयाईके साथ वर्णन और हिदायत लिखी थी कि किस विध और किन उपायोसे योनि रोगोसे बचना चाहिए,

अपने शरीरको खूब आरास्ता रखनेके सब यत्न और तरीके भी दिए गए थे और साप्ताहिक डाक्टरी निरीक्षणकी और आगाहीके लिए दीगर जरूरी हिदायतें भी थीं लखनपालने यह भी पढा कि कोई चकलाघर, गिरजा घरो, शिक्षालयो, और अदालतोंकी बिल्डिगोंसे सौ कदमसे पास नहीं बन सकेगा स्त्रियाँ ही ऐसे चकला घरोकी सचालिका होगी यह भी कि उसके रिश्तेदारोंमेंसे स्त्रिया ही, और वह भी सात वषसे अधिक की नही, उस सचालिकाके साथ ठहर और रह सकेंगी और यह कि मकान मालकिन और संचालिका और उस चकलेमें रहने वालिया आपसमें और महमानोंके साथ हमेशा शिष्टता, नम्रता, शाति और अदब से पेश आएँगी किसी तरहकी गाली गलौज, तू-तू-म म नशा और झगडा नहीं करेंगी यह भी लिखा था कि वेश्या नशेकी हालतमें किसी पुरुषका आलिगन स्वीकार न करेगी, न किसी मदमस्त पुरुषको स्वीकार करेगी इसके बाद खास खास पव त्योहारोका उल्लेख था, जिन दिनों यह वत्ति निषिद्ध बताई गई थी गभपात अथवा भ्रूणघातके विरुद्ध कडी ताकीद की हुई थी 'क्या पक्का, दुरुस्त, धार्मिक प्रबन्ध है, और नतिकताकी रक्षाकी क्या गभीर चिन्ता है ?' लखनपालने कटु व्यगसे सोचा

आखिर एमा-इवडानीके साथ मामला तय हुआ रसीद लिखकर इधरस उसने अपने हाथसे लखनपालकी ओर बढाई कि उधर लखनपाल ने मुट्ठीमें पसे लेकर उसकी ओर किये इस व्यापार सम्पादनमें दोनों सशक तत्पर एक दूसरेकी आँखो और हाथोको घूर कर देख रहे थ स्पष्ट था कि दोनोमें परस्पर कोई बहुत श्रद्धा अथवा सद्भाव नहीं है लखनपालने रसीद लेकर अपनी मनीबेगमें रक्खी और चलनेको उद्यत हुआ रक्षिका देहलीज तक उसके साथ गई और विद्यार्थी जब सडकपर पहुँच गया वह जीनेपर से ही लपकके पुकार उठी 'बाबू, ओ विद्यार्थी बाबू'

वह रुका और पीछे मुडकर देखा 'क्या है' ?

"सुनो एक बात और है मुझे तुम्हें बतलाना था कि तुम्हारी लुवी निकम्मी है, चोर है, बेईमान है उसे सिफलिस है हमारे यहाँ कोई

भी बढिया मेहमान उसे नही लेते थे और अगर इस तरह तुम उसे न ले जाते तो कल हमें उसे वैसे ही निकाल बाहर करना था म यह भी कहूँगी कि वह पल्लेदार, पुलिसके सिपाही, उचक्के, चोर, उठाई गीरे इन सबकी वह भोगी भागी है और तुम दोनोके वध विवाहपर म तुम्हें बधाई देती हूँ"

"ओ पापिष्ठा, मायाचारिन," लखनपालने उसकी तरफ दहाडकर कहा

'जा, जा, भोदू गधे !" रक्षिकाने कहा और जोरसे किवाड भड लिए

लखनपाल गाडीम बैठकर पुलिस स्टेशन चला रास्तेमें उसने सोचा कि इस ब्लैकको, इस मशहूर पीले टिकट' का, जिसके बारेम उसने इतना सुन रक्खा है अभी ठीक तरह देख नही पाया है वह एक मामूली सफेद कागज एक डाकखानेके लिफाफे जितना बडा, एक तरफ बाकायदा नाम, बापका नाम और अल्ल लिखी थी और उसका पेशा—'वेश्या' और सामने दूसरी तरफ जिस प्लेकाडको वह पढ चुका था उसीमेंसे कुछ जरुरी बातें उद्ध त थी वही व्यवहार चलन अपने शरीरकी ऊपरी और भीतरी सफाईके बारेमेंकी वीभत्स, छल और दम भरी रीति नीतिकी बातें 'हर एक मुलाकाती' उसने पढा 'चाहे तो पहले उस वेश्यासे पिछले डाक्टरी मुआयनेका सर्टीफिकेट तलब कर सकता है' यह पढकर फिर लखनपालका हृदय भावुकतापूण क रुणासे भर आया

खउसने दके साथ सोचा, 'ओह वे बिचारी औरतें ! उनके साथ कानून क्या कुछ नही करता ? उन्हें लाञ्छित करनेमें उसने क्या उठा छोडा है ? यहाँ तक तुम्हें पामाल कर दिया गया है कि तुम पट्टी वधे कोल्हूके बलकी तरह सब कुछकी आदी हो गई हो' पुलिस स्टेशनपर जिला इन्स्पेक्टर-बर्कोश सामने मिला वह रातभर ड्यूटीपर रहा था, पूरी तरह सो न सका था और गुस्सेमें भरा था उसकी खूबसूरत पखा नुमा लाल दाढी इतस्तत फहरा रही थी उसके तयार युवा चेहरेका दाहिना आधा हिस्सा किसी सख्त सिराहनेके दबावसे अब भी लाल-लाल चमक

रहा था लेकिन उसकी नीली भूरी आख ठण्डी और चमकदार नीली चीनीकी तरह आबदार साफ और सख्त थी रातके घरे हुए आदमियोके उस कूड करकटके ढेरको जो बदमस्त हालतमें यहा ला पटका गया था, और अब जिनको होशमें सीध हो आने और दिन निकल आने पर अपनी अपनी जगह रवाना किया जा रहा था, उनकी भीडपर बक भककर झल्लाकर बेहूदा गालियाँ बककर और जिरह करके अपना रिकाड और अपना फज पूरा करनेके बाद बर्केश जरा कमर पीछ फेंककर लेट गया बाहे गदनके पीछेकी ओर, टागे सतर फलाकर बुरी तरह अकड अपने सारे बदनको एसे ताना कि जोड चट चट कर उठे

लखनपालको देखा जैसे किसी पदाथको देखते ह, पूछा, आप भी कहिए मिस्टर स्टूडेंट क्या चाहिए ?"

लखनपालने अपनी बात थोडमें कह दी 'और इस तरह म चाहता हूँ उसने उपसहारमें कहा कि "उसे म वहाँसे उठाकर साथ रखने की यहाँ आप लोग उसे क्या कहते ह यानी काम करने वालीकी हैसियतसे या कहिय एक सम्बन्धी नातेदार या आप क्या कहेंग ?'

'कहगे ? कहगे, रखली या माशूका या औरतकी शक्लम," अनपेक्षा से बर्केशने कह दिया, और हाथमें लग एक सिलवर सिगार केसको, जिसपर छोटी छोटी मूरत और मोनोग्राम बन थे, घुमाने लगा 'म आपके लिए कुछ नही कर सकता हूँ—यानी अभी बिल्कुल कुछ नही कर सकता हू अगर आप उससे निकाह करना चाहते ह तो अपनी यूनिवर्सिटीकी तरफसे अफसरानका जरुरी इजाजतका खत पेश कीजिए अगर आप यो ही उसे पालनेके लिए उठाते ह—तो सोचिए उसमें मतलब कहाँ है—क्या है ? फायदा क्या है ? आप उस एक दोजखके घरसे निकाल रहे ह इसलिए कि आप उसके साथ फिर वही शहवत परस्ती—क्या विचार है ?—का ताल्लुक जाडकर बठ'

लखनपालने कहा, 'नहीं—नही तो आप नौकर समझिए'

"अच्छा, तो नौकर सही, ऐसी हालतम म आपको तक्लीफ दूँगा कि आप अपने मकान मालिकका इस किस्मका इत्मीनानामा पेश कर क्यों

कि मुझ कामिल उम्मीद है आप खुद ही मालिक मकान नहीं हैं तो बस जनाब, अपने मालिक मकानका सिफारिशनामा ले आइये कि आप एक नौकरनीको जगह दे भी सकते हैं और उसके साथ वे कागज़ात भी लाना न भूलिएगा जिनसे साबित हो कि आप वही शख्स हैं जो कि आप कहते हैं आप हैं मसलन, अपने जिले और अपनी यूनिवर्सिटीके सर्टीफिकेट वगैरह या कुछ उसी किस्मकी चीज़ें क्योंकि मुझे उम्मीद है आप रजिस्टर्ड हैं या शायद आप आपकी वल्दियत मशकूक है'

'जी नहीं, मैं रजिस्टर्ड हूँ," लखनपालने उत्तर दिया, पर उसका धीरज खो रहा था

'तो बस यह बिल्कुल दुरुस्त है लेकिन, वह मोहतरिमा खातून जिनके बारेमें आप इतनी तकलीफ गवारा कर रहे हैं"

'नहीं, वह अभी तक रजिस्टर्ड नहीं है लेकिन उनका बैंक यह मेरे पास है उसके एवज़में मुझे उम्मीद है उसका असली पासपोर्ट मैं आपसे पाऊँगा तब मैं फौरन उसे रजिस्टर्ड करा लूँगा'

बर्केशके हाथ फिर उसी तरह सामने फैलकर सिगार केस से खेलने लगे "अफसोस है, मैं कुछ आपके लिए नहीं कर सकता, मिस्टर स्टूडेंट बिल्कुल कुछ नहीं तावक्ते कि आप जरूरी कागज़ात पेश न करें जहाँ तक लड़कीका ताल्लुक है क्यों, उसमें दिक्कत न होगी चूंकि मकान लेकर बसनेका उसे अख्त्यार नहीं है इससे यकीनन उसे पुलिसमें जगह देनी होगी वहाँ वह तब तक रहेगी जब तक कि अपनी मर्जीसे वापिस वहीं न जाना चाहे जहाँसे तुम उसे लाए हो अच्छा, इजाजत दीजिए आदाब अर्ज'

दोनों हाथोंसे अपना हैट नीचे आँखों तक खींच लखनपाल उठकर दरवाजेकी तरफ चला लेकिन तभी उसके सिरमें एक सूझ उठी उससे खुद उसको शर्म मालूम हुई, पेटमें उसके मिचली सी होने लगी, हाथ ठण्डे होकर सुन्न पड़ने लगे, पैरोंमें कपकपी सी हुई पर वह फिर लौटकर मेजपर आया और माना लापरवाहीके साथ, फिर भी आवाजमें झिझक थी, कहा, "माफ कीजिए थानेदार साहब एक जरूरी बात मुझे

फ़रामोश हो गई,एक आपके दोस्त ह, जो मुझे भी जानते है आपकी उनपर कुछ रकम वाजिब है उन्होने कहा था कि वह मै आपको पहुँचा दू '

'हुऊ, दोस्त," अपनी बडी गुलाबी आखें फलाकर बर्केशने पूछा, "वह कौन ?"

'बार बारबरीसाव'

"ओह बारबरी ! हाँ, हाँ मुझे याद आ गया ठीक है"

"तो क्या आप यह दस रुपए कबूल करगे ? '

बर्केशने सिर हिलाया लेकिन उस कागजके नाटको लिया नही,

'लेकिन यह आपका दोस्त बारबरीसाब यानि हमारा दोस्त, बिल्कुल गधा ही है, जी नही दस रुपए नही उसे पूरे पच्चीस मुझे देने ह क्या बदकार आदमी है वह जनाब, पच्चीस रुपए और ऊपरसे कुछ आने और खर, आनोकी बात छोडिये क्या ओछीसी बात है उसका जिक्र म नही करूँगा खुदा "पपर महरबान हो आपको मालूम है ?—यह एक विलियडका कज है लेकिन कहना होगा, वह अव्वल बेईमान आदमी है खलमें चालाकी करता है ता जनाब पद्रह और निकालिए'

'अच्छा, लेकिन मिस्टर इसपेक्टर, तुम हो पूरे पाजी," लखनपाल ने रुपय निकालते हुए कहा

'अजी, क्या पूछिय,' अब तक बर्केश बदल गया था हार्दिक सौजन्य से वह बोला, "अजी, बीवी है बच्चे ह तुम जानो, हमारी तनख्वाह ही क्या है, यह लो दोस्त, पासपोर्ट लो रसीद बना दो अच्छा तसलीम"

विचित्र रूपमें मात्र इस बोधमे कि पासपोर्ट आखिर उसकी जबमें है जाने किस विध उसमें चतन्य और सदवृत्तिकी स्फूर्ति हो आई लखन पालकी रगोमें फिर सदावेग भर गया तेजीसे सडक पार करते हुए, उसने सोचा, 'बस अब क्या है अनुष्ठान हो ही गया, नींव पड ही गई है जो असल मुश्किल थी वह पार हुई अब, लखनपाल देखो मजबूत रहो तबियत को झुकने न दो जो तुमने किया है, उज्वल है, महान् है, मै इस सदनुष्ठानमें आखट ही सही, मात्र उपादान ही सही, फिर भी, अब बात एक सी है—बात एक ही है? एक सत्कम करके सीधे उसके पुरस्कार

पानेका लोभ होना, लखनपाल, लज्जाकी बात है म सकसका कुत्ता नही हूँ, सधा ऊँट नही हूँ, स्कूलसे निकला हुआ कच्चा बच्चा नही हूँ म जिम्मेदार हूँ, दायित्व लेकर टूटूगा नहीं बस कल जा अकरणीय कर गया जो अपनेपरसे मेरा वश खा गया, यही बात खाटी हुई यही गलती, जल्दबाजी, बेवकूफी हो गई लेकिन जिन्दगीम बिगडा क्या सुधर नही सकता ? बडे से-बडे पतन पर भी व्यक्ति सभले ह और भारी से भारी बुरे-से बुरे कम आदमीसे बन जाय और आदमी उसे धयसे सहार ले, तो वक्त टल जाता है और समय गहरे से गहरे घावको भर दता है और घोर तर बात भी समय निकलने मात्र चिन्ह रूप छोटी हो जाती, और कहानी बनकर रह जाती है

पर जब घर आकर यह सवाद दिया ता उसे अचरज हुआ जब पाया कि लुवी इसस कुछ बहुत प्रभावित नही हो गई, एक दम खुशीसे उछली नही, उसने विजय भावमे पासपोट दिखाया, लेकिन लुवी पास-पोटकी तरफ उपेक्षित ही दीखी पास तो नही, वह तो लखनपालको फिर पानेमे खुश थी शायद यह आदिम अकृत्रिम स्त्री हृदय, अपने रक्षक को पाकर उसी पर समस्त अवलब डाल कर, शिथिल गात, सम्पूण रूपसे उसमे चिपट कर अपनेको छोड देनेको उत्कठित वाधित था वह उसकी गदनसे लगकर चिपट गई लेकिन लखनपालने उसे राका धीमेस उसके कानमें पूछा-- लुघी, मुझ बनाओ सच मच कहनेमें मुझसे डरो नही, चाहे, कुछ हो मुझ अभी वहाँ बताया कि तुम्ह तुम्ह कुछ रोग है तुम जानती हो उस गन्दे राग को क्या कहत ह अगर तुम, प्यारी, मुझ-में जरा भी विश्वास रखती हो तो कह दो, यह सच है कि नही ?

वह लाल हो गई हाथोसे मुह ढक लिया वही पलगपर गिरकर फूट फूट कर रो उठी "मेरे प्यारे, मेरे लखन ! आ, लाखन परमात्मा की सोग ध म खाती हूँ परमात्मा मुझे दखता है म कहती हूँ कभी कोई एसी बात मुझे नही हुई म पहलेसे होशियार रहती थी म उसके नामसे डरती थी म तुम्हे इतना प्रम करती हूँ, प्यारे, कि कुछ होता तो क्या किसी तरह तुमसे उसे बिना कहे म रह सकती थी ?' उसने उसके

हाथोंको पकडकर धीमे धीमे अपने गीले चेहरे पर फेरा, गालोंपर दबाया अभियुक्तापर निर्दोष, निरपराधी बच्चेकी सी आद्र सच्चाई और उपहास्य भावुकताके साथ हिलकी बाँधकर वह उसके हाथोंको अपने गालोंके नीचे दबाए रोती रही रोती रही

उस समय लखनपालको सम्पूर्ण रूपसे उसकी आत्माकी सत्यतामें विश्वास हो गया

'मैं विश्वास करता हूँ, मेरी बच्ची, मेरी बेबी' उसने हल्के हल्के उसके केशोंमें हाथ फेरते हुए कहा, "उद्विग्न न होओ, रोओ मत बस हम फिर उस तरहकी कमजोरीमें न पडें, इतना ही चाहिए कुछ हो भी गया है तो खैर, हो ही गया सही लेकिन अब हमको उसे फिर न होने देना होगा'

"जैसा कहो' लडकीने अनायास कह दिया 'जो तुम कहो मेरे राजा" पहले लखनपालके हाथ और फिर उसके कोटका छोर लेकर उसे चूमा, और बोली, 'अगर नहीं चाहते मुझे या उतना नहीं चाहते तो ठीक है जैसा कहते हो वैसा हो सही'

लेकिन उसी रात फिर वह लोभको रोक नहीं सका और गिरे बिना न रहा फिर आये दिन ऐसा ही चला यहाँ तक कि उन घडियोंमें अब उसे न शर्म सताती, न निन्दा व्यापती फिर तो यह लगी बान बन गई जिसमें पछतावेका सब भाव ऐसा डूब गया कि पता न लगा

१६

लखनपालके हकमें यह कहना होगा कि उसने भरसक वह सब किया जिससे लूवीकी जिंदगी आराम और चैनसे बसर हो सके उसने जान लिया था कि उसे यह ठिकाना छोडना होगा जगह दूर शहरके ऊपर घोसलेके मानिन्द थी, पर छोडनेकी मजबूरी इस वजह से न थी कि जगह वह बेआराम और तंग थी बल्कि वजह थी सिकन्दरा जो दिनपर दिन चिडचिडी, बदमिजाज और खौफनाक होती जा रही थी आखिर उसने छोटा-सा मकान किराये पर ले लिया वह शहरके छोरपर था,

और उसम दो कमरे थे और रसोईके लिय कोठरी थी जगह महगी न थी नौ रुपय महीने किराया था जिसम गर्मीके लिय न्हानीका खच शामिल न था इसम बेशक उसे दिक्कत थी जगह जगहकी दफ्तरके लिय उसे लम्बी लम्बी दूर जाना पडता था पर उसे अपनी तन्दुरुस्तीका भरोसा था और अपने धीरज और अध्यवसायमें विश्वास था

अकसर कहता, 'मेरी टाँग मेरी अपनी ह उनके लिय मुझे किसीके पास जाकर जवाबदेही तो नही करनी है" और सच ही पदल चलनेम वह एक ही था एक बार मजाकके तौरपर जबमें वह एक चालघडी रखकर निकल पडा शाम तक जो घडीमें हिसाब किया तो सोलह मील वह चला था इसमें यह ध्यान रखा जाय कि टाँगें उसकी मामूलसे लबी थीं तो उसके सोलह मील अमल बीस मीलसे कम नही बठते थ और उसे दौडना धूपना भी काफी पडता था कारण, लुबीके पासपोटके सिलसिले म और घरमें कुछ सामान असबाब मुहैया करनेकी जरूरतकी वजहसे ताशके खलम जब तब जो उसने जीतकर जमा किया था सब स्वाहा हो चुका था उसने फिर ताशकी बाजी लगाना शुरू किया जो शुरूमें मामूली तौरपर, पर जल्दी उसे यकीन हो गया कि ताशके खलमें अब उसका सितारा नीचा हो गया है और नतीजा भयकर हो सकता है

अब तक लुबीके साथ उसके सम्बधके बारेम उसके दोस्तोम कोई दुराव छिपाव नही रह गया था फिर भी उसके सामने वह यही जताता रहा और एसे ही बरतता रहा कि माना लडकीके साथ उसका सम्बध हमदर्दी और भाईचारेका है जान वह यह न समझ पाता था न समझना चाहता था कि उसके लिए कितना सगत और सही यह होता कि वह बहाना न करता और झूठ न बरतता या शायद वह यह समझता तो था लेकिन एक बँधी आदत को कस बदले यह उसे न सूझता था लुबीके साथ अपने सम्बधमें वह दायम हो रहता मानो सिफ भुगत रहा हो पहल लुबीकी होती स्नेह और प्रमको लेकर वही उसके प्रदशन म आग बढती वह लुबी ही बनी रही और लखनपाल मानो यह बिल्कुल भूल गया था कि पासपोटमें उसने उसका असली नाम इरीना देखा है

यह लुबी जो अभी हालतक सैकडोको अपना शरीर एक उदासीन उपेक्षा या हद से हद दिखावके भावसे देती थी, लखनपालके प्रति प्राण-पणसे श्रामवत हो आई थी उसमे अनुराग था और ईर्ष्या थी वह अपने विचार भाव और अपने शरीरमे सम्पूर्ण निभर भावसे लखनपाल से चिपटी थी उसने उसके मित्रोको सहज भावसे स्वीकार कर लिया जौजियन प्रिस मजेदार और दिलचस्प आदमी था खुली तबियतका सोमदेव उसके और नजदीक था वह ताजा था और खुशमिजाज लेकिन सोमवास्तीके गुमानभरे बडप्पनसे जाने कैसा एक डर लग आता और लखनपाल उसके लिए स्वामी था उसका देवता था वह अनुभव करती थी, यद्यपि बात यह बुरी थी कि वह उसका स्वत्व है, उसकी सम्पत्ति है लखनपालको अपना स्वत्व बनाकर समझनेमे उसे रस मिलता था

यह सदाकी देखी परखी बात है कि व्यक्ति जो भरपूरताके साथ प्रेममें रह चुका है उसकी वासना और आवेगके दाँतों तले आकर नोचा और कुचला जा चुका है जो इस तरह निचुड गया है वह फिर कभी तीव्र और उत्कट उस प्रममें नही पड सकता जो एक साथ पवित्र प्राणदायी और आत्मार्पणसे पूर्ण होता है लेकिन इस विषयमे स्त्रीके लिये न नियम है न मर्यादा लुबीके सम्बन्धमें तो यह खास तौरसे प्रमाणित हुआ वह लाखनके आगे खुशीसे उसकी बादी बनकर चाकरीमे धरती पर रेंगनेको तयार थी लेकिन उसीके साथ चाहती थी कि वह लुबीका इससे ज्यादा बनकर रहे कि जैसे मेज है न हो वह कुत्ता है या रातकी उसकी पोशाक है लेकिन लाखन सदा इसमें कम उतरता वह उस आकस्मिक प्रमकी माग और प्रहारके समक्ष जो एक न ही धारमे इतनी तेजीके साथ बाढ भरी नदीके समान तटाको तोडता हुआ भर निकला था, वह हमेशा अपनेको हेठा पाता और अवसर एकाधिक बार खीज और कडवाहटके साथ वह मनमे कहता हर नाम मुझे उस हसीन युसुफ का पाट अदा करना पडता है लेकिन आखिर वह युसुफ तो विभोर प्रेयसीके हाथो अपना अधोवस्त्र देकर कम से कम बच तो निकला था लेकिन मै इस जूयेसे कब छुटकारा पा सकूगा

इसके अलावा लखनपालका मन इस बातसे भी दबता था कि उसके विद्यार्थी साथियोके उसके और लुवीके तरफ रुखम कुछ कुछ दुविधा और फरक हो चला है अभी हाल तक तो वे उसके घरकी तरफ ऐसे टटर पडते थ जस प्रकाशपर पतग घर वह शानदार तो न था, पर उसके दरवाज सदा खुले रहत और वहा स्वागतका भाव रहता अब उन साथियोम लुवीके प्रति उनके शब्दोमें, लहजमें हावभावम किसी तरह उस स्वीकृत आदर और मानका भाव नही चाह पडता था जो उन युवक मित्रोके अपने साथीकी पत्नी या प्रयसी या बहन या मित्रके प्रति बर्तावमें ना चाहिय अपने दास्ताक मामलम ऊपरी तौरपर लुवीके प्रति उनका लिहाज भरी बर्ताव देखकर लखनपाल अनुभव करता कि वे सोच रहे ह

तुम वहीं न हो जा चकलेमस उठा लाई गई हो कि कम खच या बिन खच भोगी जा सको तुम पसेके खातिर बीसियो सकडो आदमियो-का अपनेको देती रही हो अब भी मबके बावजूद तुम आखिर हो वहीकी वही पेशवर तुम्हारे पहले पेशका दाग किसी तरह धुला नहीं है तुम्ह कोई रातके लिए बिना पसोपश माँग सकता है और तुम बिना सोच विचारके उसकी माँगपर पश हो जाओगी, हुए बिना रह न सकागी '

और एक अवसाद और वितष्णाके भावसे, जिसका वह पकड न पाता था, लखनपाल सोचता कि अपन साथियाके एसे विचारम उसका अपमान गर्भित है यानी, वे इस तरह उस भी लुवीक धरातलपर ही ले आत है !

लखनपालके भावम एक उदासी आ रही थी, एक उतार लुवीके प्रति एक प्रकारकी प्रच्छन्न शत्रुताने उसके मनके किनाराको कुतरना शुरू कर दिया था उसस छुटकारा पानेकी टढी मेढी तरकीबें अकसर उसके मनम उठती इनमें कुछ तो इतनी भद्दी और बदनीयत होती कि वह अन्दर ही अन्दर जब भी उनके बारेम पीछे सोचता तो घबरा उठता

म मनस और नीतिसे दोना तरह गहरा डूबता जा रहा हू " वह कभी सोच उठता और अपनी ही दहशतमें हा आता "वह जो मैंने किसीसे सुना या कहीं पढ़ा है सच ही है कि एक पढ़ लिखे मोहज्जब

आदमी और एक अपढ औरतमें वास्ता हो जाए तो औरत मर्दके दिमागी सतह तक तो लाई ही नही जा सकती हमेशा मर्द ही औरतकी नीचाई पर आ जाता है"

दो हफ्तोके अन्दर लुवीका आकर्षण उससे हटने लगा उसके प्रेमके निवेदनपर उसे अरुचि होती बहुत दबावपर मानो वह मानता और ऐसे जैसे कि तरस खा रहा हो!

इधर लुवीके जीवनमें मानो पहली बार पाव तले थिर धरती आई थी और उसका चनसे बठना मिला था इससे बहुत जल्दी ही मानो भरकर वह खिल आई रूप उसका निखर आया मानो कली हो जो कलतक मुरझाई थी, लेकिन झुलसती गर्मीके बाद बारिशकी बूदे जो पडी कि पखुडियाँ खोलकर वह खिल आई मुलायम चेहरेपर से झुरियोकी झाइ गायब हो गई खोया बगाना सा भाव वहासे उड गया अब वह सशक और चकित न दीखती थी दृष्टि अब उसकी साफ थी और आखोमे चमक आ गई थी देह उसकी अब भर आई और ताजा हो उठी ओठ सुख लगने लग लखनपाल जो हर रोज उसे देखता था इधर ध्यान न दे सका अगर्चे अन्तर उसे भी अनभव होता था पर उसके मित्र जो सराहनामें लुवीको जाने क्या क्या कहते तो लखनपाल सोचता कि कुछ नही, यूही मजाक है नाराज होता कि लडके नाहक उसे सताने छेडनेको कहते ह

गहरक्षिकाके तौरपर लुवी सन्तोषप्रद न साबित हुई यह सही है कि वह बढिया मसालेदार सब्जी बना सकती थी गोश्त छोकना भी उसे आ गया था, रोटी भी बना लेती थी और लखनपालकी देखरेखमें चाय बनाने और परोसनेका ढग भी उसे आ गया था मगर इसमे आग वह नहीं जा सकी वजह शायद यह कि हर हुनरमें हर आदमीके लिए कुछ मियाद है कि उससे आगे नही जा सकता पर फर्शको धोनेका उसे शौक था और वह उसे बहुत साफ रखती यह वह इस कदर इतनी बार करती कि कमरेमें सील रहने लगी और एकाध बार दीमक लगनेके आसार दीख आए

एक बार अखबारमें लखनपालने इश्तहार देखा उससे मालूम होता था कि तीन रुपये रोज घर बैठे बखूबी उससे कमाया जा सकता है किश्तपर मोजा बुननेकी मशीन झट खरीद ली गई उसके चलानेमें ज्यादा होशियारी दरकार न थी लखनपाल,सोमदेव, नेजरसने आसानी से उसपर काबू पा लिया बस लुवी रह गई जो उसकी जुगत न साध पाई वह कहीं अटकती, या धागा कहीं हिलगा रह जाता, या कुछ भी खराबी होती तो उसे मर्दोंकी मददके लिये देखना होता लेकिन दूसरी तरफ नकली फूल और गुलदस्ते बनानेका काम वह चुटकियोमें सीख गई उन्हें वह ऐसा सुघड और खूबसूरत बनाती कि महीने भरके अन्दर वहांके जनरल और कोआपरेटिव स्टोर और दूसरी दूकानोंसे उसके कामकी माग होने लगी अचरजकी बात यह कि सीखनेको उसने एक सिखानेवालेसे सिर्फ दो सबक लिए थ, बाकी अपने आप एक किताबके सहारे-सहारे सीख गई थी उसमें नमूने बने होते और वैसे ही वह बना चलती यो हफ्तेम एक डेढ़ रुपयेसे ज्यादेके फूल वह न बना पाती, पर इस पैसेसे उसका मन मानसे भर आता और वह बडी खुश होती पहली कमाईके रुपयेसे उसने जाकर लखनपालके लिए एक सिगरेट होल्डर खरीदा

कई बरस बाद लखनपालने अपने मनमें यह स्वीकार किया कि उसके जीवनका यह समय शायद सबसे शान्त सुन्दर और सुखका रहा था वह याद करता, और उसे सच्चा पछतावा होता एक उदास अभिलाषा करवट ले उठती रहता तब वह विद्यार्थी था, फिर वकील हुआ, लेकिन वे दिन फिर न आये लुवी अनघड थी, शाइस्ता नहीं थी शायद गवार थी और मूरख भी लेकिन गिरिस्तनका भाव उसमें सहज समा चला था आस-पास सेवामें चैन और शान्तिका वातावरण उसे बनाना आता था यह गुण उसमें जन्मजात था इसीके कारण था कि लखनपालका घर जल्दी मित्रोंके लिए केन्द्र बन गया वहां पहुचकर मानो तनाव उनसे उतर जाता, वे चैन पाते और खुल आते जीवनके कठोर यथार्थ और दुखद संघर्षमें,जिसमेंसे कि वे गुजर रहे थे, उसके अभावों, परेशानियों और

परीक्षाओंमें यहाँ तक कि भूखको झलते हुए वे हारे थके आते और यहाँ ठडक पाते नरानपाल कृतज्ञ उदास, मम्मरणोंमें याद करता कि कैसे लुवी सहानुभूतिलीन मवाम दत्तचित्त हो रहती जब सब समोवारके चारों तरफ बैठकर बात करते बहस करते एक दूसरके सपनोंमें भाग बँटानेकी कोशिश करते तो वह चुप बनी रहती और सबकी आवश्यकताओं पर उसका ध्यान रहता

अक्षर शिक्षाकी गति मगर धीमी थी य अपने आप बने हुए अध्यापक लोग अलग अलग और साथ-साथ विवाद करते कि मानव मस्तिष्कका शिक्षण और उसकी आत्माका विकास आतरिक प्रेरणाओंमें से प्राप्त होना चाहिए लेकिन वे ही लुवीके दिमागमें उन तत्त्वोंको भरने की कोशिश करते जि हे वे आवश्यक और अपरिहार्य समझते थे वे उसके साथ उन वैज्ञानिक प्रश्नोंकी चर्चाका प्रयत्न करते और उन्हें समाधान तक ले जानेका आग्रह रखते जिनसे किनारे ही रहने दिया जाता तो हर्ज न था

मसलन गणित सिखाते समय समनपालको लुवीकी अपनी आदिम देहाती जगली, बल्कि कहो बच्चोंकी गिनतीकी पद्धतिसे चिपटा रहना सह्य न था वह एक दो तीन और पाँचको जानती और उन्हींकी उलट पलटसे अपना काम चलाती जैसे कि बारह उसके लिए थे दो लिए दो बार ग्यारह उसके लिए तीन लिए और दो हुए यह तो ससनपालको भी मानना होता था कि इस अपने तरीकेसे वह आन फाननमें मजेमें सौ तक गिन ले जाती थी मगर इससे आगे बढ़नेको वह तयार न थी और सच पूछिए तो उसको कोई माग जरूरत भी न थी समनपालने दहाईकी पद्धतिसे गिनती गिनना उसे सिखाना चाहा पर सब कोशिश बेकार रही वह किसी तरह भी यह सीख ही न सकी इस पर वह अपना धीरज खो रहता और उसपर चिल्ला जाता तो वह कुड़कुड़ाती उसके चहरेको देख उठा मानो फटी-सी होती और उनमें अधरज भरा होता फिर उनमें मरराप लिए जाता और पलक भरने पानी आगे भारी हो आती और मिसकर के [illegible] काम होते

च द हा प्राती

माथ हो जाने दिमागकी किस अजब लहरके अधीन हिसाबमें जोड गणाको तो उसने अपेक्षाकृत आसानीसे सीखकर काबू कर लिया, लेकिन घरा और भाग उसके लिए दीवारकी एसी अड बन गए कि खुलते न थ लेकिन हैरतकी तेजी और सूझ-बूझसे वह हर तरहकी टेढी मेढी दिमागको चकरानेवाली पहेलिया जबानी सुलझा डालती देहातोमें हजारा वर्षोंसे चलनमें चलती हुई बहुतेरी पहेलिया उनमेंसे उसे स्वय याद थी जुगराफियाकी तरफ वह बिल्कुल अनबूझ थी यह सच है कि उस मुहल्लेके बागके, घरके बारेमें पूरी सुध और जानकारी थी कहना चाहिए कि लाखनसे सकडा गुनी ज्यादे यो कहिए कि उसमें धरतीके किसानकी सहजबुद्धि और उसका चमत्कार था लेकिन धरतीके गाल होनेकी बात उसे कतई मजूर न थी न वह क्षितिजको समझनेको तयार थी जब बताया जाता कि पृथ्वीका ग्रह गेंदकी तरह आकाशमें घूमता है तो सुनकर वह हसीसे फूट पडती जुगराफियाके नक्शे उसे तरह तरहके रगोसे रगी कोई एसी चीज जान पडते कि जिसमें सूरत ह पर मतलब नही है लेकिन अलग अलग चीजोको वह जल्दी और सही सही ध्यानमें ले लेती और उन्हें याद रखती लखनपाल उससे पूछता कि इटली कहा है ? लुबी फौरन बताती "यह तो है जो बूटकी तरह है" स्वीडन और नोरवे कहा है ? विजयके भावसे फौरन हाथ रखकर कहती—'यह रहा, छतसे कूदता हुआ कुत्ता बना तो है" बाल्टिक सागर ? 'घुटनोंके बल बठी बुढिया यह रहा" काला सागर ? "यह जूता" स्पेन ? "टोपीदार मोटूमल य ह" इत्यादि इतिहासमें हालत कुछ बहतर न थी लखनपालने ध्यानम यह तथ्य नही लिया कि लुबीका मन शिशुकी तरह कल्पना-जगतमें रमता है इतिहासके सारको रस और साहससे भरी नाना कथाए सुनाकर बडी आसानीसे अवगत कराया जा सकता है लेकिन वह तो इम्तहानोके तरीकेको जानता था और चौथी पाचवी क्लासोंमें होनेवाली पढाईके ढगसे परिचित था इससे नामो और तारीखोपर वह लुबीका और अपना मगज फोडता रहता इसके

गानेम भावपूण जगहोपर गदन हिल आती थी, आरोह अवरोहके बीच समपर वह तारोसे एकाएक अपना दायाँ हाथ अलग खीच लेता, पल भर सुन और शान्त बठा रहता जसे कि ममरकी मूरत हो तब वह आँखें खोलता और अपनी अस्पष्ट सी निगाहसे लुवीको मानो भदता हुआ देखता उसे जाने कितने लोकगीत याद थे, और भजन और तरह-तरहके हलके गीत

लेकिन सबसे अधिक जो लुवीको लुभाते पद थे आर्मिनिया प्रदेशके प्रसिद्ध लोकगीतके ये छन्द —

> वह शकल है भोली भाली
> पर गालो पर गोलाबी
> औ अधरो प गुल्लाली
> वाहे वाह, वाहे वाह !

इस तरहके बेशुमार छन्द प्रिसको याद थे लेकिन अतकी टेक करीब सबकी एक ढगकी होती थी

> वाह या री ओ शरबतिया
> तो से कहूँ री यह कनबतिया
> काहे गाल प मोहे चूमे
> चूमे तो चूम मेरा मन रसिया।

हल्की विनोदकी चीज जब वह गाता तो चेहरा उसका खुला और सीधा रहता और लुवी इतनी हँसती, इतनी हसती कि दर्द होने लगता, यहाँ तक कि आँसू आ जाते और दोहरी हो हो रहती एक बार गानेके सुरमें बहनेके बाद वह रुक न पाती और खुद भी उसमें शामिल हो जाती और दोनो जने एक सुर एक तानमें गाते रहते हलके-हलके लुवी नेजरारकी आदी हो गई और किसी तरहका असमजस बीच न रहा और अकसर वे साथ मिल कर गाते लुवी की आवाजमें जोर ज्यादे न था पर वह कोमल थी और मीठी जाने किस प्रकार सभव हुआ पर उसके पेशेकी पिछली ज्यादतियोका अमार्वोका और शराबोंका उसके गलेपर असर न पडा था

भलावा यह वहुत बसब्र था बेकाबू हो जाता भौर झुंझला पडता जल्दी थक जाता भौर सच यह कि चाहे दबी कितनी हो लेकिन उसमें उगती भौर बढती एक गुप्त घृणा उस लडकीके लिये जिसने भचानक भौर भतक्य ढगसे उसके जीवनको इस तरह उलझनमें घर डाला था, सबक देनेके इन घटोमें रह रहकर भौर वेगके साथ फूट बिना न रहती

नेजरस उनमें गुरु शिक्षकके तौरपर ज्यादे सफल था उसका सितार भौर मेंडोलिन खानेके कमरेमें रिबनके सहारे खूटियोसे टग रहते सितारके तारोकी कोमल गूज तुवीको ज्यादे खीचती मडोलिनकी धाव की भावाज उसे चोट देती सी लगती भौर उसे मानो चिढा देती थी ज्यो ही नेजरस भाया—भौर हफ्तेमें तीन या चार बार शामके समय वह भाता था—झट बढकर दीवारसे वह सितार उतारती भपने रुमालसे झाडकर वह उसे पोछती, भौर उसके हाथोमें थमा देती उसके तारोको कुछ मिनटोमें एक सुरमें मिलाकर वह खखारकर गला साफ करता भौर भारामसे पीछे कमर टेककर बैठ जाता तब वह टागपर टाग रखे भपने भरे गलेसे गाना शुरू करता उसका गला खुशगवार था भौर भावाज किसी कदर भारी भौर भरपूर थी

चुबन की यह लुभावनी भावाज
रात की सुस्त हवा में थिरकी भा रही है
मनो को छीने ले जा रही है।
प्रेमियो को सदेसा है—
रात है भौर प्यार है
प्यार है भौर रात है।

मिलन की एक घडी के लिये
जिया मेरा भकुला रहा है
भरे धड धड धडक रहा है
भाभो ना, भाभो ना, भाभो ना।

लगता कि वह भपने गानेसे छा गया है भाखें उसकी बन्द होतीं

गानेमें भावपूर्ण जगहोंपर गदन हिल आती थी, आरोह अवरोहके बीच समपर वह तारोंसे एकाएक अपना दायाँ हाथ अलग खींच लेता, पल भर सुन्न और शान्त बैठा रहता जैसे कि ममरकी मूरत हो तब वह आँखें खोलता और अपनी अस्पष्ट सी निगाहसे लुबीको मानो भदता हुआ देखता उसे जाने कितने लोकगीत याद थे, और भजन और तरह-तरहके हलके गीत

लेकिन सबसे अधिक जो लुबीको लुभाते पद थे आर्मिनिया प्रदेशके प्रसिद्ध लोकगीतके ये छद —

वह शक्ल है भोली भाली
पर गालो पर गोलाबो
औ अधरो पै गुल्लाली
वाहे वाह, वाहे वाह !

इस तरहके बेशुमार छद प्रिसको याद थे लेकिन अतकी टेक करीब सबकी एक ढगकी होती थी

वाह वा री ओ दारबतिया
तो से कहूँ री यह कनबतिया
काहे गाल पै मोहे चूमे
चूमे तो चूम मेरा मन रसिया ।

हल्की विनोदकी चीज जब वह गाता तो चेहरा उसका खुला और सीधा रहता और लुबी इतनी हँसती, इतनी हसती कि दर्द होने लगता यहां तक कि आँसू आ जाते और दोहरी हो हो रहती एक बार गानेके सुरमें बहनेके बाद वह रुक न पाती और खुद भी उसमें शामिल हो जाती और दोनो जने एक सुर एक तानमें गाते रहते हलके-हलके लुबी नेजसरकी आदी हो गई और किसी तरहका असमजस बीच न रहा और अकसर वे साथ मिल कर गाते लुबी की आवाजमें घेर ज्यादे न था पर वह कोमल थी और मीठी जाने किस प्रकार सभव हुआ पर उसके पेशेकी दिक्कतें ज्यादतियोका अभावोंका और शराबोंका उसके गलेपर असर न पडा था

और खासकर भगवानकी यह एक देन ही कहिये कि उसमें एक जन्मजात सहज क्षमता थी कि वह बेहद सही तौरपर खूबसूरतीके साथ मानो अपना ही हो वह किसी रागकी सगत अदा कर देती फिर तो उनकी सगतमे वह वक्त भी आ गया कि जब प्रिसको कहनेके बजाय खुद प्रिस ही लुबीसे गानेकी फरमाइश करता लुबीको एसे लाख गीत जो हर किसीको मन भा सकते थ अनेक नेक याद थे और वह कोहनी मेजपर टिकाय हथलियोमें सिर लेकर दहातकी किसान स्त्रीकी तरह सगतम गा उठती आवाज मद्धम होती, सावधान और कोमल

ओह, रातें मुझ भारी हो गई ह
काट कटती नही
साजन मे बिरहा प्रीतम मे बिछोह
ओ री नारि, मूरख तने क्या किया
अपने प्यारे को क्या कहा सुना ?
ले, वह रूठ गया और आता नही !

" आता नही प्रिस इन आखिरी शब्दाको लुबीके साथ दोह राता और अपने घुंघराले बालो वाले एक तरफ झुक सिरको डुला उठता तब दोना कोशिश करते कि गीतका एस समाप्त कर कि सितारके कांपत तारोकी क्रमस क्षीण होती हुई ध्वनिके साथ ही उनकी वाणी भी शन शन गिरती हुई शात होती जाय यहां तक कि मालूम न हो पाय कि ध्वनि कहां समाप्त हुई और नि शब्दता कहां शुरू हुइ

लेकिन जोजियाके प्रसिद्ध कवि रुस्तावेलोकी पदावलीके सबधमें प्रिसको बुरी तरह मुंहकी खानी पडी सच ही उन कविताओंका सौंदय मूल भाषाकी ध्वनि और नादका था लेकिन वह अपने सधे गलेसे तरन्नुमके साथ उन पदोको तनिक गाना शुरु करता कि लुबी शुरुमें तो आती हुई हँसीको बहुत देरतक दाबनेकी कोशिशम कांपती रहती फिर खिलखिलाहटमें फूट कर ऐसी पडती कि सारा कमरा उसकी लहरोसे देरतक गूजा करता तब तेजरस गुस्सेमें उन श्रद्धेय कवि गुरुकी पदा

वलीकी पुस्तकको जोरमे बद करता और लुवीको खूब सख्त सुस्त कहता कहता कि वह गधी है गधी, खच्चर ! लेकिन उसके बाद जल्दी दोनोकी बन भी जाता

नेजरसकी तबीयतम कभी कभी शरारतके भी दौर आया करने थ तबीयत मचल उठती और खल आना चाहती तब वह ऐसे देखता मानो उस अपने आगोशमे ले लेना चाहता है उस दृष्टिम अतिशयता होती इशारे होने और मानो लबालब भरा प्रम होता और वह मानो नाटकीय ढगस दिल थामकर कहता, "ओ मेरे जहानकी मलिका ! अल्लाहके बहिश्त ! ए रोशन गुलाब ! तेरे लबाकी शराबो शहदसे मीठा जहानमें कुछ नही तेरी साँसके साथ जहान उठता और गिरता है ! ला अपने इन लबेलालीसे मुझ मस्तीका एक घूट द तू कि जिसका सानी कायनातम कोई नही

लुवी हँस पडती झिडकती और उसके हाथोका थपकसे अलग करती और कहती कि लखनपालस कह दूँगी !

'व्हा ' प्रिस अपने हाथ फलाकर कहता, "लखनपाल क्या है, वह मेरा दोस्त है वह मेरा भाई है, जिगरी यार है लेकिन क्या उस मालूम है कि 'लाफ' क्या चीज है क्या यह मुमकिन भी है कि तुम उत्तरके लोग लाफ' का समझ तक सको यह तो हम ह जोजियाके वासी जो 'लाफ के लिए सिरज गए ह तो देखो लुवी म अभी दिखाता हू कि लाफ क्या है ' कहकर वह एकाएक अपनी मुट्ठिया भीच लेता, सारे वदनका आग भुका लाता और आखाको भयावनी बनाकर उसकी पुतलियाको घुमाना शुरू कर देना, दाताको मिसमिसाता शेरकी तरह दहाडना शुरू कर दता लुवी यह जानते हुए भी कि यह आखिर मजाक ही है डरस कापे बिना न रहती और बचनके लिए तावडतोड कमरेमे बाहर भाग जाती तो भी यह कहना होगा कि इस युवकम जो या छोटमोटे मामलामें खुला और निब ध था कुछ विशप नतिक निषध बद्धमूल थ जो कि जोजियन माताके दूधके साथ ही उसने प्राप्त किए थ

जसे यह कि मिश्रकी पत्नी सदा वजनीय और आदरणीय है और शायद वह जानता था कि लुवीके साथ एक बार एक क्षणके लिए भी वह अवध सबधम आया तो फिर हमेशाके लिए वह एक तरह इस घरेलू शात और प्रसन्न सध्याओंसे निर्वासित हो जाएगा जिनका वह आदी होता जा रहा है यह इस तरहकी सहजबुद्धि चाहे आप कुछ कहिए पूरबके आदमियो-में बहुधा पाई जाती है देखनेमें चाहे वे सीधे भोले लगें तो भी पर शायद उसी कारण, उन्हे यह अतस्थ प्रज्ञा मानो सिद्ध होती है, और नेजरसकी जहातक बात है वह विश्वविद्यालय भरमें अगरचे सभीके साथ दूसे बात करनेतक वास्ता बनाए हुए था पर वास्तवमे इस अजनबी शहर और अबतक अजनबी बने हुए देशमें वह अपनेको भीतर बहुत अकेला अनुभव करता था

लुवीको पढानेके कामम सबसे ज्यादा आनन्द सोमदेव लेता यह तगडा खासा जवान तबियतका लापरवाह था उसे खुद मालूम न था, पर किसी तरह अनजाने वह स्त्रीत्वके असरमें खिचा आ रहा था यह आकर्षण अलग ही होता है उसे बाधना मुश्किल है रोकना मुश्किल है स्त्रीत्व वह बाह्य अनाकर्षकता और अकोमलतामेंसे भी काम कर जाता शिष्या अग्रणी थी, अध्यापक अनुगामी लुवीकी प्रकृतिके सहज गुण—आदिम पर अविकृत, गहन और मौलिक उसे अपनी ही निराली राहकी खोजपर लिए जाते थे बताई रीति वह न ले पाती थी इस तरह जैसा कि अक्सर बच्चोंके मामलेमें होता है उसने पहले लिखना सीखा फिर पढना स्वभावसे वह आज्ञानुवर्ती थी और नम्र, पर मस्तिष्क में कुछ उसमे एसा निरालापन भी था कि जब पढती तो व्यजनके साथ स्वरको या स्वरके साथ व्यजनको रखनेसे वह एकदम इनकार कर देती हा लिखनेमें यह यह आसानीसे कर लेती थी प्रारम्भिक विद्यार्थिया की आदतके प्रतिकूल उसे लिखना पसन्द था, और लिखने बठती तो वह कागजपर दुहरी होकर झुक जाती सास जोरसे चला करता, मालूम होता जग आयासके श्रमसे हांफकर मानो कागजपर पडी किसी कल्पित

घूलको उडा रही हो रह रहकर जीभ हाठोंपर फेरती और फिर उसे अन्दर लेकर कभी इस गाल तो कभी उस गालको ठलकर फुला रहती सोमदेवने भी इसमें विघ्न नही डाला जिघर उसकी वृत्ति गई उसी ओर चलनेको वह राजी हुआ कहना होगा कि सवा डेढ महीनेके अर्से म वह इस निरीह प्राणीके प्रति अनुराग रखने लगा था जो सयोगसे उसकी राह आ गया है और फिर जिसे मिलना नही होगा सबके लिए बन्धुभावसे भरा उसका विशाल हृदय एक कोमल भावसे भर आया एक विशाल हाथीमें नन्ही सी एक आहत चिडियाके प्रति सहानुभूति हो तो क्या हो ? कुछ वसी ही करुणा और विस्मयस भरा भाद उसमें दद दे आया था

यह पढाई दोनोको ही छुट्टी देती यहा भी विषय और ग्रथका चुनाव लुवीकी रुचिके अनुसार निश्चित होता सोमदेव उसकी तरग और उसके रुझानपर ही चलता मिसालके लिए जसे लुवी 'डान विवकजोट' पर काबू नही पा मकी, जल्दी थक आई और आखिर उससे मुह मोडकर वह 'रोबि सन क्रूसो की तरफ झुकी वहा उसका बहुत मन लगा और खासकर जहा रोबिनसन अपने रिश्तेदारोसे मिलता है उस दश्यपर वह आसू बहाए बिना न रहती और खुलकर रो उठती डिकन्स उसे पसन्द आता और उसके सूक्ष्म सुन्दर व्यग वह बडी आसानीसे समझ लेती लेकिन अग्रेजी तौर तरीकोके बहुतसे नियम उसके लिए विदेशी रहते और खाक समझ न आते उन दोनोने एकसे ज्यादा बार चखबको पढा और लुवी बिना किसी कठिनाईके स्वतन्त्र भावसे उसके शिल्पकी सुघरता उसकी उपमाएँ उसकी भाव व्यजनाकी सुन्दरता गह लेती बच्चाकी कहानिया उसका हिला देती वे उसे इस हदतक छूती कि उसे उस समय देखनेसे ही अच्छा लगता और खुशीसे हस बिना न रहा जाता एक बार सोमदेव ने उस चेखबकी कहानी दौरा' पढकर सुनाई उस कहानीमें जैसा कि मालूम ही है कि एक विद्यार्थी पहले पहल अपनेको वेश्यालयमें पाता है अगले दिन फिर उसको पछतावेका एक ऐसा गहरा दौरा पडता है कि मानो रेशे रेशा उसे घुन डाला गया हा पापकी चेतनाकी तीव्र मनोवेदना

मनका चैन खा जाती है सोमदेवको स्वय आशा न थी कि इस कथा नकका उसपर इतना जबरदस्त असर होगा वह रोई, अपने उसने हाथ मले हा हा करके सौगन्ध खाई और बराबर कहती जाती थी कि हे भगवान! लिखनवालेने यह सब लिया कहास और लिखा किस तरहस, अर यह तो हूबहू सच है यही तो है जो हम सबके साथका सच है एक बार वह अपने साथ एबे प्रीवास्टका प्रसिद्ध उपन्यास लेकर आया वहना होगा कि सोमदेव खुद उस असाधारण पुस्तकको पहली बार पढ रहा था लेकिन तो भी लुवीने उसे कही ज्यादा सराहा और समझा उस पुस्तक म प्लाटका अभाव था, वणनम मनोरंजन न था भावनाका अतिरेक था शैली पुरानी थी इस सबसे सोमदेवका उत्साह कुछ मिलाकर मद होता था लेकिन लुवी उस अनोखे अमर उपन्यासकी सुख दुखकी गाथाओ को उसके मार्मिक अथवा कि अनावश्यक ब्योरोको मानो कानोमे ही ग्रहण नही करती थी बल्कि जसे अपनी आखोस और पूरी तरह खुल अपने अकृत्रिम हृदयसे उन्हे उपलब्ध करती जाती थी

सट इनिसपर हमारी स्वीकृतिका विचार हम भूल गया " सोमदेव सुनहरे बतरतीब बालोके सिरको जिसपर लैंपके शडका प्रकाश था किताब पर भुकाये पढ रहा था 'हमने धमके नियमोका उल्लघन किया और उसका बिना विचार किए आपसमें विवाहित हो गए "

'व क्र क्या रहे हं ? यानी सिर्फ अपनी मर्जीसे ? बिना पादरी पुरोहितके ? यही ना ? लुवीने अपने कत्रिम फूलोको भपटकर अपनेसे अलग करके बचनीके साथ पूछा 'यह मत क्या है ?

क्या क्याकी क्या बात है ? मुक्त प्रेम है बस इतनी सी बात है और ठीक बात है जस कि समझो तुम और सगनपान"

'मा दया यह तो बिल्कुल दूसरी बात है तुम जानते हो कि मुझे कहीस लाए लेकिन यह तो मालूम सज्जनकार कुनबेका युवती क्या है यह तो उसके लिए जरूर ही नीच और हीन काम हुआ और म कहती हू सामन्त पीछ जाकर वह उसे छोड बिना न रहेगा और बचारी लडकी ! अच्छा अच्छा अच्छा आग पढ़ो'

लेकिन कुछ पृष्ठोके बाद लुवीकी सब सहानुभूति और करुणा पुरुष की तरफ हो गई थी जिसे छला गया था

"तो भी महाशय—का गुप्त आना जाना मुझ हैरतमें डालता था, मुझ उन खरीदी गई छोटी मोटी चीजो और उपहारोंकी याद आई जिनका खरीदना हमारे वितसे बाहरकी बात थी इस सबमें एक नये प्रमीकी उदारताकी झलक मिलती थी लेकिन मैं अपनेको दोहरा दोहरा कर कहती—नही नही यह असम्भव ह कि मैनन मुझस छल करेगी उसे मालूम है कि म उसीके लिए जीती हू खूब जानती है कि मैं उसकी पूजा करती हू"

"आह नहीं मूरख बेचारी" लुवीने ममतासे कहा—"क्या क्या तुम सीधे ही नही देख सकते कि उसे यह रईस साहब रखे हुए ह आह, बदजात ही जो न हो"

और उपन्यास जसे-जसे आगे बढकर खुलता जाता लुवीका रस भी उसमें उतना ही गहरा और उत्कट होता मैनन अपने आगे होनेवाले मेहरबानो और चाहने वालोका अपने प्रमी और भाईकी मददसे जो चूसती और लूटती है सो उसके खिलाफ लुवीमें कोई भावना नही है लेकिन हर नय छल और विश्वासघातका घटना उसमे क्रोध उत्पन्न करती है जब कि पति महाशयके दुख और वेदनाके प्रति जिसे भूलनेके लिए वह क्लबमें ताशमें जमे रहत ह लुवीमें आसू उठते और गिरते हैं एक बार उसने पूछा—

'सोमदेव, यह था कौन लिखनेवाला ?"

'वह कोई फ्रासीसी पादरी था'

तो रूसी नही था वह !"

"नही, कह ता रहा हू, फ्रासीसी था देखो सब उसी तरह है शहर फ्रासीसी ह और लोगोके नाम फ्रेंच नाम ह"

'और तुम कहते हो वह साधु पादरी था ता यह सब उसने जाना कसे ?"

"बस यह समझो कि जानता था, और क्या ! और यह भी बात है

कि वह हम सबकी तरह दुनियादार था एक रईस सरदार, और साधु तो पीछे जाकर बादम हुआ उसने जीवनमें बहुत कुछ देखा भोगा था बादमें फिर उसने साधुपन भी छोड दिया लेकिन छोडो, किताबके इस पन्ने पर उसके बारेमें खुलासा सब लिखा तो है "

ऐब प्रीवास्टके चरितके बारेमें लिखा उसने लुवीको पढ सुनाया लुवी ध्यानसे सब सुनती गई बीचमे साभिप्राय सिर हिलाती जाती कहीं कुछ ठीक समझमें न आता तो पूछ पूछकर साफ कर लेती आखिर वह पूरा हुआ कि कुछ सोचते हुए लुवी बोली—' तो यह है जो वह थे लेकिन सच बहुत ही अच्छा लिखा है लेकिन वह इतनी नीच और हीन क्यो बन गई आदमी तो उसे इतना जी और जानसे प्यार करता था लेकिन वह है कि हमेशा उसको धोखा ही दिय जाती है '

"लुवी मेरी तुम्ही सोचो क्या हो सकता है प्यार तो पतिको वह भी करती है लेकिन मानिनी स्त्री है और बहिर्मुख उसे जा चाहिए वे ह कपडे और घोडे और हीरे और— "

लुवी भडक पडी और हथेलीपर दूसरे हाथकी मुट्ठी मारकर बोली—"मैं उसको चूर चूर कर दूगी, बदजात फाहिशा सो इसको कहते हो तुम कि प्यार करती थी अगर पुरुषको प्यार किया जाता है तो जो उससे आता है वह सब भी तुम्हे प्यारा हो जाता है वह जेलखाने जाता है तो तुम उसके साथ जेल जाना चाहती हो वह चोर बनता है तो हा तुम उसे मदद करती हो वह भिखारी है तो भी तुम उसका साथ देती हो क्या इसमे आता जाता है कि तुम्हारे पास रोटीका बस एक वासी टुकडा है बशर्ते कि जब तक प्यार है वह नीच है निकम्मी है बदकार है और क्या लेकिन मै पतिकी जगह होती तो उसे छोड देती और आह भरने और रोनेकी जगह उसकी ऐसी खबर लेती कि महीनेभर दाग उसके बदनपरसे न हटते बदकार कहींकी '

उपन्यासका अन्त वह किसी तरह बहुत समयतक समाप्तितक नहीं सुन सकी कारण वह सदा ही सुनते सुनते टूट जाती सच्ची समवेदनाके आसू आंखोमेंस बहने लगते और पढना रोकना पडता इस तरह अभी

वही अध्याय चार बारमें करके कहीं पूरा किया जा सका

जलखानेमें उन प्रमियोंपर भाई विपदाओं और आपदाओंकी कथा और मैननके जबरदस्ती अमरीका भजे जाने और साथ स्वच्छासे और त्यागपूर्वक पति महाशयके भी सकट उठाकर उसके पीछे पीछे जानेके इतिवृत्तने लुवीकी कल्पनाको इस तरह छा लिया और मनको ऐसा झकझोर डाला कि वह अतमें कुछ भी कहना भूल गई मैननकी मत्युके विवरणपर वह विभोर हो आई कैसी सुदर और शान्त वह मत्यु थी विस्तत एकान्त मरुप्रदेश है और वह है हिलडुल नहीं रही है छाती पर दोनों हाथ जुडे रक्खे हैं और निगाह एकटक दूर प्रकाशपर स्थित है यह वणन सुनती है कि लुवीकी फली आखोंमें आसू बरबस भर आते और तार तार झडीके मानिंद मेजपर गिरने लगते लेकिन जब उसके पति महाशय शिवेलियर अपनी प्रिय पत्नीके शवके साथ दो दिन रात पड रहनेके बाद अतमें अपनी तलवारकी मूठसे उस मत देहके लिए कब्र खोदना शुरू करते हैं तब तो लुवी इस तरह बिसूरकर रो उठी कि सोमदव घबरा गया और पानीके लिए दौडा लेकिन कुछ स्वस्थ और शात होनेपर भी वह रह रहकर अपने सूजे और कापते होठोंसे सुबकती ही रही और बडबडाती जाती

"ओह, कसा उनका अभागा जीवन रहा कसा कठिन और दुखभरा प्यारे सोमदेव, क्या यह मुमकिन है कि विधाताका यही विधान हो कि जैसे ही स्त्री और पुरुष एक दूसरेके प्यारम पडें, कि जसे वे पड थे, तो भगवान इसकी सजा देता ही देता है लेकिन प्रिय, ऐसा क्यो है ? क्यो क्यो ?

१७

इस प्रकार लुवीकी शिक्षा चल रही थी आशा थी कि उसका मस्तिष्क और उसकी आत्माका इससे विकास होगा पद्धति उसकी बीहड थी पर

दुनियाबी समझदारीके काटोंके खिलाफ मानो जौजियन प्रिंस और सहृदय सोमदेव बचाव थ मानो वे हर दबावको अपनमें जज्ब कर लते थ उधर वह लखनपालकी गुरुआईसे भी अप्रसन्न न थी कारण कि जीवन में पहली बार उसके प्रति उसन अमित, असीम सच्चा प्यार अनुभव किया था उसके विद्वत्ताके दम्भको उसने एस माफ कर दिया जसे कि वह उसकी गालियोको, उसकी मारको, यहातक कि घोर अपराध तक को क्षमा कर देती पर सोम वास्तीके हाथो जसे उसको पढाया जाता वह उसके लिए शुद्ध त्रास था दिमागपर हर वक्त वह बोझके मानिंद सवार रहता इन आत्मनियोजित शिक्षकोमेंसे एक वह था जो गोया कसदन सबस ज्याद वक्तका पाबन्द था तनख्वाहदार टयूटर भी जितना नियमित होता उसस ज्यादे ही नियमित वह था

अपने मतमें दृढ और अडिग, विश्वासमें कठिन, भाषामें स्पष्ट और वक्तव्यमें उपदेशात्मक वह एसे चलता कि लुबीकी गति मति हर रहती उसकी सुध बुध खो जाती नय आए विद्यार्थियोकी सभाम वह अक्सर इसी तरह उनके कच्चे और सकोची दिमागोपर छा रहता वह अक्सर विद्यार्थी सभाओमें बोला करता भाषणोंके छापने बाटनेमें वह अक्सर हिस्सा लेता, अक्सर वह मानीटर चुना जाता और छात्र फड आदिक मामलोमें बहुधा वह सक्रिय दिखाई देता

वह उन लोगोकी गिनतीम था जो विद्यार्थी अवस्थासे निकलकर पर्टियाके नता बना करते ह वे स्वाथ त्यागी और पवित्र अत करणके निर्बाध विधाता होकर कही किसी छोट मोट प्रदेशमें अपने राजनीतिक मचका निर्माण करते और देशभर का ध्यान अपनी पराक्रमपूण पर दय नीय दनापर खीचना चाहा करते ह तब फिर अपनी व्यतीत सेवाओकी दुहाई देते हुए किसी बडे नेताका सहारा थामे, या डेपुटशनके बलपर, या किसी सुभीतेकी शादीके सहारे छोटी मोटी प्रभुता और सम्पत्ति आस पास खडी कर लेते और उसमें रम रहते ह उन्हें जसे स्वय नही मालूम होता और ऊपरसे देखनेवाली निगाहोको भी मालूम नहीं होने पाता और वे ढलकर किनारे खड हो जाते ह या ज्यादे सही यह कहना

चाहिये कि दलय और शिथिल वे अपना पेट बढा चलते ह और फिर बीमारियां उन्हें अजीणकी और जिगरकी हुआ करती ह तब वे सारी दुनियापर खोजते और खिजलाते हें कहते हैं कि उन्हें सही समझा नहीं गया और समय उनका था कि जब आदर्शोंका मूल्य और महत्व था दूसरी ओर वे ही लोग परिवारामें हाकिम बनकर रहते और अवसर सूद-बट्टेपर रुपया चढाया करते हैं

लुवीकी शिक्षा विधिका ढग उसके मस्तिष्कमें साफ था यो जो भी योजना वह बनाता उसकी हर चीज उसके सामने साफ होती और निश्चित और अनिवार्य उसका निणय था कि पहले लुवीको पदार्थ-विज्ञान और रसायन शास्त्रके प्रयोगोका ज्ञान मिलना चाहिए

उसने सोचा, एक किशोर स्त्री मस्तिष्क उन विज्ञानोके समक्ष चकित हुए बिना रह न सकेगा और इस प्रकार म उसका ध्यान एक ओर खींच सकूगा छोटे-छोट प्रयोगो और युक्तियोसे म उसे जगतके ज्ञानके एकदम केन्द्रमें ले जाऊगा कि जहां कोई मिथ्या विश्वास नही है, न दृढ मान्यतायें बल्कि जहां प्रकृतिको सीधे समझने का विस्तत क्षत्र फला है

कहना होगा कि वह अपने शिक्षाक्रमम नियमित न था लुथीमें अचरज पदा करनेको उस जो हाथ लगता वही साथ खींच लाता एक बार खुद-का बनाया हुआ एक बडासा साप ही ले आया और एक गत्तकी बनी हुई लबी नलकी जिसमें बारूद ठूंसकर भर रक्खी थी और उसे माडतोडकर बाजकी शकल दी हुई थी, चारा ओरसे उसपर पटटी बधी थी आकर इस बाजमें उसने बत्ती दिखाई और साप बहुत दर तक हिमहिसाता हुआ खानेके कमरेम, सोनेके कमरेम, उछल कूद मचाया किया सारेमें पटाखकी सी आवाजें छूटती रहीं और गंध और धुंआ भर गया लुवीको इससे कोई खास अचरज नही हुआ बल्कि उसने कहा कि यह तो सीधी सादी आतिशबाजीकी चीजें ह यह सब उसका देखा हुआ है और तुम इस तरह उसे अचम्भेमें नही ला सकते आखिर उसने कहा कि अच्छा खिडकी तो खोल दू उसके बाद वह एकदम डी सी शीशी लाया, कुछ और

इधर उधरकी चीज जमा कीं और एक शिगूफा तयार किया उससे कोई बहुत जोरका तो नही ताहम कुछ न कुछ धमाका हुआ

लुवीकी नन्ही उगलीमें वहाँसे छुटी एक चिंगारी छू गई और लुवी चिल्लाई— आह दया, तुझ मौत ले जाय'

तदनतर रेतीमे मिलाकर मेंगनीज पेरोक्साइडको गरम किया गया दवाखाने जसी एक कांचकी नली ली पिचकारीमसे गटापार्चा वाला सिरा निकाला एक चिलमचीम पानी भरा और अचार मुरब्बे वाला कांचका अमतबान खाली किया ऐसे आक्सीजन खीची गई अमृतबानके भ दर वह लाल सुख डाट और कोयला और फोस्फोरस इस कदर रोशनी देकर जल आये कि आंख चौंधिया पडीं लुवी ताली बजा उठी और खुशीके मारे चिल्लाई प्राफसर साहब जरा और, थाडा और प्रोफसर साहब"

लेकिन जब एक खाली बोतलम आक्सीजन और हाइड्रोजनको मिला कर एहतियातके तौरपर उसे फिर तौलियेमें लपेटकर लुवीके हाथम दिया और सोम वास्तीने कहा कि इसके मुँहको जलता मोमबत्तीकी लौके पास लाकर खोलो तो वह झिझकी खालना था कि जोरका धमाका हुआ ऐसा कि तीन चार तोप एक साथ छूटी हा उस धमाकेसे ऊपर छतका प्लास्तर उपडकर नीचे गिरा तब लुवी मारे डरके कांप गई और फिर जसे तसे पूरी सुध पाकर कापते होठोंसे मगर रौब रखते हुय बोली

'माफ कीजिय, लेकिन चूकि अब मेरा अपना घर है म यूही एक लडकी नहीं हू, बल्कि इज्जतदार स्त्री हूँ इससे म कहूँगी कि महरबानी करके आप मरी जगह इस किस्मकी कारवाई न करें मुझ खयाल था कि पढे लिख और सलीकादार आदमी होकर आप जो कीजियगा मुना सिब और मुबारक हागा लेकिन आप बवकूफीकी बातें करन लग गय उसके लिये किसीको जल तक्म बिठाया जा सकता है

पीछ हा बहुत बार उसीने बताया कि पहले एक तालिब इल्म दोस्त था जिसने उसके सामन डायनेमाइट तैयार करके दिखाया था निश्चय

ही यह सोम वास्ती आखिरकार कुछ मोटी अकलका आदमी रहा होगा वही कि जो अपनी तरुण मडलीमें इतना प्रभावशाली था जहाँ ज्यादेतर सिद्धान्त और तत्वकी बातोसे काम पडता था इसे पहेली ही कहना चाहिय कि जब उसीके हाथो व्यावहारिक प्रयोगके लिय एक जीता जागता जीव पडा तो वही तीन तेरह हो रहा फिर भी इस अक्षता-यताको उसने प्रगट नहीं होने दिया इसको खूबी ही कहना होगा

विज्ञानके इन वस्तुगत प्रयोगोकी असफलताके बाद वह तुरत मनो विज्ञान और आत्मविज्ञानकी तरफ बढा

एक दिन उसन एसी निश्चयात्मक वाणीमें कि जिसका प्रतिशोध सम्भव ही नहीं है कहा, कि कही कोई ईश्वर नही है, और ऐसो यह म पाँच मिनटके अन्दर साबित कर द सकता हूँ लुबी यह सुनकर अपनी जगहमे उछल आई और मजबूतीसे बोली कि पहले वेश्या रही है तो क्या ईश्वरमें उसका विश्वास है और अपनी मौजूदगीम किसीको उनका अपमान नही करने देगी आग कहा कि अगर तुम एसी ही बेहूदा बात करते रह तो वह लखनपालसे शिकायत कर देगी

म यह भी उनसे कहूँगी,' आँसू भरे लहजेमें वह कहती गई, ' कि पढाने और सबक सिखानेके बजाय तुम वाहियात बातोके सिवाय कुछ नही करत और एसी गन्दी बकवास करत हो और हर वक्त अपना हाथ मर घुटनापर रख रहते हो और यह सही और मुनासिब बात नही है और यह कहकर लुबी जो आम तौर पर बहद डरी सी रहती थी, इसके साथकी जान पहचानके कालमें पहली बार तेजीसे उससे परे हट गई

इन कुछ अकतार्थताआके बावजूद साम वास्तीका प्रयास जारी ही रहा लुबीके मन और मस्तिष्कपर प्रभाव डालनेका प्रयत्न उसने तोडा नही उसने प्राणीकी उत्पत्ति और विकासका सिद्धान्त समझानेकी चेष्टा की कसे आरम्भ अमीबासे हुआ और नपोलियन तक विकासका चरम पहुँचा लुबी ध्यानसे उसे सुनती गई इस सारे काल उसकी

'झूठ, बकार !' वह सोचता, 'यह सच हो ही नहीं सकता वह तो बस नाटक रच रही है और मालूम होता है कि मैं अभी उसके मनके सही सुरपर हाथ नही रख सका हूँ '

दिन गुजरनेके साथ उसकी माँगका दबाव बढ़ता गया उसकी सख्ती बढ़ती गई वह अधिकाधिक दोष निकालने लगा शायद यह वह जान-बूझकर नही, आदतवश करता था उसे जैसे अपने प्रभुताके प्रभाव की टेव थी जिससे सामनेवालेका विचार दब रहता और इच्छा शक्ति अधीन हो रहती उसे इस स्वभावम पराजय शायद ही कभी मिली थी

एक दिन लुवीने लखनपालसे इसकी शिकायत की "लखनपाल, वह मेरे साथ सख्ती बरतते है और जो वह कहते रहते ह उसका एक शब्द मेरी समझमें नहीं आता अब और पाठ म उनसे नही लेना चाहती"

लखनपालने उसे समझाकर शान्त किया और फिर सोम बास्तीसे बात की उसने कुछ अतिरिक्त स्थिर भावसे कहा, "जसी तुम्हारी इच्छा हो बन्धु ! अगर तुम और लुवी मेरी शिक्षा पद्धतिसे सहमत नहीं हो, तुम्हें वह रुचिकर नही है, तो मै उसे स्थगित करनको उद्यत हूँ मेरा कत्तव्य बस यह था कि उसकी शिक्षामें म शिस्त और सयमका प्रवश करूँ अगर मेरी भाषा वह नही समझती है तो मेरा प्रयत्न होगा कि वह उसे ज्योका त्यो याद रख ले आगे यह आवश्यक न होगा पर अभी तो अनिवाय है तुम्हीं याद करो बन्धु लखनपाल कि हमें अक-गणितसे बीजगणितपर आना हुआ, सीधे-सादे अकोकी जगह अक्षरोंको हमें स्वीकारना पडा, तो हमें कितनी कठिनाई हुई थी तब हम क्या उसका कारण समझ पाते थे या क्यो हमको व्याकरण सिखाया जाता है, सीध क्यो नही कह दिया जाता कि कहानियाँ लिखो और कविता लिखो क्यो, है न बन्धु ?"

और अगले ही रोज लुवीके ऊपर काफी झुककर उसके वक्ष भागसे लगभग समतल बठा वह उसके शरीर सौरभका आस्वाद लेता हुआ कह

आँखोमें जस कि याचना थी मानो वह मूक भावसे जानना चाहती है कि आखिर यह सब तुम खत्म कब करोगे उसने रूमाल मुहके आगे लकर जमुहाई ली और अपराध भावसे कहा—माफ करना जरा थकावट हो गई है मार्क्सका भी उसी तरह सफलता नही मिली माल, मूल्य, मूल्यका रहस्य, मालिक मजदूर जो कि सिफ भक बन गय ह—यह सब शब्द थ जो हवाम बनत और गूँजते रह जाते थ और लुवी बचारी सीधी और भोली सुनती सुनती एकाएक खुशीसे उछल पडती—जब पता पाती कि दाल अगीठीपर उबलकर छलक पडी है या लगता कि दरवाजेपर कोई आकर खटखटा रहा है !

यह तो नही कहा जा सकता था कि स्त्रियाँ सोम वास्तीको पसद नही करती थी उसका अमित् आत्म विश्वास उसकी सशक्त निश्चयात्मक वाणी साधारण नारियोपर सदा प्रबल प्रभाव उत्पन्न करती खासकर वे जो कोमल वयकी होती और सरल भावसे विश्वासी स्वभाव की वह लम्बी देर तक चलनेवाले प्रेम-व्यवहारोसे बाहर निकल आने में कुशल था या तो वह जतलाता कि उसके ऊपर बड महत्वके काम का दायित्व डाल दिया गया है जिसके कारण प्रेम वगैरहकी फुरसत उस नहीं है या दिखलाता कि वह तो पुरुषोत्तम है कि जिसपर बधन नही और जिसे सब जायज है लुवीका प्रतिरोध या प्रत्यक्ष न था और कुछ निष्क्रिय भी था, पर था वह निश्चित और निरन्तर पर यह रुख उसको उभारता और बहकाता था खास तौरसे जो उस क्षुब्ध और उद्दीप्त करती यह बात थी कि लुवी जो हर किसीके लिय एसी सुगम और सुलभ थी जो हर दो रुपये की कस देने वाले कई कई आदमियोको अपना शरीर हठात् सौंपती रही है, वही उसे यह दिखानेकी कोशिश करे कि लखनपालके लिए उसका प्यार स्वार्थहीन और पवित्र है, नहीं नहीं!

आत्मापरसे पतत और पापकी लकीरें पूरी तरह कभी भरती नहीं ह और यौन व्यवहारकी वीभत्सतायें स्मृतिसे पूरी तरह धुलकर कभी साफ नही हो पाती

मुसीबतमें डाल दिया और सब यह अपनी असूली धारणाओंकी वजहसे जबसे लखनपाल लुवीको घर लाया तभीसे यूनिवर्सिटीमें उसके चकलेसे एक लडकीको बचाने और उसका नैतिक उद्धार करनेकी चर्चा थी स्वाभाविक ही था कि स्त्री विद्यार्थी भी इस चर्चाको सुनें और यह सब सोम वास्तीके हाथा बदा था कि वह चार लडकियोंको लेकर लुवीसे मिलाने जा पहुचा दो उनमें मेडिकलकी छात्रा थी, एक इतिहासकी विद्यार्थिनी थी और चौथी उदीयमान कवियित्री थी जो आलोचनात्मक निबन्ध भी लिखा करती थी उसने अति गम्भीर और बेहद वाहियात तरीकेसे उनका परस्पर परिचय कराया

"लीजिए', सकेतसे पहले अभ्यागतो और फिर लुवीकी ओर सकेत करके उसने कहा, "आइए, परस्पर परिचय हो जाए लुवी, इन लोगोंमें तुम्हें सच्ची सखिया मिलगी य तुम्हें जीवनके इस नए और प्रशस्त मार्गपर बढते जानेमें बडी सहायक होंगी और आप लोग,—जी, आपसे ही कह रहा हू—लीजिए, नादिया, साशा और ऐशा ! इस प्राणीको आप अपनी बडी बहिनकी तरह मान क्योंकि अभी वह उस भयावने अंधियारेमें से निकलकर आई है जहा कि सामाजिक व्यवस्थाके दोषने आधुनिक स्त्रीको बिठा रखा है "

शब्द शायद उसके यही न थे, लेकिन आशय यही था लुवी सुनकर चुकन्दरकी तरह लाल हो गई उसने असमजससे मिलानेके लिए हाथ आगे बढाया उगलिया उसकी आपसमें उलझी सी रह गई थी, खुल न पाई थी य शहरी लडकिया तरह तरहके छपे ब्लाउज पहने थीं और चमडकी पेटिया कसे थी उसने उन्हें चाय पेश की और साथके लिए कुछ दूसरी चीज भी रखी जल्दी जल्दी उनकी सिगरेटके लिए जलाकर दियासलाई सामने की और उनके कितने ही कहनेपर भी बैठी नहीं उसकी बोलती बन्द हो आई थी और बस हा' या ना , या जी अच्छा' म ही जवाब देकर रह जाती थी और जब आगन्तुकोंमेंसे एकका रुमाल नीचे गिर पडा तो लुवीने दौडकर झट उठाया और उसे दे दिया

रहा था, "एक त्रिभुज खींचो हाँ, यह ठीक है अब म इसके उत्तर कोण पर अक्षर लिखता हूँ—'प' प' यानी 'प्रेम' दूसरे दो कोणोपर अक्षर ह म और स यानी मनुष्य और स्त्री कुलका मतलब हुआ मनुष्य और स्त्रीका प्रम '

फिर एक परम गुरुके भावसे निश्चल और अतर्क्य वह जाने मिथुन प्रमकी कितनी ही और क्या क्या बातें कहता चला गया और अन्तम अकस्मात् मानो परिणाम निकालता हुआ बोला, "अब सुनो लुवी, प्रमकी कामना एसी ही है जसे भोजनकी, जलकी कामना सास लेना आवश्यक है वसे ही आवश्यक यह भी है और कहकर उसने घुटनेके ऊपर उसकी जाँघको दबाया लुवी अचकचा आई, पर वह चोट नही देना चाहती थी इसमे उसने हल्केसे और धीरे धीरे अपनी टाँगको अलग हटा लिया

'अब यह दखो," उसने कहना जारी रखा, 'क्या सोचती हो कि अगर एक रोज सयोगसे तुम घरपर न खा सको तो क्या तुम्हारी बहिन या तुम्हारी मा, या तुम्हारे पति इस बातपर बिगड़ग कि तुम उस रोज किसी रेस्टोरामें या दूसरी जगह खाना खाकर अपनी भूख ना त कर लेती हो यही प्रमके बारमें सच है वह भी शरीरके एक रसका आस्वाद है एक आवश्यकता है, न कम न ज्यादा शायद दूसरे रसोसे यह प्रबल है, आवश्यकता वेगवान है बस, हो तो यही फक है उदाहरणके लिए म—यह—तुम्ह स्त्रीके रूपम चाहता हू जब कि तुम '

"ए मिस्टर , बीचमें ही लुवी छिडी हुई सी बोली "यह सब छोडिए आप उसी सुरमें गाए जा रहे ह जसे और बात न हो कितनी दफे म मने कर चुकी हू फिर कहती हू आप समझते ह मैं नही जानती आप किधर लिए जा रहे ह म हरगिज बवफा न हूगी क्योकि लखनपालने मुझ सहारा दिया है मेरा उपकार किया है म सारे दिलसे उन्हें प्यार करती हू पूजा करती हू और आप—आपकी बात-चीत सबस मुझ नफरत हिकारत होती है '

एक रोज सोम वास्तीने लुवीको गहरी चोट पहुचाई और उस बहद

मुसीबतमें डाल दिया और सब यह अपनी असूली धारणाओंकी वजहसे जबसे लखनपाल लुवीको घर लाया तभीसे यूनिवर्सिटीमें उसके चक्लेसे एक लडकीको बचाने और उसका नैतिक उद्धार करनेकी चर्चा थी स्वाभाविक ही था कि स्त्री विद्यार्थी भी इस चर्चाको सुनें और यह सब सोम वास्तीके हाथा वदा था कि वह चार लडकियोंको लेकर लुवीसे मिलाने जा पहुचा दो उनमें मडिक्लकी छात्रा थीं, एक इतिहासकी विद्यार्थिनी थी और चौथी उदीयमान कवियित्री थी जो आलोचनात्मक निबन्ध भी लिखा करती थी उसने अति गम्भीर और बहद वाहियात तरीकेसे उनका परस्पर परिचय कराया

"लीजिए ', सक्तेसे पहले अभ्यागतो और फिर लुवीकी ओर सकेत करके उसने कहा, "आइए, परस्पर परिचय हो जाए लुवी, इन लोगोंमें तुम्हें सच्ची सखिया मिलगी य तुम्हे जीवनके इस नए और प्रशस्त मागपर बढते जानेमें बडी सहायक होगी और आप लोग,—जी, आपसे ही कह रहा हू—लीजिए, नादिया, साशा और ऐशा ! इस प्राणीको आप अपनी बडी बहिनकी तरह मान क्योंकि अभी वह उस भयावने अधियारेमें से निकलकर आई है जहा कि सामाजिक व्यवस्थाके दोषने आधुनिक स्त्रीको बिठा रखा है "

शब्द शायद उसके यही न थे, लेकिन आशय यही था लुवी सुनकर चुकन्दरकी तरह लाल हो गई उसने असमजससे मिलानेके लिए हाथ आगे बढाया उगलिया उसकी आपसमें उलझी सी रह गई थी, खुल न पाई थी य शहरी लडकिया तरह तरहके छपे ब्लाउज पहने थी और चमडकी पेटिया कसे थी उसने उन्ह चाय पेश की और सायके लिए कुछ दूसरी चीज भी रखी जल्दी जल्दी उनकी सिगरेटके लिए जलाकर दियासलाई सामने की और उनके कितने ही कहनेपर भी बठी नही उसकी बोलती बन्द हो आई थी, और बस 'हा या 'ना', या 'जी अच्छा' म ही जवाब देकर रह जाती थी और जब आगन्तुकोंमेंसे एकका रुमाल नीचे गिर पडा तो लुवीने दौडकर झट उठाया और उसे दे दिया

एक उनमें स्थूलकाया थी उसकी आवाज भारी, गहरी और चेहरा सुर्ख था गाल बाहरको फले हुए थे जिनपर दबी-सी नाक उभरकर अजब दृश्य उपस्थित करती थी और उसकी छोटी काली आखें अपनी गहरी वादियोंमेंसे बटन की भाति चमकती थी वह लुबोको सिरसे पाँव, पाँवसे सिरतक देखती रही मानो दूरबीनसे मुआयना कर रही हो उसकी दृष्टिमें अवहेलना थी उस निगाहके नीचे लुबो अपराधिन अनुभव कर आई 'ऐसे यह मुझे क्या ताक रही है मने कोई उसका प्रियतम तो उससे छीन नहीं लिया है' दूसरी लडकीने सवाल पूछना शुरू करके बडी अभद्रताका परिचय दिया उसके लिए यह पहला अवसर हो सकता था पर लुबीके लिए तो यह सवाल असख्य बार आ चुके थे पूछा कि तुम वेश्या बनी कैसे पूछनेवाली लडकी सुन्दर थी, पीत वण, तनिक चपल और चेहरेपर सूक्ष्म अस्थिरताका भाव था बाल उसके हलके थ, और कुल मिलाकर ग्गिडी बिल्लीकी बच्ची सी जान पडती थी यहा तक कि गदनके चारो ओर पडे गुलाबी रिबन तक से यह भाव फूटता था

'मगर यह बताओ कि वह बदमाश था कौन यानी वह पहलेवाला —समझती हो न ?"

लुबीकी आखोंके सामनेसे उसकी पुरानी सखी जेनी और तिमिराके चेहरे घूम गये कितनी निर्भीक, कितनी मानिनी और कितनी व्युत्पन्न ओह ! इन लडकियोसे वे कितनी न चतुर थी और इतने अकस्मात कि खुद उसको अचरज हो आया वह काटती सी बोली

'कितने तो थे म भूल गई मौल्का मिशका बौलोटका सेरेइका, जोजेफ, कौश्का पेट्का और उनके बाद मुन्का और बुश्का और उनके कई दोस्त—क्यो, आपको उनमें दिलचस्पी है ?"

'ऐं, नहीं मै चाहती थी एक तुम्हारे, समझो हमदर्दी तरह

"तुम्हारा कोई आशिक है ?"

"माफ कीजिये ? म समझी नहीं—तुम यह किस तरहकी बात कर रही हो ? लडकियो, आओ अब चलना चाहिए "

"क्या मतलब तुम्हारा, यानी मैं नहीं जानती कि मैं क्या बात कर रही हूं ? पूछती हू, कभी तुम मर्दको लेकर सोई हो ?"

"सोम वास्ती महोदय, म नहीं समझती थी कि आप हमको कभी इस तरहकी औरतस भी मिलाने ला सकते ह, बहुत धन्यवाद है आपका बडी कृपाकी आपने"

लुबीके लिये अपने भय और कातरताको जीतना और बातचीतमें आग बढना मुश्किल होता था वह उन स्वभाववालियोमें थी जो धीरज और सन्तोषसे देर तक सहती जा सकती थी लेकिन जो फिर कभी एकाएक फट भी पडी कि फिर जो हो थोडा है।

"लेकिन म जानती हू" वह घृणा और द्वेषसे चीखती सी बोली, "जानती हू कि तुम मुझसे कोई घटकर नहीं हो तुम्हारे बाप है, मा है, तम्हारे लिये घर बारका इन्तजाम है और जरूरत हो तो गभ गिरानेका प्रबन्ध हो जाता है तुम बहुतेरी य करती हो, पर अगर तुम मेरी जगह होती जहां खानेको कुछ हो नहीं, बच्ची, नासमझ और अपढ —क्योंकि मैं अपढ हू —और चारा तरफ तुम्हारे आदमी ऐसे घिरे होते जैसे मौसम में कुत्ते—तो क्यो, क्या तुम भी चकलेमें ही न बैठी होतीं ? क्यो, तुम्हें एक गरीब लडकीकी पत उतारते शम नही आई ?"

यह झगडा देखकर, जो उसीके कारण पैदा हुआ था, मानो झंझटसे निकलत हुए सोम वास्तीने उसे निरथकसे मीठे उपदेश भरे शब्द कहे जैसे कि पुराने नाटकोमें परम मान्य गुरुजन आदि कहा करते है, और वह महिलाओंको साथ ले गया

लुबीकी आजाद जिन्दगीम इस सोम वास्तीको और भी भाग लेना बदा था वह कमीना और बेहयाईका भाग था लुबीने लखनवालसे कई बार शिकायतकी थी कि सोम वास्तीके आनेपर वह घबरा सी आती है लेकिन उसन इस तरहके स्त्रियोचित वहमों पर ध्यान देनेकी जरूरत

न समझी वह सोम वास्तोकी दूनकी बातोंके जादूमें था यह आदमी सोम वास्ती गुमानसे भरा था और बोलता तो बढ चढकर प्रभावशाली तरीकेसे बोलता था लखनपाल उसके रोबमें था कुछ प्रभाव एसे होते हैं कि उनसे छूट पाना मुश्किल होता है, यहाँ तक कि असम्भव ही कहिए दूसरी तरफ हर दिन और हर रात लुबीके साथ रहने सोनेसे वह तग था और थक गया था अकसर सोचता, 'वह मेरी जिन्दगीको बरबाद कर देगी म नीच निकम्मा और कुन्द बनता जा रहा हूँ म एक बवकूफोकी परोपकारितामे डूबा जा रहा हू और अन्तमें दीखता है, होगा यह कि मुझे उससे ब्याह करना होगा फिर या तो महकमा आबकारीमें या किसी अदालती दफ्तरमें जाकर मुलाजमत करूँगा, या मुदर्रिस बन जाऊँगा रिश्वत लेना शुरू कर दूँगा और यहाँ वहाँकी हाँका करूगा एक मामूली कस्बेके सडियल घर्कफिरनेकी तरह जुएमें जुता घूमा करूगा और ब मेरे सपने मस्तिष्ककी शक्तिके, जीवनके, सौंदयके मानव प्रेम और विश्व प्रेमके, क्रातिके और पराक्रमके तब ये सपने मेर क्या होंगे वहाँ रहेंग ?'

कभी वह अपने आपस ही जार जोरसे बोल आता और बालोंमें उगली डालकर सिरको झिझोडता इस तरह लुबीकी शिकायतोंपर ध्यान देनेकी जगह वह उसकी बातपर उलटे झुझला पडता चीख चिल्लाने लगता, और पैर पीट आता ऐस समय विचारी लुबी सहमी और डरी चुप हो रहती और जाकर अपने रसोई घरके एकान्तमें अकेली आंसू बहा लेती

एस आपसी झगडेके बाद तनिक मेल होनेपर वह और भी निरन्तरता से कहता, 'प्यारी ल्यूबा ! तुम देख ही रही हो कि हम दोनो एक दूसरेसे अनुकूल नही पडते देखो ये सौ रुपये ह लेकर तुम अपने गाँव चलो जाओ तुम्हारे रिश्तेदार तुम्हें वापिस देखकर खुश होंग वहाँ अपने कुछ रोज रहा, और दुनिया देखो भालो दो महीनेमें म तुम्हें लेने पहुच जाऊँगा इस बीच तुम आरामसे रहोगी और जो कुछ गन्दा

गलीज शहरने तुम्हारे अन्दर डाल दिया है झर जायेगा और गायब हो जायगा तब तुम नई जिन्दगी शुरू कर सकोगी तब तुम अपने अवलम्ब पर रहोगी, सहारेकी जरूरतसे दूर अपने स्वाभिमानमें स्वाधीन और स्वतन्त्र"

लेकिन उस स्त्रीके साथ क्या किया जा सकता है जो पहली बार प्रेम में पड़ी हो और जैसा कि वह समझती थी, आखिरी बार उसे क्या कभी मनाया जा सकता है कि बिछुड़ना जरूरी है? वह कभी तकको सुन भी सकेगी? और लुबी रह गई

लखनशान्‌ या सोम वास्नीके रोबमें था उसके पुष्ट आश्वासनोका आदर करता था उसके निर्णय और वक्तव्योका मान करता तो भी मन ही मन असलियतका उसे अनुमान था वह अन्दरसे अनजाने ही अनुभव करने लगा था कि उसके मित्रका लुबीके प्रति क्या भाव और झुकाव है फिर वह स्वयं लुबीसे छुटकारा चाहता था उस सम्बन्धका बोझ उसे भारी लगने लगा था ऐसी अवस्थामें उसने पाया कि उसमें दुष्टता उठ रही है और वह सोच रहा है 'सोम वास्तो उसे चाहता है ल्यूबाके लिए इस में क्या अन्तर है कि मै हूँ, या वह है या कोई दूसरा है मैं उससे खुलकर बात क्यो न कर लूँ जैसे दोस्तसे दोस्त करता है और उसे ल्यूबाको ले लेने दूँ पर वह मूरख, कम्बख्त मानेगी जो नही वह तो आसमान उठाने लग जायगी'

"अगर कही मै दोनोका साथ पकड पाऊँ?" उसके ख्याल आगे बढते गये, किसी खास सबूतकी हालतमें तो मैं बस ढकना उघाड़ दूँ तब मैं एक दृश्य खडा कर सकता हूँ और फिर आरामसे, कृपाके भावसे हाथमें लेकर कुछ रुपया सामने रख दूँ—और छोडकर चल दूँ"

वह कई कई दिन घरसे बाहर रहने लगा लौटकर घर पहुचता तो जिरह पर जिरह होती दृश्य बनते, आँसू ढरते और कभी हिस्टीरियाके दौरे भी पड जाते वह घरसे बाहर निकलता तो लुबी पीछे पीछे जाती जिस मकानके दरवाजेमें घुसता वह सडक पार उसके सामने ही खडी

रहती मुद्दत देर तब तक खडी रहती जब तक कि उस दरवाजसे वह वापिस न आ जाता और तब खुली सडकपर ही जोर जोरसे सुबक्कर रो रोकर वह उसे प्रेमके उलहनोंकी बौछारसे छा देती उसके खतोंको वह बीचमें रोक लेती पर वह खुद ठीक तरह पढना अभी जानती न थी न मददके लिए सोमदव य। नेजरसके पास जानेकी हिम्मत कर सकती थी वह उन पत्राकोम लमारीमें ही जहाँ तहाँ कभी चीनीके साथ, तो कभी चायके डिब्बेके पीछ या नीबुओमें छुपा देती आखिर वह इस हालत तक पहुच गई कि अपनेपर वह तेजाब छिडकनेकी धमकी दे बैठी

लखनपाल जब बचावकी कोई शतानी भरी तदबीर सोच पानेकी जुगतमें उलझा था, तभी विचार आया कि मरे कम्बख्त ! सोम वास्ती और उसके दोनोके बीच कुछ न भी हो तो भी क्या फक पडता है बखेडा ही जो करना हुआ में वह सीन खडा करूँगा, वह हेवतनाक और इल्जाम दोनोपर डालूगा

और वह ध्यानपूवक दोहराता और मानो सिद्ध करता कि एसे समय वह क्या क्या कहेगा विस्मयसे कहेगा, आह ! तो यह बात है मैंने तुम्हे अपने दिलसे लगाया और मुझ ही यह देखना बदा था नाच बेवफा ! और तुम तुम मेरे नजदीकी दोस्त ! तुमने यह मेरी खुशीपर डाका डाला पर नही, नही म तुम्हे जुदा न करू गा अपनी आखो मे आसू लेकर म चला जाऊगा मेरी यहा जरूरत नहीं है म तुम्हारे प्रेममें विघ्न न बनूगा ' इत्यादि, इत्यादि, इसी तर्जमें

और होनहारकी बात उसकी यह आशाए यह गुप्त योजनाए पूरी उतरी मनके अन्दर उठनेवाली य चीजें बिखरी सी थी, सूत्रहीन, आकृतिहीन और सिद्धान्तसे हीन य होती ह, पर एसे कि आदमी पीछ मान सकता है—नही भी थी लखनपालके साथ वह पूरी हो आई उस दुर्भाग्यके दिन सोम वास्ती जब पहुचा तो ल्यूबाका दिल निराशासे छलनी हुआ पडा था उसने मुह बिचकाकर स्वागत किया यह विद्याके गवसे प्रमत्त अध्यापक और गर्वोन्मत्त नर पुरुष इधर उसे बहुत अरुचि-

ऊर हो गया था

इस बार उसने आकर अपने सिद्धान्तका प्रतिपादन शुरू किया, सिद्धात यह कि नियन्त्र नही होते, न अधिकार, न कत्तव्य, न धम न पाप कारण कि मनुष्य एक पूण इकाई है वह स्वय है हर किसी और हर बुद्धम स्वाधीन और स्वतन्त्र! मनुष्य देव है, वह ईश्वर हो सकता है शाय सब दशाए ह उनसे अन्तर नही पडता

आग वह प्रेम भावनाओके तत्त्वविज्ञानके विवेचनम जाता पर दुर्भाग्यसे वह इतना अधीर हो आया था कि उसके बजाय उसने अपनी बाहोको लूबीके परिवष्ठनम डाल लिया और उसके शरीरको जहा तहाँ पर हथियान लगा उसकी हिसाबदा आत्माने सोचा कि उसमें हल्के हल्के उद्दीपन आ जाएगा और वह आत्म समपण कर देगी वह उसके अधरोष्ठको लेना चाहता था, पर वह गुस्सेसे हाफ रही थी और चीख चिल्ला रही थी शिष्टताका सब आवरण उससे दूर हो गया था "दूर हो, चडाल, सुअर, कुत्त, ! म तेरी यह गदी थूथ ी फाड दूगी "

चकला धरोका शब्दकोष उसे फिर प्रस्तुत हो गया था सोम वास्ती का फन्सी चश्मा गायब हो चुका था उसका मुँह बिगड आया था और मदमे लाल आखोस ल्यूबाको देखकर जो मुहमें आया बके जा रहा था

मेरी प्यारी क्या बात है खुशीका एक जाम, एक पत्त हम उसम एक हो जाए किसीको पता न हो मेरी रानी, मरी—"

इसी समय लखनपालने कमरेमें प्रवेश किया निश्चय है कि उसने मनमें नही माना कि वह भारी नीचता करने जा रहा है एक तटस्थ दूरगत रूपमें केवल यह सोचा कि उसका चेहरा पीला होना चाहिए और शब्द दुखसे व्यगसे और व्यथामे भारी होने चाहिए

नाटकके चौथ अकमें उपस्थित अवस्थामें ही इस तरह हाथोको दोनो घोर निराशामें गिराकर अपनी छाती तक झुके सिरको धीमेसे हिलाकर उसने जडीभूत आवाजसे कहा, "हां, मैं सोचता तो था डर भी था, पर यह तुम्हें मैं कुछ न कहूगा ल्यूबा तुम अभी आदिम हो, अबोध

हो लेकिन तुम सोम वास्ती हमेशा म तुम्हे समभता था और अब भी समझता हू कि तुम ईमानदार वफा जानते हो पर अब समझा उन्माद विवेकके सब तर्कोंसे जबदस्त होता है य पचास रुपए ह इन्हे ल्यूबाके लिए छोड जा रहा हू चाहो तो पीछे लौटाते रहना उस बारम मुझ शक नहीं है इस बिचारीके लिए तुम कुछ करना चाहते हो? तुम समझदार हो, होशियार हो सहृदय हो और ईमानदार हो और म ? ('एक दुष्ट—'कही अपने अन्दरसे किसीके बोलनेकी स्पष्ट शब्दा में उसा आवाज सुनी) म जा रहा हू, क्योकि यह दश्य, यह छल, यह वदना और मुझसे सही नहीं जाती खुश रहो "

यह कहकर उसने जबसे बटुआ खीचा और एक अदाके साथ सामने मजपर फक दिया फिर उसने बाल हाथोमें लिए और कमरेसे बाहर झपट गया दरवाजमसे फिर भी वह कहता गया, "पासपोट तुम्हारा, मेरे डस्कम है

छुटकारेका यह उपाय उसके लिए सर्वोत्तम हुआ और पात्रका जो दृश्य उसने अभी खला था हूबहू उसी तरह घटा जसा उसने सपनेम देखा था

●

१

तीसरा भाग

लुवी ने यह सारी कहानी जेनी के कंधे से लगकर ब्योरेवार सुना दी भाषा उखडी-पुखडी थी और कहते समय वह रोती जाती थी, कहने की आवश्यकता नही कि इस सुख दुख भरी कथा का रूप उसके मन मे और मुह मे ठीक वही न रहा होगा जैसा घटनात्मक इतिवृत था

उसके शब्दो के हिसाब से लखनपाल उसे सिर्फ फुसलाकर और ललचाकर ले गया था और जब तक हो उसकी मूर्खता का लाभ उठाकर अन्त मे उसे छोड देना चाहता था और वह खुद मूरख और नासमझ उसके प्रेम म पड गई थी प्रेम म से कुछ ईर्ष्यालु भी बन गई थी और उसके साथ किसी लडकी को देखना उससे सहा न जाता था इससे उसने लुवी के साथ नीच से नीच व्यवहार किया अपने एक दोस्त को जान बूझकर भेज दिया कि वह उसका जो चाहे करे और जब यह उसका दोस्त उसे आलिंगन मे ले ही रहा था कि लखनपाल आ गया फिर उसने वहाँ खासा हौलनाक सीन खडा कर दिया और लुवी को दरवाजा दिखा कर अकेले सडक पर फेंक दिया

उसकी राम कहानी म सच और झूठ बराबर बराबर मिले हुए थे पर वह सारी घटना को देखती इस तरह थी

फिर उसने आगे एक एक ब्यौरा देकर बताया कि ऐसे जब वह बिलकुल अकेली रह गई, किसी का सहारा न रहा, न कोई मजबूत वसीला या आसरा तो उसने कस्बे के किनारे एक सस्ती सी सराय म छोटी कोठरी किराये ली फिर बताया कि कसे उसी रोज वहाँ के मेहतर ने जो एक सजायाफ्ता बदमाश था उसे बेच देने की कोशिश की उससे पूछा ग ताद्य

और कीमत करीब वसूल कर ली उससे वह उठ कर वहाँ से एक दूसरी जगह गई वह कमरा बड़ा था पर यहाँ पर भी एक पुराने ग्राहक की निगाह चढ़ गई ऐसे लोग ऐसी जगहों पर घने बसे हुए रहते ही हैं

इससे यह प्रगट था कि लुबी कितनी भी सादगी और शांति और एकाकीपने से क्यों न रहती, उसके चेहरे में, बातचीत में, उसके सारे व्यवहार म ही कुछ ऐसी खास चीज थी कि एकाएक वह मामूली निगाह से बच भी जाए पर जाने-बूझे और खेले खाए आदमी की निगाह से वह न चूकती थी

फिर भी लखनपाल के प्रति उसके प्रेम की सच्चाई ने चाहे वह सयोग से हुआ हो और थोड़ी देर ही टिका हो उसे एक बल दिया था उसके कारण फिर पतन की अनिवार्यता से वह बच रह सकती थी उसे कल्पना न थी कि उसमे ऐसी शक्ति आ सकेगी पर इससे उस में सूझबूझ आई और उसने अखबार म काम की तालाश के लिए इश्तिहार दिए, चौके बासन का काय ही तो वह क्या कर सेगी पर उसकी जमानत देने वाला कौन था जिम्मा लेने वाला कौन था ? एक दिक्कत यह थी कि मुलाकात मे ज्यादातर स्त्रियो के सामने ही होना पड़ता, और वह पहचाने बिने न रहती कि यह तो उस जात की है जो सदा सनातन से उनकी घरबार की शत्रु रही है जो उनके पतियो को, पिताओ को, भाईयो और बेटों को घर मे से बाहर की ओर बहकाती रही है

वापस गाँव जाने मे उसके लिए न अर्थ रह गया था, न कोई लाभ ! यो वह शहर से कोई पन्द्रह मील ही दूर था पर उसके चकला घर म रहने की खबर मुद्दत पहले ही गाँव पहुँच चुकी थी उसके गाँव के पुराने पड़ोसी जो अब शहर म दरबान थे या हल्के किस्म के होटल या रेस्टोरां म वेटर थे या कोचवान या इसी तरह का कोई काम करते थे, लिख बोलकर खबर खूब फैला चुके थे कि वह उन्हे उस गली मे मिली थी या उन्होंने उस घर मे उसे देखा था जानती थी कि गाँव के घर वापस गई तो उसे क्या भुगतना होगा इससे तो मौत सौ दर्जा बेहतर है

पैसे और खर्च के मामले मे लुबी पाँच बरस की बच्ची की तरह

अबोध थी वह या ही उसके हाथ से सरककर इधर-उधर बिखर जाता था चुनाचे जल्दी ही उसने पाया कि उसका हाथ एकदम खाली है पाई भी नहीं बची है चकलाघर में लौट जाने का खयाल उसे डर और शर्म से भर देता था। दूसरी तरफ गलिहारी बनाने का लालच कदम-कदम पर उसे रिझाता था शाम के समय वहां पर उसे चलती देखते ही पेशेवर पुराने पक्के आवारा लोग भांप जाते थे कि वह क्या रही है जबतक उनमे से कोई बढ़ कर लुवी के अगल-बगल होकर आ चलता और मीठी ठकुरसुहाती में कहता, 'ऐ नाजनीन अकेली क्यों चल रही हो ! मेरी दोस्ती लो और आओ हम साथ चलें क्या यह ज्यादा सुभीते का न होगा जब भी लोग आनन्द चैन से वक्त बिताना चाहते हैं तो सग साथ ढूढते हैं ना ? और पुरुष के अलावा तुम्हारे लिए भी मेरे साथ दीखना फायदे का रहेगा मैं सब इ सपैक्टर लोगों की शक्लें पहचानता हू "

"कौन इ सपक्टर," लुवी ने पूछा

'अरे इ सपक्टर कौन ! ये ही जो बिना सनद घूमनेवालियो को पकड कर हिरासत म भेज देते हैं यानि सनद सार्टीफिकेट जिनके पास नही है, लिया और उ ह घसीट कर पुलिस हवालात मे डाल दिया वहां का हाल तो तुम जानती ही हो बेचारी लड़की अगर वह घर बार वाली है तो उनको जाने कैसे खासकर जब वे मामूली लिबास मे हो और यह इ सपक्टर सनद वालियों सबको पहचानते भी हो और पुलिस थाने मे पहुच कर तुम्हारे नाम का कागज छिन जाएगा और चकले वाला टिकट दे दिया जाएगा फिर हर हफ्ते डाकटरी मुआयनों के लिए तुम्हारे आने अहाते मे पहुँचना होगा—और सनद का पीला कागज भी तुम्हारे पास हो तो भी इ सपेक्टर गली मे चलते हुए तुम्हें घर ले जा सकता है और हवालात मे भेज सकता है वहा नगा कमरा होगा और लकडो की बैंच रात मे पडने के लिए और वह रिपोर्ट देगा कि तुम नशे मे थी या नही तो आने जाने वालों के साथ छेडखानी कर रही थी और उसके बाद मजिस्ट्रेट चाहे तुम कित्ती ही बेकसूर बेगुनाह हो तीन हफ्ते की सजा ठोक देंगे अब सोचो इस सारे काल में कमाई धंधे की नही और परेशानी दुनिया भर की यह सच है कि इसपेक्टर से तुम कुछ दे दिला कर शायद पिंड छुड़ा सको

को एकदम चाट गया उसकी मति, गति जैसे हर गई अगली बार उन वृद्ध महानुभाव ने एक पैसा नही दिया बोले,—' बडा नोट है मैं अभी भुनाकर लाता हू कहा और पिछवाडे की तरफ गये गये कि फिर वापस कभी न आये

एक जवान महाशय भी लुवी को होटल के कमरे मे ले गये खुली तबीयत के फावड और खुशनुमा जवान थे लापरवाही की अदा के साथ सिल्क की कमीज पहने थे और सर पर हैट दबाकर ऐसे कोने पै टिका रखा था मानो चुनौती हो कि आ जाय जो बला हो, उन्होने शराब का आर्डर दिया और कुछ चटपटा का और फिर जो अपने बारे मे बघारना शुरू किया तो उसका अन्त न था कहा कि वह एक नवाब का लडका है सारे शहर म बिलियड का उससे बढकर खिलाडी न मिलेगा, कि लडकिया उस पर जान देती हैं और कि लुवी को वह राजसी ठाठ पर पहुँचा देगा वगैरह-वगरह आखिर वह कमरे से बाहर गया जैसे बरावर से ज़रा निपट कर अभी आता है और फिर ऐसा गायब हुआ कि निशान नही फिर तो दरवान ने, जो सख्त आदमी था और आँखें जिसकी खिची थी लुवी की खासी खबर ली मुह दबाकर चुपचाप लुवी को वह देर तक पीटे गया आखिर जाहिरा वह मान गया कि कसूर उसका नही गाहक मेहमान का था तब उसने उसे छोडा लेकिन पस अपने पास रख लिया उसमे एक रुपया और कुछ रेज़ीज थी सस्ता, हलका एक हैट था और लुवी की एक जाकेट भी थी यह सब मानो वहाँ अमानत के तौर पर रहा

एक दूसरे साहब भी थे करीब पैंतालीस बरस की उम्र और खासा लिबास दो घण्ट तक उन्होंने लुवी को सताया बाद कमरे का किराया चुकाकर उन्होने लुवी के हाथ चवन्नी रख दी उसने शिकायत की तो वह खूखार बन आये और लाल बालो से भरे हाथो की जबदस्त मुट्ठी की मार उसके चेहरे पर देकर जोर से धमकाते बोले, ' ज़रा और मिन्नत शिकायत कर बताता हूँ तुझे शिकायत करना ज्यादा किया तो अभी पुलिस को बुलाता हू, कहूगा कि सोते हुए इसने मेरी चोरी की है कैसा रहेगा ? बता, पुलिस थाने इससे पहले तू कब थी, बता ! आई मुझे चलाने " और वह

या नही तो एक रात अपन विस्तर तुम्ह साथ रख के वह मान जाए पर एक तो रुपया सदा पास नही होता, फिर जाने वह विस्तर तुम्हे कसा लगे इससे सुनती हो रानी, अच्छा यही है कि हम साथ चलें मैं सब कुछ जानता हू और तुम्हारे बचाव का खयाल रखूगा या बेहतर है कि हम अपनी मकान मालकिन के यहा चलें बस कुल जमा वहाँ हम तीन लोग हैं लेकिन चौथी के लिए भी जगह हो सकती है खासकर जबकि तुम जैसी खूबसूरत चीज हो

और ठीक इस जगह वह अनुभवी उस्ताद दलाल पहले यों ही चलते ढग से और फिर धीरे धीरे भावभीने तरीके से सजा कर बताना शुरु करता है कि एक ठिये पर मकान मालकिन के साथे म रहने के कितने फायदे हैं तैयार बढिया खाना और बाहर जाने की पूरी आजादी और सुनो तनखा जब मुकरर हो उसके ऊपर चुपके, चोरी बाहर से जो तुम झटक लाओ वह तुम्हारा अपना आखिर तनखा तो उनकी है जो कमरे मे आते हैं बाहर जो मिला उस पर मकान मालिक का क्या हक है ? यहाँ फिर वह कहने-अनकहने विशेषण खानगियो के लिए प्रयोग म लाता जो सीने और निजी पशा करती हैं कहता कि व सरकारी माल है और फसली और शौकिया लुबी इन गहणी के विशेषणो को खूब जानती थी क्योंकि चक्लो मे रहने वालियाँ भी इन गली कूचे वालिया की तरफ बडी न्फिरत से रखती और उनके प्रति स्वय बडप्पन के भाव से पेश आती उन्हे छिनाल और आवारा पतित मानती थी।

और निश्चय अन्त म वही हुआ जो कि होना लाजमी था आग भूख के भयावने दिनो का दे अन्त सिलसिला देखकर अधरे और अनिश्चित भविष्य के गह्वरो के ताल म रहते हुए एक दिन लुबी ने एक निमत्रण स्वीकार कर लिया—कोई एक प्रौढ वय के नाटे मझोले कद के बाइज्जत महाशय थे रोबीले, पक्के, सही कपडो मे चुस्त दुरुस्त रहने वाले लेकिन अधम और भयकर प्रयोगवादी इस निरीह अपमान के लिए उसको एक रुपया मिला। वह विरोध मे कुछ नहीं कह सकी धक्के मे बीता हुआ उसका पुराना जीवन उसके व्यक्तित्व, उसके मान और उसकी अहभावना

को एकदम चाट गया उसकी मति, गति जैसे हर गई अगली बार उन वृद्ध महानुभाव ने एक पैसा नही दिया बोले,—' बडा नोट है मैं अभी भुनाकर लाता हू कहा और पिछवाडे की तरफ गये गये कि फिर वापस कभी न आये

एक जवान महाशय भी लुवी को होटल के कमरे मे ले गये खुली तबीयत के फावड और खुशनुमा जवान थे लापरवाही की अदा के साथ सिल्क की कमीज पहने थे और सर पर हैट दबाकर ऐसे कोने पै टिका रखा था मानो चुनौती हो कि आ जाय जो बला हो, उन्होंने शराब का आडर दिया और कुछ चटपटा का और फिर जो अपने बारे मे बघारना शुरू किया तो उसका अन्त न था कहा कि वह एक नवाब का लडका है सारे शहर म बिलियड का उससे बढकर खिलाडी न मिलेगा, कि लडकियाँ उस पर जान देती हैं और कि लुवी को वह राजसी ठाठ पर पहुँचा देगा वगैरह वगैरह आखिर वह कमरे मे बाहर गया जैसे बराबर से जरा निपट कर अभी आता है और फिर ऐसा गायब हुआ कि निशान नही फिर तो दरवान ने, जो सख्त आदमी था और आँखें जिसकी खिची थी लुवी की खासी खबर ली मुह दबाकर चुपचाप लुवी को वह देर तक पीटे गया आखिर जाहिरा वह मान गया कि कसूर उसका नहीं गाहक मेहमान का था तब उसने उसे छोडा लेकिन पस अपने पास रख लिया उसमे एक रुपया और कुछ खेरीज थी सस्ता, हलका एक हैट था और लुवी की एक जाकेट भी थी यह सब मानो वहाँ अमानत के तौर पर रहा

एक दूसरे साहब भी थे करीब पैंतालीस बरस की उम्र और खासा लिबास दो घण्ट तक उन्होने लुवी को सताया बाद कमरे का किराया चुकाकर उन्होंने लुवी के हाथ चवन्नी रख दी उसने शिकायत की तो वह खूखार बन आये और लाल बालो से भरे हाथो की जबदस्त मुट्ठी की मार उसके चेहरे पर देकर ज़ोर से धमकाते बोले, ' जरा और मिन्नत शिकायत कर बताता हूँ तुझे शिकायत करना ज्यादा किया तो अभी पुलिस को बुलाता हू, कहूगा कि सोते हुए इसने मेरी चोरी की है कैसा रहेगा ? बता, पुलिस थाने इससे पहले तू कब थी बता ! आई मुझे चलाने " और वह

चला गया

इस तरह की अनेक कहानियाँ हैं अन्त मे जहाँ रहती थी उस मकान के मालिक और मालकिन ने कह दिया कि यह कमरा अब और आगे उसे नही मिल सकता मालिक एक मल्लाह था और बीवी उससे बढ़ चढ़कर थी कहा ही नही बल्कि उसका सामान उठाकर बाहर दालान में फेंक दिया तब वह रात भर मेह पानी मे चौकीदारो को बचाती गली-गली और सडक सडक घूमती रही उस दिन शम और ग्लानि से भरकर हारकर उसने लखनपाल की मदद लेने की बात सोची पर वह शहर म न था असल मे जिस रोज उसने लुबी का घोर अन्यायपूर्वक तिरस्कार किया था, उसी दिन वह कायर मकान छोड शहर से भाग गया था इससे सवेरा होने और सूरज चढने पर एकाकी और हताश, निरीह और निराधार लुबी ने देखा कि कुछ शेप नही है और कहीं राह नही है यही है कि वापस वह उसी घर मे जाए, माफी माँगे, और वहीं जगह पाने की प्रार्थना करे

२

पहुँचकर लुबी ने जेनी के कन्धो को चूमा और वहाँ लगकर वह तार-तार आँसू बहा उठी प्रार्थना करती हुई बोली, जेनी, "तुम तो इतनी होशियार हो, हौसले वाली हो, नेक हो, कृपा कर एमा से कहो कि वह मुझे वापिस ले तुम्हारी वह अनसुनी नहीं करेगी"

जेनी ने भौं समेटकर उत्तर दिया, "वह किसी की नही सुनेगी" फिर बोली, "उस निकम्मे, बेकार, उचक्के में तूने देखा क्या था कि उसके साथ रहने चली गई"

धीमी कातर बनी लुबी बोली, "जेनी तुम्हीं ने तो मुझे सलाह दी थी"

"मैंने मैंने तुझे सलाह दी थी ? मैंने कभी तुझे सलाह नहीं दी झूठ तू क्यों बोल रही है, री ! तोहमत लगाती है खैर, अच्छा आ चलें"

एमा उद्यानी को लुबी की वापसी की खबर अब तक मिल गई थी

जब वह डरती-सी, इधर-उधर देखती दालान पार करके घुसी थी, तब उसने लड़की को देख लिया था असल में लुवी को वापस लेने के खिलाफ कोई उसके पास वजह भी न थी उसने उसे जाने ही रुपये के लालच की वजह से दिया था मिली रकम का आधा वह अपने लिये हथिया भी सकती थी उसे उम्मीद थी कि मौसम के वक्त नई भरती मे से लुवी की जगह भरने को बढ़िया से बढ़िया चीज छाँटने का उसे मौका होगा पर उसकी भूल निकली, क्योकि मौसम मन्दा गया और वह एकाएक खत्म भी हो गया हर हालत मे उसने तय कर लिया था कि लड़की को वापस जरूर रखना है लेकिन लुवी पर रौब भी रखना होगा। झिड़कियो से खबर लेनी होगी ताकि आइन्दा सीधी रहे यह जरूरी है, क्योंकि अपने रुतबे और यहाँ के मान को बनाये रखना है

"क्या-आ !" लुवी की तरफ चीखकर उसने कहा, लुवी जो कुछ उखड़ी-पुखड़ी बुदबुदाकर कह रही थी वह उसने मानो सुना तक नही, "चाहती हो तुम्हें वापस ले लिया जाय ? राम जाने गलियो मे, और यहा-वहाँ, तुम किस किस के साथ छिनाला करती रही हो और गलीज और नापाक ! अब तुम यहाँ इज्जतदार भले मानस घर मे घुसे चले आने की कोशिश करती हो छि है ! तुम-सी देशी कुतियो पर बाहर निकल जा"

लुवी ने उसके हाथों को लेकर चूमना चाहा पर सरक्षिका उन्हे बराबर झटके से खीचकर अलग छुटाने की कोशिश करती रही इसके बाद एकाएक उसके चेहरे पर खून आया और अपने काँपते-से नीचे के होठ को चाबकर मुह टेढा करके एमा उडवानी ने लुवी के गालो पर सही, साफ और जोर का तमाचा दिया लुवी घुटनो के बल आ गिरी लेकिन वह फिर एकदम खडी हो आई रोने से और हकलाहट से गला उसका घुटा आ रहा था, बोली, "मुझे मारो मत, दया करो—तुम मालिक हो—मारो मत"

ये नियमित पिटाई करीब दो मिनट तक चलती रही उसमे द्वेष रहा हो पर सर्द तबीयत थी जेनी अलग से चुपचाप यह देख रही थी उसमे एक गहरी अवहेलना का भाव था पर उसमें क्रोध उठा और उस दृश्य को अधिक सह न सकी एक चीख देकर वह सरक्षिका पर टूट पड़ी बालो से

पकडकर उसे अलग खीच हटाया उसके ब्लाउज को पकडकर चयेड दिया और मानो उन्माद का दौरा चढा हो ऐसी बेबस होकर चीखी, "डायन, हत्यारिन, टकियाई चोर ।'

तीनो जनी एक साथ चीखी और मानो उसकी गूज म और जवाब म हर कमरे और दालान तिदरियो से उसी तरह की चीख-पुकार समवेत होकर गूज उठी मानो घर भर को हिस्टीरिया का दौरा आ पडा हो ऐसे दौरे कभी जेलखाने के कैदियो पर भी इकटठे छाते देखे गये हैं वह एक बुनियादी पागलपन के तरह की ही हवा है जो तूफानी रोग की तरह अचानक उसे सारे एक पागलखाने को भडका देती है उसके सामने अनुभवी से अनुभवी मनोविज्ञानी चिकित्सक—हक्का-बक्का रह जाता है खुद उनके चेहरे डर से सूने हो जाते हैं

इस उपद्रव को काबू लाने म पूरा घण्टा भर लगा साइमन लाठी लेकर पहुँचा और उसके साथी मदद को पहुचे, तब हलचल दबी तेरह की तेरह लडकियो को सख्त सजा दी गई, लेकिन जेनी को सबसे ज्यादा भुगतना पडा क्योकि वह सचमुच ही तपकर गुस्से से मानो शोला बन आई थी पिटीपिटाई लुवी सरक्षिका के आगे झुक झुककर निहोरे खाती रही कि जब तक उसे वापस ले जाया गया जानती थी कि जेनी के विद्रोह के लिये देर सवर उससे गहरी कीमत वसूल की जायेगी और जेनी का यह था कि वह जाकर बिस्तर पर बैठी कि शाम तक बैठी ही रही टाँगें लटकी नही थी, बैठक के नीचे मुडी थी उसने खान से इनकार कर दिया कोई जो पास आया उसी को झिडकी दे भगा दिया उसकी एक आँख चोट के मारे काली पड गई थी और वह बार बार ताँबे के पसे से दबा रही थी उसकी फटी कमीज के नीचे पूरी गदन के आरपार लम्बा गहरा सुख निशान था जैसे रस्सी की सख्त चोट का हो साइमन ने यह मार उसे दी थी जबकि वह बेकाबू दीखती थी वह अकेली बठी थी और बैठी रही आँखें उसकी अँधेरे म ऐसी चमकती जसे जगली जानवर की हो, उसका मुह बार-बार मुड-मुड आता नथुने उसके फूले थे गुस्से मे और चुनौती के साथ अपने से फुसफुसाकर वह कह रही थी, 'जरा ठहरो, थोडी राह देखो कम्बख्त,

कमीनो मैं भी तुम्हे बताऊँगी तुम भी देखोगे (दर्द के मारे उसने कराह ली, 'आह' !) कमीने आदमखोर !"

लेकिन जब शाम को मेहमान आने लगे और उनके स्वागत का बड़ा कमरा रोशनियों से रोशन हो गया और छोटी सरक्षिका जकिया ने आकर दरवाजे को खटखटाया और कहा, वक्त हो गया है और आइये, कपडे पहनकर आप लोग बाहर आइये" "तब जेनी ने जल्दी से अपना मुह धोया, लिबास पहना काली हुई आँख को पाउडर छुआकर सँवारा गले के चोट के निशान को सफेद और गुलाबी पाउडर से ढका और स्वागत हॉल में आई दयनीय, पर उतनी ही उन्नत और सगर्व ! पराजित पर उतनी ही विजय के लिये तत्पर ! उसकी आँखो मे जलते क्रोध की लहक थी और उससे उसका सौन्दय मानो अपार्थिव हो आया था

बहुत से लोग जिन्होने अपघात करने वालों को अपनी भयकर मृत्यु से कुछ घण्टे पहले देखा था कहते हैं कि मृत्यु से पूर्व की उन भारी घडियों में उनके चेहरे पर कुछ ऐसा रहस्यमय अतक्य ममभेदी और अनिर्वचनीय आकर्षण दिखाई पडता था और उस रात उसके अगले दिन भी कई घण्टो तक जिन्होंने भी देर तक जरा ध्यान से जेनी को देखा तो वे भी उसके चेहरे को विस्मय और भय के भाव से उसको देखते ही रह गये

और सबसे बडे आश्चय की बात तो यह है (और भाग्य की क्रूर विडम्बना इसे कहे) कि उसकी मृत्यु मे जिसका हाथ रहा जिसने कि मानो अन्तिम कण बनकर तुला के भार को निर्णीत रूप से एक ओर कर दिया वह कोई और नहीं कोल्या ग्लेडिशेव था वह प्रिय, सहृदय, मदय फौजी नवयुवक कोल्या !

३

कोल्या ग्लेडिशेव हँसमुख शर्मीला, भला लडका था सर उसका गोल और गाल भरे और सुर्ख थे ऊपर के ओठ के ऊपर एक हल्की सी काली रेख की झाइ थी, मसे भीगी थी और मूछें आई न थीं आखें दूर-दूर थीं

और उनकी दृष्टि नीली और निर्मल थी बाल सर पर बारीक-बारीक कटे थे और सीधे खडे थे वे इतने नर्म थे कि नीचे की ताजा गुलाबी खाल नजर आती थी जेनी इस ग्लेडिशेव के साथ पिछली सर्दियों में अपना मनोरंजन करती रही थी वह उससे ऐसे खेलती जैसे लडकी गुडिया से खेलती या कि ये उसके मातृत्व की भावना थी कि जब वह ऐसी बदनाम जगह से झेंपता सकुचाता बाहर निकलता तो वह उसके हाथो में सेब, नाशपाती थमा देती या कुछ लाइमजूस वगैरह उसकी जेब मे ठूंस देती

इस बार जब वह छावनियों के सदर मुकाम पर कई महीने रहने के बाद वापस आया तो उसमें परिवर्तन आ गया था वह परिवर्तन साफ दीखता था, मानो एकाएक अलक्ष्य में ही वह किशोरावस्था को लांघकर युवा बन गया था उसने फौजी स्कूल से कोर्स पूरा करके सनद ले ली थी और गर्व के साथ अपने को अफसर समझता था पोशाक अब भी उसकी कैडिट की थी और उस पर मन ही मन वह झुंझलाता था कद में अब वह लम्बा हो गया था और बदन में एक लोच और चापल्य आ गया था कैम्प का जीवन उसे अनुकूल पडा था वह अब भरी जबान में बोलता और बडे गर्व और प्रसन्न भाव से वह यह देखता कि इन पिछले कुछ महीनों में उसकी छाती की घुण्डियाँ कडी पड आई थी वह जानता था कि ये पौरुष का सबसे पक्का असन्दिग्ध और महत्त्व का प्रमाण है इस समय तब तक के लिये कि जब तक सैनिक एकेडमी में वह दाखिल हो कि जहाँ सख्त अदब क़ायदे हों, वह अपेक्षाकृत हँसी स्वतन्त्रता का उपभोग कर रहा था घर पर अब वह अपने बडों के सामने भी सिगरेट पी सकता था और कोई टोकता न था, बल्कि खुद उसके पिता ने एक खूबसूरत चमडे का केस सिगरेट रखने के लिए उसे दिया था, जिस पर उसका मोनोग्राम बना था यही नहीं जब परिवार के सब लोग जमा थे तो सम्मिलित खुशी के आवेग में उसका पच्चीस रुपया मासिक अलग हाथ खर्च बाँध दिया था

और ठीक यही अन्ना के ठिकाने पर इस ग्लेडिशेव ने जीवन में पहली बार स्त्री को जाना था और वह यह अपनी जेनी थी

सीधे-सादे बहुतेरे लडकों का पतन ऐसे ठिकानों पर या खानगियों

के साथ इस बहुतायत से होता है इसका लोगों का अनुमान नहीं था अगर इस नाजुक विषय पर पूछकर मालूम किया जाये तो नई उमर के जवान ही नही बल्कि पचास बरस के बुजुर्ग नाना, दादा भी निरपवाद वही पुरानी कहानी कहन लगेंगे कि कैसे पहले इट्टे घर की नौकरी या पास पडोसिन ने उन्ह फुसलाया यह जाने कब से, पीढियो पहले से चले आते हुए झूठो म से एक ऐसा झूठ है जिसको पेशेवर विवेचक शायद ही कभी पकड पाते हैं और कभी जिक्र मे नही लाते

अगर हममे से हर कोई अपने दिल पर हाथ रखकर सलाह की साक्षी से बता सके तो हरेक भी पायेगा कि छुटपन मे कभी एक बार उसने इन की डीग की बात अपने बारे मे कह डाली थी और वह चल गई फिर उस कारण दो या पाँच या दस या अधिक बार उसे फिर दोहरा दिया गया यहाँ तक कि वह लगी बात की तरह जिन्दगी भर नही छूट सकी। और अब वह बात ऐसे सहज भाव से फिसलकर निकल जाती है कि मानो यथार्थ घटना ही हो वह जो हुआ नही पुख्ता सच बन जाता है और यहाँ तक कि आदमी खुद अन्त मे उसे विश्वास के साथ आया-बीता यथार्थ मान लेता है इसी तरह समय बीतते कोल्या भी अपने सगी साथियो को किस्सा सुना देता कि कैसी उसकी एक चाची थी जरा दूर की थी और जवान और दुनिया उसने देखी भाली थी उसी से कोल्या को पहला चस्का और अनुभव मिला कहता होगा कि सच ही ऐसी महिला के पास रहने का उसे अवसर आया था वह पुष्ट देह की, काली आँखो वाली गोरी और सुरभित देह की रमणी थी पर अस्तित्व उसका था कोल्या की कल्पना की इन सुनम घडियो मे जब एकान्त भोग की भावनायें पीडा देकर कसक उठती तो वह मूर्ति प्रत्यक्ष हो आती और क्या हममे से सौ-मे-सौ के साथ नही तो कम से-कम निन्यानवे के साथ यही नही होता है

अगरचे कोल्या ने यो लौकिक उत्तेजना का भोग और अनुभव काफी छुटपन मे ही किया था, तब वह नौ या साढे नौ बरस का होगा, पर सच पूछो तो उसे जरा भी पता न था कि प्रेम और आकर्षण का असल चरम क्या होता है वह चीज क्या है जिसके सामने-सामने होकर ऐसा डर लग

और उनकी दृष्टि नीली और निर्मल थी बाल सर पर बारी
थे और सीधे खडे थे. वे इतने नन्हे थे कि नीचे की ताज
नजर आती थी जेनी इस ग्लेडिशेव के साथ पिछली सर्दि
मनोरजन करती रही थी वह उससे ऐसे खेलती जैसे ल
खेलती या कि ये उसके मातत्व की भावना थी कि जब व
जगह से झेंपता सकुचाता बाहर निकलता तो वह उस
नाशपाती थमा देती या कुछ साइमजूस वगैरह उसकी जे

इस बार जब वह छावडियो के सदर मुकाम पर क
बाद वापस आया तो उसमे परिवर्तन आ गया था व
दीखता था, मानो एकाएक अलक्ष्य म ही वह किशोरा
युवा बन गया था उसने फौजी स्कूल से कोर्स पूरा क
और गर्व के साथ अपने को अफसर समझता था पो
कैंडिट की थी और उस पर मन ही मन वह झुझलात
लम्बा हो गया था और बदन में एक लोच और
कैम्प का जीवन उसे अनुकूल पडा था वह अब
और बडे गर्व और प्रसन्न भाव से वह यह देखत
महीनो मे उसकी छाती की घुण्डियाँ कडी पड आई
ये पौरुष का सबसे पक्का असन्दिग्ध और महत्त्व
तब तक के लिये कि जब तक सैनिक एकेडमी मे
सख्त अदब क़ायदे हों, यह अपेक्षाकृत हँसी स्व
था घर पर अब वह अपने बडों के सामने भी
कोई टोकता न था, बल्कि खुद उसके पिता ने
केस सिगरेट रखने के लिए उसे दिया था, जिस
था यही नहीं जब परिवार के सब लोग जमा
आवेग में उसका रुपया मासिक अलग
और ठौर ठिकाने पर द
बार स्त्री को यह अपनी
सीधे-सा का प्तन

रहती, खुले रग की और टागें ऐसी मजबूत कि स्टील देखता क्या है कि फरहत झटपट निकलकर बाहर भागी जा रही है मुह उसका चुन्नी के पल्ले से ढका है यह भी देखे बिना वह न रह न सका कि बाप का चेहरा लाल है और नाक नीली सी और लम्बी सी दिखाई देती है उसने सोचा था कि बापू तो सुगे से बने दीखते हैं, एक बार की बात है कि उसने पिता के खुले रह गये दराज को खोल लिया। या तो वह बेकाम, ठाली था इससे या आमतौर पर लडको म जो ताक झाँक की उत्सुकता रहती है सिफ उसके कारण वह ऐसा कर बैठा दराज खोलने पर उसने क्या देखा वहा ऐसी तस्वीरें थी कि क्या कहा जाये

उसने यह भी देखा था कि जब कभी घर म पाल साहब आते हैं तो मा बदली दीखती हैं यह महाशय किसी दूतावास के कोई मुलाजिम थे और मा उसक साथ नदी तट पर सूर्यास्त का दृश्य देखने जाया करती थी-पाल साहब का लिबास स्टाच से सतर रहता और इत्र से महकता हुआ मा का जी धडकता दीखता और पाउडर के नीचे से उनके गाल लाल हो आते आवाज पास से बात करते वक्त उनकी मखमल सी मुलायम हो आती घर मे जिस सख्त और कर्कश बोनी मे हमसे बोलती या नौकरो से वह मानो किसी और का हा थी—ओह ! काश कि हम जानते, यानि हम अनुभवी लोग कि हमारे बाल—बच्चे कितना समझते हैं, कितना अधिक समझते हैं ! वे ही जिनके बारे मे कह छोडा करते थे अह, छोडो वह तो बच्चा है, फिकर न करो वह क्या समझेगा

अपने बडे भाई की कहानी का भी कोल्या ग्लेडिशेव पर बडा असर पडा था उसने सैनिक एकेडमी से डिग्री ले ली थी और एक सवश्रेष्ठ रैजि-मेण्ट मे यह प्रवेश पाने वाला था पोस्ट पर जाने से पहले उसे एक लम्बी छुट्टी मिली परिवार के मकान मे दो अलग कमरो मे वह रहता था उस समय उनके यहा एक काम म हाथ बँटान वाली नौकरानी थी उसको वे विनाद म कभी-कभी माशा अनोता कहा करते काले बाल, सुन्दर चेहरा ! अगर सही लिबास मे हो तो उसे नाटक की तारिका कहना पडे या राजकुमारी दलीका भी उसमे था उसके भाई का उस पर मन आ गया.

आता है, या कि जिसे देखते देखा नही जाता क्या है जिसे विज्ञान बताते हैं और न ही बता पाते उसका दुर्भाग्य कि उसके जमाने मे प्रगतिशील नारियाँ न थी जो कि आज हैं इन नारियो की तो बात ही और है ये तो किसी लाग लपेट को जानती ही नही किसी को रहस्य रखने म इ्ह विश्वास नही ये तो ढकना उघाड देंगी और जिस झाडी तले बच्चे हुआ करते हैं उसे जडो से ऊपर खीच लाएँगी ये तब न थी जो सिफारिश करती कि प्रेम के भेदो को और गर्भाधान के अचरज को, बच्चा को पूरी तरह खोलकर समझाया जाये व्याख्यानो से तुलना और प्रयोग परीक्षा से खोलकर पूरे ब्योरो नकशो के साथ उ्ह सब बताया जाये ,

कहना होगा कि जब कि हम बात कर रहे हैं, उस पुरातन काल मे निजी सस्थायें—जैसे कि पुरुषो के आवास या आश्रय या विद्यार्थियो के बोर्डिंग या अकादमी—कुछ सुरक्षित तौर पर रखे जाते थ जैसे कि खास तौर पर नाजुक फूल-पौधो के लिये ठण्डा, ढका सावन भादो का आवरण वहाँ वालो की मानसिकता और नतिकता का दायित्व भरसक शिक्षिको पर निर्भर रहता जो व्यवस्था और विधान क विश्वासी और निष्णात होने साथ ही वे अपनी सहानुभूतियो मे अविश्वस्त वे मर्यादाओ के सम्बध मे भावुक और उनकी त्रुटियो पर असहिष्णु होते वे इसम दारुण हो जाते अब और बात है लेकिन उस वक्त किशोर बालक अपने घिरते रहने माँ के दूध से मानो अभी हाल बिछुडकर आये हुये, धाया और परिचारिकाओ की सेवा से सबेरे शाम वे माताओ के लाड और दुलार से अलग होकर यहा अगरचे वे ऐसे प्यार के प्रगट होने पर व लज्जित हो जाते और उसे भावुक और स्त्रियोचित कहते फिर भी इस तरह के सम्पर्कों और कान मे कही हुई दुलार प्यार की बातो की तरफ और गोद के लाड की तरफ उनका मन खिचता ही था

यह भी यहाँ कहना होगा कि अपनी उम्र के अधिकाश लडको की तरह कोल्या को ऐसी चीजों के समागम मे आना हुआ जि्ह वह समझता नहीं था एक बार वह अचानक अपने पिता के पढने के कमरे मे गया, घर मे फहरत नाम की एक काम करने वाली लडकी थी हमेशा खुश

रहती, खुले रग की और टागें ऐसी मजबूत कि स्टील देखता क्या है कि फरहत झटपट निकलकर बाहर भागी जा रही है मुह उसका चुन्नी के पल्ले स ढका है यह भी देखें बिना वह न रह न सका कि बाप का चेहरा लाल है और नाक नीली सी और लम्बी सी दिखाई देती है उसने सोचा था कि बापू तो सुग्गे से बने दीखते हैं, एक बार की बात है कि उसने पिता के खुले रह गये दराज को खोल लिया। या तो वह बेकाम, ठाली था इससे या आमतौर पर लडको मे जो ताक झाँक की उत्सुकता रहती है सिफ उसके कारण वह ऐसा कर बैठा दराज खोलने पर उसने क्या देखा वहा ऐसी तस्वीरें थी कि क्या कहा जाये

उसने यह भी देखा था कि जब कभी घर मे पाल साहब आते हैं तो मा बदली दीखती हैं यह महाशय किसी दूतावास के कोई मुलाजिम थे और मा उसके साथ नदी तट पर सूर्यास्त का दृश्य देखने जाया करती थी. पाल साहब का लिबास स्टाच से सतर रहता और इत्र से महकता हुआ मा का जी धडकता दीखता और पाउडर के नीचे से उनके गाल लाल हो आते आवाज पास से बात करते वक्त उनकी मखमल सी मुलायम हो आती घर मे जिस सख्त और कर्कश बोली मे हमसे बोलती या नौकरो स वह मानो किसी और की हो थी—ओह ! काश कि हम जानते, यानि हम अनुभवी लोग, कि हमारे बाल—बच्चे कितना समझते हैं, कितना अधिक समझते है ! वे हो जिनके बारे मे कह छोडा करते थे यह छोडो वह तो बच्चा है, फिकर न करो वह क्या समझेगा

अपने बडे भाई की कहानी का भी कोल्या ग्लेडिशेव पर बडा असर पड़ा था उसने सनिक एकेडमी स डिग्री ले ली थी और एक सवश्रेष्ठ रेजिमेण्ट मे यह प्रवेश पाने वाला था पोस्ट पर जाने से पहले उसे एक लम्बी छुट्टी मिली परिवार के मकान मे दो अलग कमरो मे वह रहता था उस समय उसके यहा एक काम म हाथ बँटाने वाली नौकरानी थी उसको वे विनोद म कभी-कभी मार्शा अनीता कहा करते काले बाल, सुन्दर चेहरा ! अगर सही लिबास मे हो तो उसे नाटक की तारिका कहना पडे या राजकुमारी सलीका भी उसमे था उसके भाई का उस पर मन आ गया

आता है, या कि जिसे देखते देखा नही जाता क्या है जि
हैं और न ही बता पाते उसका दुर्भाग्य कि उसके जम
नारियाँ न थी जो कि आज हैं इन नारियो की तो बात
किसी लाग लपेट को जानती ही नही किसी को र
विश्वास नही ये तो ढकना उघाड देंगी और जिस प्रार
करते हैं उसे जडो से ऊपर खीच लाएँगी ये तब न थी
कि प्रेम के भेदो को और गर्भाधान के अचरज को,
खोलकर समझाया जाये व्याख्यानो से तुलना औ
खोलकर पूरे ब्योरो नकशो के साथ उन्ह सब बताया

कहना होगा कि जब कि हम बात कर रहे ह
निजी सस्थायें—जैसे कि पुरुषो के आवास या

दूसरे उह मन ममोसकर और अचरज मे सुनते

ऐसे ही एक दिन ग्लेडिशेव अन्ना वाले ठिकाने पर जा पहुचा उसे ज्यादा सलचाने फुसलाने की जरूरत नहीं पडी लालच का प्रतिरोध उसमें इतना मन्द था मानों वह स्वय खिचने का प्रार्थी हो उस सन्ध्या को वह सदा ग्लानि और वितृष्णा से याद करता लेकिन कुछ ऐसे-जैसे नशे म देखा और भोगा सपना हो जिसमें स्वाद हो वह कोशिश से याद करता कि हौसला पाने के लिए गाडी मे ही उसने कुछ रम पी ली उसकी गध उसे बेहद बुरी लगी थी और स्वाद बदतर थे उसने याद किया कि फिर कैसे वह बडे से स्वागत वाले कमरे में पहुँचा था वहाँ फानूसो मे जडी कन्दीलें घूमती और नाचती उसे मालूम हुई थी सब कुछ मानो जगमगाता सा चक्र की तरह उसके चारो तरफ घूम रहा था स्त्रियाँ नाना रगो के बदलते बदलते खण्डो की तरह नाना व्यूहों मे घूम रही थीं कही उसकी गर्दनो की सफेदी, कहीं रगीन सजावट में वृक्षों का उभार और उन कामिनियों की हिलती डोलती लम्बी लम्बी बाहें सब एक चकाचौंध की चमक मे उसकी आखो मे समा जाना चाहती थी ऐसे ही समय उसके एक क्लास के साथी ने बढकर उन तरलायित अप्सराओं में से एक के कान में कुछ कहा, और वह उसके पास आकर बोली, 'सुनो, प्यारे बीरन तुम्हारे दोस्त ने कहा कि तुम अनजान हो आओ आओ, मैं तुम्हें सिखाऊँगी''

शब्द ये सदय थे लेकिन अन्ना के ठिकाने की दीवारो ने इन्ही शब्दो को हजार हजार बार सुना था उसके बाद क्या हुआ उसे याद करना इतना कठिन और दद भरा था कि इस अपने सस्मरणों के बीच मे मथ कर वह इतना थक जाता कि हठात् दूसरा ही कुछ सोचने की कोशिश करता बस हलक -हलका उसे इतना ही याद आता कि रोशनियाँ उसके चारों तरफ चकराये जा रही थीं और चुम्बनों की मानो इधर-उधर सब तरफ बौछारें जारी थी देह के सम्पक जो एक में एक को मानो खो देना चाहते थे और जिनसे वह घबरा रहा था और फिर फिर, एक तीखी तीर सी वेदना कि जिसके डर से उसने चिल्ला उठना चाहा, और आनन्द से और फिर अपने ही आप म से उसने अपने कांपते हाथों को देखा जो जैसे तैसे उसके कपड़े

मा ने इसमे बढावा दिया शायद इसमे मातृत्व भाव की प्रेरणा रही हो अगर बोरेनका को अपनी पवित्रता, अपना शील देना ही है तो कही अच्छा यह है कि एक अछूती नेक कन्या से उसका सम्बन्ध हो नहीं तो किसी मैली—खाई खानगी के हाथ म जाकर पडेगा कोल्या उस समय जगल की कहानियो और जीवन के कारनामो के किस्से पढने मे लगा था हिन्दुस्तान के एक बहादुर की कहानी थी जो 'काला चीता' के नाम से मशहूर था इस सब पढने के बीच मे भी अपने भाई के रोमास को वह बडे ध्यान और चाल से देख रहा था वह उससे अपने ही नतीजे निकालता जो कभी बडे अजब और बेतुके होते अर्से छ एक महीने बाद उसने एक और ही देखा दृश्य देखा क्या, पर्दे के पीछे से उसकी निगाह में आ गया उसे बडी ग्लानि हुई देखता क्या है कि मा जो यो कम बोलती और गवशालिनी बनी रहती थी वह दरवाजे के पीछे अपने कमरे मे पर पटक रही है और ट्रक ड्राइवर की तरह कोसे और बके जा रही है कमरे मे अनिता थी और गालिया उस ही पर पड रही थी बात यह थी कि उसको पाच महीने चढे थे अगर वह रोती बोलती नही तो उसको शायद चुप चुपाने की खासी एक रकम मिल जाती और आहिस्ता से उसे अलग भेज दिया जाता लेकिन वह तो छोटे मालिक के प्यार मे पड गई थी वह कुछ न चाहती थी, कुछ न मागती थी बस खुलकर रोने लगती इसलिए पुलिस को बुलाया गया कि वह उसे ले जाये

पाँचवीं छठी क्लास से ही स्कूल के उसके साथी पाप के वृक्ष के फल का स्वाद चखने लगे थ उस वक्त उसकी सैनिक शालाओ मे जिनका सभ्य समाज मे नाम नही लिया जाता है उनकी खुलकर डींग हाकने मे अपनी खूबी समझने लगे थे वे साहस और प्रगति की निशानी समझी जाती थी असगर को इस तरह की कोई बीमारी हो गई थी ज्यादा भयकर यह न थी और उन तीन महीनों तक उसस बडी कक्षा के लडकों तक के लिये वह सराहना और ईर्ष्या का पात्र हो गया था बहुत से लडके कोठो पर चढ़ जाते और जाकर बढ़-बढकर खूब रंग चढ़ाकर बखान करते- इस तरह की करतूतें बहादुरी और मरदमी का प्रमाण समझी जातीं और

दूसरे उन्हें मन मसोसकर और अचरज से सुनते

ऐसे ही एक दिन ग्लेडिशेव अन्ना वाले ठिकाने पर जा पहुंचा उसे ज्यादा ललचाने फुसलाने की जरूरत नहीं पड़ी लालच का प्रतिरोध उसमें इतना मन्द था मानो वह स्वयं खिचने का प्रार्थी हो उस सन्ध्या को वह सदा ग्लानि और वितृष्णा से याद करता लेकिन कुछ ऐसे-जैसे नशे में देखा और भोगा सपना हो जिसमें स्वाद हो वह कोशिश से याद करता कि हौसला पाने के लिए गाड़ी में ही उसने कुछ रम पी ली उसकी गंध उसे बेहद बुरी लगी थी और स्वाद बदतर थे उसने याद किया कि फिर कैसे वह वहं से स्वागत वाले कमरे में पहुँचा था वहाँ फानूसों मे जड़ी कन्डीलें घूमती और नाचतीं उसे मालूम हुई थीं सब कुछ मानो जगमगाता सा चक्र की तरह उसके चारों तरफ घूम रहा था स्त्रियाँ नाना रंगों के बदलते बदलते खण्डों की तरह नाना व्यूहों मे घूम रही थीं कहीं उसकी गर्दनों की सफेदी, कहीं रंगीन सजावट में वक्षों का उभार और उन कामिनियों की हिलती डोलती लम्बी लम्बी बाहें सब एक चकाचौंध की चमक मे उसकी आंखों मे समा जाना चाहती थी ऐसे ही समय उसके एक क्लास के साथी ने बढ़कर उन तरलायित अप्सराओं में से एक के कान में कुछ कहा, और वह उसके पास आकर बोली, 'सुनो, प्यारे वीरन तुम्हारे दोस्त ने कहा कि तुम अनजान हो आओ आओ, मैं तुम्हें सिखाऊँगी"

शब्द ये सदय थे लेकिन अन्ना के ठिकाने की दीवारों ने इन्हीं शब्दों को हजार हजार बार सुना था उसके बाद क्या हुआ उसे याद करना इतना कठिन और दर्द भरा था कि इस अपने संस्मरणों के बीच मे मथ कर वह इतना घबड़ाता कि हठात् दूसरा ही कुछ सोचने की कोशिश करता बस हल्का-फुलका उसे इतना ही याद आता कि रोशनियाँ उसके चारों तरफ चकराये जा रही थीं और चुम्बनों की मानो इधर-उधर सब तरफ बौछारें जारी थीं देह के सम्पर्क और एक में एक को मानो खो देना चाहते थे और जिनसे वह घबरा रहा था और फिर फिर, एक तीखी तीर सी वेदना कि जिसके डर से उसने चिल्ला उठना चाहा, और आनन्द से और फिर अपने ही आप में से उसने अपने कांपते हाथों को देखा जो जैसे तैसे उसके कपड़े

सँभाल रहे थे   सन्देह नही कि सभी लोगों ने इस अनुभव को झेला है भोग के पीछे होने वाली एक तीव्र आशका और मूर्च्छा। लेकिन यह इतनी साघातिक आत्मिक व्यथा, इतनी गहन और गम्भीर, शायद जल्दी ही बीत जाती है, फिर भी अधिकाश के साथ वह लम्बे काल तक, कभी तो जीवन भर बनी रहती है उसका रूप शायद कुछ क्षणों के बाद एक अज्ञात, अनथक, जडीभूत भाव के मानिन्द है काल्य अपेक्षाकृत जल्दी ही इसका आदी हो गया उसकी हिम्मत बढी अब स्त्रियो के सग साथ उसे दुविधा नही सताती लडकियों का सुनना उसे खूब पसन्द है खासकर जब उसके आते ही वर्का खुशी से चिल्ला कर सुनाती है

'जेनी तुम्हारे आशिक आये हैं'

यह सब कुछ जाकर अपने क्लास के साथियों को सुनाना उसे अच्छा लगता है, गर्व अनुभव होता है उगलियाँ अपने आप अनागत मूछो के सिरो को पैनाने के लिए ऊपर आ जाती हैं

अभी देर न हुई थी जल्दी ही थी बरसाती अगस्त की सध्या थी और कोई नौ ही बजे होगे अन्ना मरकानी के ठिकाने का स्वागत भवन रौशन था और खाली था सिर्फ दरवाजे के पास एक बिल्कुल नई उमर का तार बाबू बैठा था टाँगें उसकी कुर्सी के नीचे इकट्ठी होकर मुडी हुई थी वह मोटी क्टिी के साथ शिष्टाचार की बात चीत कर रहा था कारण समाज मे ऐसे समय शिष्टाचार को ठीक समझा जाता है और वह लम्बी लम्बी टागो का बुड्ढा गवदू हाल म घूम रहा था कभी इसके पास आकर रुकता तो कभी उस दूसरी लडकी के पास इसी तरह अपनी चपर चपर से वह उनका मनोरजन कर रहा था

कोल्या ग्लेडिशेव न द्वार मे से जब वहाँ प्रवेश किया तो गोलमटोल आँखो वाली वर्का ने उसे दूर मे ही पहले देख लिया वह अपने कपडो से वही छना बनी हुई थी देखते ही ताली बजाकर नाच उठी, 'जेनी, जल्दी आओ देखो तुम्हारे नौजवान फौजी आशिक आए हैं मानती हूँ क्या बाँकी खूबसूरत सूरत है'

लेकिन जेनी कमरे मे न थी एक भारी भरकम रेलवाई के कण्डक्टर

नकद देने पड गये और दूसरी बात भी हो सकती है इन बचकानो में से किसी को राम न करे कही से कोई बीमारी लग गई तो रोते फिरेंगे, 'हाय बापू ! हाय अम्मा, मैं मर रहा हूँ' वह पूछेंगे, 'नास गये कहाँ से यह रोग ले आया ?' वह कहेगा 'वहाँ से' सो ऐसे फिर हम पर बीतेगी"

"जाओ अ दर जाओ," कोट लेकर उसने उन नये छोकरो से कहा

दोनो लडके चमकती रोशनियो से बचाकर आँख ऊपर उठाये स्वागत भवन मे दाखिल हुए पट्रव ने हौसला बनाये रखने को थोडी कुछ पी भी थी वह इससे पीला था और अभी से पूरे सही कदम उसके न पडते थे वहा लगी बडी तस्वीर के नीचे आकर वे बैठ गये बैठना था कि तभी वर्का और तिमिरा दोनो साथ आ लगी

'सिगरेट एक नही पिलवाओगे ? सरदार !" वर्का ने पट्रव से लगते हुए यह कहा पैट्रव को लगा कि यह सयोग ही है कि सफेद जर्सी म कसी उसकी गम मुलायम मजबूत जाघ का स्पश दबाव देकर उसको टाँग को अनुभव हुआ अनुभव हुआ 'तुम कसे अच्छे कितने प्यारे हो"

'जेनी कहाँ है ?" ग्लेडिशव ने पूछा, 'किसी के साथ है क्या ?'

तिमिरा ने उसकी आँखो मे देखा उसकी दृष्टि इतनी एकाग्र थी कि ग्लडिशेव को असमजस हुआ और उसके आँखें गिराकर मुह हटा लिया

"किसी दूसरे के साथ ! नही दूसरे के साथ क्यो होगी असल मे उसे सख्त सर दर्द है दिन भर रहा है बात यह कि वह बरामदे में से होकर जा रही थी सरनिका ने अचानक जो दरवाजा खोला तो खडाक से वह दरवाजा आकर उसकी आँख के पास लगा उससे फिर पीछे सर दद हो गया बचारी माथे पर गीला कपडा लिये दिन भर बिस्तर पर पडी रही है जरा तसल्ली रखो थोडी देर म वह बाहर आजायगी जरूर तुम उसे पसन्द करोगे ?'

वर्का पैट्रव के पीछे पडकर उसे छेडे ही जा रही थी 'प्यारे तुम कसे अच्छे हो ! एच कहती हू फरिश्ते दीखते हो तुम्हारे से बाल और जर्दी मायल चेहरा—ऐसे आदमियों को तो राम जाने, मैं पूजा करती हू बडे बावरी होते हैं, पर प्यार मे उतने ही तेज और बेबस !'

फिर उसने गाना शुरू किया—

तपे तांब सा रग है उसका
उस मेरे छौन का, मेर प्यार का
नही वह मुझ बेचेगा नही, छलेगा नही
दद मे वह पागल है बेहोश है
दे डालेगा वह उतार के सब कुछ
प्रीत के लिए मीत क लिए मर

और पूछा, "नाम तुम्हारा क्या है प्यार ?

"ज्याज !" एक शब्द मे उत्तर देकर वह रह गया और आवाज उसकी बदली हुई और भारी थी

'ओह ! ज्याज, जौजिक, जोरेश्का ! क्या बढिया नाम ह ! एकाएक वह अपना चेहरा उसके कान क पास ले गई और आखो म कटाक्ष डालकर फुसफुसाहट से कहा, "जोरेश्की, मेर साथ आओ "

पैंत्रुव ने आख नीची की और मानो बेबसी म बोला, ' मैं नही जानता यह मेरा दोस्त जो कहेगा "

वर्का सुनकर जोर से हस उठी "यह खूब ? ओह, यह मजेदार बात है देखो आप कैसे दूध पीने बच्चे बन रहे हैं! हमार गाव म जोरेरक। तुम्हारी उमर वाले के तो कुनबा हो जाता है कुनबा, और आप फमा रहे ह जो मेरा दोस्त कहग , सुना तुमने तिमिरा ? मैं कह रही हूँ कि आओ मरे साथ सोना और जनाब जवाब दते हैं जो मेरा दोस्त कहगा क्यो दोस्त साहब' उसन कोल्या की तरफ पूछा 'आप कौन हैं ? आप इनके टयूटर है नाजिरर कि "

"मुझे मत छेडो, हटो परे !" पैंत्रुव ने यह एसे बडबडाकर कहा,मानो लडका हो जो लडन पर आमदा हो

कि उसी समय वह लम्बा सीढी सी टागें लेकर गदद् वहा आ पहुँचा इस बीच वह और घोता गया था वह उन नौजवानो के पास पहुचा। उसका लम्बा त्रिकोन सा चेहरा एक तरफ झुका उस अर्नोखिक सा बनाकर वह बड़बडाने लगा, "ऐ ! देश के सुकुमारो, तुम जो देश की आशा हो, हमारे सम्पन्न और बुद्धि वग के वरदान हो और भविष्य के स्तम्भ ! तुम जो होने

वाले सेनानी और नेता हो ऐसे विद्यार्थियो, एक युद्ध की बात सुनो जो यहां ने प्रवासी हैं जो ऐसे ही स्थानो के वासी है, महान बनो उदार बनो और उसको एक सिगरेट का दान करो मैं दरिद्र हू, दीन हू पर मानव हू और सिगरेट पसन्द करता हू '

सिगरट ले कर वह अन्त मे खड़ा हो गया और कांपती सी आवाज म गा उठा

> जमाना था मैं दावतें देता था
> बहती थीं मदिरा और सुरा कि नदियाँ
> जमाना यह भी है कि नही है छदाम,
> नहीं है टुकड़ा रे भाई नहीं है कुछ भी
> कहाँ की बात है, हां, दिल बरगा की,
> सत्तरी दोड के दरवाजे खोलता, क्या खूब था वो,
> मगर अब—अब यहीं नहीं है, वीरानी है,
> अरे भाई मेरे सा, इसी बात पर कुछ दे

एकाएक अपने सीने पर मुक्का मारकर गाने की तान को तोड गबरू दर्द भरी आवाज म कहता—

"सज्जनो यहां मैं आपके क्या, भावी अफसरों के दशन पा रहा हू आप मे से स्कोबलव और गुरको जसे सेनापति निकलेगें, लेकिन मैं भी किसी न किसी लिहाज से एक फौजी कुत्ता हू अपने जमाने में जब मैं जगल की रेंजर की शिक्षा पा रहा था, हमारा सारा महकमा जगलों का और वनों का, आप जानते हैं उस वक्त फौजी ही हुआ करता था इसलिए ऐ महानुभावों आपके हृदय के हीरा से जड़े सुनहरी तारों पर मैं टकटकी लगा रहा हू निवेदन है करबद्ध प्रार्थना है कि भले अल्प ही हो स्वल्प राशि की मात्रा में लेकिन उदार और प्रसन्न हृदय से कुछ भिक्षा कि उदार हो एक मानव का मानवता ..."

गबरू के द्रु... नाजी किसी ... अफसरों को यह तो ... , तादेवा ... से गये हो हुजरात, कुछ, दा

यह लीजिए पेश करता हू खुशी के साथ गबदू ने जवाब दिया—परम उदार, कृपालू उपकारी महानुभावो, तनिक इधर ध्यान दो जीती जागती तसवीरें देखिएगा तूफान का तमाशा देखिये जून महीने की गरमी का तूफान एक उस अज्ञात नाम प्रतिभाशाली नाटककार की रचना जो अपने को गबदू नाम देकर गुप्त रखे रहा था सो पहली तस्वीर—

जून का जगमगाता दिन था सूर्य की प्रखर ताप तप्त किरणों से फूलों से भरी बगिया और मैदान झगझग दीख रहा था

गबदू के ओठ फैलकर मीठी-सी मुस्कराहट में खिंच आए और आँखें मिमचकर अर्धवृत्तों में सिकुड़ गईं

लेकिन तभी दूर क्षितिज के पास मुट्ठी भर के बादल ने मुंह दिखाया देखते-देखते बादल घटा बन गया घटाएं एक एक कर तह देती हुई नीले आसमान के चन्दा के पक-एक कर हर कोने को छाकर घनघोर हो उठी

धीरे धीरे गबदू के चेहरे की मुस्कराहट उड़ती गई और चेहरा उत्तरोत्तर अधिक गम्भीर, कठोर और क्लान्त दीखने लगा

आखिरकार हलके-हलके सूरज की छलती धूप भी ढक गई साया घना होने लगा एक गहरा अंधेरा उतरा और चादर की तरह तन गया

गबदू की आकृति एकदम भयानक बन आई

वर्षा की पहली बूंदें पड़नी शुरू हुई, टप, टप

गबदू ने कुर्सी की पीठ पर अपनी उंगलियां ठोक कर बताया—टप टप

वह दूर, देखिये-देखिये तड़क ने वह बिजली चमकी

गबदू की आँख ने तेजी से चमक दिखाई और उसके मुंह का बाया किनारा अदा से मुड़-तुड़ गया

और फिर राम बचाये वर्षा पनालों में टूट पड़ी और मैंने काले अंधेरे को कौंध से दरकती हुई आंखों को अंधियाती यह चकाचौंध बिजली टूटी, वह वह•••

और असाधारण तेजी और कलाबाजी से गबदू ने अपनी भवों, आंखों

नाक, ऊपर नीचे के ओठ इन सबों को तरह-तरह से चला चलाकर आंकी बांकी लकीरों मे तड़पती बिजली का चित्र उतारा एक कनफोड़ गड़गड़ाहट बादलो की हुई, गड़ड़धम धप जमानों से खड़ा बढ़ का पेड उसके मारे ऐसे धरती पर आ रहा कि टूटा बांस ही न हो

और गबदू इस आसानी और हौसले से कि जिसकी आशा उसकी सी उमर वाले से हो नहीं सकती थी न बिना घुटने झकाये, न कमर पूरे सतर सिर्फ सर की तरफ से झुककर मानिन्द मूरत के फौरन धरती पर गिर रहा पीठ सीधी फर्श पर बिछ गई जैसे जान भाग गई हो और पड़ा यह सिर्फ मुर्दा, लेकिन आँखें झपकने से पहले वह पलभर में फिर सीधा पैरों पर सतर हो गया

लेकिन अब बादली तूफान कम होता जा रहा है बिजली चमकती है, पर कम और देर-देर मे गड़गड़ाहट गरजती नहीं जैसे अब सिसक रही है, कभी रंभाती है जैसे भैंस—अ अ-अ-ओ बाद बिखर रहे हैं, सूर्य भगवान की किरणें एक-एक कर झांकने लगी हैं

गबदू ने एक फीकी सी मुस्कराहट में फिर मुंह फैलाया

और अब दिन के अंशुमाली नहाई हुई धरती पर फिर से अपनी उजली धूप से दिपाकर चमका रहे हैं

और गबदू के मूरख चेहरे पर, उससे भी मूरख, लेकिन आनन्द मगन हंसी ऐसे खिल आती है जैसे अमरूद के

सैनिक युवकों में से हरेक ने एक दुअन्नी उसे दी उसने उन्हें हथेली पर रखकर आग किया उसने हाथ को हवा में चक्कर देकर उसे घुमाया कहा, 'देखिये, साहबान, मैं कहता हूँ, एक, दो, तीन ! हो तो जा छू मन्तर !" कहकर फिर हाथ की मुट्ठी को खोला सिक्के वहां से गायब थे

—

"मैं अभी जल्दी ही लौटूगा," मानो आश्वासन देते हुए उसने सैनिक युवाओ को कहा, "आशा है इस बीच आपको मेरी जरूरत न होगी। आप मेरी वापसी का इतजार न भी करेंगे तो भी मुझे ख्याल न होगा लीजिये मेरी ओर से सुखद सन्ध्या के लिय अभिवादन लीजिये और मुझे इजाजत दीजिये

वह चलकर द्वार के पास पहुचा ही था कि गोरी मनका ने पुकारकर कहा, "गबद्दू गबदू ! देखना यह तीन आने की मेरे लिये कैन्डी खरीद लाना और कुछ पेपरमेण्ट की गोलियें लो, ये पकडो"

कहकर उसने पैसे फेंके जिसे गबदू ने सफाई के साथ लपक लिया फिर उसने झुककर आदाब बजाया अपनी वर्दी की टोपी को कान के पास सरकाया और बढ़कर गायब हो गया

पकी लम्बी देहयष्टि की हरीता भी सेना के उन युवाओ के पास आई और सिगरेट की माँग की साथ जम्हाई सी लेती बोली, "कैसे जवान है आप लोग? नृत्य गान ही कुछ करवाते देखो, लडकिया कसी अलसाई-सी बेकार बैठी हैं"

"बात तो ठीक है" कोल्या सहमत हुआ और उसने गाने वालो से कहा, "पहले एक वाल्स बजाइये बाद उसी तरह की कोई दूसरी गत दीजियेगा"

साजवालो ने बजाना शुरू किया लडकिया उठकर एक-दूसरे को लेकर चक्करे देकर नाचने लगी नृत्य मे शालीनता की उन्होने रक्षा की भगिमा उनकी सीधी रहे और आखें लज्जाभास से विनत

ग्लेडिशेव को नाच का चाव था वह रुक न सका और वाल्स म साथ देने के लिए उसने तिमिरा को साथ के लिये कहा उसको पहले साल की याद आई कि यह औरों से बेहतर नाचती है और कदम उसके हल्के पडते हैं यह लोग भवन के आगन मे नाच ही रहे थे कि रेलवाई का कण्डक्टर निकला और नाचते हुए युग्मो के बीच से चुपचाप होशयारी से अपना रास्ता बनाते हुए बाहर सरक गया कोल्या के ध्यान मे वह नही आया

उधर वर्का ने पट्रव के साथ कितनी ही छेडखानी क्यो न की हो पर वह काबू न आया हलका सा जो उसे नशा न था, कभी का गायब हो चुका था और यहा ऐसी जगह आन का हेतु उसके आगे रह रहकर और अवास्तव, हेय और डरावना होता जाता था वह निश्चय ही सिरदर्द का बहाना कर सकता था या वह सकता था कि इनम से मुझे कोई पसन्द नही है लेकिन यह जानता था कि ग्लेडिशेव उसे हरगिज न छोडेगा सिर्फ वह बाहर निकल जाना चाहे तो भी वह न मानेगा पर सच सीधी वजह यह कि वह अपने आपसे बडा होकर एक कदम भी न उठा सकता था फिर उसे लगता था कि इस बात को सुनकर कोल्या न कहने के लिये हिम्मत छुडाना भी उसके बस का नही है

नाच पूरा होने पर ग्लेडिशेव व तिमिरा आकर बराबर आस पास बठ गये कोल्या ने अधीरता से पूछा, "क्या हो गया है जेनी को कि अब तक बाहर ही नही आई ?"

तिमिरा ने झट वर्का की तरफ देखा उस आँख म इशारा था वे मालूम वर्का न उस प्रश्न को पढा और उसकी आँखो की पलकें झुकी मतलब था कि ग्राहक जा चुका है तिमिरा ने कहा, ' मैं जाकर उसे बुलाये लाती हूँ " हरीता बोली, हरहमेश तुम्ह जेनी की ही क्या पडी रहती है मुझे क्यो नहीं लेते "

"अच्छा अच्छा तुम फिर कभी सही " कोल्या ने जवाब म कहा, और जल्दी से उसने सिगरेट सुलगाई

जेनी ने अभी सभालकर कपडे पहनना भी शुरू नही किया था आइने के सामने बैठी वह मुह पर पाउडर ठीक कर रही थी

' तिमिरा, क्या कहा चाहती हो ?'

' तुम्हारा वह सनिक आदमी वहाँ तुम्हारी इतजार कर रहा है "

' ओह ! पारसाल का वह बालक ? मरने दो उसे "

' जेनी, मैं ठीक हूँ लेकिन वह तो बढ गया तन्दुरुस्त है और खूबसूरत देखते ही उसे आनन्द होता है तो और तुम नही चाहती तो मैं तैयार हूँ "

"शीशे मे तिमिरा ने देखा कि सुनकर जेनी के माथे मे बल पडे

'नहीं, ठहरो नहीं तिमिरा यह न होगा, उसे यहाँ मेरे पास भेज दो कहना मेरी तबियत जरा नासाज है सिर में दर्द है आ जायेगा"

'यह तो मैंने उन्हें कहा ही है कहा कि जकिया ने अचानक जो दरवाजा खोला तो आकर वह तुम्हारे मुह पर बैठा और कि तुम सिर पर गीला कपडा रखे इस वक्त पलग पर लेटी हुई हो मगर जेनी क्या यह जरूरी है, कीमत चुकाना ?"

"जेनी न झिडकी से कहा, 'जरूरी है कि नहीं इससे तुम्हें क्या सरोकार है तिमिरा ?"

"तुम्हें क्या खेद नहीं ? जरा थोडा भी खेद नही ?"

"और क्या तुम्हें मेरे लिये खेद नहीं है ?"

जेनी ने पलटकर जवाब दिया उसका हाथ गले पर यहा से वहा तक खुदी लम्बी लाल लकीर पर फिर आया "तुम्हें क्या उस बदनसीब लुवी के लिये दुख नही, या पाशा के लिये ? तू तो सर्द पानी की मछली ही है इसान का दिल तुममें थोडे ही है

तिमिरा जरा शरारत से हँसी, मगर उसमे गुमान भी था "नही, प्यारी जेनी असल काम के वक्त मैं सर्द मछली नही हूँ इसका जेनी तुम्हें जल्दी सबूत मिल जायेगा लेकिन आओ हम झगडे नहीं जीवन सचमुच कोई मेरा तमाशा नहीं है अच्छी बात है जाती हूँ और यहाँ ही तुम्हारे पास भेजे देती हूँ"

उसके जाने पर जेनी ने उठकर छत से लटकती नीली लालटेन की बत्ती मध्यम की और दोपहर सोने के समय की एक जाकेट लेकर बिस्तर म आ लेटी मिनट भर बाद ग्लेडिशेव अन्दर आया जिसके पीछे पीछे तिमिरा हाथ की उँगली से पकडकर पैंट्रव का खीचे ला रही थी उसका सिर झुका था और वह प्रतिरोध कर रहा था उसके पीछे सरक्षिका जकिया का लोमडी का सा गुलाबी सा तीखा मुह झाँक रहा था और उसकी भेंगी आँखें देख रही थी

वह हाथ फलाकर कह रही थी, "क्या खूब ! दो बाँके जवान और साथ ही दो मस्त छोकरिया देखकर मन बाग-बाग हो उठा जैसे गुलदस्ता !

उधर वर्का ने पैट्रुन के साथ कितनी ही छेड़खानी क्यों न की हो पर वह काबू न आया हलका सा जो उसे नशा न था, कभी का गायब हो चुका था और यहा ऐसी जगह आन का हेतु उसके आगे रह रहकर और अवास्तव, हेय और ग्लानिजनक होता जाता था वह निश्चय ही सिरदर्द का बहाना कर सकता था या कह सकता था कि इनमें से मुझे कोई पसन्द नहीं है लेकिन यह जानता था कि ग्लेडिशेव उसे हरगिज न छोड़ेगा सिर्फ यह बाहर निकल जाना चाहे तो भी वह न मानेगा पर सच सीधी वजह यह कि वह अपने-आपसे बड़ा होकर एक कदम भी न उठा सकता था फिर उसे लगता था कि इस बात को सुनकर कोल्या से पहने के लिये हिम्मत छुड़ाना भी उसके बस का नहीं है

नाच पूरा होने पर ग्लेडिशेव व तिमिरा आकर बराबर आस पास बैठ गये कोल्या ने अधीरता से पूछा, "क्या हो गया है जेनी को कि अब तक बाहर ही नहीं आई ?"

तिमिरा ने झट वर्का की तरफ देखा उस आँख म इशारा था वे मालूम वर्का न उस प्रश्न को पढ़ा और उसकी आँखो की पलकें झुकी मतलब था कि ग्राहक जा चुका है तिमिरा ने कहा, ' मैं जाकर उसे बुलाये लाती हूँ " हरीता बोली, हरहमेश तुम्ह जेनी की ही क्या पड़ी रहती है, मुझे क्यो नही लेते "

"अच्छा अच्छा, तुम फिर कभी सही " कोल्या ने जवाब म कहा, और जल्दी से उसने सिगरेट सुलगाई

जेनी ने अभी सम्भालकर कपड़े पहनना भी शुरू नही किया था आइने के सामने बैठी वह मुह पर पाउडर ठीक कर रही थी

' तिमिरा, क्या कहना चाहती हो ?"

' तुम्हारा वह सनिक आदमी वहाँ तुम्हारी इन्तजार कर रहा है "

"ओह ! पारसाल का वह बालक ? मरने दो उसे "

' जेनी, मैं ठीक हूँ लेकिन वह तो बढ़ गया तन्दुरुस्त है और खूबसूरत देखने ही उसे आनन्द होता है तो और तुम नही चाहती तो मैं तैयार हूँ "

"शीशे मे तिमिरा ने देखा कि सुनकर जेनी के माथे में बल पड़े

'कहो, उनसे नहीं तिमिरा यह न होगा, उसे यहाँ मेरे पास भेज दो कहना मेरी तबियत जरा नासाज है सिर में दर्द है आ जायेगा"

यह तो मैंने उन्हें कहा ही है कहा कि जकिया ने अचानक जो दरवाजा खोला तो आकर वह तुम्हारे मुह पर बैठा और कि तुम सिर पर गीला कपड़ा रखे इस वक्त पलग पर लेटी हुई हो मगर जेनी क्या यह जरूरी है, कामत चुकाना ?"

'जेनी न खिड़की से कहा, 'जरूरी है कि नहीं इससे तुम्हें क्या सरोकार है तिमिरा ?"

"तुम्हें क्या खेद नहीं ? जरा थोडा भी खेद नही ?"

"और क्या तुम्हें मेरे लिये खेद नहीं है ?"

जेनी ने पलटकर जवाब दिया उसका हाथ गले पर यहां से वहा तक बनी लम्बी लाल लकीर पर फिर आया "तुम्हें क्या उस बदनसीब लूवी के लिये दुख नहीं, या पाशा के लिये ? तू तो सर्द पानी की मछली ही है इन्सान का दिल तुममें थोड़े ही है

तिमिरा जरा शरारत से हसी, मगर उसमें गुमान भी था "नहीं, प्यारी जेनी असल काम के वक्त मैं सर्द मछली नहीं हूँ इसका जेनी तुम्हें जल्दी सबूत मिल जायेगा लकिन आओ हम झगडे नहीं जीवन सचमुच कोई मेरा तमाशा नहीं है अच्छी बात है जाती हूँ और यहाँ ही तुम्हारे पास भेजे देती हूँ"

उसके जाने पर जेनी ने उठकर छत से लटकती नीली लालटेन की बत्ती मध्यम की और दोपहर सोने के समय की एक जाकेट लेकर बिस्तर में आ गयी मिनट भर बाद ग्लडिशेव अदर आया जिसके पीछे पीछे तिमिरा हाथ की उँगली से पकड़कर पदूव का खींचे ला रही थी उसका सिर झुका था और वह प्रतिरोध कर रहा था उसके पीछे सरसिका जकिया का लोमड़ी का-सा गुलाबी सा तीखा मुह झांक रहा था और उसकी भूरी आँखें देख रही थी

क्या हुक्म है बांके जवानों ? क्या पेश करूँ—बियर या वाइन ?"

ग्लेडिशेव की जेब मे काफी से ज्यादा पैसा था इतना कि अब जीवन म कभी नही रहा पूरे पच्चीस रुपये थे इधर वह खुल खेलना चाहता था उसने बियर पी तो बहादुरी के दिखाने मे क्योकि उसका कड़ुवा स्वाद उसे भाता न था उसे अचरज होता कि और लोग इसे कैसे पीते हैं इसी-लिए नीचे का होठ निकालकर उसने अफसराना ढग से कहा, "तुम्हारी चीज यहाँ किसी कदर बद जायका थी

"यह आप कसे कहते है हमारे बढिया से बढिया मेहमान हमारी शराबों की तारीफ करते हैं हमारे यहाँ एक-से-एक बढकर नमूने हैं मीठी लीजिये, तेज चाहिये वह लीजिये पुरानी महकदार चाहिये तो वह लीजिये पुरानी महकदार चाहिये तो वह लीजिये फ्रास की, ब्रिटेन की, जहाँ की फरमाइश हो हाजिर है छोकरियों के लिए खासकर लमन के साथ लफीत मुनासिब बैठती है वे उस पर जान देती हैं

"कीमत क्या है ?"

"कीमत क्या होगी, कीमत पैसे से बडी तो होती नही सब बढिया ठिकानों पर कीमत और कायदा एक है लफीत की बोतल पाच रुपये और लैमन आठ आना इस तरह लमन की चार बोतलें कुल दो रुपये की और पाँच वह लफीत के कुल हुए सात रुपये"

"ठहरो, ज़किया," जेनी ने बीच मे ही सामान्य भाव से कहा, "इन बालको को लूटते तुम्हें शर्म नही आती पाँच रुपया इस सब के लिये बहुत हैं देखती नही हो ये भलेमानस लोग हैं यो ही ऐरे-गरे नही हैं"

लेकिन कोल्या लाल पड आया था उसन दस रुपये का नोट लेकर लापरवाही से मेज पर फेंका और कहा, बोलने की ज्यादा जरूरत नही ले आओ"

'मैं इसमे से आने की कीमत का रुपया भी ले लूगी आप साहेबान सिर्फ एक मुलाकात के लिये ठहर रहे हैं या रात भर के लिये कीमत आप जानते ही हैं एक मुलाकात दो रुपया और रात भर के पाँच रुपया"

"अच्छा-अच्छा" जेनी फिर बीच मे पडकर बोली, "एक मुलाकात के

लिये वे ठहरेंगे कम-से कम इसमे तो हमारा यकीन रखो"

"शराब आ गई तिमिरा ने तरकीब के साथ कुछ पेस्ट्री का इन्तजाम कर लिया था और जेनी ने गोरी मनका को भी बुलाने की इजाजत ले ली थी जेनी ने खुद तो पी नही न वह बिस्तर से ही उठकर आई वह बार-बार ऊनी शाल खीचकर कन्धे पर लेती थी अगरचे कमरा खासा गम था वह कोल्या के चेहरे को एकाग्र भाव से देखती रही देखती और वहाँ से आँख न उठा पाती धूप से रगा, यौवन से पौरुष से दीप्त और आरक्त उसके चेहरे का आकर्षण विचित्र था

कोल्या ने उसके बराबर बिस्तर पर आ बैठकर उसके हाथो को धीमे से थपथपाते हुए पूछा, '*क्या बात है प्रिये* !"

"कुछ नही, सिर जरा दुखता है चोट आ गई है"

"उधर ध्यान न दो, कोशिश करो कि उसकी सोचो ही नही"

"हाँ, तुम यहाँ हो तो महसूस होता है कि मैं बहुत अच्छी हूँ इतनी मुद्दत तक तुम आये ही नही क्यो नही आये कहाँ रहे ?"

"मैं आ ही न सका वहा कैम्प पर था दिन मे हमे पन्द्रह से बीस मील तक रोज मार्च करना पडता हर दिन ड्रिल—कवायद, ड्रिल-कवायद कभी मर्दानी काम कभी लाइन फर्निशिंग कभी गैरिसन की चौकसी और *कन्धे पर सारा का सारा बोझ लदा हुआ मैं तो थककर इतना चूर हो जाता* कि रात को सोता तो मुर्दे के मानिंद फिर हमे मनूवर मे भी हिस्सा लेना होता और वह तुम जानो कोई खेल तमाशा नही होता"

"ओह ! आप लोग बेचारे !" गोरी मनका एकाएक उदास होकर बोली, 'और तुमको इतना वे सताते क्यो ये मुझे अगर तुम-सा भाई होता या बेटा तो मेरा दिल तो उसके लिये खून के आँसू रोता रहता लो यह तुम्हारे लिये है मेरे बहादुर !"

कह कर उन्होने गिलास बजाये जेनी उसी एकाग्रता से कोल्या को देखती रही, देखती रही

उसने उसके आगे गिलास करते हुए कहा, "और तुम जेनी, तुम न लोगी ?"

"नही मुझ नही चाहिये" जेनी अलस भाव से बोली "अच्छा, साथिनो अब तुम पी चुकी और गप शप भी काफी हो गइ समय हुआ अब तुम जाओ '

जब और सब जा चुके थे तो उसन ग्लेडिशेव स पूछा, "शायद तुम रात भर के लिये रहना चाहो नही-नही राजा मेरे ! परवा न करो अगर पास पैसा काफी नही है तो बाकी मैं भुगता दूगी जानत हो तुम कस प्यारे, लुभावने हो आये हो मुझ सी तो तुम पर कितना ही पमा वार दे" कहकर वह कुछ हँसी

कोल्या ने झट से गरदन मोडकर उसकी ओर देखा जेनी के स्वर म एक विचित्र सी ध्वनि थी उसक असावधान कान भी उसको पकड गय उस स्वर म भावनाओ का विलक्षण मिश्रण था दुख था, द"ा थी और व्यग्य भी था

"नही, मेरे दिल की रानी ! चाहता हूँ म तुम्हारे साथ ठहर सकू लकिन ठहर नही सकता दस बजे घर वापस पहुचने का वायदा कर आया हूँ"

' तो क्या हुआ घर पर लोग जरा इतजार ही कर लेंगे आखिर तुम अब बढकर जवान हो गए हो पर खर जसा तुम चाहो क्या चाहा हो कि मै रोशनी बुझाऊँ, या ऐसे ही रहने दू और बताओ किधर, दीवार की तरफ?'

'किधर भी सही,' उसन काँपती सी आवाज म कहा, और उसके मुलायम गम शरीर को बाँहो म भरकर चाहा कि उसका चेहरा चूम ले पर हल्के से जेनी ने हटाकर उसे परे कर दिया

ठहरो प्यारे राजा ! तसल्ली रखो बहुत तो समय है इन बातो के लिय ला जरा के लिये लेट जाओ हा ऐसे हिलो नही चुपचाप लटे रहो"

उसके शब्दो मे कुछ था आदेश था और आवश भी था युवक मानो जादू मे हो उसन चुपचाप स्वीकार किया और सर के नीचे हथेली देकर कमर के बल सीधा लेट गया जेनी जरा ऊँची हुई कोहनियो के बल वह उभरी उठी बाँहो की हथेलियों पर उसने अपना चेहरा लिया और कमरे

की मद्धम-सी ज्योति मे उस युवा शरीर का मूक होकर दर्शन और अनुमान लेने लगी वह श्वेत काया, बलिष्ठ और मासल ऊँची और चौडी छाती, कोमल पसलियाँ, तने नितम्ब और पुष्ट उभारदार जघाएँ चेहरे का और वक्ष के ऊपर के भाग का तम्बियाया रग कधो की ओर छाती की सफेदी से कटकर अलग नजर आता था

घडी भर के लिए ग्लेडिशेव ने अपनी आँखे बन्द कर ली वह जेनी की स्थिर और तीव्र दृष्टि को अपने चेहरे और अपने शरीर पर एसे ही अनुभव कर रहा था कि वह उसकी त्वचा को छू रही थी

"तब उसने अपनी आँखें खोली देखा कि देखने वाली आँखे उसके ऊपर और बहुत पास है उन लम्बी काली घनी आखो मे क्या था उसे लगा कि यह आखो वाली नारी जैसे अज्ञात है एकदम अपरिचित ! धीमे स्वर से उसने पूछा, 'ऐसे तुम मुझे क्यो देख रही हो जेनी क्या सोच रही हो ?"

'मेरे सलौने मुन्ने राजा, तुम्हारा नाम कोल्या है न ?"

"हाँ"

'तुम मुझसे नाराज मत होना बस इस बार मेरी रख लो और मान लो और आखें जरा फिर बन्द कर लो ना जोर से बन्द कर लो, और, बिल्कुल नगर मे म रोशनी भरपूर किये देती हूँ, और तुम्हे समूचे को भर आँख देख लेना चाहती हूँ हाँ यह ठीक है ओह ! काश कि तुम जानते कि ठीक अब इस समय, इस पल तुम कितने सुन्दर हो, कितने सुन्दर ! पीछे तुम बढ़ोगे और यह न रह जाओगे हो सकता है कि तब यह काया गन्ध दे जाय पर इस घडी उसमें सोधी-सी महक है और परस फूल सा स्निग्ध, परो सा कोमल ! ओह तुम दूध के बने हो ओह ! आँखें जरा बन्द रखो, तुम्हारे हाथ जोडू '

उसने लम्प को ऊँचा किया फिर अपनी जगह आ बठी टाग अपने नीचे मोडकर सर पीछे टेककर वह आराम के आसन से हो बठी और देखती रही दोनो नीरव थे दृश्य और द्रष्टा, दूर कई कमरा पार से टूट से प्यानो का सुर और किसी के हँसने की तरगित आवाज सुन पडती

थी उससे दूसरी ओर से गान का सुर आ रहा था और मदभरी बातचीत की गूज, यद्यपि शब्द चिह्न न पड़ते थे कहीं दूर मानो अनन्त मे गड़गड़ाती जाती एक बग्घी की आहट सुन पड़ी

जेनी की उन्मुख एकाग्र दृष्टि उसकी देहयष्टि पर से उसके सलोने अवयवो पर होकर फिसलती इधर से उधर जा रही थी जैसे भावी विजेता का हो उस शरीर की सुघड जंघाओं पर से होकर शीर्णकटि, फिर पुष्ट वक्ष और स्कन्ध प्रदेश से उसकी दृष्टि खिले चन्द्रानन पर आ रमकी आजानु बाहुओ मे उभरी मछलिया वह देखती जैसे तनी कमान हो देखने देखने ही उसने सोचा, 'अभी हाल इसको, इस देवोपम काया को भी औरो की तरह विष से दूषित कर देने वाली है क्यों, क्या हुआ ? उसके लिए दुखी मैं क्यों होती हू इसलिये कि वह सुन्दर है ? नहीं, अब तो चिरकाल काल से उस भाव को ही मैं नहीं जानती हू या कि इसलिए कि वह किशोर है, अभी बालक है पिछले साल ही मैं उसकी जेबो मे सेव रख दिया करती थी या रात को जाता तो पिपरमेंट दे देती थी क्यो नही तब मैंने उसे वह कहा जो जुरत के साथ अब कह देने वाली हू क्या इसलिए कि वह किसी तरह मेरा विश्वास न करता या नाराज हो जाता या किसी दूसरी के पास चला जाता आगे पीछे यह तो हर किसी मद के साथ होना ही है क्या यह कि उसने मुझे पसे से खरीदा उसे कभी माफ किया जा सकता है या कि वह भी औरो की तरह अन्धे होकर, बिन सोच विचारे, अपने को झोक उठा

'कोल्या' उसने धीमे से कहा, 'आख खोलो

आज्ञा पर उसने आँख खोली और उसकी ओर मुडा बढ़कर अपने गर्दन मे डाले और उसके चेहरे को अपनी ओर नीचे खीचा उसकी जाकेट की काट म से खुले भाग को, उसके वक्ष पर चूमना चाहता था उसने फिर हल्के से पर दृढ़ता से फिर उसे परे हटा दिया

'नही नहीं जरा ठहरो, मेरी तो जरा सुनो बस एक मिनट ' मुझे यह बताओ मेरे राजकिशोर की तुम हम सी औरतों के पास क्यो आते हो ?

कोल्या जरा हसा, उसमें कुछ असमजस भी था कैसी पगली हो !

भला हर कोई यहाँ क्यो आता है और मैं क्या मर्द नही हू मेरी भी उम्र हो गई है मैं समझता हू कि जब जब आदमी को जरूरत होती है औरत की यह तो नही तुम चाहती कि मे हर तरह की गन्दी आदतों मे पडता ?"

"जरूरत सिर्फ जरूरत ! मतलब की जरूरत जैसे वहाँ कामोड की है।"

'नही, वह नही," कोल्या ने सदय होकर धीमे से हसकर कहा, "मैं शुरू से पहले पहल देखकर ही तुम्हे चाहने लगा था असल कहू तो तुम्हारे साथ कुछ-कुछ प्रेम मे पड गया था पर जो हो किसी और से मैं नहीं मिला"

"खर ठीक है, लेकिन उस पहली बार क्या सिर्फ जरूरत थी"

'नही यह तो नही मानूगा लेकिन तो भी " कहते वह झिझका, 'मुझे अन्दर लगता कि मैं स्त्री चाहता हू साथियों ने मुझे राह बताई तुम तो जानते ही हो बहुतेरे यहाँ पहले हो गए थे सो मैं भी चला आया"

'तुम्हें क्या पहली बार लाज नही लगी।"

कोल्या अस्थिर हो चला था जिरह उसे अरुचिकर हो रही थी- कुछ त्रास भी देने लगी थी उसने अनुभव किया कि यह बस निरर्थक-सी बात नही है जो अक्सर दो जनों के प्रेमालाप में सोते समय हो जाती है उसका भी इस छोटी उम्र में वह अनुभव पा चुका था लेकिन उसने जान लिया कि यह कुछ और चीज है यह वजनी है, गहरी है

वह बोला, "अब छोडो भी नही ठीक-ठीक शर्म तो नहीं हाँ मगर एक उलझन-सी थी उस बार मन उभारे रखने को शराब जो पीनी पडी थी जेनी फिर बगल में लेट गई कोहनियों के बल हथेली पर चेहरा लेकर, पास से एकटक रह-रहकर उसको देखती रही

'एक बात और बताओ राजा ?" ऐसी धीमी वाणी मे उसने पूछा कि मुश्किल से वह शब्दों को पकड सका, 'यह जो तुम्हारा दो रुपया देना है यह दो चाँदी के ठीकरे समझते हो ना, यह इनसे एवज चुकाना कि मैं तुम्हें प्यार करू, तुम्हें चूमू अपने कुल-के-कुल को तुम्हें दे रहू, यह इसका एवज कीमत चुकाते तुम्हें कभी झिझक और लाज नहीं हुई कभी नहीं"

"भगवान मेरे आज तुम यह क्या ऊलजलूल सवाल कर रही हो सभी तो पैसा देते हैं मैं नही तो मेरी जगह किसी दूसरे ने तुम्हे पैसा दिया होता—तुम्हारे लिय सब क्या एक ही बात नही है ?"

"अच्छा कोल्या" जेनी बोली "सच कहना, तुम्हारा किसी से कभी प्यार हुआ है प्यार, सचमुच का, दिल का वह जो अन्दर तक्लीफ देता है किसी की तुमने निगाह जोही हैं लला के उसके चरणो मे फूल रखे हैं चाद की चादनी म बाँह मे बाह् लेकर कभी घूमे हो ? हुआ है, न कभी ऐसा ?"

"हाँ" कोल्या ने मध्यम स्वर मे कहा, "बचपन म क्या मुरखपना नही हो जाता। यह तो हर कोई जानता है होता ही हैं ?"

"कोई तुम्हारी दूर की रिश्तेदार है ? या बहन की महेली, या भाभी की कोई ? कोई ऐसी तुम्हारी अपनी रही है ?'

"हाँ सो तो—हर किसी के होती है।"

"तो कहो तुम उसे छूते छेडते सच कहो ? क्या तुम उसे बचाय न रखते ? और सोचो कहो वह तुमसे कहती कि लो मुझे ले लो, मगर सिफ दो रुपये मुझे देने होगे तो तुम उसको क्या कहते ?"

"क्या हो गया है तुम्हे जेनी ?" ग्लेडिशेव ने एकाएक नाराज होकर कहा, "यह बात किसलिय कह रही हो ? यह नाटक किस तरह का रचा जा रहा है भगवान कसम मैं अभी अपने कपडे पहनता और यहाँ से चला जाता हू"

'जरा ठहरा जरा ठहरो कोल्या एक, बस एक, आखिरी, बिल्कुल आखिरी सवाल और ?'

'ओह ! क्या आ ?" कोल्या ने अनमन भाव से कहा है भी कुछ ?'

'भार कभी तुमने साचा है सोचा क्या कल्पना तक मे लिया है या अभी इमी घडी खयाल म लाओ कि तुम्हारा घर एकाएक बरबाद हो गया है समझो तुम्हारे बाप दीवालिया हो गय हैं और तुम्हे नकल कर करके अपनी रोटी जुटानी पडती है या समझो कि फेरी करते हो या खोमचा लगाते हो और तुम्हारी बहन मदद के लिए इधर-उधर जाती है

ओर हमारी सबकी तरह   हाँ, तुम्हारी अपनी बहन कोई   उसे फुसला लेता है और जूठन की तरह फिर वह इस हाथ से उस हाथ चलाई जाती है ' तब तुम क्या कहोगे ?"

'बन्द कर   यह नही हो सकता " कोल्या बीच मे ही झपटकर बोला, "बहुत हुआ — अब मैं चला "

जाओ जाओ तुम्हारी कृपा हो " वह आईने के पास मिठाई वाले छोटे से बक्स म दस का नोट पडा है वह तुम्हारे लिये है, ले लो मुझे या भी उन रुपयो की जरूरत नही है जाके उनसे अपनी अम्मी के लिए खूबसूरत सा एक पानदान लेना या कोई छोटी बहन हो तो एक सुन्दर सी गुडिया उसके लिये लेना लेकर देना और कहना कि एक दुखियारी ने दिय हैं अपनी यादगार के बतौर, और वह मर गई है जाओ मेरे भोले राजा !"

कोल्या की भ हे सिमट आइ बदन उसका गठा हुआ कसरती था नाराजी मे एक साथ पलग से वह उछलकर उठा ऐसे कि स्प्रिंग हो और पलग उसे छू तक न गया हो अब वह पलग के पास पडी तिपाई पर सीधा खडा था नग्न और प्रकृत! यौवन से दीप्त गठीले उसके शरीर का ऐश्वय उसकी आँखो मे कौंध गया जेनी धीमे से, प्यार से मनुहार से बोली, "कोल्या कोलेश्का "

पुकार पर वह मुडा मानों हवा हो   उसने खीचकर एक भरी साँस सी जीवन मे इससे पहले उसने कभी वह न देखा था जो अब देखा यहाँ तक कि तस्वीरों मे भी नही देखा कि जेनी की आँखों मे स्नेह का, करुणा का, विषाद का एक ऐसा भाव है कि कह नही सकता मूक भाव से मानो मीठी झिडकी वे आँखें उसे दे रही हैं उनमें मानों पानी डबडबा आया है वह पलग के किनारे आ बैठा और एक आवेग में उसने उसकी नगी बाँहों को आलिगन मे भर लिया

प्यार से भीगा-सा वह बोला, "जेनी, तो आओ झगडा न करो "

और जेनी उससे लिपट गई   बाहुओं को उसने उसके गले में डाला और अपना सिर उसके सोने मे झुका लिया   कई सेकेण्ड वह ऐसे ही थिर

और चुपचाप बने रहे

"कोल्या !" जेनी ने एकाएक जल्दवत पूछा, "कभी तुम्हें ऐसे छूत लगने का डर नही है

कोल्या को सुनकर सिहरन-सी हुई एक सर्द बीभत्स भय उसके अन्दर काँपता सा उठा और उसके सारे गात मे व्याप गया एकाएक उसने कोई उत्तर नहीं दिया फिर बोला, "हाँ, यह तो भयकर बात है भगवान न करे बड़ी भयकर ! लेकिन मैं तो एक तुम्हारे पास आता हूँ, सिर्फ तुम्हारे और तुम जरूर पहले से कह देती "

"हाँ, मैं तुमको कह देती ' वह ऐसे बोली जैसे सोच रही हो और फिर तेजी के साथ मानो कि अपने शब्दों के भाव को उसने तोल और जाँच लिया है, निश्चय के से स्वर मे उसने कहा "हाँ जरूर, मैं तुम्हें पहले बता देती पर क्या तुमने कभी पहले सुना नही कि आतशक बीमारी क्या चीज होती है ?"

"हाँ हाँ, सुना तो है चेहरे से नाक गल कर "

' नही कोल्या नाक ही नहीं आदमी सारा का सारा गलने लगता है उसकी हड्डियाँ पुट्ठे, सब अवयव और उसका दिमाग सब सड़ने लगते हैं कुछ डॉक्टर बेकार डींग हाँकते हैं कि बीमारी यह अच्छी हो सकती है फिजूल की बात है पाकर तुम अच्छे कभी हो नही सकते फिर तो दस बीस तीस बरस तक सड़ते ही जाना होता है और किसी क्षण फालिज मारकर गिर सकना है ऐसे कि कुल-का कुल दाया भाग चेहरा, बाँह और बाईं टाँग सब बेकाम लटके रह जा सकते हैं तब क्या उसको कोई जीता आदमी कहेगा वह आदमी होता है न कुछ ऊपर से आदमी न अन्दर से प्राण ज्यादातर का ऐसे मे सिर फिर जाता है और वे पागल सिड़ी हो जाते हैं और हर कोई जानता है— कि हर आदमी कि जिसे भज छू जाए कि वह जब खाता है पीता है, प्यार मे चूमता है यहाँ तक कि सिर्फ सीधी तरह साँस लेता है, तो भी वह कह नही सकते कि वह अपने आस-पास लोगों को रोग नहीं देता अपने सगों को, बहन को, बीबी को, बेटे को आतशक वालों के बच्चे पूरे नहीं होते सोम होते हैं व जाहिल,

अपग क्षयी और बेकार ? सुना कोल्या उस मज का मतलब यह है और अब '

जेनी कहते कहते एक साथ अलग होकर सीधी हो आई उसने उसके नगे कधे अपने हाथो मे जोर से लेकर कोल्या का मुह अपनी ओर फेरा जेनी की विलक्षण आंखो मे भरे गम्भीर विषाद की झलक से कोल्या अघा-सा हो आया उसने सुना जेनी कह रही है, "अब सुनो कोल्या, मैं तुम्हे कहती हूँ कि इधर एक महीने से ऊपर से मैं इस गन्द से ग दी हू यही वजह है कि तुम्हे अपना बोसा भी नही लेने दिया "

ग्लेडिशेव सुनकर कुछ बिगडा वह कुछ समझ न सका डरा और नाराज सा वह बोला, 'तुम तो मजाक कर रही हो जान-बूझकर मुझे तग करने के लिये यह सब कर रही हो "

"मजाक, तग यह देखो, इधर आओ" उसने उसे मजबूरन पलग से उठाकर सीधा खडा किया फिर दियासलाई सुलगाई और बोली, "अब जो दिखा रही हूँ जरा गौर से देखना "

कसकर अपना मुह उसने भरपूर खोला और दियासलाई उसके सामने ले ली कि भीतर कण्ठ तक दिखाई दे कोल्या ने देखा और देखकर सहमा सा रह गया पीछे ठिठक आया

देखना वह सफेद दाग यह आतशक है, कोल्या तुम समझते हो ? आतशक अपनी पूरी तेजी और खतरनाक स्टेज पर है लो अब कपडे पहन लो और भगवान् की दुआ करो "

उसने सुना मुडकर वह जेनी को नही देख सका चुपचाप और जल्दी के साथ उठकर कपडे पहनने लगा कभी इसमे सही टाँग डालना भूल जाता और एकाध बार कमीज म गलत बाँह फँस जाती उसके हाथ काँप रहे थे और जबडे ऐसे हिल रहे थे कि नीचे के दाँत ऊपर से बजकर आवाज दे आते और उस समय सिर झुकाये जेनी कह रही थी "कोल्या सुनो, तुम्हारी किस्मत अच्छी है कि तुम्हारे लिए मैं ही थी दूसरी कोई तुम्हें छोडती नही सुनते हो, हम जिनकी पहले तुम लोग लाज हरते हो, फिर जिन्हें घर से निकाल बाहर करते हो पीछे दो दो रुपये रात के देकर जिन्हें

तुम इस्तेमाल करते हो, हम हमेशा कहते कहते एक साथ उसने अपना सिर ऊँचा किया, 'याद रखो हम हमेशा बातें नफरत करते हैं और तुम लोगों के लिये जरा भी तरस नही लाते"

कोल्या अभी कपडे पूरे पहन न पाया था सुनकर वे उसके हाथ से छूट गये वह जेनी के पास पलग पर आ बैठा और मुह को हाथो मे ढक कर रो उठा यह रोना सच्चा था, जैसे बालक रोया करते हैं

फुसफुसाकर उसने कहा, 'भगवान यह सच है एकदम सच है सचमुच क्या खराब वाहियात बात है हम, हमारे यहाँ भी यह हुआ था एक काम करने वाली थी 'यूशा उसे नीता भी हम कहने लगे थे, श्रीमती नीता सुन्दर जवान सी लडकी थी—मेरे बडे भाई उससे हो गये और साथ रहने लगे अफसर थे बाहर फौज की ड्यूटी पर गये तो पीछे पता चला कि उसे महीने चढे हैं और माँ ने उसे दरवाजा दिखाया बिल्कुल एकदम निकाल बाहर किया जैसे झाडने का लोतडा या पुरानी घिसी काई बुहारी हो जाने अब वह कहाँ है और पिता वह भी एक काम वाली थी कि "

उस समय जेनी यह जेनी जो पूरी तरह कपडे भी पहने न थी कल हन, ककशा, नास्तिक जेनी बिस्तर से उठी ग्लेडिशेव के सामने खडी और सौम्य स्थिर होकर उसने आहिस्ता से उसके ऊपर क्रूस का चिह्न अंकित किया और गहरे कृतज्ञ प्रेम के भाव से कहा, "भगवान तुम्हें जिलाएँ और बडी आयु दे मेरे भाई!' कहने के साथ वह झपटकर दरवाजे पर गई आधा खोला और पुकारकर कहा, 'अजी सुनना"

सरभिका आई और जेनी ने उसे कहा 'अजी देखती क्या हो जरा एक काम करो देखा निमिरा और मनका म से कोई खाली है, दखना कौन खाली है और जो खाली हो उसे यहाँ भेज दो"

कोल्या पीछे से उसकी पीठ पर कुछ बुदबुदाया लेकिन जेनी ने जान-बूझकर उसको नही सुना

'और देखना बीबीजी, कभी तुम मेहरबान हो जरा जल्दी करके उसे भेज देना"

"अभी लो, अभी चुटकी भर मे"

"जेनी, क्यो, वह क्यो मरती हो ?" ग्लेडिशेव ने गहरी पीडा के भाव से कहा, "भला किसलिये ? क्या यह मुमकिन है कि तुम उस बारे मे कुछ कहना चाहती हो ? "

"तुमसे मतलब, जरा ठहरो तो थोडे रुको मैं कोई ऐसा काम नही करूँगी जो तुम्हे नागवार हो"

मिनट भर बाद नन्ही सी गोरी मनका वहाँ आ पहुँची सादा जान बचकर म मूली सा लिबास था जैसे हाई स्कूल मे पढती लडकी हो

'तुमने मुझे बुलाया था जेनी, क्या बात है ? आप लोग झगड तो नहीं पडे"

"नहीं मनका हम झगडे नही लेकिन मेरा सिर बहुत दुखता है शान्त भाव से उत्तर देती हुई जेनी ने कहा, "और उस कारण से हमारे दोस्त मुझसे ठीक राजी नही हैं और मैं इनका मन नही रख पा रही हूँ जरा मदद करो मनका कैसी बहन हो ! मेरी जगह जरा तुम इनके पास रहो और इन्हें खुश करो"

"बस-बस जेनी, हद न करो प्रिय !" सच्ची पीडा के स्वर से कोल्या ने वजन करते हुए कहा, ' मैं सब समझ गया सब अभी जरूरी नही है मुझे देखो एकदम खत्म न करो "

"मैं नही समझी कि आखिर माजरा क्या है, हुआ क्या '" खुशदिल मनका ने हथेलियाँ फैलाकर कहा, ' अजी और नहीं तो इस गरीबिनी की कुछ खातिरदारी भी न कीजियेगा"

"अच्छा अच्छा, चल तू चल' जेनी ने आहिस्ता से उसे हटाते हुए कहा, "चल मैं अभी आती हूँ कुछ नही यह एक मजाक था'

अब दोना कपडे पहन चुके थे व कमरे और बाहर के बरामद के बीच खुले दरवाजे म आमने सामन देर तक खडे रहे कोई उनमे बोला नही, आँखे गहरे विषाद और गहरी सहानुभूति स एक दूसरे को देखती रही इस क्षण कोल्या ने समझा तो नही पर अनुभव किया कि उसके अभ्यन्तर मे वह गहरा विप्लव मचा है और कुछ वह उपजा है जो उसके तमाम जीवन पर

तुम इस्तेमाल करते हो, हम हमेशा कहते कहते एक
सिर ऊँचा किया, 'याद रखो हम हमेशा बातें क
लोगो के लिये जरा भी तरस नही लाते"

कोल्या अभी कपडे पूरे पहन न पाया था सुन
छूट गये वह जेनी के पास पलग पर आ बैठा औ
कर रो उठा यह रोना सच्चा था, जैसे बालक रोत

फुसफुसाकर उसने कहा, 'भगवान् यह
है सचमुच क्या खराब वाहियात बात है
हुआ था एक काम करने वाली थी यूशा उस
थे, श्रीमती नीता सुदर जवान सी लडकी थी
गये और साथ रहने लगे अफसर थे बाह
तो पीछे पता चला कि उसे महीने चढे हैं
दिखाया बिल्कुल एकदम निकाल बाहर
या पुरानी घिसी कोई बुहारी हो जाने अब
भी एक काम वाली थी कि"

उस समय जेनी यह जेनी जो पू
हन, कर्कशा, नास्तिक जेनी बिस्तर से
और सोच स्थिर होकर उसने आहिस्ता से
किया और गहरे कृतज्ञ प्रेम के भाव से
और बडी आयु दे, मेरे भाई!' कहने के
गई आधा खोला और पुकारकर कहा

सरभिका आई और जेनी ने उसे
एक काम करो देखो तिमिरा और
खाली है और जो खाली हो उसे यहाँ भे

कोल्या पीछे से उसकी पीठ पर कुछ
बूझकर उसको नही सुना

"और देखना बीबीजी कभी तुम
भेज देना'

छाये रहे और उसे प्रभावित रखे

उस समय उसने जोर से जेनी का हाथ दबाया और कहा, "क्षमा, क्या तुम मुझे क्षमा करोगी जेनी "

"हाँ, मेरे प्रिय ! हाँ, मेरे प्यारे ! हाँ, मेरे राजा हा,'

कहते-कहते जैसे माँ हो उसने धीमे से प्यार से उसके सर को नीचे लिया जिस बारीक कटे नन्हे बाल थे और धीमी-धीमी थपकियों से दुलराया फिर हलके से उसे बरामदे की ओर धकेल दिया पीछे से दरवाजे को अधखुला रखकर बोली, "अब तुम कहाँ जाओगे ?"

"बस साथी को लेकर बाहर हुआ कि सीधा घर जाऊँगा "

"अच्छा, जसा तुम ठीक समझो ईश्वर, भगवान की असीस तुम्हे रहेगी "

"माफ करना मुझे माफ करना "कोल्या ने उसकी ओर हाथ फैलाकर फिर अपनी यह प्रार्थना दुहराई

"कह चुकी हूँ, मेरे राजा कि मैंने माफ किया पर तुम भी मुझे माफ करना क्योकि अब फिर हमारा मिलना नही होगा '

और दरवाजा बन्द करने पर वह अकेली उनके पीछे वहाँ रह गई, एक और अकेली

बरामदे मे आकर ग्लेडिशेव ठिठक रहा उसे मालूम न था कि पेट्रव तिमिरा के साथ किस कमरे मे गया है और कसे उसका पता चले लेकिन उस समय वहा का सरक्षिका जकिया बराबर से निकली जा रही थी पूछने पर मदद दी वह किंचित घबराई झपटी सी जाती थी कि चिढी सी बोली, "ओह ! मेरी जाने बला वह बाये तीसरा दरवाजा उसका "

कोल्या बताये दरवाजे तक बढ कर गया और ठकठकाया अन्दर कमरे में कुछ फुसफुसाहट और हडबडाहट की आवाज आई फिर उसने ठकठकाया कहा, "केकीराम खोलो यह मैं हूँ समरगेन "

विद्यार्थी अक्सर ऐसे ठिकानो पर आते वक्त अपने नाम अदल बदल लिया करते थे—और उन्ही से एक-दूसरे को पुकारते थे यह बात नहीं कि ये अधिकारियों की चौकसी से बचने का कोई षडयन्त्र हो या कि परिवार

के किसी जान पहचान वाले के आकस्मिक सयोग से बचने की तदबीर हो बल्कि यह एक तरह का खेल था जिसका अपना हिसाब था इसमे भेद रहता था मानो दूसरे को ओढकर हम अपने म खुद रह ही न जाते आगे से ऐसा चला आता था और कथाएँ हैं जहाँ लोग बडे-बडे और ऊँचे ऊँचे नाम रूप बदलकर कही पहुँचते और कुछ कह जाते हैं

"नही, अभी अन्दर नही आ सकत" द्वार के पीछे से तिमिरा की आवाज सुनाई दी हम खाली नही हैं अन्दर आने के लिये अभी ठहरो"

लेकिन तभी पैंट्रव की भारी भारी आवाज बीच में काटकर बोली, 'क्या बेहूदगी है यह झूठ बोल रही है आ जाओ सब ठीक है"

कोल्या ने दरवाजा खोला, पैंट्रव कपडे पहने कुर्सी पर बैठा था लेकिन सारा उसका चेहरा लाल था मानो सोच मे हो ओठ बच्चे की मानिन्द आगे निकले हुए आखे धरती से लगी

अजी, मैं कहती हूँ कि आप खासे अपने दोस्त को साथ लाये वाह, खूब! तिमिरा न ताने और तन्ज से कहा, "मैं तो समझती थी कि मद होगे और कुछ इरादा लेकर आये होगे पर अन्दर से ये निकले जैसे एक नन्ही छोकरी हो जनाव को, सुनिय, अपनी इज्जत, अपनी पवित्रता जाने का खयाल है सच कहूँ, क्या नायाब कमाल दोस्त आपके हैं कि— लो रुपये दो रुपये मेज पर खनखाकर फेंक दिये, "यह जाकर देना किसी गरीब नौकरानी को या लूली लगडी को या बचा कर रख लेना कि लेके इनकी कुछ मिठाई चूस सको सस्ते गावदी"

"तो तुम गली क्या दे रही हो?" पैंट्रव ने विना आँख उठाये अपनी जगह से बडबडाते हुए कहा, 'मैं तो तुम्हें कोई कोस नही रहा तो तुम्ही क्यो पहले आगे आकर यह मुझे पूरा हक़ है कि अपनी मर्जी पर रहूँ और जो न चाहूँ न करूँ लेकिन कुछ वक्त तो तुम्हारा लिया है और साथ रही हो इससे ये ले लो लेकिन दबाव में नही सह सकता और तुम देखो ग्लेडिशेव—यानि हाँ, समरसेन यह मुनासिब बात तो नही है मैं समझता था कि इन्हे सलीका होगा, हया होगी लेकिन सारे वक्त चूमने चामने की कोशिश में ही रही और खुदा जाने क्या छेडछाड "

छाये रहे और उसे प्रभावित रखे

उस समय उसने जोर से जेनी का हाथ दबाया और कहा, "क्षमा, क्या तुम मुझे क्षमा करोगी जेनी "

'हा, मेरे प्रिय ! हाँ मेरे प्यार ! हाँ, मेरे राजा, हा,"

कहते-कहते जैसे माँ हो उसने धीमे से प्यार से उसके सर को नीचे लिया जिस बारीक कटे नन्हे बाल थे और धीमी-धीमी थपकियो से दुलराया फिर हलके से उसे बरामदे की ओर धकेल दिया पीछे से दरवाजे को अधखुला रखकर बोली "अब तुम कहाँ जाओगे ?"

'बस साथी को लेकर बाहर हुआ कि सीधा घर जाऊँगा"

"अच्छा, जसा तुम ठीक समझो ईश्वर भगवान की असीस तुम्हे रहेगी"

"माफ करना मुझे माफ करना ' कोल्या ने उसकी ओर हाथ फैलाकर फिर अपनी यह प्राथना दुहराई

"कह चुकी हूँ, मेरे राजा कि मैंने माफ किया पर तुम भी मुझे माफ करना क्योकि अब फिर हमारा मिलना नही होगा'

और दरवाजा बन्द करने पर वह अकेली उनके पीछे वहाँ रह गई, एक और अकेली

बरामदे म आकर ग्लैडिशेव ठिठक रहा उसे मालूम न था कि पद्रव तिमिरा के साथ किस कमरे मे गया है और कैसे उसका पता चले लेकिन उस समय वहा का सरगिका जक्या बराबर से निकली जा रही थी पूछने पर मदद दी वह चिंतित घबराई झपटी सी जाती थी कि चिढा सी बोली, "ओह ! मेरी जाने बला वह बाँये तीसरा दरवाजा उसका "

कोल्या बताये दरवाजे तक बढ कर गया और ठकठकाया अन्दर कमरे में कुछ फुसफुसाहट और हडबडाहट की आवाज आई फिर उसने ठकठकाया कहा, "केकीराम खोलो यह मैं हूँ समरसेन"

विद्यार्थी अक्सर ऐसे ठिकानो पर आते वक्त अपने नाम अदल बदल लिया करते थे—और उन्हीं से एक-दूसरे को पुकारते थे यह बात नही कि ये अधिकारियो की चौकसी स बचने का कोई षडयन्त्र हो या कि परिवार

के किसी जान पहचान वाले के आकस्मिक सयोग से बचने की तदबीर हो बल्कि यह एक तरह का खेल था जिसका अपना हिसाब था इसमे भेद रहता था मानो दूसरे को ओढकर हम अपने मे खुद रह ही न जाते आग से ऐसा चला आता था और कथाएँ हैं जहाँ लोग बडे-बडे और ऊँचे ऊँचे नाम रूप बदलकर कही पहुँचते और कुछ कह जाते हैं

"नही, अभी अन्दर नही आ सकत" द्वार के पीछे से तिमिरा की आवाज सुनाई दी हम खाली नही हैं अन्दर आने के लिये अभी ठहरो"

लेकिन तभी पैट्रव की भारी भारी आवाज बीच में काटकर बोली, 'क्या बेहूदगी है यह झूठ बोल रही है आ जाओ सब ठीक है"

कोल्या ने दरवाजा खोला, पैट्रव कपडे पहने कुर्सी पर बैठा था लेकिन सारा उसका चेहरा लाल था मानो सोच मे हो ओंठ बच्चे की मानिन्द आगे निकले हुए आखे धरती से लगी

"अजी मैं कहती हूँ कि आप खासे अपने दोस्त को साथ लाये वाह, खूब! तिमिरा न तान और तञ्ज से कहा, "मैं तो समझती थी कि मद होंगे और कुछ इरादा लेकर आये होगे पर अन्दर से ये निकले जैसे एक नन्ही छोकरी हो जनाब को, सुनिये, अपनी इज्जत, अपनी पवित्रता जाने का खयाल है सच कहूँ, क्या नायाब कमाल दोस्त आपके हैं कि— लो रुपये दो रुपये मज पर खनकाकर फेंक दिये, "यह जाकर देना किसी गरीब नौकरानी को या लूली लगडी को या बचा कर रख लेना कि लेके इनकी कुछ मिठाई चूस सको सन्ने गावदी"

'ता तुम गली क्या दे रही हो ?" पट्रव ने बिना आँख उठाये अपनी जगह से बडबडाते हुए कहा, 'मैं तो तुम्हे कोई कोस नही रहा तो तुम्ही क्यो पहले आगे आकर यह मुझे पूरा हक है कि अपनी मर्जी पर रहूँ और जो न चाहूँ न करूँ लेकिन कुछ वक्त तो तुम्हारा लिया है और साथ रही हो इससे य ले लो लेकिन दबाव मे नही सह सकता और तुम देखो ग्लेडिशेव—यानि हाँ, समरसेन यह मुनासिब बात तो नहीं है मैं समझता था कि इन्हे सलीका होगा, हया होगी लेकिन सारे वक्त चूमने चामने की कोशिश मे ही रही और खुदा जाने क्या छेडछाड "

तिमिरा तैश के बावजूद ठहाके के साथ हँस पडी, "हो तुम असल पूरे गावदी खैर लो नाराज न हो—पसा मैं रखे लेती हूँ लेकिन ख्याल रखना कि रात होने दो और पीछे तुम पछताओगे फिर खुद ही रोओगे अच्छा अच्छा, नाराज न हो, तने न रहो लो दोस्ती का हाथ बढाओ यह लो मेरा हाथ भी लाओ इस पर अपना हाथ रखो"

"आओ चलें, बेकीराम" ग्लेडिशेव ने कहा "खुदा हाफज, तिमिरा"

तिमिरा ने रुपये अपने मोजो के अदर डाल लिये जग कि इन व जार वालियो की अकसर आदत होती है और फिर उन दोनो को छोडने राह तक साथ चली आई

बरामदे से गुजरते वक्त ग्लेडिशेव को मालूम हुआ कि हवा मे कुछ है हाल मे एक अजब तरह का तनाव और खामोशी थी रम्मा की आवाज आ रही थी और वे तेजी से इधर उधर जाते मालूम होते थे दबी धीमी, जल्दी मे की जाती फुसफुसाहटो की आवाज भी आइ

अभी जहाँ उस बडी सी तस्वीर के नीचे वे बैठे थे वहाँ अन्ना मर-कानी के ठिकाने की सब रहने वालियां और कुछ दूसरे लोग भी वहा इकट्ठे जमा थे और घने होकर एक गाठ की मानिन्द किसी बिन्दु पर झुके खडे थे उत्सुकता मे कोल्या बढकर गया और जसे तैसे राह बनाता हुआ बीच मे पहुचकर उसने जो देखा तो देखता क्या है कि फर्श पर मानो करवट मे गबदू पडा हुआ है देह जसे अकडी और तनी है चेहरा सारा नीला बल्कि काला है वह अचल और थिर! वहाँ पडा वह अजब भयीरम लग रहा था सिमटी दुबली छोटी सी टागे नीचे अजब ढग से मुडी थी एक बाह सीने के के नीचे दबी थी दूसरी अलग सी फिकी पडी थी

थुर्राये हुये ग्लडिशेव ने पूछा "क्या बात है क्या हुआ है उसे?"

जवाब उसे नूरी ने दिना, जल्दी जल्दी झटके देकर फुसफुाहट म उसने बताता 'गबदू हाल ही यहा पहुचा था आके उसने मनका का मिठाई दी और फिर हम से पहेलियाँ बुझानी शुरू कर दी एक नार तरुवर से उतरी, सर पर वाके पाव हम अते हते के लिये उसको दखने

लगे उसने कहा 'ऐसी नार कुनार को मैं ना देखन जाऊँ" हम बूझने मे लगी पर न कुछ न सूझा हमे हारा देख उसने कहा, "कहा तो,—मैना फिर एकाएक वह जोर से हस उठा हसते-हसते खाँसी आई और देखते क्या हैं कि यह तो गिरने को हो रहा है फिर—देखते देखते वह धडाम धरती पर आ रहा अचल कि पत्थर पुलिस को बुलाया राम न जाने क्या हो? मुझे तो लाशो से डर लगता है

'ठहरो,' ग्लेलेडिव नें इसे रोककर कहा, माथे पै उसे देखना चाहिये शायद अभी जीता हो?" कहकर साथ धकेलकर उसने आगे बढने की कोशिश की लेकिन तभी साइमन की उगलियो ने उसे कोहनी के ऊपर वहाँ से फौलादी पजो की तरह से जकडा और पीछे खीच लिया

"कुछ नहीं, कोई मुआयना है कि बढे आ रहे हो" साइमन ने हकूमताना ढग से कहा, 'जाओ, नौजवानो, यहाँ से निकल जाओ तुम लोगो के लिये यह जगह नही है पुलिस आयेगी और गवाही मे तुम्हें खीच लेगी तब पता चलेगा जब खिचे फिरोगे, आटे दाल का भाव पता लग जायेगा आप जनाव, चले हैं फौजी हाईस्कूल से लिहाज आता नही होता कि यहाँ आकर मरते है अच्छा है सही सलामत हो तब तक यहा से निकल जाओ'

वह उन्हें बाहर के दरवाजे तक अपने साथ ले गया ओवरकोट उनके उनके हाथों थमाये और भी झिडकी से कहा, "लीजिये, सब जाइये भाग जाइए खूब रही! आप ऐसे कि अब किसी को पता भी न हो कि आये थे और देखो अब फिर इधर का रुख किया तो मैं हूँ कि तुम्हें घुसने नही दूगा तुम समझदार लोग ही हो ना? तुम्हीं ने इस बूढे खूसट को निकाल कर शराब के लिये रुपये दिये—उधर पीके अब वह धुत चित् खडा है कि नही"

ग्लेडिशेव बिगडकर मानो झपटता सा बोला, "एह! बडे हाकिम बन रहे हो तुम?'

शुरू करके साइमन अब एकाएक चीखने लगा उसकी काली आखें जिनपर न पलकें थी न भपे, ऐसी खूखार हो आई कि नौजवान देखकर

सहमे से पीछे ठिठक रहे "तुम्हें नाक पर एक दूगा कि याद करना भूल जाओगे होश न रहेगा फिर बच्चू ! निकल जाओ इसलिये नही तो भेजा तुम्हारा खिल जायेगा "

दोनो सीढिया उतरते हुए चले गये

इसी वक्त दो आदमी उन्ही सीढियो से मकान म दाखिल हो रहे थे सिर पर दोनो के रूएदार टोपियां थी एक नीला कमीज पहने था और दूसरा लाल सलवार बाहर को निकली हुई जाकेट के दोनो पट खुले हुए साफ था कि साईमन के इस काम म वे हमपेशा साथी होंगे

"क्या-आ" एक ने नीचे से ही साइमन को मुखातिब करके ठटठे मे कहा, "तो क्यो मिया गवडू गोल हो गय ?"

'वहीं खातमा ही समझो " साइमन ने जबाब दिया, "हमे इस बीच यारो उसे बाहर गली-वली मे पटक देना चाहिए नही तो घर मे प्रेत आना शुरू हो जाएगे मरे कम्बख्त ! और वे भी समझें कि पी पा के गाफिल रहा होगा कि बीच सडक मे दम तोड बठा "

"कही तुमने तो हा, मैंने कहा कि तुम्ने ही तो उसका काम तमाम नही किया ?"

"अह ! छोडो तुम भी कहा की हाकते हो जरा कही कुछ सबब भी होता वह तो एक मासूम, बेचारा आदमी था जसे भेड वा मेमना हो मालूम होता हैं उसका वक्त ही आ गया था "

"तो मरने के लिए उसे कही कोई ठहर ठाव नहा मिला इससे भी बदतर दूसरी भला क्या जगह होगी " लाल कमीजवाले ने कहा

इस पर नीली कमीज ने कहा, "सही कहते हो दोस्त ! हमता जिया और रिस्ता मरा अह आओ चलो यार क्या ?'

दोनो नवजवान वहां स बगटुट भागे क्योकि उस अधेरे म फश पर पडे मिया गवडू की अकडी काया जिसका चेहरा नीला पडा था बेहद डरा-वनी उन्हें लगी मौत की ऐसी नगी मूरत, खासकर रात के उस वक्त के धुधले अधेरे मे पहली बार देखकर, किस उगती उमर व जवान में हौल पैदा न कर देगी

स्लेडिशेव जब तुम बडे हो जाओगे कुनवा होगा और तुम्हारे बाल बच्चे होंगे तब क्या तुम इस स्थान को याद करोगे और इस रात को कि जब तुमने मौत को देखा था और क्या अपने बेटो मे दूसरा जिक्र करोगे?

४

सबेरे अंधेरे से न्ही बूदों की झडी सी लगी न ये थमती थी न खुल कर बरसती ही थी पवनजय नदी के किनारे नाव से तरबूट उतारने में लगा था कारखाने म जहां उसने इसी गरमी के शुरू से काम किया और ठिकाना जमाना चाहा था वहाँ भाग्य ने उसका साथ न दिया हफ्ता भर हुआ होगा कि उसका झगडा हो गया वहाँ का फोरमैन मजदूरो के साथ बेहद सख्ती से बर्ताव करता था मानो आदमी क्या बे जानवर हैं और उसके साथ इनकी करीब हाथापाई की ही नौबत आ गई कुल महीने भर पवनजय ने ज्यो त्यों दिन बिताये और पेट चलाये गया रहता जहाँ था गली कूँचों के पिछवाड मे और गूज नाम के अखबार के सम्पादकीय दफ्तर म जाकर इधर उधर की वारदातों की खबरे समय समय पर दिया करता था या अदालत के जहाँ इसाफ बँटता है चुटकुले और किस्से चटपटे बनाकर ले जाया करता लेकिन ये सख्त अखबारी काम देर तक उसे रुची नहीं यो तमाशा सा था लेकिन बडा थका देता था वह खुली हवा मे काम करना चाहने लगा जिसम बदन को कसरत मिले और लगे कि कुछ किया है लगा कि कुछ ऐसा करना चाहिये कि जिसमें हौसला काम आये और कुछ खतरा हो जिसमें आराम तो हो ही नही उल्टे जिसमे कस लगे, उसे चाह हो आई कुछ ऐसी जिन्दगी की जिसमे लापरवाही हो चाहे वह आवारागर्दी ही हो लेकिन जहाँ आदमी पर बाहरी कोई स्थिति जमकर न बैठ सके जहाँ उसे खुद कल का पता न हो कि कल उसके साथ क्या होगा या क्या नहीं हो जाएगा इसलिये मौसम आने पर जब नदी से नावो पर लदकर खरबूजे और तरबूज की पहली किश्ती किनारे आकर लगी तो वह बढकर उन्हें उतारने वाली मजूरों की एक टोली में नाम लिखाकर शामिल हो गया

इन मजूरो से उसका पारसाल से ही कुछ मेलजोल हो गया था वे भी उसके स्वभाव से खुश थे उसकी खुली तबीयत और गिनती हिसाब की होशियारी और काबलियत की उन पर धाक थी वे मजूर उसे खूब चाहने लगे थे

यह काम बडी तरतीब और तरीके से चलता था एक-एक बजरे पर पाँच पाँच आदमियो की चार टोलियाँ काम करती थी पहली नम्बर वाली तरबूजो को लेकर पानी मे खडी दूसरी टोली के आदमियो को देती दूसरी सूखे किनारे पर खडे आदमियो के हाथ उन्हे थमाती तीसरी यो ही चौथी वाला का एक-एक कर लपका देती और अन्त म पाँचवी टोली गाडी पर सवार आदमियो की थी व तरबूज लपकते और गाडियो म चिनचिनकर रखते जाते थे तरबूज गहरे हरे या कुछ सफ़ेद या धारीवाले कतारों म खूबसूरत तरतीब से सज जाते काम मजे का और साफ था और तेजी स चल रहा था अगर टोलियाँ सधी हो तो देखकर खुशी होती थी इस हाथ स से उस हाथ व फिकते और लपके जाते तरबूज ऐसी सफाई और चुस्तपन के साथ कि मानो व सरकस के सधे खिलाडी हो तरबूज बँधी कतार मे ऐसे सिलसिले से तरते स चले जाते कि हाथो की फुरती देखते ही बनती थी आखिर काम था और जल्दी ही होना था और देर की गुंजायश नहीं थी यह हर किसी का काम न था नए सिखतड उसकी ताल और लय को सँभाल न सकते थे काम मानो सिर्फ प्रयोजन का न था कला का था तरबूज को हाथों झेल लेना और फेंक देना और बात थी पर यह चीज कुछ और थी तरबूज मानो उन्हें पदार्थ न था जीता जागता जीव था

पवनजय को पिछले साल का अपना अनुभव याद आया याद आया कि जब आदमियों की कडी में अपनी जगह पर वह ढीला पड गया और खडा देखता रह गया था कि कैसी बेभाव की तब उसे पडी थी, उस वक्त पर सही लपक न सकने से एक-पर-एक दो तरबूज जमीन पर गिर कर टूटकर बिखर गये थे और इस हडबडी में हाथ का तीसरा भी उससे छूटकर गिर पडा था तब कैसी उसकी गत बनी थी तब का मजाक और [illegible] शोरगुल उसे याद आई पहली बार तो उसके साथ बडा नरमी बरती गई थी लेकिन दूसरा दिन होने पर हर उसकी चूक के लिये उसके उत्साह में से

हर तरबूज़ चार पैसे काट लिए जाते जब यह घटना घटी और एक-पर-एक लगातार तीन तरबूज़ पानी हो रहे तो उसको बिना कुछ सुने पांत से निकालने की ही नौबत आ गई उसे अब तक याद था कि कैसे एकाएक उसमें गुस्सा चढ आया था उसने मन ही-मन सोचा था कि अच्छा यह बात है, तो ला तुम भी देखो कम्बख्तो ! आये बडे तुम तरबूजवाले ऐसा है तो यही सही लो देखो इस तैश से उलटे उसे मदद मिली वह लापरवाही से आधे तरबूज़ो को इधर से लपकता और फिर उधर फेंक देता मानो कि जाने उसकी बला उसे देखकर बडा अचरज हुआ कि ठीक यही लापरवाही चाहिए थी देखा कि वह काम के सुर-ताल की लय से एक हो गया है वह अपन आप होता जाता है फुर्ती आ गई है पुट्ठे आप ही आप चलते और उसकी निगाह और बुद्धि और हाथ मे एकतानता आ गई है उसने समझ लिया कि महत्व की बात यह सोचना नही है कि तरबूज़ कीमती हैं उधर से बेध्यान होते हा सब मज़े और तरतीब से चलने लगा यह हुनर उसे पूरी तरह सध गया तो एक अरसे तक इस काम मे उसका बडा जी लगा खासी मज़ की कसरत हो जाती थी और तबीयत खुश रहती थी पर वह चीज भी बीत गई आखिर वह वक्त आ गया जब वह मानो एक मशीन मे बजान पुरजा हो यहां स वहां तक खडे आदमियो की जजीर में वह एक कडी हो उसमें कुछ हिस न हो, अपनापन न हो, और उनके यन्त्र से हाथो म से अनगिनत तरबूज यहां से वहां फिरते जाते

अब वह नम्बर दो था कमर झुकाये ऊपर बिना देखे वह भारी सही सोचदार तरबूजो को अपने दोनो ताथों मे रोकता फिर उसे बाइ ओर लेता और उसी विध बिना देखे आगे की तरफ फेंक बढ आता इसमे कमर ज़रा ऊपर को सतर होती कि तभी आने दूसरे तरबूज़ के लिये वह कमरा फिर झुक जाती इस बीच वह ज़रा कनखियो से ही आस पास के सीमित अवकाश को देख पाता उसके कानो मे लपके, और फेंके जाते तरबूजों की आदमियो के हाथों से टकराने की छप-छप ध्वनि भरती रहती छप-छप—छप छप ! और रह रहकर उनके कमर झुकाकर फिर सांस रोककर तरबूज थामन और फिर तुरत कमर सीधी करने तक रुकी सांस जार से बाहर फेंकने

पुकार बन आई समवत, जैसे वह एक जोर की दहाड हो

उसमे व्यजन न था मानो सिर्फ स्वर था अनेक स्वर फिर भी एक गूज जबरैलसिंह के कण्ठ से निकले सुर को ही सहलो ने उठाकर एक रव दे दिया था

बस अब यह उठा फेंक आखिरी थी काम उसी दम बंद हो गया पवनजय ने राहत की सास ली कमर सीधी करके उसे पीछे की ओर मोडा सूज आई बाहो को आगे फैलाया उसे अपने से खुशी थी उसे अच्छा लग रहा था कि अब पुट्ठो मे उसे वैसा दद नही होता जैसा कि पहले पहल हुआ था। बल्कि जो दर्द है वह प्यारा है कुछ मुद्दत काम छोड रखकर फिर उसम हाथ लगाने से देह पोर द आती है। कल तक जब वह सवेरे ही सीटी बजने पर अपने डेरे से उठकर काम पर पहुँचता और उसमें कधा देता तो थोडी ही देर बाद उसके सब अवयव कैसे दुखने लगते थे तब तो लगता था कि अब तो कोई करिश्मा ही उठाकर उससे काम करा सकता है नही तो वह गया, गया

"जाओ जरा खा पीकर आराम करो" मुखिया ने मानो धमकाते हुए यह कहा, लोग काम मे इतने लीन हो गये थे आखिर काम छोडकर एक नदी किनारे गये घुटनो के बल या पूरे पट लेटकर, झुक कर नदी के पानी से उछाल उछालकर उन्होने हाथ धोये, मुह धोया, ऐसे जरा ठडे हुए फिर बराबर जो हरी घास का टुकडा था वहाँ सब जने फलकर बैठे, और अपना-अपना खाना निकाल मिल बाँटकर खाने लगे बीच म सबके दस एक काले पके तरबूज थे शुरू होने की बात थी कि गिवासी ने जिसे लोग गोलन्दाज कहते थे बोतल निकाली और देखते देखते *आधी चढा गया !* गाता जाता था,

निकालो, निकालो, हो जो हो
रोटी है रूखी ? तो रूखी रहो

एक लडका नगे पाव, मैला कुचैला, कपडे इतने जो ढकने की जगह उसे उलटे दिखाते थे, दौडता-दौडता उस मण्डली के पास आया "तुम में, तुम लोगों में से यहा कोई पवनजय है ?" उसने पूछा और जल्दी-

की आवाज होती, ही ही !

यह हाथ का काम खासे नफे का था उनकी टोली में कोई चालीस जन थे काम बहुत था और फसल इफरात की हुई थी जिससे रोजनदारी पर नहीं बल्कि ठेके पर भुगतान हो रहा था जितना कर दें उतना पायें फी गाडी भाव ठहरा था दल के मुखिया का नाम था जबरैलसिंह भारीडील डौल और रौबदाब का आदमी था और मालिक था एक जवान जो अभी नया और नातजुर्बेकार मालूम होता था जबरैलसिंह ने चालाकी से फाँस कर उससे कसकर भाव ठहरा लिये थे मालिक को पीछे खयाल हुआ कि दरें तो ज्यादा हैं और इकरार की शर्तों को उसने बदलना चाहा लेकिन तजुर्बेकार किसानों ने बीच में पडकर वक्त पर उसे समझा दिया सीधे तौर पर कहा कि तुम्हें मरना है क्या जिद न करो, नहीं तो यह मजूरे तुम्हें मार डालेंगे सो भाग्य की इस जुगत से दल के हर आदमी को रोज की मजूरी के दिन में चार रुपये तक पड जाते थे सब अतिरिक्त लगन से काम करते बल्कि कस के और फुर्ती के साथ अगर कोई औजार होता जिससे उनमें से हरेक की मेहनत का नाप सकना मुमकिन होता तो जो शक्ति वहाँ पैदा हुई निश्चय ही बहुत बडे इंजिन की ताकत से इकाई दहाई के नाते बढ गई होती

मगर जबरैलसिंह को इतने से भी तसल्ली न थी वह और तेजी चाहता और तरह-तरह से मजूरों को औ तोड मेहनत के लिये उकसाता अन्दर म उसके व्यवसाय की महत्त्वाकांक्षा बोल रही थी वह दल में से हर एक की मजूरी को फी कस पाँच रुपया तक पहुँचाना चाहता था और बजरे के तट से खुश्की पर खडी गाडियों तक पहुँचाना चाहता था और बजरे के तट से खुश्की पर खडी गाडियों तक वे तरबूज खुशी में फुदकते से एक आँख की झपक म पहुँच जाते लडी सी में पिरोये घूमते चकराते चन थिरकते तरबूजों का रूप दीखता कभी सफेद कभी गोला हरा और असंख्य हथेलियों पर उनके लोके जाने की छप छप आहट सुनाई देती

कि तभी स्टीमर ने एक सीटी दी, फिर दूसरी, तीसरी मानो यहाँ-वहाँ उन सीटी की गूज-गूज गई सैकडों कण्ठों की आवाजें मिलकर एक

पुकार बन आई समवत, जैसे वह एक जोर की दहाड हो

उसमे व्यजन न था मानो सिफ स्वर था अनेक स्वर फिर भी एक गूज जवरैलसिह के कण्ठ से निकले सुर को ही सहस्रो ने उठाकर एक रव दे दिया था

बम अब यह उठा फैंक आखिरी थी काम उसी दम व द हो गया पवनजय ने राहत की सास ली कमर सीधी करके उसे पीछे की ओर मोडा सूज आई बाहा को आगे फैलाया उसे अपने से खुशी थी उसे अच्छा लग रहा था कि अब पुट्ठो मे उसे वैसा दद नही होता जैसा कि पहले पहल हुआ था। बल्कि जो दद है वह प्यारा है कुछ मुद्दत काम छोडे रखकर फिर उसम हाथ लगाने से देह पीर द आती है। कल तक जब वह सवेरे ही सीटी बजने पर अपने डेरे से उठकर काम पर पहुँचता और उसमे कन्धा दता तो थोडी ही देर बाद उसके सब अवयव कैसे दुखने लगने थे तब तो लगता था कि अब तो कोई करिश्मा ही उठाकर उससे काम करा सकता है नही तो वह गया गया

"जाओ जरा खा पीकर आराम करो" मुखिया ने मानो धमकाते हुए यह कहा, लोग काम मे इतने लीन हो गये थे आखिर काम छोडकर एक नदी किनारे गये घुटनो के बल या पूरे पट लेटकर, झुक कर नदी के पानी से उछाल उछालकर उन्होने हाथ धोये, मुह धोया, ऐसे जरा ठडे हुए फिर बराबर जो हरी घास का टुकडा था वहाँ सब जने फलकर बैठे, और अपना-अपना खाना निकाल मिल बाँटकर खाने लगे बीच म सबके दस एक काले पके तरबूज थे शुरू होने की बात थी कि गिपासी ने जिसे लोग गोलन्दाज कहते थे बोतल निकाली और देखते देखते आधी चढा गया! गाता जाता था,

निकालो, निकालो, हो जो हो
रोटी है रूखी ? तो रूखी रहो

एक लडका नगे पाव, मैला कुचैला कपडे इतने जो ढकने की जगह उसे उलटे दिखाते थे, दौडता-दौडता उस मण्डली के पास आया "तुम में, तुम लोगो में से यहा कोई पवनजय है ?" उसने पूछा और जल्दी-

जल्दी आंख घुराकर मानो सबके चेहरो पर से उसने अपने आदमी को भांपना चाहा

"मैं हू पवनजय, क्यो ? कहिए, जनाब का क्या नाम है ?"

"वह उस नुक्कड़ के पास शिवालय के पीछे कोई जेनी तुम्हें पूछ रही है—यह खत दिया है "

मण्डली के सब लोगो ने गहरी सास ली जिसकी आवाज सुन पड़ी, ' तुम लोग क्यो थूथनियां अपनी खोले पडे हो मूरख ही जोना हो सब के सब पवनजय ने शात भाव से कहा "लाओ, यहा लाओ खत '

खत जेनी का था गोल, सुघर, बचकाने से उसके अक्षर थे भाषा बहुत शुद्ध न थी

"कुमार पवनजय, मुआफ करना मैं तुम्ह कसट देती हू एव व्होत-व्होत जरूरी बात मुझे तुमसे करनी है व्होत जरूरी है मैं तुम्हे तकलीफ न देती अगर कोई और जगह होती तो कुल बस दस मिनट के लियं मैं जेनी हू, अन्ना के ठिकाने की और तुम मुझे जानते हो

पवनजय खडा हो गया मुखिया से बोला, मुझे थोडी देर के लिए जाना होगा काम फिर शुरु होगा तो लौटकर वक्त पर शामिल हो जाऊगा

"नही जी नही शामिल हुए तो क्या बात है ! काम जो है' मुखिया ने ताने और लापरवाही से कहा,"सुनिये, ऐसे कामो के लिए रात का वक्त होता है दिन तो जाइये जाइये आपको रोकता कौन है ? लेकिन अगर मदद लगते वक्त शुरू म ही तुम यहां नही हुए तो यह दिन तुम्हारा गिना नही जाएगा और मैं एवज मे जिसको चाहे ले लूगा सिखतड हो या कोई और, उससे जो तरबूज खराब होंगे वे सब भी तुम्हारे हिस्से से कटेंगे मैं यह न समझता था पवनजय कि तुम ऐसे—छुपे रुस्तम निकलोगे "

जेनी शिवालय के पीछे वाली जरा सी खुली जगह मे उसकी राह देखती खडी थी वहां पांच सात भीख मांगते से पेड खडे थे जिसे कुञ्ज नही कह सकते वह इकहरी धोती पहने थी और बदन पर जाकेट सादा वेष था लेकिन पवनजय ने दूर से ही एक उड़ती सी निगाह देखकर मन मे सोचा कि पोशाक बिलकुल सादी है फिर भी कुछ है, जाने क्या, कि बगल

से जाता हुआ आदमी पीछे फिर कर देखे बिना रहेगा नहीं और बार-बार देखेगा चकदम महसूस करेगा कि सब सामान्य नहीं है कुछ खास है

"कहो जेनो, क्या बात है ? मिलकर बड़ी खुशी हुई" हल्का सा नमस्कार करते हुए उसने सहृदयता से कहा,"सच मानो, तुम्हारी मैं आशा न करता था"

जेनी उदास सकुचाई सी रही वह तकलीफ में मालूम होती थी कुछ उसे सता रहा था पवनजय ने देखते ही समझ लिया और अनुभव भी किया

"जेनी, मुझे माफ कर दो, मुझे अभी जाकर कुछ पेट मे डालना है" उसने कहा, 'इससे, आओ चलो और बताओ कि क्या बात है सुनता भी जाऊगा ओ' खाता भी जाऊगा है ना ? यहाँ से वह थोडी ही दूर है एक सराय हो है जगह मामूली है लेकिन इस वक्त वहाँ लोग लगभग न होंगे और एक अलग को छोटा-सा कमरा भी वहाँ है हम दोनों के लिए वह जगह बहुत ठीक रहेगी आओ, चलो और शाय॰ तुम भी कुछ तो खाने मे साथ दोगी ही"

'नही, नही, मैं नही खाऊगी" जेनी ने भरे गले से कहा, "और मैं तुम्हे देर तक रोकूगी भी नही बस, थोडे से कुछ मिनट, मुझे कुछ कह सुन लेना है सलाह लेनी है—और कोई तो है नही मेरे पास !"

"अच्छा ठीक है तो आओ चलें जिस काम के मैं लायक हू जिसमे चाहो मैं खिदमत के लिए हाजिर हू जेनी, मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हू"

जेनी ने कृतज्ञ और उदास आखो से उसे देखा, बोली, "मैं जानती हू कुमार तभी तो मैं आई हूं"

"पैसे की जरूरत हो शायद, तो क्या बात है दुविधा न करो मेरे पास भी ज्यादा तो है, नही लेकिन हमारी मण्डली के आदमियों से जरूर मैं ले सकता हू और जरूर वे मुझे दे देंगे"

"नही, कुमार, तुम्हारी दया है पर यह बात नहीं है मैं तुम्हें सब बताती हूँ, वहाँ चल रहे हैं ना, वहाँ बैठकर सब कहूँगी"

सराय की छत नीची थी और अन्दर अँधेरा-सा था अजब-सी वह जगह थी छोटे-मोटे चोर रात को यहाँ जमा होते और अपने धन्धो की बातें यही निपटाते और सामान और माल का आपस म बँटवारा किया करते यहाँ धन्धा शाम को चेतता और गई रात तक यहाँ का बाजार गम रहता था वही एक अँधियारे से तिकोन नुक्कड म पवनजय ने अपनी जगह इख्तियार की कहा, "देखो खाना ले आओ जो हो और ककडी खरबूजा जो हो सो भी ले आओ हाँ, अद्धा बोतल भी ला दो '

लाने वाला बैरा एक तिकोनी शक्ल का मनहूस सा लडका था नाक बहती हुई और सारे म चीकट लगता था जसे अभी किसी चौबच्चे म से खीचकर बाहर निकाला हो आस्तीन से मुह पूछा और कहा "रोटी कितने पैसे की ? '

' जितन की होती हो उतन की, जाओ " फिर उसे खडा देख पवनजय ने हँसकर कहा, "अरे जितना बने ले आ हिसाब पीछे जोडते रहना और सालन के साथ चटनी भी लाना "

तो हा, जेनी, ' उसने मुडकर कहा, "अब अपन दु ख की कहो तुम्हारे चेहरे से दीखता है कि कुछ माजरा है कुछ बात कही गडबड हुई है चलो, बस रुको नही कह डालो "

जेनी बहुत देर तक रुमाल के छोर को अपनी उँगली म लपेटे गई या अपनी चप्पल के सिरा को देखे गई जसे बल बटोर रही हो एक दुविधा और कातरता ने उसे छा दिया था सही और सार्थक शब्द उसके पास आ नही रहे थे अन्दर की बात वाक्य बनकर देती ही न थी पवनजय ने उसकी मदद की, "नही, झिझको नही, मेरी जेनी ! एक दम सब कह डालो तुम तो जानती हो कि मैं तो तुम्हे कुनबे के जसा हूँ और मुझसे बात कभी बाहर न जायगी और हो सकता है कि कोई काम की सलाह भी मैं दे सकू बस, सुनती हो एक छलाँग, बस कूद पडो किनारे ठिठकी न रहो तो हाँ, करो शुरू '

' यही तो है, कसे करूँ शुरू ? जेनी अनिश्चय मे टटोलती-सी बोली, "बात यह है कुमार कि मैं मैं बीमार औरत हूँ गलीज 'समझे ?

बुरी बीमारी गन्दी, फौरा समझे क्या ?

पवनजय ने सर हिलाया, कहा, "कह जाओ"

'और अर्से से मेरा यह हाल है महीना ऊपर से कोई डेढ महीने से हाँ महीने से ज्यादा से क्योकि ज-माष्टमी के रोज मुझे पता लगा "

"पवनजय ने जल्दी-जल्दी अपने हाथ से सर खुजलाया बोला, "जरा, ठहरो मुझे याद आया वही दिन था ना जब मैं कुछ विद्यार्थियो के साथ तहा था वही है ना ?"

'हा, कुमार पवनजय, ठीक वही दिन"

'आह ! जेनी पवनजय से पछतावे और उलहने के भाव से कहा, 'क्योकि तुम्हे मालूम है कि उस दिन के बाद उन विद्यार्थियो में से दो को यह रोग लग गया क्या तुम से यह उन्हे मिला था"

जेनी उपेक्षा और क्रोध से चमक आई "हाँ, शायद मुझ से ही पक्का कैसे कह सकती हू इतने तो जन थे, हाँ, अब एक की याद आती है वह जो तुमसे बराबरी, हर बात म बहस करता रहा था किसी कदर वह लम्बा गेहुँए रग का चश्मे वाला "

"हा हाँ, वही बर्थवाल खबर उन्होने मुझे भेजी यानी वह वह तो कुछ नही दिखावेबाज था लेकिन वह दूसरा उसका मुझे अफसोस है यो जानता उसे मैं अर्से से था पर उसके नाम के बार म ठीक ठीक कभी पता लगाया न था इतना याद है कि किसी शहर, आगरा, कानपुर या जाने किस शहर का था साथी उसे रामसरन कहते थे उसने कई डाक्टरो को दिखाया डाक्टरो ने पक्का कर दिया कि मज यह है तो वह घर गया और अपने गोली मार कर मर गया और जो पुर्जा लिखकर पीछे छोड गया उसमे अजब बातें लिखी थी, जैसे लिखा था—मैं जीवन के अर्थ को सत्य, शिव और सुन्दर देखता या चेतन की जड पर विजय विजय म मेरी आस्था थी इस रोग के बाद अब मैं आदमी नही हूँ, गन्द हूँ कूडा हूँ लाश हूँ, क्षत का शिकार हूँ मैं दोनो को जोड नही सकता, मेरा मानवता का अभिमान यह सह नही सकता लेकिन जो हुआ उसमे और इसलिये अपनी मौत मे दोष मेरा है इस दोष में मैं अकेला हूँ क्योकि क्षणिक पशुता के वश होकर मैंने स्त्री को प्रेम मे नही,

सराय की छत नीची थी और अन्दर अँधेरा-सा था अजब सी वह जगह थी छोटे मोटे चोर रात को यहाँ जमा होते और अपने धन्धा की बातें यहीं निपटाते और सामान और माल का आपस म बँटवारा किया करते यहाँ धन्धा शाम को चेतता और गई रात तक यहाँ का बाजार गम रहता था वहीं एक अँधियारे स तिकोन नुक्कड म पवनजय ने अपनी जगह इख्तियार की कहा, "देखो खाना ले आओ जो हो और ककडी खरबूजा जो हो सो भी ले आओ हाँ, अद्धा बोतल भी ला दो "

लाने वाला बैरा एक तिकोनी शक्ल का मनहूस सा लडका था नाक बहती हुई और सारे म चीकट लगता था जसे अभी किसी चौबच्चे में से खींचकर बाहर निकाला हो आस्तीन स मुह पूछा और कहा, ' रोटी कितने पैसे की ?"

"जितने की होती हो उतने की, जाओ " फिर उसे खडा देख पवनजय ने हँसकर कहा, "अरे जितना बने ले आ हिसाब पीछे जोडते रहेंगे और सालन के साथ चटनी भी लाना "

' तो हा, जेनी, ' उसने मुडकर कहा, "अब अपने दु ख की कहो तुम्हारे चेहरे से दीखता है कि कुछ माजरा है, कुछ बात कहो गडबड हुई है घनो, बस रुको नहीं कह डालो '

जेनी बहुत देर तक रुमाल के छोर को अपनी उँगली म लपेटे गई या अपनी चप्पल के सिरा को देखे गई जसे बल बटोर रही हो एक दुविधा और कातरता ने उसे छा दिया था सही और सार्थक शब्द उसके पास आ नहीं रहे थे अन्दर की बात वाक्य बनकर देती हो न थी पवनजय ने उसकी मदद की, "नहीं, झिझको नहीं मेरी जेनी ! एक दम सब कह डालो तुम तो जानती हो कि मैं तो तुम्हे कुनबे के जैसा हूँ और मुझसे बात कभी बाहर न जायगी और हो सकता है कि कोई काम की सलाह भी मैं दे सकू बस, सुनती हो एक छलाँग, बस कूद पडो किनारे ठिठकी न रहो तो हा, करो शुरू '

' यही तो है, कैसे करूँ शुरू ?" जेनी अनिश्चय मे टटोलती-सी बोली, "बात यह है कुमार कि मैं मैं बीमार औरत हूँ ?

बुरी बीमारी गन्दी, फौरा समझे क्या ?

पवनजय ने सर हिलाया, कहा, "कहे जाओ "

"और अर्से से मेरा यह हाल है महीना ऊपर से कोई डेढ महीने से हाँ महीने से ज्यादा से क्योकि जन्माष्टमी के रोज़ मुझे पता लगा "

"पवनजय ने जल्दी-जल्दी अपने हाथ से सर खुजलाया, बोला, "ज़रा, ठहरो मुझे याद आया वही दिन था ना जब मैं कुछ विद्यार्थियो के साथ तहाँ था वही है ना ?"

"हा, कुमार पवनजय, ठीक वही दिन "

"आह ! जेनी पवनजय से पछतावे और उलहन के भाव से कहा, "क्योकि तुम्हे मालूम है कि उस दिन के बाद उन विद्यार्थियो मे से दो को यह रोग लग गया क्या तुम से यह उन्हे मिला था "

जेनी उपेक्षा और क्रोध से चमक आई "हाँ, शायद मुझ से ही पक्का कसे कह सकती हूँ इतने ता जने थे, हाँ, अब एक की याद आती है वह जो तुमसे बराबरी, हर बात म बहस करता रहा था किसी कदर वह लम्बा गेहुँए रग का चश्मे वाला "

'हा हाँ, वही वर्थवाल खबर उन्होने मुझे भेजी यानी वह वह तो कुछ नही दिखावेबाज़ था लेकिन वह दूसरा उसका मुझे अफसोस है यो जानता उसे मैं अर्से से था पर उसके नाम के बारे मे ठीक ठीक कभी पता लगाया न था इतना याद है कि किसी शहर आगरा, कानपुर या जाने किस शहर का था साथी उसे रामसरन कहते थे उसने कई डाक्टरो को दिखाया डाक्टरो ने पक्का कर दिया कि मज यह है तो वह घर गया और अपने गोली मार कर मर गया और जो पुर्जा लिखकर पीछे छोड गया, उसम अजब बातें लिखी थी, जैसे लिखा था—मैं जीवन के अर्थ को सत्य, शिव और सुन्दर देखता था चेतन की जड पर विजय विजय म मेरी आस्था थी इस रोग के बाद अब मैं आदमी नही हूँ, गन्द हूँ कूडा हूँ लाश हूँ, क्षत का शिकार हूँ मैं दोनो को जोड नही सकता, मेरा मानवता का अभिमान यह सह नही सकता लेकिन जो हुआ उसमे और इसलिये अपनी मौत मे दोष मेरा है इस दोष मे मैं अकेला हूँ क्योकि क्षणिक पशुता के वश होकर मैंने स्त्री को प्रेम मे नही,

सराय की छत नीची थी और अन्दर अँधेरा-सा था अजब सी वह जगह थी छोटे-मोटे चोर रात को यहाँ जमा होते और अपने धंधा की बातें यहा निपटाते और सामान और माल का आपस म बँटवारा किया करते यहाँ धंधा शाम को चेतता और गई रात तक यहाँ का बाजार गम रहता था वही एक अँधियारे से तिकोन नुक्कड मे पवनजय ने अपनी जगह इख्तियार की कहा, "देखो खाना ले आओ जो हो और ककडी खरबूजा जो हो सो भी ले आओ हाँ, अद्धा बोतल भी ला दो "

लाने वाला भरा एक तिकोनी शक्ल का मनहूस सा लडका था नाक बहती हुई और सारे म चीकट लगता था जसे अभी किसी चौबच्चे मे से खीचकर बाहर निकाला हो आस्तीन से मुह पूछा और कहा, "रोटी कितने पैसे की ?"

"जितने की होती हो उतने की, जाओ " फिर उसे खडा देख पवनजय ने हँसकर कहा "अरे जितना बने ले आ हिसाब पीछे जोडते रहेंगे और सालन के साथ चटनी भी लाना "

'तो हा, जेनी उसने मुडकर कहा, "अब अपने दु ख की कहो तुम्हारे चेहरे से दीखता है कि कुछ माजरा है कुछ बात कही गडबड हुई है चलो, बस रुको नही कह डालो "

जेनी बहुत देर तक रुमाल के छोर को अपनी उँगली म लपेटे गई या अपनी चप्पल के सिरो को देखे गई जसे बल बटोर रहँ हो एक दुविधा और कातरता ने उस छा दिया था सही और सार्थक शब्द उसके पास आ नही रहे थे अन्दर की बात वाक्य बनकर देती ही न थी पवनजय न उसकी मदद की, 'नही, झिझको नही मेरी जेनी ! एक दम सब कह डालो तुम तो जानती हो कि मैं तो तुम्हे कुनबे के जैसा हूँ और मुझसे बात कभी बाहर न जायगी और हो सकता है कि कोई काम की सलाह भी मैं दे सकू बस सुनती हो एक छलाँग, बस कूद पडो किनारे ठिठकी न रहो तो हाँ, करो शुरू '

'यही तो है, कैसे करूँ शुरू ?" जेनी अनिश्चय मे टटोलती-सी बोली, "बात यह है कुमार कि मैं मैं बीमार औरत हूँ गलीज 'समझे ?

बुरी बीमारी गन्दी, फौरा समझे क्या ?

पवनजय ने सर हिलाया, कहा, "कह जाओ"

"और अर्से से मेरा यह हाल है महीना ऊपर से कोई डेढ महीने से हाँ महीने से ज्यादा से क्योंकि जन्माष्टमी के रोज मुझे पता लगा"

"पवनजय ने जल्दी-जल्दी अपने हाथ से सर खुजलाया, बोला, "जरा, ठहरो मुझे याद आया वही दिन था ना जब मैं कुछ विद्यार्थियो के साथ तहाँ था वही है ना ?"

"हा, कुमार पवनजय, ठीक वही दिन"

"आह ! जेनी पवनजय से पछतावे और उलहने के भाव से कहा, 'क्योंकि तुम्हे मालूम है कि उस दिन के बाद उन विद्यार्थियो मे से दो को यह रोग लग गया क्या तुम से यह उन्ह मिला था"

जेनी उपेक्षा और क्रोध से चमक आई "हाँ, शायद मुझ से ही पक्का कसे कह सकती हूँ इतने ता जने थे, हाँ, अब एक की याद आती है वह जो तुमसे बराबरी, हर बात म बहस करता रहा था किसी कदर वह लम्बा गेहुँए रग का चश्मे वाला"

"हा हाँ, वही वर्थवाल खबर उन्होने मुझे भेजी यानी वह वह तो कुछ नही दिखावेबाज था लेकिन वह दूसरा उसका मुझे अफसोस है यो जानता उसे मैं अर्से से था पर उसके नाम के बारे म ठीक ठीक कभी पता लगाया न था इतना याद है कि किसी शहर आगरा कानपुर या जाने किस शहर का था साथी उसे रामसरन कहते थे उसन कई डाक्टरो को दिखाया डाक्टरो न पक्का कर दिया कि मज यह है तो वह घर गया और अपने गोली मार कर मर गया और जो पुर्जा लिखकर पीछे छोड गया, उसमे अजब बातें लिखी थी, जसे लिखा था—मैं जीवन के अर्थ को सत्य, शिव और सुन्दर देखता था चेतन की जड पर विजय विजय म मेरी आस्था थी इस रोग के बाद अब मैं आदमी नही हूँ, गन्द हूँ, कूडा हूँ लाश हूँ, क्षत का शिकार हूँ मैं दोनो को जोड नही सकता, मेरा मानवता का अभिमान यह सह नही सकता लेकिन जो हुआ उसमे और इसलिये अपनी मौत मे दोष मेरा है इस दोष मे मै अकेला हूँ क्योंकि क्षणिक पशुता के वश होकर मैंने स्त्री को प्रेम मे नही,

खरीद में लिया है इसलिये अपने दण्ड का मैंने स्वय अजन किया है और उसका भोग मैं स्वय अपने को देता हूँ "कुछ देर चुप रहकर पवनजय ने आहिस्ता से कहा, "मुझे उसका शोक है "

जेनी के नथुने फूल आये, बोली, 'पर मुझे अब शोक जरा भी नही है"

"यह गलत है, ऐ छोकरे, तुम जाओ जरूरत होगी हम बुला लेंगे" पवनजय ने फिर मुडकर कहा, "गलत है, यह बिलकुल भूल है तुम्हारी जेनी ! वह बहुत ही होनहार और तेजस्वी पुरुष था ऐसा कि जमे हजारा लाखो मे कोई होता है अपना अपघात करने वालो का आदर मैं नहीं करता अक्सर वे कच्ची बुद्धि के लोग होते हैं, जो जरा बात पर अपने को फाँसी लगा देते हैं या गोली मार लते हैं यह तो बच्चे की-सी बात हुई कि जिसे मिठाई नही मिली तो मानो आस-पास वाला से बदला लेने को वह दीवार से ही टकराकर सर पटने लगा लेकिन इस आदमी की मौत के आगे मेरा सर श्रद्धा और शोक से झुक जाता है वह खुद उदाराशय था, सहृदय, सब के प्रति आदरशील और मेधावी ! और सबसे बढकर प्रमाण तुम देखती ही हो, अपने को क्षमा न करनेवाला कठोर साधक !

"लेकिन मेरे लिये वह सब एक दम एक है" जिद् बाधकर जेनी काटती हुई बोली "विज्ञ या मूर्ख, धार्मिक का दुष्ट, वृद्ध कि युवा—मुझे सबसे एकसी नफरत हो गई है, क्योंकि—मुझे देखो, मैं क्या बच्ची हूँ, क्या हूँ सबके लिये मानो एक उगालदान, आये और मुझ मे उगलें खुला चौडे म रखा चहबच्चा हूँ, सडास हूँ, सोचकर देखो पवनजय, हजारो-हजारो ने मुझे दिया, दबोचा, मद के उन्माद मे मुझ पर गुर्राया और मुझे सथेडा वे अनगिन जो खाट पर मेरे साथ हुए या अनगिन जो साथ होंगे – ओह ! उन सबको मैं नफरत करती हूँ मेरा जो बस होता तो मैं ऐसी घोर सजा उन्हे देती आग मे झुलसाती लाल सलाखों से दागती हुक्म देती कि '

पवनंजय ने धीरे से कहा, ' तुममे तुम्हारा मान बोल रहा है जेनी और द्वेष"

' नही, न मुझमें पहले मान था, न द्वेष यह तो अब ही है दस बरस

की नही थी जब मुझे माँ ने बेच दिया तब से इस हाथ से उस हाथ घूमती रही अगर जो कही कोई झाँककर देख पाता कि मुझ मे इन्सान भी है पर नही मैं तो कीडा हूँ, कूडा हूँ, भिखारी से, चोर से, कातिल से बदतर ? डोम तक और ऐसे लोग भी पसा हाथ मे लेकर हमारे ठिकाने तक आते हैं वह भी हमे ऐसे लेते हैं कि वह ऊँच हो और हम नीच घिन के लायक हो मैं— कुछ नही एक पचायती मादा हूँ समझते हो कुमार पवनजय, इस शब्द का मतलब क्या होता है, पचायती, आम, सब की—इसका मतलब है कोई नही किसी की नही, बाप की नही माँ की नही, राजस्थान की नही, महाराष्ट्र की नही, बस सिर्फ पचायती हाट की और कभी किसी के मन मे यह नही हुआ कि मेरे पास आए और सोचे, यह भी इन्सान हो सकती है कि जिसके भी दिल है और दिमाग है वह भी सोचती है और एहसास रखती है, क्योंकि वह कोई लकडी की नही बनी है न उसमे अदर भुस भरा है कि ऊपर से गुडिया बना दी गई हो लेकिन शायद मैं ही यह सोचती हूँ, शायद अपनी सब जनियो मे मैं ही एक हूँ जो अपनी स्थिति की भयकरता का अनुभव करती हूँ, इस भिट, इस गढे की दुर्गन्ध का, सँडास का और अँधियारे का अनुभव करती हूँ लेकिन दूसरी लडकियाँ जिनसे मैं मिली हूँ या जिन सबके साथ इस वक्त म रहती हूँ—समझे पवनजय तुम्हे कैसे बताऊँ कि—वे तो मगन हैं कुछ भी अनुभव नही करती, जैसे, माँस की काया उनमे हो और हिस्स न हो, इससे द्वेष पैदा न हो, द्वेष से भी ज्यादा "

'ठीक कहती हो," पवनजय आहिस्ता से बोला, "और यह उन सवालों में एक है कि उससे टकराना मानो अधी दीवार से जा टकराना है, कोई कुछ कर नही सकता,'

"कोई एक भी नही ?"—आवेश से भरी जेनी बोली "तुम्ह याद है, तुम उस वक्त यहाँ थे एक विद्यार्थी हमारी लुवी को ले गया था ?"

"हाँ-आँ, क्यो नही, मुझे खूब याद है—अच्छा तो क्या मतलब ?"

"मतलब ? यह कि कल वह फिर लौट आई है सूखी, दुबली, बेहाल रोती बिलखती दुष्ट ने उसे निराधार छोड दिया पहले तो

खरीद में लिया है इसलिये अपने दण्ड का मैंने स्वय अजन किया है और उसका भोग मैं स्वय अपने को देता हूँ "कुछ देर चुप रहकर पवनजय ने आहिस्ता से कहा, "मुझे उसका शोक है "

जेनी के नथुने फूल आये, बोली, "पर मुझे अब शोक जरा भी नही है"

"यह गलत है, ऐ छोकरे, तुम जाओ जरूरत होगी हम बुला लेंगे" पवनजय ने फिर मुड़कर कहा, "गलत है, यह बिलकुल भूल है तुम्हारी जेनी! वह बहुत ही होनहार और तेजस्वी पुरुष था ऐसा कि जमे हजारो लाखों मे कोई होता है अपना अपघात करने वालो का आदर मैं नहीं करता अक्सर वे कच्ची बुद्धि के लोग होते हैं, जो जरा बात पर अपने को फाँसी लगा देते हैं या गोली मार लते हैं यह तो बच्चे की-सी बात हुई कि जिसे मिठाई नही मिली तो मानो आस-पास वालो से बदला लेने को वह दीवार से ही टकराकर सर पीटने लगा लेकिन इस आदमी की मौत के आगे मेरा सर श्रद्धा और शोक से झुक जाता है वह खुद उदाराशय था, सहृदय, सब के प्रति आदरशील और मेधावी! और सबसे बढकर प्रमाण तुम देखती ही हो, अपने को क्षमा न करनेवाला कठोर साधक!

"लेकिन मेरे लिये वह सब एक दम एक है" जिद् बाधकर जेनी काटती हुई बोली, "विज्ञ या मूर्ख, धार्मिक का दुष्ट, वृद्ध कि युवा—मुझे सबसे एक-सी नफरत हो गई है, क्योंकि—मुझे देखो, मैं क्या बच्ची हूँ, क्या हूँ सबके लिये मानो एक उगालदान, आये और मुझ मे उगलें खुला चौड़े म रखा पहबच्चा हूँ, संडास हूँ, सोचकर देखो पवनजय, हजारो-हजारो ने मुझे दिया, दबोचा, मद के उन्माद मे मुझ पर गुर्राया और मुये लथेड़ा वे अनगिन जो खाट पर मेरे साथ हुए या अनगिन जो साथ होंगे ओह! उन सबको मैं नफरत करती हूँ मेरा जो बस होता तो मैं ऐसी घोर सजा उन्ह देती आग मे झुलसाती, लाल सलाखों से दागती हुक्म देती कि '

पवनंजय ने धीरे से कहा, 'तुममे तुम्हारा मान बोल रहा है जेनी और द्वेष"

'नही, न मुझमे पहले मान था, न द्वेष यह तो अब ही है दस बरस

भी नहीं थी जब मुझे माँ ने बेच दिया तब से इस हाथ से उस हाथ घूमती रही अगर जो कहीं कोई झाँककर देख पाता कि मुझ में इन्सान भी है, पर नहीं मैं तो कीड़ा हूँ, कूड़ा हूँ, भिखारी से, चोर से, कातिल से बदतर? शोम तक और ऐसे लोग भी पैसा हाथ में लेकर हमारे ठिकाने तक आते हैं, वह भी हमें ऐसे लेते हैं कि वह ऊँचे हों और हम नीच घिन के लायक हों मैं—कुछ नहीं एक पचायती मादा हूँ समझते हो हमार पवनंजय, इस शब्द का मतलब क्या होता है, पचायती, ग्राम, सब की—इसका मतलब है, कोई नहीं किसी की नहीं, बाप की नहीं माँ की नहीं, राजस्थान की नहीं, महाराष्ट्र की नहीं, बस सिर्फ पचायती हाट की और कभी किसी के मन में यह नहीं हुआ कि मेरे पास आए और माने, यह भी इन्सान हो सकती है कि जिसके भी दिल है और दिमाग है, यह भी सोचती है और एहसास रखती है, क्योंकि वह कोई लकड़ी की नहीं बनी है, न उसके अन्दर भुस भरा है कि ऊपर से गुड़िया बना दी गई हो लेकिन शायद मैं ही यह सोचती हूँ, शायद अपनी सब जनियों में मैं ही एक हूँ जो अपनी स्थिति की भयकरता का अनुभव करती हूँ, इस मिट, इस गन्दगी दुर्गंध का, सीलन का और अँधियारे का अनुभव करती हूँ लेकिन दूसरी लड़कियाँ जिनसे मैं मिली हूँ या जिन सबके साथ इस वक्त मैं रहती हूँ—सारी पवनंजय तुम्हें कैसे बताऊँ कि—वे तो मगन हैं कुछ भी अनुभव नहीं करतीं, जैसे, मांस की काया उनमें हो और हिया न हो, इनसे ढेर पैदा न हो, ढेप से भी ज्यादा ''

'ठीक कहती हो,'' पवनंजय आहिस्ता से बोला, ''और यह उन सवालों में एक है कि उसम टकराना माना अंधी दीवार से जा टकराना है. कोई कुछ कर नहीं सकता,'

''कोई एक भी नहीं ?''—आवेश से भरी जेनी बोली ''तुम्हें याद है, तुम उस वक्त यहाँ थे एक विद्यार्थी हमारी लुवी को ले गया था ?''

''हाँ-याँ, क्यों नहीं, मुझे खूब याद है—अच्छा तो क्या मतलब ?''

''मतलब ? यह कि बस वह फिर लौट ी, दुबली बेहाल रोती बिलखती दुष्ट ने उसे नि

दया भाव दिखाता रहा फिर वही जो होता है आप कहते हैं, तुम तो वहन हो और मैं ?" देखा दुष्ट को, म तुम्हारी रक्षा करूँगा, तुम्हें इसान बनाऊँगा तुम्ह "

'नही, गलत कहती हो '

"गलत कहती हूँ हाँ, आखिर एक आदमी मन पाया जो कुत्ता न था उसमे दया थी और हमदर्दी थी कोई और इरादा उसके पास न फटकता था और वह तुम हो लेकिन तुम तो हो ही और तुम तो कुछ अजब आदमी हो सदा घूमते ही रहते हो जाने क्या खोजते हो तुम कुमार पवनजय मुझे मुआफ करना, तुम तो जाने न स, मासूम कल के शिशु हो जैसे फरिश्ता हो और इसीलिये मैं तुम्हारे पास आई हूँ एक सिफ तुम्हारे पास—"

'रुको नही जेनी कहे जाओ '

'तो जब मुझे मालूम हुआ कि रोग की मुझे छूत लग गई है तो गुस्से के मारे मेरा माथा फटने लगा म अन्दर से सारी जल आई सोचा, यह मेरा बस अन्त ही है इसलिये अब न दया की जरूरत है, न आस की, शोक की, न सोच विचार की बस, ढकना उघड गया सोचा जो भुगता है उस सबका क्या वापस दुगना चुकाया नही जा सकता क्या यह मुमकिन है कि दुनिया मे न्याय न हो क्या यह हो सकता है कि मैं बदले तक का आनन्द न ले सकूँ ?—क्योकि मैंने कभी प्रेम जाना नही कुनबा होता है, परिवार होता है वह भी जीवन होता है पर मैंने उसके बारे म दूर से सुना ही, जाना नही मैंने क्या जाना कि लोग कुत्ते के मानिंद लार से ललकते मुझे पास लेते है, दुलारते हैं और बस, लात मार कर फेंक देते है जैसे पछतात हो कि मुझको अपने बराबर लिया ही क्यो इससे दुगने जोर से लतियाके अलग करते हैं कि मैं जसे आगन की बुहारी हूँ मोरी हूँ उनके मनोरजन का निकृष्ट साधन हूँ बाहर का नीच से नीच आया लिया, दाम चुकाये और जूतियो की तरह निकाल फेंका—ऊँह क्या यह मुमकिन है कि इस सबके लिये मैं इस भयानक छूत के रोग को भी उनका एहसान मान कर लूँ ?—मैं गुलाम हूँ ?—गूगी हूँ, ?—जानवर हूँ ?—लट्टू टट्टू हूँ—और

कुमार मन की इस हालत मे मैंने तय किया कि मैं भी एक एक को अपनी छूत दूगी जवान हो कि बूढा अमीर हो कि गरीब, खूबसूरत कि बदशक्ल — सबको यह परशाद दूगी —"

पवनजय ने अपने सामने की थाली खत्म करके दूर हटा दी थी और वह अचरज से जेनी के चेहरे को देख रहा था अचरज था पर वही भय भी था वह जिसने कि जीवन म इतना कुछ दु ख देखा था उतना गन्द यहाँ तक कि इतना खून खराब—वह भी घुटी घृणा के इस तीखे गहरे विस्फोट के सामने एक अज्ञात, अनिर्दिष्ट आशका से डर आया अपने को सभाल कर बोला, 'एक बडे लेखक न ऐसे ही मामले का ज़िक्र किया है—प्रशिया वालो ने फ्रांसीसी सेना को हरा दिया और उन्हे हर तरह ज़ेर कर दिया था आदमियो को गोलियो से उडा डाला था औरतो की इज्जत ली, मकान लूट लिये, साज-सामान लूट लिया और खेत खलिहान जला दिये थे एक फ्रांसीसी औरत को जो बडी खूबसूरत थी इस नृशस दौर से छूत का यह मज मिल गया बस फिर बदले की भावना से भर कर वह हर जमन की जो उसके आलिगन तक आता वह मौत का यह जहर दे देती इस तरह उसने सैंकडो बल्कि शायद हजारो को बेकाम कर दिया —अन्त मे जब वह अस्पताल मे मौत के पास थी तो इस सब की उसे खुशी थी और गर्व था—लेकिन वे तो दुश्मन थे और उसकी मातभूमि को रौंदते और उसके देश भाइयो का गला काटते चले आ रहे थे मगर तुम तुम जेनी "

'मैं ? मेरे लिये क्या सब एक नही हैं ? देश या विदेश ! कुमार पवनजय मैं पूछती हूँ सच सच, दिल को टटोलकर बताओ कि मान लो गली म तुम्हे एक मासूम पडी मिले कि जिसकी किसी ने लाज लूट ली हो बलात्कार के बाद वहा अधमरी छोड दिया हो या कहो आँखें निकाल ली हो, या नाक कान काट फेंके हो और समझो कि वही आदमी तुम्हारे सामने आ जाये और तुम्हारे पास से गुजरता हो और तुम्हें देखने या रोकने वाला कोई न हो सिवाय परमात्मा के जो पता नही कि है भी कि नही—तो तुम क्या करो "

"कह नही सकता " पवनजय ने कहा तो पर कहने मे जोर न था और

आँखें नीची थी लेकिन उसका चेहरा जर्द पड आया था मेज के नीचे उसकी उँगलियाँ सिमटकर मुट्ठी मे बँध आई थी, धीमे से बोला "शायद मैं उसे मार देता "

"नही, शायद नही निश्चय तुम उसे मार देते मैं तुम्हे जानती हूँ, मैं तुम्हे समझती हूँ तो अब तुम्ही सोचो हममे से हरेक के साथ जब उम्र हमारी नासमझ थी ठीक यही हुआ हम बच्ची थी " जेनी आवेग से भर आई और हथेलियो से उस घडी उसने आँखो को ढक लिया, बोली, "ओह ! मुझे याद है तुम भी उस दिन कुछ ऐसा ही कहते थे उस दिन, जन्माष्टमी से पहले वाली शाम हमारी जगह तुम्हे याद तो होगा सचमुच बच्चियाँ, अबोध, अनजान ! सहज विश्वासी, अन्धी, लालची और तमाशा पसन्द करने वाली—और हम इस जुए से अलग अपने को निकाल नही सकती थी, जायें कहाँ, करें क्या और कुमार पवनजय हाथ जोडती हूँ, कही यह न सोचना कि जिन्होंने मुझे बिगाडा है उनके, उन्हीं के लिये मुझमे डाह है नहीं उसमें मैं नही हूँ सवाल मेरा नही है उन सबके लिये जो ऐसी जगह जाते हैं मुझमे एक सा द्वेष है छोटे से बडे, सबके लिये, जो जेब मे पैसा डालकर छला बने कोठो पर पहुँचते हैं इससे मैंने तय किया कि अपनी दूसरी बहनो का भी मुझे बदला लेना है बताओ, यह अच्छा, क्यो है कि नही ?"

"जेनी, सच मैं कह नही सकता क्या कहूँ कहने की हिम्मत नही है कुछ ठीक समझ नही आता "

"लेकिन असल बात वह नही है क्योकि असल बात यह है कि जब मैं उन्हे छूत देती थी तो मुझे कुछ एहसास नही होता था न रहम, न अफसोस, न किसी परमात्मा के आगे पाप न समाज के अपराध का मेरे अन्दर एक खुशी का उबाल मालूम होता था जैसे भूखे भेडिये के मुह को शिकार का लहू मिल गया हो लेकिन कल कुछ हो गया जिसे मैं खुद नही समझ सकी एक नई उम्र का सैनिक विद्यार्थी आया अबोध बालक-सा था मसें अभी भीगी न थी पारसाल सर्दियो के दिनो से वह पास आया करता था कि एकाएक मुझे उस पर दया होने लगी इसलिये नही कि उम्र कच्ची थी,

या सुन्दर बहुत था न इसलिये कि वह बहुत विनम्र था यहाँ तक कि उसमे भक्ति थी नही, इस तरह के और उस तरह के दोनो तरह के लोग मुझे मिले लेकिन मैंने उन्हें बख्शा नहीं है, जसे जानवरो को लाल सलाख से दाग देते हैं, वैसे उन्मत्त हृय के साथ मैंने भी उन्हें दागी कर छोडा है लेकिन उसपर मुझे एकाएक दया हो आई नही कह सकती, क्यो ? पता नही और मुझे उसका भेद नहीं मिलता ऐसा लगा कि यह जैसे किसी दुधमुहे की जेब से किसी बेचारे पागल के पास से पैसा चुरा लेने जैसा था जैसे किसी ने अन्धे को मारा हो, या सोते का गला काटा हो जो कहीं वह सुखा चचका आदमी होता या पिलपिला, बदसूरत या फीका बूढा किस्म का मर्द होता तो मैं बचती और बचाती नही, पर वह तन्दुरुस्त था और मजबूत, सीना ऐसा कि चट्टान और शाह सूरत की मानिन्द नही मुझसे न हुआ उसका पैसा मैंने वापस कर दिया उसे अपना मर्ज दिखाकर यकीन दिला दिया, यो कहो कि बडे-से-बडे मूरख जैसा काम किया वह मुझसे अलग होकर चला तो फूट कर रो पडा और अब कल शाम से मैं एक पल सोई नहीं, ऐसे चल रही हूँ जैसे कोहरे में हूँ इसलिये ठीक इस समय मैं सोच रही हूँ कि जो मैंने सोचा था, फैसला किया था, वह अरमान कि उनके बापों को, माँओ को, बहनो को, सबको, सारी दुनिया को मैं यह मौत का दाग देकर रहूँगी यह फैसला मूरखता ही थी कोरी खामखयाली थी क्योकि मुझसे हो नही सका और मैं हार गई लेकिन कुमार पवनजय कुछ समझ नहीं पाती तुम इतने बुद्धिमान हो, इतना कुछ जीवन मे तुमने देखा है मेरी मदद करो मुझे अपने को समझने दो बताओ कि मैं यह क्या हूँ"

'मैं जानता नही हूँ जेनी," धीमे शान्त स्वर से पवनजय ने कहा, "यह नही जेनी कि मैं कहने से या तुम्हें सलाह देने से डरता हू, लेकिन सच मैं कुछ भी जानता नही हूँ, यह तर्क से परे है अपने जाने मन के भेदो से परे है"

जेनी ने उँगलियो को आपस में लिया और एक-एक को चटकाया, "और मैं भी जानती नही हूँ, इससे जो मैंने सोचा था सच न था इसलिये अब मेरे लिये एक ही मार्ग बच जाता है यह खयाल मेरे मन मे आज सवेरे

ही आया "

पवनजय ने झपट कर बीच मे ही उसे टोका, कहा, "नही नही, जैनी यह न करना "

"एक ही चीज बची है कि — अपने फांसी लगा लूं "

"नही नही जेनी ! वैसा हरगिज न सोचो हालात और होते और राह और न होती तो यकीन मानो जेनी मै हिम्मत बांधकर तुम्हे सलाह देता ठीक है कोई फायदा नही, जीवन का पट बन्द करने का समय आ गया है पर जिसकी तुम्हे जरूरत है, वह यह नही है, नही, बिल्कुल यह नहीं हैं अगर तुम चाहो तो मै काम का एक उपाय सुझा सकता है वह कम निभय नही है, कम द्वेष की भी उसमे जरूरत न होगी और शायद उससे तुम्हारा गुस्सा सौ गुना तृप्ति पायगा '

"वह क्या ?" जेनी ने ऐसे पूछा जैसे थक आई हो जसे भडक के बाद एकाएक बुझने को हो

'वह यह कि तुम अभी जवान हो सच कहता हूँ, तुम बहुत खूबसूरत हो—यानि कि अगर चाहो तो ऐसी हो सकती हो कि एकदम गजब ! ऐसा समझो कि सौन्दय से ज्यादा एकदम मारक सौन्दय तुम्हे अपने रूप की हद और ताकत का पता नही है खासकर तुम्हे इस चीज का पता नही है कि तुम्हारे स्वभाव मे क्या है कसा जादू है आदमियो को इस बेबसी से तुम खीच के बाध सकती हो और उन्हे गुलाम और पालतू बनाकर रख सकती हो तुम मानिनी हो, तुम बहादुर हो, स्वाधीन हो और चतुर हो जानता हूँ तुमने बहुत पढा है हो सकता है कि उनमे इधर-उधर की हलकी किताबें भी बहुतेरी हो, तो भी तुमने पढा है औरो से तुम्हारी जबान अलग है, तरीका अलग है एक मोड लो कि तुम इस बीमारी से, इस सडांध से इस जेलखाने से बाहर और आजाद ! फिर तुम्हारे एक उँगली उठाने की देर है कि देखोगी कि सकडो तुम्हारे कदमो मे पडे हैं बस बाट जोहते हैं तुम कहो और वे करें. जो कहो तुम्हारे लिये करने को तैयार हैं चोरी, जालसाजी, या कोई भी इससे नीच काम उन पर राज करो और उन्हे कसकर लगाम दिये रहो वह देखें कि ऊपर हाथ में तुम्हारे कोडा है जो तैयार है उन्हें

चक्खो नही उनके मनो को मुट्ठी मे रखो और जब तक तुममे दम रहे उन्ह टस से मस ना होने दो देखो, प्यारी जेनी, तुम स्त्रियाँ ही नहीं तो जीवन को कौन चलाता है कल की नौकरानी, धोवन या राह की लडकी लाखो के माल आयदाद को ऐसे बखेरती है जैसे गाँव म कोई पीढे पर बैठी कुटक-कुटकर फेंकती जाती हो एक औरत अपढ एसी कि अपना नाम तक नहा लिख सके किसी आदमा की मार्फत् ऐसा हुआ हो कि सारे राज की मलका बन गई हो और लाखो क भाग्य उसकी मुट्ठी म आ गय हो, कुलीन युवराज रसेलो पै आशिक हुए हैं और उनसे शादी कर बैठे ह जेनी, यहाँ तुम्हारी बदले की भावना के लिये खुला क्षेत्र ह चलो, बढो और दूर से देखकर मैं भी तुम्हारी तारीफ करूँगा क्योकि तुम—तुम उसी मसाले की बनी हो तुम—शिकार की भूखी हो तुम्ह काबू मे कोई चाहिये जिसे बेकाबू कर दो ! शायद बिसात तुम्हारी इतनी बडो दुर्दर्ष न हो तो भी कहता हूँ, तुम म है वह जो लोगो को तुम्हारे पाँव म डाल जाए"—

जेनी फीकी मुस्कराहट से मुस्कराई, बोली, "नही मैने पहल यह सोचा था लकिन वह खास हिस अन्दर से बुझ गई, चाह चुक गई है न सकल्प, न इच्छा म अन्दर रीती हो गई हूँ, कही भीतर सड चली हूँ जैसे तुम जानते हो राह का वह कुकुरमुत्ता होता है ना स्फेद, गोल, छतानुमा लेके उसे दबोचा तो सब सत उसका निकलकर रिस जाता है वही मरे साथ हुआ समझो इस जीवन मे जो मैंने भुगता, उसने भीतर का सब-कुछ खा चुका डाला है बस एक जलन अन्दर छोड दी है, और म खाली पाली हूँ यहाँ तक कि मेरी जलन पोची है फिर कोई अबोध बालक-सा मुझे मिल जायगा फिर मुझे उस पर तरस आ जायगा और फिर म अपने साथ कठोर हो रहूँगी नही,-नही, यह अच्छा है, जैसा है वही ठीक है"

कहकर वह चुप हो आई पवनजय को कुछ न सूझा कि वह क्या कहे यह नीरवता दोनों को भारी हो आई दोनो असगत, असमञ्जस मे अनुभव कर आय, आखिर जेनी उठी और बिना उसकी ओर देखे अपने ठडे निश्चेतन से हाथ को उसकी ओर मानो विदा मे बढाते हुए बोली, "अच्छा कुमार पवनजय ! मैं अब विदा लूँ माफ करना, मैंने तुम्हारा वक्त लिया मैं

विदा !"

कह कर उसने मुह फेरा और धीमी कुछ उगती-सी चाल से पग रखती हुई वह सामने पहाडी तक चढती चली गई

ऐन वक्त पर पवनजय अपने काम पर आ पहुँचा मण्डली काम पर लगने को ही थी कोई बदन अकडा रहा था, कोई जम्हाइ ले रहा था कोई बदन के जोडो को चटका कर ठीक कर रहा था खासी पचमेल जमात थी, जबरैल सिंह ने अपनी पैनी निगाह से दूर ही देख पवनजय को ताड लिया और जोर से दहाडता-सा वहीं स बोला, आखिर आ गए तुम वक्त पर, चलो खैर मनाओ मैं सोचता था कि अभी हजरत को दुम पकडकर बाहर फेंक द और किसी और साले को एवज में लूँ खैर, अपनी जगह पर पहुचो

लेकिन पास आने पर मुलायम आवाज मे उसने पवनजय की थपक कर कहा "मगर कुमार, आदमी तुम भी खूब हो! रात होती तो एक बात भी थी—पर चलो जी दिन ही मजे के लिए क्या गलत चीज है खुले दिन दहाडे—मानता हू दोस्त चलो काम पर चलो '

५

शनिवार डाक्टरी मुआयने का दिन हुआ करता था उस रोज सारे घर सरगर्मी हा जाती और सब जनी बडे एतिहात से अपने को तैयार और दुरुस्त करने म लग जाती, ठीक वैसे ही जैसे कुल शील वाली नारियाँ डाक्टर स्पेशलिस्ट के यहा जाते समय जरा ठीक दुरुस्त होकर जाती हैं उन्होंने अपनी भली प्रकार अपनी सफाई की और अन्दर कपडे ऐसे पहने कि साफ मगर जरा दिखाऊ भी गली की तरफ खुलने वाली खिडकियों को बन्द कर दिया था और सायबान की तरफ खुलने वाली खिडकियो मे से एक के पीछे मेज रख दी गई थी जिसमे रोकने के लिए पुस्त पर एक पत्थर लगा दिया

लडकिया सब घबराई हुइ थी और जो मुझ रोग हुआ जिसका मुझे ही पता न हो इसका मतलब होगा कि चलो चमकर अस्पताल पहुचो,

बेइज्जती भुगतो, वहा के सूनेपन और परेशानी का झेलो खराब खाना, बुरा व्यवहार और सिर्फ तीन जनी थीं मनका, जिसे मनका कबुतरी कहते थे, जोहरा और हरिता ये तीनो कोई तीस बरस की हो आई थी और इस धधे मे रहते रहते बेअसर हो गयी थी सरकस के सधे लाल सफेद घोडे होते है वैस ही मानो ये एकदम शात और स्वस्थचित्त थी इन्हें किसी तरह की व्यग्रता न थी मनका कबुतरी तो अक्सर अपने बारे म कहती, 'मेरा क्या है मैं तो आग पानी म से निकली हू छड हो लोहे की या पीतल की असर हो मेरे दुश्मन को मैं तो बरी हू,"

जेनी सवेरे से ही उदास थी और आज उसने छोटी गोरी मनका को दो सोने की चूडिया भेंट की थी अपनी तस्वीर के साथ लाकेट लगी एक बारीक सी चेन और गले का एक चादी का क्रास ! बडी मनुहार करके तिमिरा को उसने राजी किया और अपनी याददाश्त क तौर पर रखने को अगुठिया दी एक चादी की जिसमे तीन कडियाँ थी जो अलग हो सकती थी, बीच मे दिल का आकार बना था जिसके दोनो ओर दो नन्हे-नन्हे हाथ बने थे जब तीनो कडिया आपस म जुडती तो ये तीनो हाथ परस्पर गुथ जाते दूसरी अगुठी बारीक से सोने के तार की थी जिसके बीच म गहरा नीलम जडा था

"और तिमिरा यह जा मेरा अडरवीयर है ना यह उस काम वाली अन्नी को दे देना इसे धोधा के शुद्ध और साफ कर लेगी और मेरी याद मे पहन लिया करेगी "

दोनो व तिमिरा के कमरे मे बठी थी जेनी ने सवेरे से ही कुछ शराब मगा भेजी थी और अब धीमे मानो लापरवाही मे गिलास पर गिलास ढाले जा रही थी बीच बीच मे नीबू चूसती जाती या मिसरी का डला लेकर कुतरती जाती तिमिरा ने यह पहली बार देखा था और अचरज न थी क्योंकि जेनी शराब पसन्द न करती थी और मजबूरी मे ही उसे जरा मुह तक आने देती थी सिर्फ मेहमानो का आग्रह रखने के लिए

तिमिरा ने पूछा,"यह आज सब कुछ अपना ये दिए क्यों डाल रही हो यह तो जैसे मरने को तैयार हो रही हो या किसी मठ-वठ में जाकर सदा

बन्द हो जाने को"

'हा, मुझे जाना ही होगा' जेनी ने मुझे से भाव से कहा, 'मैं थक गई हू तिमिरा—"

'अच्छा, तो हम म से मौज मे ही भला कौन है"

"नही, इतना यह नही कि मैं थक गई हू पर जाने क्या अब सब—सब कुछ मेरे लिए एक जैसा हो गया है तुम्हे देख रही हू, मेज देख रही रही हू, बोतल देख रही हू, अपने हाथ और पैर देख रही हू सोचती हू सब एक जैसा है किसी का कोई मतलब नही है जैसे की जीण शीण कभी कि कोई तस्वीर हो, धुधली, बेमतलब! पहले दिन से जिसे देखते दखते जी अघा गया हो और ऊबने लगा हो देखो वह– वह बाहर सडक पर सैनिक जा रहा है लेकिन मेरे लिए सब एक सा है लकिन मरे लिए सब एक सा है जसे लपेट लपाट कर गुडडा खडा कर दिया हो और वह चल रहा हो और वह बरसाती बरखा मे भीगता चला जा रहा है यह भी वह ही है और वह मर जाएगा और तुम तिमिरा तुम भी मर जाओगी इस सब म कुछ अनहोना कुछ डरावना नही मालूम होता है सब अब मुझे एक सीधा सपाट बेजान वेअथ हो गया है कि '

जेनी कहते कहते चुप हो आई शराब का गिलास डाला मिसरी कुतरी और अब भी बाहर सडक की तरफ देखती हुई एकाएक पूछ उठी, "तिमिरा एक बात बताओ मैंने कभी तुमसे पूछा नही है लेकिन अब बताओ, तुम यहा इस कबूतरखाने मे आई तो क्यो, कहाँ स आई? तुम हममे से नही हो हम से जरा भी मिलती नही हो तुम सब कुछ जानती हो क्योकि जब कभी कुछ होता है तुम हैरान नही दीखती तुम्हारे औसान कायम रहते हैं और वक्त पर नक सही सलाह देती हो यहाँ तक कि अग्रेजी—उस वक्त कितनी बढिया अग्रेजी फर्राटे से तुम बोलती गई थी पर हममे से कोई तुम्हारे बारे मे कुछ नही जानता है तुम कौन हो?"

"प्यारी जेनी, छोडो सच इसमे क्या धरा है जिन्दगी जैसी एक वैसी और मैं एक बोर्डिंग स्कूल मे दाखिल हुई थी फिर एक बडे कुनबे में जाकर शिक्षिका हुई. स्टेज पर मिल कर गाया भी, फिर जगत मे एक

शिकारगाह चलाया उसके बाद एक ऐसा ही आदमी मिल गया और उस झमेले मे वै चस्टर उठाकर गोली दागना भी सीख गई सरकस वालो के साथ मे घूमी वहा मुझे बडी मितमगर समझा जाता था फिर मैं एक से एक बढकर निशाना लेन लगी फिर मैंन पाया कि मै एक मठ म भर्ती हू वहा ो साल बिताए जाने जिन्दगी म किस किस म से गुजरी हूँ सब याद भी नही कर सकती मैं चोरी भी किया करती ।

तुमन बहुत ऊँच नीच दखा दीखता है अजब जिन्दगी रही दीखती है तुम्हारी "

'लेकिन मेरी उमर भी तो कम नहीं है अच्छा बताओ तुम क्या सोचती हो—कितनी है ?'

"होगी, बाईस—चौबीस '

"नही, बिन्नी हफ्ता भर हुआ ठीक बत्तीस बरस पूरे हुए तुम न मानो मगर यहाँ इस अना के ठिकाा म तुम जितनी जनी हो मैं सबसे बडी हूँ बस यही है कि मैं किसी पर बौखलाई नहीं कही किसी पर चित अपना तोडा नही और तुम खती हो म कभी पीती नही—अपन तन का मैं बराबर और बहुत ध्यान रखती हू और खास असल बात ता यह है कि मैं कभी मर्दों के फेर म नही पडी

"हाँ, तो वह तुम्हार उस सनका का क्या मामला है,

"सनका,—उसकी ता बात दूसरी है वह जान और है तुम जानो स्त्री का हृदय मूरख हाता है, चचल होता है भला वह प्यार के बिना कभी रह सकता है तो भी सच म मैं प्यार उसे नहीं करती मगर यही एक आत्मछलना समझो पर जो हो जल्दी ही मुझे सनका की बडा जरूरत पड सकती है

जेनी का एकाएक बात म उत्साह हुआ और उसने उत्सुकता से अपनी इस सहेली की ओर देखा "पर तुम इस गढे मे आकर कस पडी इतनी चतुर, सुन्दर, कुशल हसमुख

"सब कहने मे तो बहुत देर लगेगी और फिर मैं आलसन ठहरी, —असल मे मैं यहाँ प्यार में पडकर आ गई एक युवा व्यक्ति से मेल

जोल हुआ और उसके साथ क्रान्ति-श्रान्ति भी कुछ की तुम जानो हम स्त्रिया की यही प्रकृति होती है अपने प्यारे का काम, हमारा काम उसका धरम हमारा धरम, उसकी दिलचस्पी हमारी दिलचस्पी—मन से उसकी क्राति मे मुझे कुछ लगन न थी फिर भी मैं उधर बढ गई खासा लुभावना आदमी था सजीलेदार बाता म खुशगँवार और देखने मे खूबसूरत

वह फिर पीछे धोखेबाज निकला और मुखबिर बन गया इधर वह क्राति करता रहा उधर अपने साथियों की खबर पुलिस को भेजता रहा आवारा बदमाश ! जब उसका भेद खुल गया और साथियो ने उसे खत्म कर दिया तब जाकर मेरी बेवकूफी मुझे पता चली और मैं आपे मे आई

मगर फिर भी था कि म अपन को छिपाये रहूँ मैंने अपना पासपोर्ट बदल लिया फिर साथिया से सलाह ली कि सबसे पक्का और आसान तरीका यह होगा कि पीला लाइसेंस टिकट लेकर मैं किसी ऐसी ही जगह बैठू ओट रहेगी और ध्यान न जावेगा बस, त स इस तमाशे म हूँ पर यहाँ भी ऐसे ही हूँ जसे छुट्टी पर वक्त आयगा और जान की घडी सामने दीखेगी—तभी मैं फुर-र से भाग जाऊँगी "

"कहाँ जाओगी ? ' जेनी ने अधीरता से पूछा

' कहाँ क्या, दुनिया बडी है—और मैं जिन्दगी से प्यार करती हूँ मठ मे थी तब भी मैं एसी ही थी वहाँ रहती चली, रहती गई भजन गाती थी और प्राथना मे शामिल होती थी यहाँ तक कि जी भर गया और उस तरह के जीवन से थकान होने लगी तो हुआ यह कि एक छलाँग ली और सीधी नाटक के स्टेज पर आ पहुँची कहोगी, खासी लम्बी छलाँग' है ना ? वसे ही कुछ समझा कि अब एक कूद लगा लूगी जाकर हो जाऊँगी किसी सरकस मे या स्वाग वालो के सग या नौटकी मे लकिन जेनी एक कारबार मुझे पसन्द नही और बार बार मन उधर जाता है वह है चोरी का कारबार हिम्मत उसमे चाहिये, होशियारी और बडी सावधानी उसमे काम सख्त होता है और सारा जी चौकन्ना बना रहता है उसका अलग मजा है उसकी कोशिश मुझे छोडती नही है मै जो ऊपर से बडी भली, लजीली दीखती हूँ और ऐसी कि बडी शिक्षित होऊँ इससे

तुम कुछ और न समझना मैं उससे एकदम और हू बिल्कुल दूसरी हूं"

कहते कहत एकाएक उसकी आंखो म चमक आ गई एक शरारत उनम खेल आई असल मे मेरे अन्दर शतान वास करता है कोई शतान"

'तुम्हारे साथ तो भी ठीक है" ग्निता से जेनी बाली उमकी वाणा म थकान थी और उदासी थी "तुम आखिर कुछ चाहती तो हा पर मरा मन तो अन्दर मर गया ह, सब सूख गया है ठठरी बन गया है मै अब पच्चीस बरस की हूँ लकिन मन ऐसा है जस एक गई बीती बुढ़िया का हा सारे म वहां सिमटन है, सिकुडन है और मात की गन्ध आती है जा मैं जरा समझ मे रहती अंह, चारा तरफ मज गन्द ही गन्द था'

छोडा जेनी, क्या फिजूल बके जा रही हा तुम म ताजगी ह तुम होशियार हा तुमम व्यक्तित्व है मौलिकता है तुमम वह एक खास तावत और कशिश है जिससे लोग खिचत और कृताथ होते ह तुम्हार आगे रेंगने का तैयार हा सकन है तुम भी यहां स भाग निकलो नही मेर साथ नही, मैं तो सदा एक इकली रहती हू लकिन अपन स खुद तुम यहां स ला पता हा जाओ"

जेनी न सिर हिलाया और आहिस्ता से बिना आंसू लाए अपना मह दोना हथलिया म छुपा लिया

"नही, लम्बी दर तक चुप रहन के बाद आखिर मन्द भाव स वह बोली, नहीं वह मेर साथ नही चलेगा भाग्य न मुझे चबाकर छोड दिया है अब म ' इन्सान नही रह गई हूँ बल्कि मह स उगली जुगाली के मानिंद हूँ अंह "अकस्मात निराशा के भाव से उसन हाथ फका अपने न ही बोली, "आओ जेनी जरा चखकर देख लो और यह नीबू है लो जरा-सा लकर देखो तो अरर ! क्या मनहूस ठर्रा है कहा से मेरी अनिका य सब गन्द उठाकर ले आती है कही कुत्ते के मल दो तो बेचारे के सारे बाल झड जायं चीज हमशा देगी सडी बुसी, और दाम लगायेगी बढ चढ़ के मैंने यूं ही एक बार पूछा, ' तू यह सब पैसा किस लिए जाड रही है" बोली, "मैं यह शादी के बखत के लिए जोड रही हूं कहने लगी, "मेरा बन्ना कसा खुश होगा कि मैं बिल्कुल क्वारी हूं और एकदम अछूती उसे मिल गई हूं तिस

पर कुछ रुपये भी ईमाकर साथ उसके पास ले जा सकूगी तो—"वह खुश है तिमरा यहाँ इस बक्स म वह जो आईने के नीचे रखा है उसमे कुछ रुपय रख हैं य देखना उसे दे देना "

"तुमे हो क्या रहा है ? क्या ठानी हे मन मे मूरख मरना चाहती है या क्या " दपट के साथ तेज होकर तिमरा बोली

'नही या ही कह रही हूँ कि अगर कही कुछ हो जाए यह न लो कहती हूँ पसा पास रख लो हो सकता है कि व मुझे अस्पताल ही भेज द और तुम क्या जाना वहाँ फिर क्या हागा जरूरत के लिए मैंन कुछ रेजगारी अपन पास रख ही ली ह और मान लो कि मैंन अपन साथ कुछ एमा बना करन की ठानी भी हो तो तिमिरा—तुम क्या मुझे उससे रोकोगी ?

तिमिरा न निगाह गाडकर उसे देखा गहरे भाव से और शा त जेनी की आँखे उदास और सूनी थी जोती आग उनमे बुझ गई थी लगता था कि उनका सफेद भाग चाक सा धोला हो आया है और आस पास फीकापन जमा दीखता है

नहीं ' तिमरा अन्त म आहिस्ता से पर अडिग भाव से बोली, 'प्यार की वजह से होता म जरूर बाधा देती पसे वगरह की वजह से होता तो समझाती बुझाती, लेकिन कभी होता है कि तब किसी को अड चन डालने का हक नही रहता मैं मदद तो अलबत्ता कभी नही करूँगी लेकिन पकड कर तुम्हें रोकूगी भी नही नही मैं दखल नही दूगी "

उसी समय चपलता से शरीर को हिलाती ज़किया सिदगी म से नमूदार हुई चीखती सी आ रही थी "छोकरियो, पहन पहान के कपडे तयार हो जाओ डाक्टर आ गये हैं सुना सब जेनी, तयार हो जाओ सुनिय, आप लोग तयार हो जाइय '

' अच्छा तिमिरा, तुम चलो ' जनी ने उठते हुए बडे स्निग्ध भाव मे कहा ' मैं जरा एक मिनट के लिय अपने कमरे म हो आऊँ मैंने अभी कपडा नही बदला अगर्चे सच कहूँ तो यह वह सब कपडा एक-सा है वे जब मेरा नाम ले और मैं अगर वक्त पर न पहुँचू तो जोर से कह देना या दौडकर

मुझे बता जाना"

और तिमिरा ने कमरे के बाहर जान जाते, मानो सयोग से हो, कधे लगकर उसन आलिगन लिया और धीमे से उसे थपका

शहर के मैडिकल अक्सर डॉक्टर क्लीमैनको मुआयने की सब चीज अपने कमरे म तयार कर रहे थे वसलीन थी और कुछ पीलेस घोल और छोटा सा शीशा और इस ही तरह की दूसरी मृतर्परिक चीजे, उठा उठाकर सफाई से उन्ह दूसरी मेज पर रख रहे थे यही उनक सामन उन सबके नामो की फहरिस्त थी और सफेद कोरे टिकट थे, कि जिनको फिर भरा जाना था लडकियाँ ऊपर से सिफ कमीजें डाले और परो मे स्लीपर डाले उनसे जरा दूर पर बैठी थी मेज के पास खुद मालकिन अन्ना मरकानी खडी थी और जरा उसके पीछे होकर एमा उडवानी और जकिया अपनी जगह लिय हुए थी

डाक्टर उमर रसीदे आदमी थे इस कदर बेढग, मन्दे और पस्त वह मानो जग से उदासीन थे और सबसे उन्होने अपना किसी कदर लाल सी नीली होती हुई नाक पर टेढा करके बिना कमानी का चश्मा रखा, फहरिस्त को नीचे से ऊपर देखा और फिर ऊपर की तरफ से पुकारना शुरू किया,"

'सिकन्दरा"

बैठी सी नाक वाली नाटे कद की नीना भोयें समेटती सी कदम रख कर आगे आई चेहरे पँ परेशानी लिय, शम से हाँफती-सी अपनी झिझक से झिझकती और बिगडती फिर भी अपन साथ धगडती-सी वह बेढगपने से चढ़कर सामने मेज के पास पहुँची डाक्टर न अपने बेकमानी के चश्म म से झाँककर जो हर मिनट उतर-उतर जाता था, अपना मुआयना पूरा किया

'चलो, जाआ, तुम ठीक हो"

और सफेद कार्ड की पुश्त पर उसने घसीट दिया, २८ अगस्त शिकायत नही, सालिम, दुरुस्त!' लिखना पूरा न हुआ था कि आगे पुकारा

"वाशकोवा, इर्ला "

अब लुवी का नम्बर था पिछले महीने डेढ महीने की अपेक्षाकृत आजादी के बाद यह कुछ इन हफ्तेवार मुआयना की आदी न रह गई थी इसलिये जब डाक्टर न कमीज को लुवी की छातिया पर से उठाया तो वह ऐसे लाल पड आई जैस बडी लजीली कुलवधुएँ जरा छाती या कमर उभरते ही लाज म मर सी आती है

उसके बाद नम्बर था जोहरा का उसके बाद नन्ही गोरी मनका का, फिर तिमिरा फिर यूस्का, इस आखिर वाली नूरी को डाक्टर ने देखा कि सूजाक है फौरन हुक्म लिखा कि अस्पताल भजा जाये

मुआयना डॉक्टर इतन सपाटे से करते जाते थे कि अचरज होता था कोई पिछले बीस बरस से आये हफ्ते, हर शनीचर को वह कई सैकडा लडकियो का इस तरह मुआयना करते आये थे उन्हे यह कला सिद्ध हो गई थी हाथो मे वह सफाई और चाल ढाल, वह लापरवाही आ गई थी कि जो सरकस के सधे खिलाडिया मे आ जाती है हाथ तेजी से चलता और निगाह अचूक काम करती दूसरे पशेवर लोगो म जो सफाई आ जाती है खास कर पत्तेबाज किस्म के हुनर बन्दो मे जो चीज पदा ह जाती है कुछ वही सफाई और अदा इन्हे रवा थी उसी शान्त, तटस्थ, अनासक्त भाव से लडकिया को गिनत और देखते जात थे जसे दिन मे सकडो के हिसाब से पशुओ का डॉक्टर ढोर डँगरो का मुआयना कर जाता है

क्या उस डाक्टर को खयाल होता था कि सामने उसके जीते जागते इन्सान हैं या कि सिफ वह उस सगीन जजीर की महज एक कडी था जिसको कि व्यभिचार का वैध व्यवसाय कहा जाय

नही और अगर उसे यह खयाल हुआ भी होगा तो शुरू म जबकि उसन अपन पशे म कदम रखा ही होगा अब तो उसके सामन थे नगे, उघडे पट, नगी पीठ और खुले मुह हर शनीचर को वह उन सैकडो म से जिनका इस तरह मुआयना करता था किसी एक को भी पीछे पहचान न सकता क्योंकि व सिफ धड थे चेहरा किसी पर न था उस वक्त उसे एक ध्यान था कि कब एक ठिकाने का मुआयना खत्म हो कि दूसरे पर

पहुँचे, दूसर से तीसरे और ऐसे दसवें, पचीसवे

"सुमाना रैक्जीना !"

डाक्टर ने अन्त म नाम पुकारा उस पुकार पर कोई लडकी चल कर मेज तक नही आई

इस पर ठिकाने पर रहने वाली सब जनी एक दूसरे को देख उठी और कानाफूसी कर निकली

'जेनी जेनी कहाँ है ! '

पर वह उनके बीच न थी, आस-पास भी न थी

इस पर तिमिरा जो अभी हाल डॉक्टर के मुआयने से फारिग हो चुकी थी बढ कर आगे आई और बोली, "वह यहाँ नही है अभी तैयार होने का उस अवसर नहीं मिला माफ कीजियेगा डाक्टर साहब इजाजत हो तो मैं जाकर उसे बुला लाऊँ ?

बरामद म से होती वह तेजी से चल दी लेकिन कुछ जल्दी वापिस नही लौटी पीछे पीछे फिर उसके पहले तो गई एमा उडवानी, फिर जकिया, फिर दूसरी कई लडकियाँ और अन्त मे खुद अन्ना मरकानी उठ कर देखने चली

'शि क्या वाहियात बहूदा बात है " बरामदे को अपने चौडे शरीर से घर गुस्से म बडबडाती एमा उडवानी कह रही थी, 'और हमेशा जब देखा यह मरी जेनी हर हमेशा जेनी मेरा तो सबर खत्म हा गया सच कहती हूँ "

मगर जेनी कही थी नहीं अपने कमरे म नहीं थी तिमिरा वाले में भी नहीं थी दूसरे सब कमरो, कोठियो म उसे देखा, कोने छान तिदरियाँ सभी पर एक दम कही उसका पता न था

जोहरा बोली, 'गुसलखाना नो देखा ही नहीं शायद वहा हो "

पर यह जगह अन्दर से बन्द थी भीतर से चटखनी बन्द की मालूम होती थी एमा ने मुक्के से किवाड पीटना शुरू किया

' जेनी, यह क्या बेवकूफी है ! आखिर बाहर आओ ना "

फिर उसने अपनी आवाज और ऊँची की और बेहद बसब्री के साथ

धमकाते हुए कहा, "कुतिया की बच्ची, सुनती नही है निकल के आ फौरन डाक्टर इतजार मे बठे है"

पर कहो से किसी तरह का जवाब नही आया

तब सब की निगाहे एक दूसरे की ओर उठी, उनमे दहशत थी सब के कलेजा म एक ही खयाल एक साथ कौंध गया

एमा उज्वानी ने दरवाजो के पीतल के मुट्ठे पकडकर जोर से दरवाजो का खडकाया पर दरवाजा न चू न की

अन्ना मरकानी न कहा, "साइमन को बुलाओ वह खोलेगा"

साइमन को बुलाया गया जैसा हमेशा रहता था झक म और ऊँघ मे बुदबुदाता सा वह आया सब जनिया के और आया के बदहवास चेहरो से वह समझ गया कि कही कुछ बात गडबड की हुई है कुछ मामला है कि जिसम उसकी बल की और कुशलता की जरूरत हुई है जब उसे बताया गया कि क्या माजरा है तो उसने दोनो मुट्ठो को अपनी मुट्ठियो मे थामा और बिना कुछ बोले गीवार से कमर टक एक जोर का झटका दिया

मुट्ठे उसके हाथो में रहे और वह पीछे धक्के के मारे फश पर गिरते-गिरत बचा

ऊँह ! कम्बख्त !" तश म बुडबुडाता सा वह बोला 'एक चाकू तो लाना'

दरवाजे की दरज म स चाकू देकर काटत काटत वह चटखनी तक पहुँचा आखिर छेद इस कदर बडा हुआ था कि उँगली जा सके जैसे तैस चाकू और उँगली के सहारे चटखनी को धकेला गया सब, ध्यान की आपस की रगड की आवाज आती था और कुछ नहा आखिरकार साइमन कामयाब हुआ और दरवाजा खुला जेनी वहाँ गुसलखाने के बीचोबीच लटकी हुई थी अपने ही इजारबद म फसा उसका गला टेढा हो गया था इजार बद छत मे लगे लालटेन के कडे म जाकर बँधा था देह उसकी कडी हो आई थी मालूम होता था जान निकले देर हो गई है यातना ज्यादा देर न भुगतनी पडी होगी वह देह हवा मे झूल रही थी बस जरा दायें-बायें हलका-सा आभास देकर हिलती होगी अन्यथा अपने समलम्ब पर वह अधर म मानो जम आई थी

चेहरा नीला लाल था और जीभ भिचे और खुले दांतो के बीच से बाहर निकली हुई थी कुर्ड म रहने वाला लम्प भी वही फर्श पर लेटा पड़ा था

किसी ने देखते ही जोर की चीख दी और फिर सारी जनी लथपथ एक दूसरे पर टूटती सी तग बरामदे मे से अन्दर घुस आन लगी रो रही थी और बिलख रही थी और उनका बुरा हाल था

रोने बिलखन की आवाज सुनकर डाक्टर वहाँ आन पहुँचा आया ही यानी बाकायदा कदम कदम चलकर कोई झपट कर भाग कर नही आया देखा कि मामला क्या है तब भी उसे अचरज नही हुआ न उसम उत्साह आया पुराने डाक्टर की हैसियत से अपने काम मे उसे ऐसी वारदात जाने कितनी ही देखने को मिली होगी वह उनसे अघा आया था आदमी का दुख श्राम देखते देखते वह अपने मे उस तरफ बेहिस और कड़ा पड गया था उसन साइमन को कहा, कि लाश को उठाकर जरा ऊँचा कर और खुद किसी चीज के सहारे ऊपर चढकर इजारबन्द को उसने काटा फिर बाकायदा हुक्म दिया कि जेनी की काया को उसके अपन कमरे म ले जाया जाय वहाँ साइमन की मदद से कोशिश की गई कि हो सके तो बाहरी उपाय से साँस फिर जारी की जाये पर कोशिश कायदे की थी और ज्यादा नतीजा निकलता न देख पांचेक मिनट मे छोड दी गई उसके बाद बेकमानी के अपने चश्मे को उसने नाक पर रखा, कहाँ, "पुलिस को खबर दी जाय कि वह मामला इदराज करे"

फिर वर्कश आये और मालकिन के अपने छोटे से कमरे मे बठकर उससे देर तक घुसफुस बातें हुइ फिर उसी तरह जेब मे मरोडकर सौ रुपय का नोट रखा

दलतावश पाँच मिनट मे तयार हो गया और जेनी उसी अद्धनग्न वेष म जसे वह लटकी थी किराये के एक ठेले में लादकर और दो चटाइयो के ओढने बिछाने मे लिपटकर पोस्टमार्टम वाले घर रवाना कर दी गइ

जेनी लिखकर अलमारी के ऊपर जो एक पुर्जा छोड गइ थी वह पहले-पहल एमा उडवानी को मिला वह उस कापी का फटा हुआ पन्ना था जिसपर हर जेनी को अपन खर्च वगैरह का हिसाब किताब रखन जरूरी

होता है वचकाने से गोल-गोल अक्षर बो थे इबारत पैन्सिल से लिखी थी और साफ था कि अपनी अन्तिम घडियो म लिखने वाली के हाथ कांप नही रहे थे लिखा था

"मैं हाथ जोडकर कहती हू कि मरी मौत के लिये कोइ जिम्मदार नही है मैं मर रही हू क्योकि घिनौना रोग लग गया है और लोग सब यहां बुरे हैं और जीना बेकार है, उससे ऊब होती है मेरी चीजें — तिमिरा जानती है वह कहे जैसे बाट दी जायें मैंने खुलासा बता दिया है"

ऐमा उडवानी ने मुडकर तिमिरा को देखा वह दूसरी ओर लडकियो के साथ वहो खडी थी देखकर उसकी निगाह मैं कैमी एक ठडी तीखी नफरत सी जल आई और सिसकारी भरती बोली,' तो सुअर की बच्ची तू जानती थी पहले से कि यह तैयारी हो रही है क्यो री ? चुडैल ? जानती थी और कहा नही "

वह आगे बढने को जरा पीछे हटी जैसा कि उसकी आदत थी ऐसे ही वेग लेकर वह किसी पर टूटती थी खयाल था कि मार मार कर मैं इसे अधमरी कर दूगी लेकिन हटी कि वह पीछे हटी-की-हटी रह गई एकाएक वह अपनी जगह पर ठिठक आई ज्यो का-त्यो बाया का-बाया रह गया और आँखें वसी ही फटी की फटी रह गईं जैसे कि इस तिमिरा को वह पहली ही बार देख रही हो तिमिरा कुछ ऐसी सख्त थिर दीप्त दृष्टि से देख रही थी कि सहना मुश्किल था फिर धीरे धीरे उसने निगाह ऊँची की ऐसे कि वह एमा के ऐन सामने हो आई और एमा ने देखा कि कुछ सफेद धात की तरह ज्वाला देकर वहाँ कुछ जल रहा था देखा और वह सहमी रह गई

६

उसी शाम अन्ना मरकानी के ठिकाने के इतिहास मे एक बडे महत्त्व की घटना घटित हुई वहाँ का सारा कारोबार मय जायदाद, चल-अचल,

ड चेतन, अन्ना से एमा के हाथ म पहुच गया अब रालकिन एमा उड-
नी थी

अर्से से इस सम्बन्ध की बातचीत उनमे थोडी बहुत होती रही थी
दुकान म इसकी अफवाहे सुनी ही जाती थी मगर जेनी की मौत के एका-
क बाद यह अफवाहें एक बार ही वास्तविकताए बनकर सामने आयी,
ा वहा कि लडकियाँ बहुत देर तक तो मारे अचरज और डर के कुछ ठीक
रह समझ ही न सकी व अपने अनुभव से खूब जानती थी कि एमा के
ालकिन होने का मतलब क्या है दया का उसमे नाम नही था और ऐसे
रतती थी जसे एकदम उस्तादनी हो उसमे गुमान था, लालच था और
ो भी उसकी चहेती बनती उसके लिए एमा का अनुराग अजब अजब
रह के रूप लेता था यह अनुराग अप्राकृतिक हो जाता और उसका चाव
दलता रहता था इसके अलावा यह बात किसी से छिपी न थी कि उन
द्रह हजार रुपयो म जो चलता कारोबार पान के एवज म पहली मालकिन
ो दिये गये थ कोई तिहाई रकम वर्कश की थी वर्कश म और उस मोटी
मा म मुद्दत से किसी तरह का सम्बन्ध चलता था, कहना मुश्किल है
ास्ती भी थी, व्यवसाय भी था इस तरह के लोभी बेहया और निदय दा
ादमियो के सयोग म स क्या कुछ नही फल सकता था और लडकिया हर
रह प सकट का अपन लिये अनुमान करती सशक हो आइ थी

अन्ना मरकानी ने भी सस्ते पर सारे कारोबार का सौदा उठाकर चन
ी सास ली वजह सिफ यही न थी कि वर्कश कभी भी किसी तरह का
हाना खोज कर मामला उठा सकता और सारे काम धाम को और उसको
कदम हडप जा सकता था हो सकता है कुछ दबी ढकी गुप चुप बाता का
र्कश को पता न हो फिर भी बाता और बहानो कि कमी न थी साल मे
ैकडा ही एसी वारदातें मिल सकती थी कि और कई उनमे ऐसा सगीन
प ले सकती थी कि उनकी बिना पर न सिफ महफकला हो, खत्म ही
ाता बल्कि उसके अलावा अदालत मे घिसटने की नौबत आ जाती

यो अन्ना मरकानी खीजती बिलखती कम न थी अपनी किस्मत को
ोसती और अपने अनाथपने का रोना रोती थी कहती मैं गरीबिनी

बेचारी लुट गई पर अन्दर से वह सौ^ पर नाखुश न थी सच यह कि इधर काफी समय से उसे लगने लगा था कि मरा बुढापा उस पर बढा चला आ रहा है और जान क्या-क्या रोग वह साथ न लायेगा इसमे चाहती थी कि आखिरी वक्त कुछ एकान्त बिसराम उसे मिल जाय और सिर पर खडी कोई उलझन न रहे सच यह कि अपनी शुरू जवानी मे जब ख नगी रखल की हैसियत मे उसन जिन्दगी शुरू की थी तो उसे इस सब का सपना भी न था मगर आप ही आप एक एक चीज चली गई जड नग सा एक मकान खडा हो गया जो शहर के करीब बीचो बीच खास इज्जतदार मोहल्ले मे बना था इन्टरनैशनल बैंक म नकद सवा लाख रुपये जमा था सुन्दर, प्यारी बिटिया बडी थी जिसे आज नही तो कल अच्छा खासा कुलीन वर मिल जाने वाला था क्योंकि भरे पूरे दहेज का इन्तजाम था और जेवर भी कई नग चढाने की तैयारी थी ऐसे कोई इजीनियर या बडा ठेकेदार या साहब जायदाद या कमेटी कौंसिल का मेम्बर मिलना म शक न था ऐसे बुढापा शान्ति और सम्पन्नता मे भरा पूरा था अब सम्भव था कि अपन आराम के साथ बिना किसी उतावल या बनाव के सभ्रम और शालीनता के साथ नाना व्यजनो का उपभोग करती उसके स्वभाव म इन सुस्वाद पदार्थों के लिये आग्रह की कमी न थी उसी प्रकार नाना पत्र आ सकते थे जिनका उसे चाव था शाम होने पर नगर की सम्भ्रान्त महिलाओ के साथ आना प्वाइण्ट की बाजी पर ब्रिज खेलती यह भद्र और अभिजात महिलायें मानो अन्ना के व्यवसाय का अता पता न जानती थी न जानकर उनकी अभ्यथना सविशेष हो जाती थी कारण कि व्यवसाय कोई हो उससे होने वाली आमदनी की रकम तो थोडी थी नही उस आमदनी के मुताबिक ही उनका आदर बढता था और अन्ना को वे पूरा मान देती थी और इन अभिजात वर्ग की सम्मान्य महिलाओ मे जो उसके बुढापे के सुख चैन की साथिन और सहयोगिनी थी, क्रमश सम्मिलित थी—चीजो पर रुपया उधार देने वाली एक बडी दुकान की मालकिन, दूसरी थी रेल लाइन के पास बने बडे होटल की मालकिन तीसरी की थी एक जौहरी की दुकान जो यो बडी न हो पर जिसमे

बडी चोरियो का सब माल जाके पहुँचता था, आदि आदि इधर अन्ना मरकानी भी इनके बारे म जानने लायक काफी जानती थी अगर्चे वह सब कहने की जरूरत न थी इस समाज म यह जरूरी न था कि घरबार की आमदनी या उसके पिछवाडे की बात की जाए वहाँ तो कुशलता को मान मिलता था और साहस को, सफलता को, और सबसे अधिक व्यवहार की सभ्य शालीनता को सम्माननीय समझा जाता था

इसके अलावा एक और बात थी अन्ना का मस्तिष्क चाहे कितना ही सीमित और विशेष विकसित न हो मगर उसम कुछ प्रत्युत्पन्न बुद्धि थी कुछ अन्दर की सूझ थी जिसका सहारा लेकर जीवन भर वह पगडो झमेलो से किनारा लिये चली गई और समय पर राह की उसे कमी न रही इससे गबदू की आज आकस्मिक मत्यु और कल जेनी के अपघात के बाद वह अन्दर-ही-अन्दर सीधे समझ गई कि भाग्य अब विमुख होने वाला है, अब तक उसने उसका साथ दिया आपदायें टलती गइ बल्कि विपत्तियो मे से उसके लिय विभव निकलता चला गया पर हवा को उसने रुख से ही पहचान लिया और समय पर उसने चाल बदली

कहते हैं जब किसी मकान मे आग लगने को होती है या जहाज डूबने को होता है तो वहाँ भिट बनाकर रहने वाले चूहे आपदा की टोह पा जाते हैं और अपनी जगह बदलने लग जाते हैं कुछ ऐसी ही घ्राण शक्ति मानो अन्ना मरकानी म थी वह जैसे अनागत को सूघ गइ माना वह भी चूहा हो कुछ अन्दर उसके उठता और आगे की कह जाता और वह अपने अनुमान मे सही निकली जेनी की मौत के फौरन बाद यानी अन्ना के हाथ से जाने और एमा क हाथ मे आने के साथ ही वश्याओ के उस ठिकाने पर मानो एक साथ काले बादल घिर आये मौतें हुइ, मुसीबतें घटी और एक-पर एक वारदातो का सिलसिला ऊपर से फट पडा शेक्स पियर के दुखान्त नाटको में जैसे एक दुख आता है तो पीछे उमडते दूसरे दुखो की धारायें भी टकराती सी चली आती हैं कुछ वही हाल इस ठिकाने का बना यही क्यो आस पास के दूसरे चकलो के साथ भी कुछ ऐसा ही अघटनीय घट उठा

धन्धे के हाथ मे के हफ्ते भर बाद पहले मरने वाली खुद अन्ना मर-कानी ही थी ऐसा अक्सर होता है जो लम्बे वक्त तक कहो तीस चालीस वर्षों तक एक ही पटडी पर चले आत है उसमे अलग हटने पर फिर व जी नही पात जग म गये नामी बहादुरो का यही हाल होता है तन्दरुस्ती ऐसी कि रश्क हा और तबियत फौलाद सी सगन पर मोर्चे से हटकर घर से आराम से बठे कि लुढ़क गए ऐसे ही बड़े स्टोरिये आज बाजार को ऊपर मे नीचे रखने है पर उम भारा खतरे के ऊँच नीच, उथल-पुथल की दुनिया से हटकर चन से बैठ नही कि आँख मूद सिधार रह इसी भाति बड़े कलाकार सहप और प्रकाश से बाहर हुए नही कि कमर से झुक आय सिमट गए और चलन बन उसकी मृत्यु ऐसी हुई कि अनुकूल ताश खेल रही थी कि उसे अपना भी कुछ गडबड मालूम हुआ सायना से कहा कि जरा ठहरें, एक मिनट मे जरा कमर सीधी करके म आती हू गई पलग पर लेटी गहरा एक *सास लिया और लिजिय — परलोक चल बसी चेहरा शात ओठो पर थकी* सी एक तुष्ट मुस्कराहट हसिया सविश जो जीवन के राह भर उसके साथी रहा और वफा निवाही — वह भी इसके बाद महीने भर से ज्यादा न रहा और साथ दन चल दिया दायम रहा जरा पीछे और जरा नीचे मृत्यु के बाद भी उसने अपनी वह दायम जगह निवाह ही रखी

वहीं एक अकेली उत्तराधिकारिणी बची उसने जडे नग जसे अपने मकान को बडी सफलता के साथ बचकर नक्द कर लिया शहर के बाहर लगी अपनी जमीन को भी बेच डाला आशा के मुताबिक बडी अच्छी जगह विवाह किया और अब आज दिन तक उसे विश्वास है कि उसके पिता लायलपुर से गेहूँ को दूर दिसावर भजन का जा लम्बा-चौडा व्यवसाय करते थ वही उद्यम उसकी सम्पन्न कुलीनता के मूल मे है

जेनी के शव को जब गाडी म रखकर मुआयने के लिए भेज दिया गया तब उसी शाम एमा के आग्रह पर सब जनी ड्राइग रूम मे आकर इकट्ठी हुइ वह ऐसा समय था जब शायद ही कोई बाहरी मेहमान इस तरफ आता इकट्ठी हुई पर कोई उनमे विरोध का एक शब्द न कह सकी जेनी की हैरत-नाक मृत्यु का असर उन पर ताजा था और अभी वह सब उससे तनिक न

उभर सकी थी पर इस दिन भी हमेशा का माफिक अपना साज सजाना होगा रोशनी से जगमगाते हाल मे पहुच कर गाना नाचना होगा और वस्त्रा म ढकी स ज्यादा उघडी अपनी दहा का प्रदशन और प्रलोभन दकर कामतप्त लागा को रिझाना होगा

और अन्त म हाल म खुद श्रीमती एमा उडवानी का पदापण हुआ इतनी प्रभावशाली वह पहल कभी न दीखी थी सिर स पैर तक काली साडी थी उसम स विशाल वृक्ष किल म स दो बुज की तरह सन्नद्ध से बाहर निकल थे उन पर ऊपर स दोहरी ढोड्यां रक्षा कर रही थी तहरी होकर एक सोन की चन ग्रीवा का वलय बनकर वहां लटकी हुइ थी उसक सिरे पर एक लाकट झूलता-झूलता पेट तक नीचे आ गया था

"सुनिये, आप लोग " रोबीले स्वर म उसने शुरू किया म कहती हूँ सब खडी हो जाए" एकाएक उसक स्वर म हुक्म बज आया जब मैं बोलू ता आप लोगो को खडे होकर सुनना चाहिए'

सब जनी हैरत म एक दूसर को देखने लगी यह हुक्म तो ठिकान म एक नई चीज ही थी ताहम लडकियाँ आखो म अचरज भरे, मुह बाए सी झिझकती ठिठकती एक क बाद एक खडी होती गइ

"यह ठीक है इस रोज से तुम लोगो को मेरा वैसा ही आदर करना चाहिये जो मालकिन का होता है" बडी महत्त्वशीलता और गम्भीरता से एमा उडवानी न कहना शुरू किया "आज इस तारीख से यह चीज बाकायदा श्रीमती अन्ना मरकारी क हाथो स मरे एमा उडवानी के हाथो म आ गई है लिखा पढी हो गई है, दस्तावेज हो चुका है आशा है हम लोग सदभाव से रहगे और कोई अनमनापन नही आयगा आप सब लोग ऐसे व्यवहार करेगी जसे आज्ञाकारी, कुलीन, शील स्वभाव की लडकिया को करना चाहिए जैसे माँ होती है वैसे आप मुझे समझें लेकिन ध्यान रहे कोई बेहूदगी मैं बर्दाश्त नही करूँगी काम म सुस्ती या नशा, या और किसी तरह की बहक को नजरन्दाज न किया जायेगा कोई अव्यवस्था या हुक्म अदूली सही न जायगी शायद मैडम शैप्स ज्यादा सख्त थी और उन्होंने कडी ताकीद मे रखा और सिस्त का सवाल है, वहां मैं कम

अगह यही इन्तजाम रहता है कोइ यह न कहे कि एमा उडवानी जाक थी, मक्खीचूस थी या किसी का खयाल नहीं करती थी मगर जो किसी ने आज्ञा भग की या आलसीपना किया या अमानत म ख्यानत की यानी कि गाहकी के अलावा किसी को मन का प्यार दिया तो म फिर वह सजा दूँगी कि याद रहे सरकडे की तरह निकालकर बाहर फेंक दूगी गली म या उससे बढकर भी कुछ हो सकता है तो अब तुम लोगो ने सुन लिया, सब जो मैं कहना चाहती थी नीना, यहाँ आओ पास आओ और बाद तुम सब लोग भी बारी-बारी से पास आती जाओ"

नीना अनिश्चय से मैं पडती हुइ एमा उडवानी के पास आइ और एक अचम्भे स मैं चिहुँककर पीछे हो पडी एमा उडवानी ने अपना दाँया हाथ बढाकर उसकी तरफ किया हुआ था उँगलियाँ उसकी नीचे की ओर थी और यह धीमे धीम नीना के होठो के पास आ रहा था कि उसे चूमा जाये

"चूम सकती हो इसे " कहते समय एमा उडवानी की आँखो की पलकें लगभग मिल आई थीं सिर पीछे को था स्वर प्रभावशाली और दढ था मानो सिंहासन पर बैठी राजरानी हो

नीना अचरज से एसी बौखला आइ कि कुछ देर उस सुध न रही उसका हाथ एकाएक पीछे हटकर अपने ही वक्ष पर आ लगा फिर उसने अपने को सँभाला सामने बढ़े हुए हाथ का आवाज देकर चुम्बन किया और एक ओर हट गइ उसके बाद जोहरा, हरीजा, बण्डी और दूसरी क्रमश बढती आता गइ सिफ तिमिरा ही दीवार के पास आइने की तरफ पीठ किये सब दखती अचल खडी रह गइ- यही आइना था जिसमे बीते दिना जेनी इस हाल म आत-जात अपने को अक्सर देखा करती और देखकर खुश हुआ करती थी वह तब अपनी ही छवि पर रीझ रीझ जाया करती थी

एमा उडवानी की निगाह अन्त म उस पर आकर टिकी निगाह मे अमित मान था, और अमित ताप, जैसे फले पत्तो म से कोइ नाग दखता हो लेकिन निगाह का कोइ जादू चलता न दीखा तिमिरा उसे ऐसे झेल गई जसे कुछ हुआ न हो, निगाह ने उसे छुआ न हो उसके चहरे पर कोई प्रभाव न था, कोई भाव न था तब नई मालकिन ने हाथ अपना नीचे कर

लिया चेहरे पर कुछ मुस्कराहट सी ले आई और भरे गले से बोली,"और तुमसे तिमिरा मुझे अलग म कुछ बाते करनी है जहां हम दो ही हो आ गो चलो"

"मैंने सुन लिया, एमा उडवानी !" अविचल भाव स तिमिरा ने उत्तर दिया

दोनो उस छोटी सी कोठरी म आये जहाँ पहली वाली मालकिन अना मरकानी नीम डालकर काफी पीना पसद किया करती थी वहां एमा दीवार पर आ बैठी और सामने जगह दिखाकर तिमिरा को बैठने को कहा कुछ देर दोना स्त्रियां चुप बनी रही दोनो एक दूसरे के चेहरे पर मानो टटोल रही थी दोना म परस्पर शका थी

तुमने ठीक किया तिमिरा" अन्त मे एमा उडवानी बोली,"ठीक किया कि तुम उन भेडो की तरह मेरा हाथ चूमने को नही बढी चली आई मैं खुद अपनी तरफ से तुम्हे वैसी हालत मे डालने वाली न थी मेरी तबीयत थी कि उन सब के सामने जब तुम चलती हुई मेरे पास पहुँचोगी तो मैं तुम्हारे हाथ मे हाथ लेकर दबाऊगी और कहूगी कि अब स तुम यहां कि पहली सरक्षिका हो और मेरे बाद जगह तुम्हारी है तुम्हारी तनख्वाह वग़ैरह '

"धन्यवाद है "

"नही, टोको मत, मुझे कहने दो, अपनी बात पूरी कर लू तब तुम उस पर रायजनी करना लेकिन क्या कृपा कर बतलाओगी कि तुम जो हाथ तमचा लिये, उसका मुह मेरी तरफ खोले थी उसका क्या मतलब था क्या यह हो सकता है कि मुझे मारना चाहती थी ?"

"उल्टा, एमा उडवानी" आदर के साथ तिमिरा ने उत्तर दिया,"उल्टे मुझे मालूम होता है कि आप मुझे मारने पर उतारू थी"

"शिव, शिव ! तिमिरा तुम ऐसा सोचती हो क्या तुमने ध्यान नही दिया कि जब से मैं तुम्हे जानती हूँ तब से हाथ से छूने की तो बात ही दूर कभी सख्त शब्द से भी तुम्हें नही पुकारा तुम कहती क्या हो ? समझती क्या हो ? भला, इन देसी देहातिनो के साथ मैं कभी तुम्हे एक समझ

सकती हूँ राम दुहाई ! मैंने दुनिया देखी है और लोगों को पहचानना जानती हूँ पहली निगाह ही मे समझ गई कि तुम अच्छे खानदान की हो, सभ्य हो और यही ले लो कि मुझसे कहीं ज्यादा पढी लिखी हो, तुम होशियार हो शाइस्ता और तमीजदार ! मुझे पक्का यकीन है कि तुम संगीत भी खासा जानती हो सच कहूँ तो मैं पहले से ही तुमसे कुछ-कुछ अब कहूँ कैसे कुछ-कुछ प्यार करने लगी थी और तुम—तुम ही मुझे तमचा दिखाती हो मुझे कि जो तुम्हें चाहती है कि जो तुम्हारी दोस्त और मित्र बनने की ख्वाहिश रखती है और तुम्हारे बड़े काम आ सकती हो हाँ, तो क्या ख्याल है तुम्हारा ?"

' खयाल, कुछ भी तो नहीं, एमा उडवानी !" तिमिरा धीमे से विनम्र सयत भाव से बोली "बात सीधी सीधी थी रिवाल्वर तकिये के नीचे से मुझे मिला था मैं लाई थी कि तुमको सौंप दूगी तुम जब यह खत पढ़ रही थी तो मैंने दखल देना पसद न किया, पर जब तुम मेरी तरफ मुड़ी तो मैंने रिवाल्वर बढा कर तुम्हारी तरफ किया कहना चाहती थी कि एमा उडवानी, देखो यह क्या चीज मिली है क्योंकि इस पर मुझे खुद बेहद अचम्भा था जेनी के पास बराबर यह रिवाल्वर था तो भी उसने लटक कर मरने जैसा बदनाम तरीका क्यो अपनाया बस और तो कोई बात नहीं "

एमा उडवानी की आखो पर की भौंहें घनी झबरीली, डरावनी-सी थी भौंहें ऊपर उठी आखें खुशी से फली रह गई, और एक सच्ची अकृत्रिम मुस्कराहट मुह से शुरू होकर उसके गालो तक फैल गई जल्दी से उसने दोनों हाथ तिमिरा कि ओर बढ़ाये बस, यही बात थी ! ओह मेरे भगवान और मैंने क्या राम जाने कि मैं क्या सोच गई लाओ अपने छोटे-छोटे मुलायम से हाथ लाओ लाओ, उन्हें दबाऊँ आओ कि तुम्हें कलेजे से लगा लू और चूम लू "

वह चुम्बन छोटा था काफी दीर्घकालीन था और तिमिरा को उससे छूटने मे दिक्कत हुई उसे यह आलिंगन कुछ बहुत रुचिकर न हुआ था किन्तु अपने आलिंगन से मुक्त करते ही एमा उडवानी ने कहा, "तो, आओ, व्यवहार की भी एक-दो बात कर लें मेरी शर्तें ये हैं तुम यहाँ की

सरीखा होगी नफे मे, मानो बचत मे सीधा पन्द्रह फी सदी तुम्हारा होगा, पन्द्रह फी सदी उसके अलावा ऊपर से कुछ तनख्वाह तीस चालीस या तुम चाहो तो चलो पचास रुपये माहवार सही एक चीज हुई ना—क्यो सच-सच कहो मुझे गहरा निश्चय है कि तुम्हारे सिवाय कोई दूसरी नही हो सकती कि जिसकी मदद से इस जगह को ऊँचा रुतबा दिया जा सकता है ऐसी इस सारे शहर म बल्कि सारे उत्तरी भाग म मुकाबले की कोई जगह न रह जाए तुम्ह तमीज है, पहचान है, चीजो की समझ है अलावा इसके तुम सख्त म सख्त अनमने और नाकदार मेहमान को उभार कर बस म कर सकती हो रिझा सकती हो कभी अगर कोई बहुत ही खास अमीर नवाबजादा—रायबहादुर या रायजादा कुँवर साहब कोई—मा'न लो देखे और तुम्ही पर फिदा हो जाए—क्योकि तिमिरा तुम्हें पता नही, तुम किस कदर खूबसूरत हो (मालकिन ने यहाँ आँखो को आधी मूद कर तिरछी नजर से देखा) तो मुझे कतई शिकायत न होगी अगर तुम उसके साथ कुछ वक्त मजे मे गुजारना पसन्द करो सिर्फ यह ख्याल रहना तुम्हे काफी है कि यह तुम्हारे हक की चीज नहीं, न फर्ज मे है तुम्हारी हैसियत रुतबा, काबलियत वगैरह वगैरह—तुम समझती हो ना? क्या कहती हो उर्दू मजे मे समझ लेती हो ना?"

'उर्दू उतनी तो नही जितनी बगाली उधर रही हूँ ना तो भी काम चलाने लायक जानती हूँ"

'तो खूब! तुम तो कमाल बोलती हो कोई कह नही सकता कि जुबान म कही कमी है आओ उर्दू मे बात करें हिन्दी से उर्दू मीठी लगती हैं मादरी जबान ठहरी क्यों ठीक है?"

ठीक है"

समझी ना? आखिर ऐसा मालूम हो कि तुम अपने बावजूद बडी मजबूरी से झिझकती-सी राजी हुई है जसे निगाह से चोट खा गई है और जरा बेबस हो गई है समझी ना? यह चीज उन्ह बडी प्यारी लगती है गोया कि मेरे इशारे के तले बेबस हो इस बनावट के लिए बेवकूफ थलियो तक उँडेल देते है ताहम मालूम होता है तुम्ह सिखाना मुझे अब कुछ बाकी

नही है"

"हाँ मोतरिमा, तुम मुनासिब ही कह रही हो गहरी बाते, माकूल बाते मगर कोई एक राज की चीज नही है या छोटी चीज नही है सजीदा और वजनी किस्म की बातचीत है तो ऐसा क्यो न करें कि सीधी अपनी देशी बोली में बातचीत करें मैं तुम्हारी आज्ञा मानने को तैयार हूँ"

'हाँ तो मैं तुमसे आशिक की बात कर रही थी मै इस शौक से तुम्हे मना नही करती लेकिन हाशियारी से काम लेने की जरूरत है अच्छा यह होगा कि वह साहब यहाँ आए नही या हत्तुलइमकान कम आए मैं तुम्हे कुछ दिन दूगी और वे खाली होंगे और तुम बाहर जा सकोगी हालांकि बेहतर होगा कि अगर तुम उसके बगैर निभा सको इसमे तुम्हे ही नफा है आखिर मे यह चीज गदन का एक जूआ हो जाती है और एक बोझ और अपने तजुर्बे से मैं तुम्हे यह कह रही हूँ जरा देर सब्र करो तीन या चार साल मे कारोबार फैल जायगा इतना कि खासी जमा पूजी तुम्हारे नाम हो जायेगी और तब मैं तुम्हे पूरे कारबार मे बाकायदा शरीक के तौर पर ले लूगी जिसमे पूरे और बराबर हक होंग दस बरस बाद तक अभी तुम जवान और खूबसूरत रहन वाली हो और तब तुम जिस कदर और जिस हैसियत के चाहे मर्दों को खरीद सकोगी उस वक्त तक तुम्हारे दिमाग मे जो खामखयालियाँ है और खुराफात है सब साफ हो जायेंगी तब जरूरत यह न होगी कि तुम्हे कोई पसन्द करे और तुम्हारा इतखाब करे बल्कि तुम होगी जो छाँट और चुनाव करोगी जसे कि व्यापारी मोतियो-हीरो मे से चुन चुनकर अपने लिये एक एक छाँट लेता है बोलो, रजामन्द हो ?'

तिमिरा ने आँख नीची कर ली उसके ओठ जरा मुस्कराये, बोली, "एमा ! तुम सुनहरी और सच बात कहती हो मैं अपने आशिक को छोड दूगी लेकिन फौरन नही उसके लिये मुझे दो हफ्ते चाहिये कोशिश करूँगी कि वह इस बीच यहाँ न दिखाई दे मुझे तुम्हारी बात मजूर है'

शाबाश ! तुम तिमिरा, एक गौहर हो ' हँसते हुए एमा उडवानी ने कहा, "आओ, इस राजीनामे को अपने बोसे की मोहर देकर एकदम

पक्का कर दें"

कहकर उसने तिमिरा को कसकर अपने आलिंगन मे लिया और उसे चूमना शुरू किया तिमिरा आखें झुकाये उस आलिगन म बधी लजीली शर्मीली, कोमल किशोरिका-सी हो आई अन्त मे मालकिन के भुजबन्द से छूटकर उसने कहा, 'एमा उडवानी, तुम देखती हो कि तुम्हारी हर बात मुझे मजूर है लेकिन उसके एवज एक विनय है मेरी, जो तुम्ह पूरी करनी होगी उसम खच कुछ न होगा वह यह है कि मुझे उम्मीद है कि अपनी स्वर्गीय जेनी को तुम मुझे यहा की और सब साथिनो के साथ शवघाट ले जाने दोगी"

सुनकर एमा उडवानी का चेहरा खट्टा पड आया "ओह! प्यारी तिमिरा, अगर तुम यह चाहती हो तो इस तुम्हारी सनक के खिलाफ मुझे कुछ कहना नही है मगर आखिर क्यो? इससे उसकी तो कुछ मदद होगी नही जो मर चुकी है कोई वह जिन्दा तो हो नही जायगी एक खामखाह की जजबाती चीज है, जिसका नतीजा कुछ नही मगर खर, तुम्हारी मर्जी लेकिन कानून ज्यादा तो मैं जानती नही और मुझे पक्का भी नही है लेकिन खुदकशी करन वाले को बाकायदा दफनाया नही जाता बाहर कही गढे वढे मे फेंक देते हैं'

"नही, मेहरबानी करके यह मुझपर रहने दीजिये और मुझे मन की करने दीजिये मेरी सनक सही, मगर हाथ जोडती हूँ यह मान लीजिय मेहरबान हो एमा, परवरिश करती हो तुम मलका हो और मैं वायदा करती हूँ कि आखिरी बार है इसके बाद और कुछ न मांगूगी जसे अपने अफ्सर जनरल के आधीन सिपाही रहता है, गुलाम और फरमाबरदार मै वैसे ही रहूँगी"

"अच्छा" एमा उडवानी ने गहरी सांस लेकर कहा, 'मैं अपनी बच्ची को भला क्या इन्कार कर सकती हूँ लाओ अपना मुलायम हाथ दो आओ आइन्दा हम दोना अपने मुश्तर्क नफे के लिये शाना बशाना काम करेंगी और तरक्की करेंगी"

इसके बाद दरवाजा खोलकर डॉइंग रूम से आर-पार ड्योढी की

तरफ उसने पुकारा "साइमन!" और जब कमरे मे साइमन दाखिल हुआ तो उसने विजय और गौरव के भाव से कहा, "जाओ, एक बोतल शैम्पेन की लाओ असली चीज, सही मार्के की वह जो वहां बर्फ म दबी रहती है और फौरन, जाओ" साइमन फटी सी आंखो से उसे देखता रहा और हुकुम सुनता रह गया आखिर वह अपने काम पर लौटा

तुम्हारी सेहत के लिये पी जायगी तिमिरा अपने नये कारोबार उसके शानदार रौशन मुस्तकबिल के लिय"

'बखुशी, मेरी मालकिन, मेरी मालिका" तिमिरा न जवाब मे कहा, "तुमने मेरी राह को रोशनी डालकर साफ कर दिया है सच कहती हूँ हम किसी को पता न था कि तुम असल में इतनी उदार हो, इतनी दूरदेश हो अब मैं समझी कि क्यो मुझे सब चीजो म पहले कहा कि शिप्त होनी चाहिय कि बिना घबराके पहले आज्ञा का पालन होना चाहिये क्यो कहा यह पहली चीज है और सबसे बढ़कर है क्या यही है ना?

'ओह! हां" खुशामद से रीझ कर एमा उडवानी ने कहा "यही बात है"

शैम्पेन आई और जब पी ली गई तो तिमिरा ने कहा, 'और ऐ मरी प्यारी आका और मालिका मुझे तुमसे कुछ इल्तिजा करनी है—'

'जरूर, बखशी, मैं लुश हूँ कि तुम्हे कुछ कहना है जानती हूँ कि तुम कोई बेवकूफाना मांग न करोगी जाओ, तुम्हारी इल्तिजा पहले स कुबूल हो गई

"आप जानती है" तिमिरा कहती गई 'और मैं बखूबी समझती हूँ कि मरी हैसियत बहुत कुछ एक खादिम की"

'नहीं," बीच म एमा ने सभ्य म व से राही करते हुए कहा, हैसियत मेरी एसिस्टेंट की—"

'दुहाई है! तिमिरा ने नम्न गोपी करके कहा "आपने खुद कहा कि कभी खास और खास मौका पर मैं सबसे लायक और बकीमती दौके के तौर पर"

"यकीनन नायाब और बेशकीमती !"

"इसी से मुझे हौसला होता है कि मैं आपसे कुछ नगद पेशगी पाने की उम्मीद करूँ आप मुझसे इत्तिफाक रखेंगी अगर मैं कहूँ कि मुझे अब से एसे लिबास मे रहना चाहिये कि मैं किसी अमीराना ठिकाने से ताल्लुक रखती हूँ और किसी कदर ड्रेस मे वह भी कुछ हो कि तबियत देखने वालो की फरहत पाएँ, और उसा उभार आए और फीते, विक इत्र और खुशबुएँ "

एमा सुनकर बाग-बाग हो आई "ओह ! मेरी प्यारी तिमिरा तुम तो मन नही मेरे खयाल ही चुरा लेती हो"

"मैं खुश हूँ कि मैं आपकी हूँ मगर ताहम जरूरी है कि मैं जरा अपने कपड वगरह देखू, सभालू और वह जितना जल्द हो सके अच्छा, मगर अफसोस है कि मेरे पास "

"ओह ! क्या कहती हो, इन चीजों के लिये मैं पैसे का मुँह देखूँगी बता कितना चाहिये ?"

'मैं समझती हूँ यही कोई दो सौ रुपये" तिमिरा न झिझकते हुए कहा

"नही, तीन सौ"

तिमिरा ने कपट विनय से बढकर एमा के हाथ को चूमा

एमा क पास से जब वह लौटकर गई तो कड़ुवी मुस्कराहट के साथ उसने साचा, "तो आखिर उस स्त्री को जो हम सब को प्रिय थी हम एक इसान की तरह दफना सकें"

कहते हैं कि महात्मायें भाग्य लाती हैं इस कहावत मे कुछ भी सच है तो वह इस शनिवार को प्रत्यक्ष हो गया उस दिन अभ्यागतो की सख्या सामान्य से ज्यादा थी बल्कि किसी शनिवार की शाम को जिसे सुनहरी शाम कहते हैं कभी इतनी भीड न होती थी सही कि लडकियाँ जो बरामदे से इधर स उधर गुजरती और टहलकर जेनी के कमरे की तरफ झांके बिना न रहती—उनके आते जाते कदमो से भी सख्या बढी-सी लगती थी वे कनखियो से अन्दर देखतीं और सिहर जाती कुछ

छातियों पर हाथ रखकर सोच में सहमी रह जाती पर रात गहराती गई और जाने कैसे मौत का डर मानो भीतर बसकर सहने लायक होता चला गया सब कमरे मेहमानो से आबाद थे स्वागत भवन मे एक नया वायलिन वाला लगातार उसमे धुन फूके जा रहा था एक साफ चेहरे और खुली तबियत का, नई उमग का जवान था जिसको बूढी आँखो का प्यानो वाला कही से ढूढ कर ले आया था तिमिरा के सरक्षिका बनने की खबर पर कोई तहलका न हुआ एक सर्द हैरानी और खुश्क बन्द मजूरी से उसे सुन लिया गया लेकिन वक्त पर आकर तिमिरा ने छोटी गोरी मनका के कान मे फुसफुसाकर कहने का मौका निकाल लिया, "सुन मनिमा, तू सबसे कह दे कि मेरे सरक्षिका बनने का कोई जरा ध्यान न करे यह तो जरूरी था सुना, सब जनो जसे चाहे करें सिफ मेरा खयाल न करें और ऊपर शिकायत करने न दौडें मैं वही हूँ जो पहले थी सबकी साथिन और दोस्त और और आगे देखती चल क्या होता है"

७

अगले दिन इतवार को तिमिरा के सिर चिताओ पर चिताएँ आ लगी उस पर एक धुन सवार थी अचल और अडिग कि अपनी प्यारी सखी को कुछ क्यो न हो वह उसी तरीके से और उसी जगह बाकायदा दफन करायगी जहाँ दुनिया के दूसरे इज्जतदार लागो को दफनाया जाता है

वह उन अजब किस्म के लोगो म से थी जो ऊपर से या शान्त निष्क्रिय और आत्म ग्रस्त दीखते हो पर अन्दर जिनके असाधारण शक्ति छिपी रहती हो यह शक्ति मानो आँख मीचकर सोई पडी रहती है और अनावश्यक अपव्यय से सदा अपने को बचाती है पर रहती चौकन्नी है कि दिन मे सजग होकर उठ पडे और विघ्न बाधाओं की तनिक परवा न कर आग बढ दौडे

कोई बारह बजे के लगभग वह पुरान शहर मे एक गाडी म सवार हुई और एक नन्हीं-सी लम्बी गली में से होती हुई खुले चौक म पहुँची

जहाँ पैंठ लगा करती थी पास ही किसी कदर सडा सा चाय घर था वहाँ उसने गाडी को ठहरने को कहा अन्दर पहुँचकर उसने एक लडके से जिसके बाल सुर्खी मायल थे और जिसकी माँग से तेल बह सा रहा था पूछ-ताछ की कि सैनका तो वहाँ नही आया लडके की तत्परता और तौर तरीके से जान पडा कि वह तिमिरा को अर्से से जानता है उसने जवाब में कहा, "नही मेमसाहब, वह सामन्त कुमार तो अभी आये नही है और शायद जल्दी आयेंगे भी नही क्योकि वह कल लखनऊ के तमाशे म गये थे और सवेरे छ बजे तक वहाँ अड्डे पर जमकर खेलते रह ज्यादा मुमकिन यही है कि वह इस वक्त अपने घर पर हो वहाँ जो चौक म गली मे कमरा ले रखा है ना ? मेमसाहब चाह तो वह इसी घडी भागकर उन्ह जाकर खबर दे सकता है

तिमिरा ने कागज और पैंसिल माँगा और वही पुर्जे पर कुछ शब्द लिखे लिखकर पुर्जा उसने लडके को थमाया साथ टिप के बतौर अठन्नी दी और वापिस गाडी में बठकर चल दी

अब यात्रा कलाकार रोबिसकाया के घर की ओर मुडी तिमिरा जानती थी कि वह शहर के सबसे शानदार जगह पर ठाठ से बने हुए यारोप्पा नाम के होटल म लगातार कई कमरे घेर कर रहती है इस विख्यात गायिका से मुलाकात पा सकना आसान खेल न था नीचे चौकीदार ने कहा कि वह तो इस वक्त कमरे मे मालूम नही होती, और खटखटान पर नौकरानी जो बाहर आई तो वह बोली कि मेमसाहब के सिर मे दद है और किसी मुलाकाती के लिये इस वक्त इजाजत नही है तिमिरा का फिर कागज लेकर उस पर लिखना पडा

"मैं उसकी तरफ मे आपके पास आई हूँ जो एक बार आपके गान को सुनकर घुटनो बैठकर रो आई थी कहाँ की यह बात है, उस जगह की याद दिलाने की शायद इजाजत नही हो उसका नाम न लेना ही भला आपका तब का सदय व्यवहार उसे कभी न भूला क्या आपको याद है ? मगर डरने की बात नही—अब उसे किसी तरह की सहायता नही चाहिये कल वह यहाँ से सिधार चुकी है लेकिन आप उसकी याद मे एक बहुत ही

जरूरी काम को अंजाम दे सकती हूँ जिसको करने मे आपको जरा भी तकलीफ न होगी और मैं—मैं वही हूँ जिसने उस वक्त कुछ कटी-कड़वी मगर सच बातें रानी साहब के हक मे कह दी थीं जो आपके साथ तशरीफ़ लाई थीं उन जली कटी बातो के लिये मुझे अफसोस है और मैं उसके लिये फिर माफ़ी माँगती हूँ "

लिखकर उसने नौकरानी से कहा, "लो यह जाकर मालकिन को देना "

दो मिनट बाद वह वापिस लौटी, बोली, "मेमसाहब आपको बुलाती हैं उन्होंने माफ़ी माँगने को बोला है कि व इस वक्त पूरे लिबास म नही हैं और इसका आप खयाल न करें " आगे होकर उसने तिमिरा के सामने का दरवाजा खोला और उसके अन्दर होने पर धीमे से उसे बन्द कर दिया

वह मशहूर गायिका एक बड़ी-सी मसनद पर फली पड़ी थी नीचे कीमती खूबसूरत कालीन था ढेर-के-ढेर रेशमी तकिये इधर-उधर पड़े थे और काम किये कमख्वाब की तोशकें बिखरी पड़ी थी उसके पाँव चाँदी मे रंग के मुलायम परो से ढके थे उसकी ऊँगलियाँ बड़े-बड़े पत्तो से जड़ी अनेक अंगूठियो से सजी थी जिनका गहरा, मुलायम हरा रंग आँखो को बरबस खीचता था

गायिका की तबियत आज बिगड़ी हुई थी यह दिन उसे खटटा और मनहूस मालूम होता था कल सवेरे उसकी व्यवस्थापको से कुछ अनबन हो गई थी और शाम को पब्लिक ने उसे इस कदर फतेहयाबी से नहीं लिया था कि जिसपर वह खुश होती या शायद यह सिर्फ उसका खयाल था आज सवेरे के अखबार मे उसने क्या देखा कि किसी एक बेवकूफ आलोचक ने जिसे चीज की इतनी समझ न थी जितनी भैस को मोहन भोग की, लम्बे से लेख मे उसके मुकाबले उसकी रकीब टीटानोवा के तारीफ के *पुल बाँध* रखे थे चुनाँचे ऐलीन विक्टोरिया ने अपने को समझा लिया कि उसका सिर दर्द से दुःख रहा है कि कनपटी की नसें जोर से कड़कने लगी हैं, कि *दिल रह-रह कर रश्क से गिरा सा आता है*

आओ, आओ कैसी तबियत है तुम्हारी ?" उसने तनिक सानुनासिक

स्वर से कहा आवाज मध्यम थी, पतली और हलकी शब्दो के बीच मे हलके हलके वह रुकती थी जैसे कि स्टेज पर खेल की नायिकाओ को प्रेम मे या क्षय से मरते वक्त रुक रुककर बोलना पडता है, "आओ बैठो यहाँ तुमसे मिलकर बडी प्रसन्न हू नाराज न होना दद के मारे जी बेहाल है और यह मेरा कम्बख्त दिल ! माफ करना, कि मुश्किल से बोला जा रहा है शायद ज्यादा गाये चली गई और आवाज थक गई "

रोविन्सकाया को अनायास ही उस दिन शाम का पागलपन याद हो आया था कि जिसम जाने वह कहाँ जा पहुची थी साथ ही तिमिरा का चेहरा भी उसे याद था जिसमे जाने क्या था कि भूला न जा सकता था मगर अब तबियत के इस हाल में पतझड़ के इस वीरान से दिन के ढलते पहर मे माना वह उस दिन का पागलपन एक व्यर्थ अनावश्यक सी चीज उसे जान पडी जैसे वह कृत्रिम, काल्पनिक, बेहद बेहयाई की बात हो लेकिन वह उस अजब उन्मत्त सध्या को भी अपने साथ उतनी ही सच्ची थी जब कि अपनी प्रतिभा के बल से उसने अभागिनी जेनी का अपने पैरो पर ला गिराया था वैसे ही इस वक्त वह अपने प्रति सच्ची थी जब स्वीटर कलाप्रवे से उपेक्षित ध्यान और थकान म उसकी ओर देख रही थी और अनक नामी कलाकारो की तरह वह सदा अपने साथ एक पाट खेलती रहती थी वह कभी खुद न होती थी वह अपन शब्द, हाव भाव, क्रिया-विक्रिया को ऐसे देखती जैसे कुछ दूर हो और दर्शक की भाँति उसी भाव और दृष्टि से अपने को जाँच रही हो

उसन आहिस्ता से तकिए पर से अपना नन्हा, मुलायम, खूबसूरत हाथ उठाया और उसे माथे तक ले गई उँगलियों की अँगूठिया के पन्ना की रहस्यमयी गहरी हरियाली चेतनता से काँप सी आई और एक चमक दे उठी

'अभी मैंने तुम्हारे खत म पढा कि वह बेचारी माफ करना, नाम उसका—आते-आते ध्यान से उतर गया "

"जेनी "

"हाँ हाँ, धन्यवाद, याद आ गया तो वह मर गई, कैसे ?"

"आप फाँसी लगा कर मर गई कल सवेरे डॉक्टरी मुआयने के वक्त "

गायिका की आँखें कुछ अधमुदी फीकी-सी थी सहसा मानो चमत्कार देखा हो, खुल आइ उनमे जीवन लहक आया नीचे के पत्रो की भाँति उनकी जीती हरियाली चमक आई और उन आँखो मे प्रतिबिम्बित हो आइ एक उत्सुक्ता, एक भीति, एक अवसन्नता ! "ओह मेरे भगवान ! कसी प्यारी थी वह ! कैसी आला थी ! और अद्वितीय ! और कसी आग सी लहक थी उसम ओह बेचारी, मेरी प्यारी बेचारी और वजह क्या थी "

"तुम जानो वही बीमारी उसने कहा तो था "

'हाँ हाँ याद आया, मुझे याद आया लेकिन उसम फाँसी लगा लेना—कैसा भीपण क्यो ? मैंने कहा था उससे तब कि इलाज कराओ दवा आजक्ल बडे-बडे चमत्कार कर देती है मैं खुद कइयो को जानती हू जो बिलकुल जिन्ह पूरा आराम हो गया समाज मे हर कोई यह जानता है और फिर भी आह बच्ची बेचारी दुखिया "

'इसी स ऐलीन विक्टोरिया, मैं तुम्हारे पास आई हू मैं कभी तुम्ह तक्लीफ न देती मगर मैं जसे जगल म हू कोई नही है कि जिसके पास जाऊँ तुम उस वक्त कितनो दयावान थी हमारे लिये कितना तुम्ह दद था और हमदर्दी थी मुझे सिफ तुम्हारी सलाह चाहिए और तुम्हारी शरण आर जरा-सा तुम्हारा असर '

'ओ मेरी बिनो म जो कर सकूगी करूँगी ओह ! यह मेरा कम्बखत सिर तिसपर यह भयानक खबर बताओ मैं किस तरह तुम्हारी सहायता कर सकती हू ?'

'सच कहूँ तो वह मैं साफ खुद नही जानती " तिमिरा न उत्तर दिया आप जानती हैं कि वे उसे चीर फाड के घर ले गये हैं लेकिन जब तक यह कागज नही तैयार हो और हुक्म ना आ जाए और फिर काम का वक्त भी बीत गया है, यानी मैं समझती हूँ, अभी चीर फाड का ही मौका आया न होगा मैं चाहती हूँ कि अगर मुमकिन हो सके तो वे उसके

शरीर को छुएँ नही आज इतवार का दिन है शायद वे इसे कल के लिए मुल्तवी रख और इस बीच उसके लिये कुछ करना मुमकिन हो सके ''

'मै कुछ वह नही सकती अजीजमन तुम्ही बताओ मगर हाँ, ठहरो डाक्टरो मे, प्रोफेसरो मे देखें कोई अपना दोस्त है क्या? फिर मैं याददाश्त की किताब मे से देख लूगी शायद कुछ किया जा सके''

इसके अलावा,'' तिमिरा कहती गई ''मैं उसे दफन करना चाहती हूँ अपने खर्च पर उसके जीवन काल मे मैं पूरे जी से उसकी थी, उसे चाहती थी''

''म इसमे तुम्ह खुशी से मदद करूँगी पैसे से या ''

''नही नही, बहुत बहुत धयवाद है आपका वह सब मैं अपनी तरफ स कर लूगी आपके सदय हृदय की शरण लेते मुझे झिझक नही है पर यह आप मुझे समझेगी कि यह प्रण की तरह है एक अपन साथ एक मित्र की स्मृति मे प्रतिज्ञा बाँध लेता है मुश्किल असल यह है कि बाकायदा दफनाने का इतजाम कसे किया जाए मालूम होता है वह आस्तिक तो थी नही या विश्वास करती थी तो यो ही और मैं भी भाग्य से ही कभी भगवान का नाम ले लेती हूँ लेकिन मैं यह नही चाहती कि उसे कुत्ते की तरह, या कब्रगाह के घेरे से कही बाहर फेंक दें न कुछ उस पै कहा जाए या फातिहा पढा जाए कह नही सकती कि वह उसे बाकायदा मजहबी ढग से गाडने देंगे कि नही इसलिये चाहती हूँ कि आप अपने मशविरे से मेरी मदद करें या शायद किसी के पास सलाह के लिए भेजना चाहें तो बताए

अब गायिका धीरे धीरे मामले म दिलचस्पी लेने लगी थी वह थकान अपनी भूल चली थी अपना सिर दर्द नाटक के चौथे एक्ट म क्षयग्रस्त नायिका क मरने के तरीके पर उसका ध्यान रहा बल्कि उसकी आत्मा मे एक इबर नया पार्ट उतर चला एक प्रतिभाशाली देवी मूर्ति जो पतिता के प्रति दया से द्रवित होकर नीचे उतरती है यह मौलिक चरित्र था सम्भावनाओं से भरपूर और नाटकीय तत्व भी इसमें विद्यमान थे रोविन्स-

काया अपनी तरह या दूसरे महिमामय व्यक्तित्वों की तरह एक भी दिन, हो सके तो एक भी घडी ऐसी नही जाने दे सकती थी कि जिसमे भीड से अलग खडी न दिखाई दे ऐसे कि लोग उसकी ओर हठात् देखें और उसकी चर्चा करें आज वह किसी देश भक्ति के प्रदर्शन म जोर शोर से भाग ले रही होगी तो कल फाँसी चढने वाले और काले पानी भेजे गये क्रान्तिकारियों के बचाव में प्लेटफार्म के ऊपर म आग और हुँकार से भरे गीत गा रही होगी कारनिवालो में आगे बढ़कर फूल बेचना उसे प्यारा लगता था शिक्षालयों और विश्वविद्यालयों मे मनोविनोद के बडे बडे जलसों मे वह मेज पर चाय पेश करती नजर आती वह अपने पार्ट की अदायगी को पहले से सोच रखती जो कि फिर कल "हर भर के लिए चर्चा का विषय हो जाता उसे चाव था और चाह रहती कि हर कही भीड उसे घेर आए और देखती रहे उसके नाम का जय जयकार हो लोग उसकी हरी सी निली आँखों और भरे से विलासात्सुक उसके मुह को और नरम-नरम मुलायम हाथो की उँगलियो पर झलमलाते उसके नगो को सराहे और प्यार करें

'सब यह एक साथ मेरी समझ मे नही आता" जरा चुप रहकर उसने कहा 'लेकिन जहाँ चाह है वहाँ राह है लगन से क्या नहीं हो सकता और मैं पूरे जी से तुम्हारी बात पूरा करना चाहती हूँ ऐ हाँ, जरा ठहरो एक सुनहरी खयाल दिमाग म आ रहा है क्यो ? उस शाम अगर मैं भूलती नही हूँ, हमारे साथ, यानी मेरे और रानी साहब के अलावा "

"मैं उन्हें जानती नहीं हूँ एक उनमे से आप लोगों से सबसे पीछे कमरे से बाहर गये थे उन्होंने जेनी का हाथ चूमा था और कहा था कि कभी उनकी जरूरत हो तो उन्हें याद करना न भूलें वह सेवा के लिए तत्पर रहेंगे उन्होंने उसे अपना कार्ड भी दिया था मगर कहा था कि वह किसी और को वह न दिखाये लेकिन फिर वह बात बीत गई और भुला दी गई मुझे भी फिर जाने क्यों वक्त न मिला कि पूछती कि वह कौन थे फिर कब मैंने उसके कागजों को टटोला मगर पता मिला नहीं "

मुझे वक्त नहीं है, माफी चाहती हू"

"यह तो बड़े दुख की बात है तो आशा है फिर कभी लेकिन शायद आप सिगरेट पीती होंगी ?" और झुककर उसने अपने सुनहरी सिगरेट केस की ओर बाँह बढ़ाई उसपर उसी प्यारे पन्ने के नग से जड़ा हुआ बड़ा सा 'ई' अक्षर बना हुआ था, जल्दी ही रेजेनॉव वा पहुचे

तिमिरा ने उस सध्या को इन्हें ठीक और पर देख न पाया था अब सहसा सामने पाकर वह चकित सी रह गई खिलाड़ी की-सी देह, ऊँचा डील, भारी और झूलती भवें, उठा माथा जिस पर सहज सुन्दर हाथ से लहराते अव्यवस्थित से काले बाल भरा मुँह जिस पर वक्तृत्व-कला का स्फूर्त प्रसाद खेलता सा दीखता था और आँखें व्यञ्जना से भरी, निर्मम तीक्ष्ण और विनोदपूर्ण ! सब मिलाकर रूप कुछ ऐसा था कि हजारों में निगाह खींच ले दिल जिस पर निछावर हो जाए और मनों को जीतना जिसे सहज स्वभाव हो जाये गहरी महत्वाकांक्षा से भरपूर और जीवन से तृप्त होकर भी अतृप्त, प्रेम में सवेग और विवेक से अपराजित बुद्धि जिसके साहस को कुतर न सके

'भाग्य ने अगर मुझे इस तरह तोड न दिया होता' रेजेनॉव के रूप को और व्यवहार को, सोच और आनन्द से देखती हुई तिमिरा सोचने लगी कि वह पुरुष है कि जिस पर मैं अपना जीवन वार देती, सब निछावर कर देती, खुशी से मुस्कराती हुई कि जैसे गुलाब का फूल डाली पर से प्रियतम पर निछावर कर दिया जाता है

रेजेनॉव ने रोबिन्सकाया का हाथ चूमा फिर सहज सरलता के साथ तिमिरा का अभिवादन किया और बोला "हम एक-दूसरे को उस बीती संध्या से ही शायद जानते हैं सध्या वह असल भी और हो सकता है कि बहुत खूबसूरत न समझी जाये पर तुमने अपने बगला भाषा के ज्ञान से तो हम सबको चकित कर दिया था और जो तुमने कहा, शायद ज्यादा था मुबालिगा था. लेकिन याद तो मुझे है तुम्हारे कहने का ढग आज तक मैं उसे भूल न सका तुम्हारा सुर कैसा व्यंजक था और कितनी उसमें हृदय की गर्माहट थी तो कहो ऐलिन विक्टोरिया," फिर रोबिन्सकाया की

और मुडकर बिना पीठ की एक नीची सी कुर्सी नीचे लेकर उस पर बैठते हुए उसने कहा, 'मैं तुम्हारी किस सेवा के योग्य हो सकता हू हुक्म पर हाजिर हू"

रोबिसकाया ने अलसभाव से अपनी उँगलियो के सिरो को फिर कनपटियो पर लगाया, "ओह ! मेरे प्यारे रेजेनाव, सचमुच मुझे कुछ सूझ नही रहा है" उसने कहा और उसकी आँखो की झलझलाती चमक को उसने जान बूझकर तनिक छिपा जाने दिया, "और फिर मेरा यह कमबख्त दुखता सिर क्या मैं तकलीफ दे सकती हू कि जरा मेज से वह शीशी तो उठा देना यह तिमिरा—श्रीमती तिमिरा सब कुछ कहगी मैं कह सकूगी नही इतनी सामर्थ्य नही है ऐसी भीषण बात है '

तिमिरा ने सक्षेप मे स्पष्टता के साथ जेनी की मृत्यु के इतिहास की सारी शोक गाथा रेजेनाव को सुना दी कहना न भूली कि वह जेनी के पास अपना काड छोड आया था यह भी कि मृतात्मा ने कैसे आदर के साथ उस काड को सुरक्षित रखा था और सरसरी तौर पर जिक्र कर दिया कि जरूरत के वक्त उन्होने सहायता का वचन दिया था

'जरूर-जरूर," तिमिरा के समाप्त करने पर रेजेनाव ने आश्वासन के साथ कहा और अपने बडे बडे कदमो से वह कमरे के इस छोर से उस छोर और उससे इस तक सोचता सा घूमने लगा रह रह कर स्वभाववश हाथो की उँगलियो से लहराते बालों को कभी वह पीछे फेंकता और सुलझाता-सा जाता "तुम एक सच्ची मित्रता के निवाह मे एक शानदार काम करने आई हो यह नेक बात है बहुत अच्छी बात है मै तुम्हारा हूँ हाजिर हू तुमने कहा "दफनाने की इजाजत—परमिट हू-उँ भगवान मेरी स्मृति की मदद करे,' उसने हाथ की उँगलियो से और हथेली से अपना माथा दबाया और रगडा

"हू हू अगर मैं भूलता नही हू तो रूम न० एक सौ सत्तर एक सौ सात-आठ अठत्तर माफ करना, मैं सोचता हू मुझ वह हरफ-ब-हरफ याद है हाँ तो, अगर कोई आदमी अपना घात करता है तो उस

पर कलमा न पढा जायेगा न फतिहा होगा बशर्ते कि यह साबित न हो कि उसका दिमाग सही न था, हू, तो मरी वहिन, यह पहली चीज है तुम कहती हो कि उसको फन्दे से तुम्हारे डाक्टर ने नीचे लिया था यानि शहर के सरकारी डाक्टर ने उसका नाम । "

"विलमैनको "

"जान पडता है कही उससे मिलना हुआ है ठीक हाँ, तुम्हारे इलाके के थान का इसपेक्टर कौन है ?"

"वर्केश '

"आह ! मुझे ख्याल आया वह मजबूत कद्दावर जवान जिसे नीचे पन्ने की मानिन्द सुर्ख दाढी है

"जी, वही

"मैं उसे खूब जानता हू उसके सिर पर समझो एक साल की सख्त कैद की सजा लगती है कोई दस बार वह मरे हाथो मे पडा है, पर हर बार दुष्ट किसी न किसी तरह साफ निकल गया चिकना और चालाक है ऐसा कि क्या कहू उस कुछ शायद दना दिलाना होगा वह बात हुई फिर उसके बाद पोस्ट माटम का किस्सा है उसे दफनाना तुम कब चाहती हो ?"

"आप ही सोचिय मै कैसे कह सकती हू अपनी तरफ मे तो मैं जल्दी से जल्दी चाहती हू - हा सके तो आज ही "

"हू आज उसका तो जिम्मा नही ले सकता—यह तो मुश्किल होगा लेकिन यह मरी याददाश्त की किताब है लो पन्ना खोलो जिस पर त 'टी लिखा है 'त से शुरू होने वाले नामो के सब दास्तो का जसे पता है वैसे ही नीचे तुम अपना लिख दो नाम और पता दो घण्टे म मैं तुम्हे जवाब द सकूगा ठीक है न ? लेकिन मैं फिर कहता हूँ कि दफन के काम को शायद कल के लिय मुल्तवी करना हो और बेअदबी माफ करना, हो सकता है कुछ पैसे वैसे की जरूरत हा शायद ?"

"जी नही धन्यवाद " तिमिरा ने इन्कार करते हुए कहा "पैसा है कृपा के लिय कृतज्ञ हूँ और इस चिन्ता के लिये समय हुआ और अब मैं

चली ऐलीन विक्टोरिया मैं तुम्हारा समस्त हृदय से धन्यवाद करती हूँ"

"तो जवाब की दो घण्टे के अन्दर अन्दर आशा कर सकती हो" रजेनाव ने दरवाजे तक उसके साथ आते हुए दोहराकर कहा

तिमिरा वहाँ से एक साथ घर नही चली गई वह एक गली के अन्दर के छोटे से काफी हाउस की तरफ मुडी वहाँ सैनका उसकी राह देख रहा था खुश तबियत का एक स्वस्थ युवक जान पडता था बाल काले से ज्यादे नीले आँखो की पुतलियाँ काली जिनके पास की सफेदी पर जरा जर्द छाया थी काम मे निर्भीक और दढ़, आस पास के चोरो का सरदार इस दुनिया मे अनुभव और पराक्रम के लिये उसकी बडी ख्याति थी और वह अनुभवी नेता था, सबका अग्रणी हर वक्त मुस्तैद और रात रात भर काम के लिये तयार

बिना उठे उसन बढाकर तिमिरा को अपना हाथ दिया पर जिस चिन्ता क साथ मानो हाथ के दबाव से खीचकर उसने तिमिरा को कुर्सी पर बिठाया उससे देखा जा सकता था कि तिमिरा के लिय उसमे कितना भाव कितनी पीडा है ?

'क्या हाल चाल है तिम्मी ? एक मुद्दत स तुम दीखी नही—मैं तो थक गया कॉफी लोगी ?"

नही, पहले काम कल हमे जेनी को दफनाना है—उसने फाँसी लगा ली है"

"हाँ, मैंने एक अखबार म पढ़ा था' सैनका न दाँता के बीच से दबा कर ऐसे कहा जैसे उसे परवा न हो, "माजरा क्या था ?"

"मुझे पचास रुपये लाकर इसी वक्त दो"

तिमिरा ! मेरी जान ! मेरे पास तो अधेला नही है"

'कह रही हूँ फौरन लाकर दो" तिमिरा ने हकूमताना ढग से कहा मगर सुर मे गुस्सा न था

"ओह ! दादा रे तुम्हारा तो मैंने छुआ नही, जसा कि मैंने कह दिया था लेकिन आज है इतवार सेविंग बैंक बन्द होंगे'

"हो बन्द और मारो गोली सेविंग बैंक को रुपये चाहियें पचास कहाँ

से, सो तुम जानो, सुनते हो"

'किस लिये इतनी जरूरत है, जानेमन ?"

"तुझे इससे क्या उल्लू तुझे तो सब एक हैं आखिरी रस्म के लिये चाहिये"

'ओह ! ठीक है, अच्छा' सैनक्का ने साँस भर कर कहा, "तो शाम को रकम लेकर खुद तुम्हारे पास पहुँचूगा वही अच्छा रहेगा क्या, ठीक तिमिरा ? तुम्हारे बिना मेरे लिये किस कदर मुश्किल होता है ठहरना मेरी प्यारी ! जी करता है तुम्हे चूम लू और चूमता रहूँ तुम्हे मैं आँख न बन्द करने दूगा क्या मैं नही आ सकता "

'नही नही कहा वैसा करो सनेश्का मेरी कही मानो, तुम हरगिज न आना—मैं अब सरक्षिका हूँ'

"हा आँ वह तुम सब क्या जानो" विस्मित स सैनका न यह कहा और मुह से सीटी सी बजायी

"सच और इस बीच तुम मेरे पास मत आना फिर पीछे बाद म मेरे प्यारे ! जो तुम चाहो जल्दी ही सब कुछ खत्म हो जाने वाला है'

ओह ! मगर तुम मुझे और ज्यादा न सताओ जितनी जल्दी हो काम समेट समाट चली आओ"

'और मैं भी तो सब उठा देने की जल्दी मे हूँ, न ह स एक हफ्ते और ठहरो प्यारे ! पाउडर लाए ?"

ऐसी तसी पाउडर की' सनका ने झीककर कहा "और पाउडर नहीं गोलियाँ'

"पक्का है जो तुम कहते हो कि वह एक साथ पानी में घुल के हल हो जाती है ?"

"बिल्कुल, मैंने खुद जो देखा है"

'और आदमी मरेगा नही ! सुनो सैनश्का वह मरेगा तो नही? निश्चय है नही मरेगा !"

"नही, कम्बख्त मरेगा ही तो नही थोडी देर के लिए लुढककर बस ऐसा हो जायेगा कि सुन्न ओह! तिमिरा," उसके स्वर मे जसे मन

का आवेश आ गया हो; स्वर कुछ फुसफुसाहट का हो आया एक असह्य भावोन्माद मे मानो उसका बदन अँगडाई ले उठा ऐसे कि उसके जोडो के चटखने की आवाज आई "भगवान् के लिये सब जितनी जल्दी हो खत्म कर करा कर निकलो और चलो यहा से जहा चाहो वहाँ चलो प्यारी ! मैं तुम्हारा हूँ, तुम्हारे हुक्म का ताबेदार चाहो तो बम्बई चलो—कहो तो देश छोड कही विदेश चले चलें पर यहाँ का क़िस्सा जल्दी-से-जल्दी समेट समाट कर निबटा डालो "

' जल्दी, लो, बहुत जल्दी "

तुम्हारे आँख के इशारे की देर है और मैं तैयार हूँ क्या पाउडर, क्या ओजार, क्या पासपोर्ट वगैरह के कागज और तब यह छू मन्तर, हम वह गये, वह गये तिम्मी, मेरी हीरा, मेरी ताज, मेरी रानी !"

और वह जो सदा सावधान और सतर्क रहता था, भूल गया कि अजनबी उसे देख सकते हैं और वही तिमिरा को आलिंगन मे बाँध लेने को उद्यत हुआ

"देखो देखो, " बिल्ली की-सी तेजी और होशियारी से तिमिरा कुर्सी से उतर कर दूर हो गई "पीछे पीछे फिर सैनेश्का, मेरे राजा" मैं तो कुल तुम्हारी हूगी न इन्कार होगा, न मनाई होगी मैं तब तुम्हे खुद अपने से अघा दूँगी विदा, मेरे नन्हे प्यारे मेमने"

और तेजी से हाथ बढाकर तिमिरा ने सैनका के सिर के बालो के घूघरुओं को अपने हाथो की चपल उँगलियो से छितरा दिया और झपट कर वह काफी हाउस से बाहर निकल गई

८

अगले रोज सोमवार के दिन सवेरे कोई दस बजे ठिकाने की सब जनी गाडियो मे बैठकर शहर के बीच उस जगह के लिये रवाना हुईं जहाँ पोस्टमाटम हाउस था सब थी सिर्फ न थी तो हरीता जो दूर देश थी और बडी तजुर्बेकार या डरपोक और अर्धविक्षिप्त निनका या तीसरी

दुबल मस्तिष्क पाशा, जो दो रोज से बिस्तर से ही न उठी थी गुमसुम रहती थी और सवाल जो उससे पूछे जाते तो जवाब में बुद्धू की तरह एक बेभान सी मुस्कराहट से मुस्करा कर रह जाती शब्द कुछ न कहती गले से कुछ निकलता जिसमे कुछ ध्वनि होती और बस खाने को उसे दिया न जाता तो वह माँगती भी नही और खाना सामने आ जाता तो जैसे दानो हाथों से नदीदी-सी उस पर टूट पडती वह ऐसी बदहवास और बेभान हो गई कि उसे कुछ जरूरी बातो के लिये भी टोक टोक कर याद कराना पडता कि जिससे बिस्तर और कमरा ही कही गन्दा न हो जाए एमा उडवानी अपने खास गाहकों के आगे पाशा को पेश न करती, जो हर रोज उसकी माग करते थे पहले भी उसे ऐसी बेसुधी के दौर आये थे मगर वे अर्से तक नही टिके थे और एमा उडवानी का खयाल था कि बहरहाल यह दौरा पार हो जायगा पाशा इस अडडे की बेशकीमती गोहर थी और वही पूरे मायना म यहा की बदनसीब शिकार थी

पोस्टमाटम वाला मकान एक लम्बा, एक मजिला मटमला सा भवन था, जहा दरवाजो और खिडकियो के गिर्द सफेद चौखटे जडे थे उसके बाहरी रूप मे ही कुछ था जो नीचा लगता था दमित सकुचित और मानो धरती म खोया हुआ कुछ अनबूझ का सा बोध होता था लडकियाँ एक एक कर दरवाजे के पास रुकी और ठिठकी डरी सी सहन मे से हो ली दूसरी ओर बने हॉल के किनारे दीवार से जा सट खडी हो गई यहा भी दरवाजे, खिडकियो पर सफेद चौखटें थी

देखा दरवाजे पर ताला लगा है जरूरी हुआ कि चौकीदार की तलाश की जाए मुश्किल से तिमिरा ने उसे ढूढकर निकाला जोण, पुरातन खल्वाट खोपडी का आदमी का एक नमूना था जिसके चारो तरफ मानो झाड झखाड उग आये थे नन्ही चुधी आखें और बडी सी सुर्ख दानेदार नाक

उसने उस लटकते भारी ताले को चाबी देकर खोला चटखनी हटाई और रोते गाते जगदार दरवाजे को खोला एक सद गीली हवा उनके चेहरों पर आकर लगी उसमे नाना गध मिली थी पसीजते पत्थर की तरह धूप

सामग्री की गन्ध और मतकायाओ की गन्ध इस स्वागत पर लडकिया एकाएक पीछे को एक पर एक गिरती सी हटी एक तिमिरा अकेली अडिग भाव से चौकीदार के पीछे पीछे बढती गई

हाल म अधेरा था मन्दियो की मध्यम रोशनी लोहे की सलाखो से घिरी जेल की सी तग खिडकियो के पटो मे से छनकर थोडी-ही थोडी आती थी दो या तीन आकृतिय। दीवारो पर टगी दिखाई दी कई लकडी के कफन क बक्स फश पर रखे दिखाई दिय जिनके नीचे पकडने के लिये हत्थे निकले हुए थे बीच मे का बक्स उनमे खाली था और उसका ढकना उसके बराबर मे अलग रखा हुआ था

"तुम्हारे वाला किस किस्म का है ?" चौकीदार ने पूछा और नाक के अन्दर सुघनी पहुँचाई, ' चेहरा तुम पहचानती हो कि नही ?"

"मैं जानती हूँ"

"लो देखो, सब तुम्हे दिखाये देता हूँ दखो, यह तो नही है " कह कर उसन एक काफिन का ढक्ना अलग किया अभी वह कीला स पक्का ठोका नही गया था बक्स के अन्दर एक बुढिया लेटी हुई थी कपडे से ज्यादा मानो वह झुर्रियाँ पहने हुए थी और मुह सूजा और नीला था बाइ आख उसकी बन्द थी मगर दाईं खुली थी भयकर चिन्ता से वह वहा जडी थी उसे देख डर लगता था चमक और पहचान उस आँख मे से मिट चुकी थी और जसे वहा पुराने बेकार अभ्रक की तह सी चिपकी रह गई थी

"ओह ! तो यह नहीं, तुम कहती हो तो देखो यह दूसरे और हैं" चौकीदार ने कहा आर एक एक ढकना उघाडकर वह प्रदशनी दिखाता गया यह शरीर अधिकाश दीन, दरिद्र, असहाय पुरुषो के थे इन सडको गलियो से उठा लिया गया था कोई नशे म गिर गये थ कुछ कुचल गये थे कुछ अपाहिज विकलांग थे उन शवो की कायाएँ दुर्गन्ध दे चली थी कुछ के हाथो और चेहरो पर अभी नीले हरे से निशान उभर आये थे जो सडाध की पहचान थे एक आदमी की नाक नदारद थी और ऊपर का ओठ कटकर दो हो गया था उसमे कीडे पड आये थे और वे कीडे उसे

सफेद बिंदियों की मानिन्द रेंगते हुए आये जा रहे थे एक औरत की जलोदर से मौत हुई थी और उसका पेट बक्स में टीले की मानिन्द ढकने को ढकेलता-सा मालूम होता था

सब लाशों को चीर फाड के बाद सी कर, संभाल कर, धो कर बक्सों में लिटाया गया था यह काम इस काई पुते चौकीदार और उसके साथियों ने किया था अगर किसी का सिर इस प्रक्रिया में उसके पेट में पहुच जाए या कि खोपडी में गुर्दा घुस जाए या कि अनमिल अवयव आपस में घुलमिल जाएँ तो इससे इन लोगों को क्या सरोकार शवों पर चौकीदारी करने वाले ये लोग अपनी अलहोनेरी सी जिन्दगी में सबके आदी हो गये थे और यह भी देखा जाता था कि जो बिचारे मुर्दे गूगे बने उनके सामने आते थे उनके कोई नाते रिश्तेदार नहीं हुआ करते थे

मृतक शरीरों से निकली भारी बोझल गन्ध उस सारी जगह भरी हुई थी तिमिरा को ऐसा लगा कि जैसे कोई चिपकनी लेही-सी आकर उसके शरीर के रोम रोम को लिपकर बन्द किये देती है

"सुनो चौकीदार—" तिमिरा ने पूछा, 'यह हर वक्त पैरों के नीचे रेंगता-सा क्या हो रहा है '

"रेंगता सा ?' चौकीदार ने शब्द को दोहरा कर मानो खुद उस ही से पूछा और सिर खुजलाता सा बोला "होगा क्या कीडे होंगे" उसने उपेक्षा भाव से कहा "जाने ये कीडे लाशों पर ढेर के ढेर इतनी जल्दी से कसे होते जाते है पर तुम देख जिसे रही हो वह मर्द है या औरत ?"

"एक औरत है ' तिमिरा ने जवाब दिया

"तो मतलब हुआ कि ये सब तुम्हारे नहीं हैं"

"नहीं, सब अजनबी है"

' लो बोलो इसका तो मतलब हुआ कि दूसरे घर जाना होगा तो वह आई कब यह बताओ ?"

"शनिश्चर को, बाबा" तिमिरा ने कहा और निकाल कर अपना बटुआ खोला ' शनिश्चर को दिन के वक्त कुछ नहीं बाबा, यह तो जरा तुम्हारे तम्बाक के लिए था"

'हाँ माँ, तो शनीचर तुमने कहा, दिन मे और वह पहने क्या थी ?"

"क्या पहने थी, कहो कुछ नही रात वाला एक छोटा-सा ब्लाउज था और नीचे बस एक बनिया द'नो सफेद कपडे के थे "

"तब तो-ओ, जरूर, नम्बर दो सौ सत्रह वाली है नाम क्या था ?"

"सुसाना रैवजीना,"

"जाकर देखता हू शायद वह वही होगी अच्छा तो बीरबानियो, उसने मुडकर सब लडकियो की तरफ कहा, जो दरवाजे मे एक-दूसरे मे घुसी-सी इकटठी हो आई और रोशनी रोक रही थी "तुमम सबसे हिम्मतवर कौन है ? अगर तुम्हारी सहेली परसो यहा आई है तो इसका मतलब यह है कि इस वक्त वह उस हालत मे होगी जिसमे भगवान् सबको पैदा करता है—यानी एक कत्तर उस पर न होगी अच्छा तो कौन तुम मे हौंसले वाली है ? कौन दो आगे आती है ? उसे कुछ पहनाना—वह नाना होगा "

"तो अच्छा तुम जाओ मनका ' तिमिरा न अपनी साथिन को हुक्म दिया जो घिन से और डर से सद और जद पड आई थी और फटी सी हैरत भरी आँखो से मतक शरीरो को देख रही थी डरती क्यो है मूरख—मैं तो साथ चल रही हू तू न जायगी तो कौन जायगा "

"मैं भला मै " हकलाती सी मानो बिना हाठ खोल नन्ही गोरी मनका बोली, ' चलू ? तो चलो, सब मुझे समान हैं '

शवघर उस जगह के बिलकुल पीछे हो था वह एक नीचा एक दम अधेरा तहखाना-जैसा था और छै-सात सीढी उतर कर ही वहाँ पहुँचना होता था

चौकीदार भागकर गया और एक मोमबत्ती का टुकडा और टूटी फटी-सी एक किताब साथ लेकर लौटा मोमबत्ती जलने पर लडकियो ने देखा कि कोई बीमेक लाशें तरतीब के साथ कतारो मे सीधे फश पर रखी हुई हैं, अकड गई हैं नीली हैं, पीली हैं चेहरे मौत से पहले के डर और दद के मारे तुड-मुड गए हैं किन्ही की खोपडियाँ खुली हैं, चेहरो के गाढे खून के लौंदे

कुछ पर जमा है दाँतों की पाँतें खुली हैं

' अभी लो अभी लो," चौकीदार कहता जाता और हरेक की लिखी निशानी को टटोलता जाता "परसों मानी सनीचर को सनीचर नाम क्या बताया था तुमने ?"

"रँट्‌जीना सुसाना " तिमिरा ने बताया

' रटजीना सुसाना " चौकीदार ने दोहराया, मानो कोई गाने की गत दोहराता हो, ' रट्‌जीना सुसाना, वही जो मैंने कहा नम्बर दो सौ सत्रह हा है '

लाशों पर झुकता और टपकती छोटी सी जली मोमबत्ती के सहारे उन्हे चमकाता एक से दूसरे को वह पार करता गया आखिर वह एक लाश के सामने रुका जिसके परो पर काली स्याही से बड़े से अको म लिखा था २१७ यही है वह जरा ठहरो मैं उसे बाहर सिदरी तक पहले ले लू फिर भाग कर कपडा लत्ता ले आऊँ थोडा रुक जाओ " कुछ बुदबुदाते हुए मगर उसके बुढाप का देखते हुए अजब आसानी के साथ उसने जेनी के शरीर को पाव से पकडकर उठाया और फेंक कर कधे पर लटका लिया सिर जेनी का उसकी पिंडलियो के पास लटका झूलता था जसे मानो मरे माँस की लोथ हो या आलू का कोई बोरा हो

सिदरी म अँधेरा कुछ कम था और चौकीदार ने जब अपने बोझ को उतार कर फश पर रखा तो तिमिरा एकाएक अपने हाथो से अपना मुह मूद उठी जबकि मनका मुह मोड कर सीधी रोने लग गई

' तुम्ह किसी चीज की जरूरत हो तो वैसा कहो " चौकीदार ने उन्हें समझाया ' अगर मुर्दे को किसी खास तौर के कपडे लपडे पहनाना चाहो तो जो कहो वह चीज मिल सकती है सोने के काम का कपडा मिल सकता, है माला चाहो माला मिल सकती है सिर पर लेने को चुन्नी मिल सकती है, जाली आ सकती है—सब हमारे यहा तयार रहता है एकाध कपडा तुम खरीद सकती हो जसी जूतियाँ चाहो ले सकती हो "

तिमिरा न उसके हाथो मे पसा रखा और वह बाहर खुली हवा म आई मनका को आगे-आगे वह ढकेलती गई थी

कुछ देर बाद दो मालायें आ गईं एक तिमिरा की थी जिसके ऊपर सफेद रिबन से एक काड लगा था "जैनी के लिए । एक अभिन्न सहेली की ओर से" दूसरी रेजेनॉव की तरफ से थी उसम सारे फूल लाल थे और लाल ही रिबन पर सुनहरी अक्षरो मे लिखा था, "व्यथा म से जलकर ही उजले होने की राह है," रेजेनाव ने उसके साथ एक पुर्जे पर लिखकर शोक प्रकट किया था और न आ सकने के लिए क्षमा चाही थी क्योंकि वह जरूरी काम की मीटिंग मे व्यस्त था और बैठक को टाला नही जा सकता था

फिर गायक लोग आए जिनका तिमिरा न इन्तजाम किया था शहर के सबसे बडे गिरजे की वाद्य मण्डली के चुने हुए पन्द्रह आदमी थ मौलवी जो इस वक्त आया, वह एक बुजुग आदमी था जिस पर लम्बा चोगा था और लम्बी दाढी, उसने वर्का को पहचाना, ताज्जुब मे उसकी आखें खुली रह गइ वह हलके मुस्कराया और आख मारकर उसे इशारा किया इस वक्त वह अपने सही साज मे था, गोया विशिष्ट हो महीने मे दो या तीन बार और कभी इसके अलावा भी अपनी जान-पहचान के साथियो या दूसरे भजनिको के साथ दूसरे और ठिकानो का मुलाहिजा करता हुआ आखिर थन्ना के अडडे पर पहुचता यहाँ बिला नागाह वह वर्का को पसन्द करता

वह एक बेहद खुशगवार आदमी था और तबियत का भडक्कार नाच मे मजे से नाचता बल्कि जोशोखरोश के साथ, और नाचने वक्त ऐसी फिरकनियाँ लेता और ऐसी आकृतियाँ बनाता था कि जो उपस्थित होते हँसी के मारे दोहरे हो-हो जाते थे

वाद्यकारो के बाद दो घोडो की रथी आई यह भी तिमिरा की व्यवस्था थी काली चादर से ढकी थी, सफेद उस पर ध्वज थी और साथ सात हण्डे वाले थे कफन का बक्स आया जो सफेद लहरदार ग्लेस के कपडे से मॅढा था नीचे उसके तख्त की बठक थी जो गहरे काले कपडो से ढकी थी सधे हाथो स बिना किसी हडबडी के उन्होने शव को लिया और उस काफिन मे उतार लिया उसके चेहरे पर पारदर्शक बारीक गौज दिया और सुनहरी शाल से शरीर को ढक दिया फिर एक मोमबत्ती सिर की तरफ

और दो पांव की तरफ जला कर रख दी गइ

बतियो की इस कांपती धीमी रोशनी म जेनी का चेहरा कुछ अधिक साफ दीख आया आरक्तता अब वहाँ से जा चुकी थी सिर्फ कनपटी के आसपास नासा के अग्रभाग पर और आंखो के बीच कुछ रक्त का आभास था हलके से अलग से दीखते काले पडे होठो के बीच से दाता की सफेदी झलक रही थी और उन दातो से कटा जीभ का अगला हिस्सा नजर आ रहा था खुले गले पर जिसका रग पुराने कागज सा हो आया था दो लकीरो के निशान उभरे थे एक नीला, फासी की रस्सी का दूसरा सुर्ख जो साइमन के प्रहार का स्मृति चिन्ह था जैसे दो गलहार हो तिमिरा ने आगे बढकर गले के आसपास के कपडे को समेटा और पास से सेफ्टी पिन खोलकर उसे ठोडी तक बन्द कर दिया

पादरी लोग आए एक अधेड वय के सुनहरी चश्मा लगाय और सिर पर ऊँची सी टोपी दूसरे बीमार से दीखते लम्बी इकहरी काया के अधेड से एक पुरुष थे जिनका चेहरा ऐसा जद था जैसे मोम का हो तीसरा था एक भजनीक वह दिलचस्प आदमी था और राह भर अपनी टोली के सगी साथियो से तरह-तरह की हलकी फुलकी बातें और भिन्न भिन्न इशारे करता आ रहा था

तिमिरा बढकर पादरी के पास गई और बोली, "आप किस तरह प्रार्थना करेंगे पिता मत के लिए एक साथ या अलग अलग"

'हम तो सब क लिए एक साथ ही प्रार्थना पढा करते हैं' पादरी ने अपनी दाढी पर हाथ फेरते, बालो को सुलझाते, अपना क्रूस चूमकर कहा, "यानी आम तौर पर तो ऐसा ही करते हैं पर खास निवेदन पर अलग की भी व्यवस्था की जा सकती है मृतक की मृत्यु किस प्रकार हुई ?"

"आत्मघात से पिता,"

"एं आत्मघात! लेकिन लडकी तुमको मालूम है कि चर्च के नियमो क अनुसार कोई प्रार्थना का विधान ऐसी अवस्था मे क्या कोई है ? निस्सन्देह अपवाद है खास ऊपर से हिदायत हो तो '

"आप ठीक कहते हैं, पिता लीजिए यह पुलिस के और डाक्टर के सर्टीफिकेट हैं वह होश हवास मे नही थी—एक विक्षिप्तता का दौरा—"

तिमिरा ने पादरी के आगे वे दोनो दस्तावेज किये जो शाम ही रेंजेनॉव न भेज दिये थे ऊपर से दस दस रुपये के तीन नये नोट भी आगे बढ़ाए

"मेरा निवेदन है पिता कि आप ईसाई धम विधि के अनुसार जो विधि हो पूरी तरह सम्पन्न करें मतक आत्मा एक बडो गुणी स्त्री थी उसने बहुत सहा, बहुत झेला और क्या आप कृपा कर सकेंगे कि शवयात्रा के साथ कब्रिस्तान तक चल सकें और वहाँ उस आत्मा की शान्ति के लिए एक और अन्तिम प्रार्थना कर सकें '

"साथ वहाँ तक चल तो सकता हू पर उस जगह प्रार्थना करने का अधिकार मेरा नही है वहा के अपने पादरी होते हैं—और सुनो बेटी, मुझे यहा से जाकर जरा देर बाद फिर जो लौटना होगा तो इसके लिए क्या तुम और गाडी के लिए भी दस का एक और नोट न देना चाहोगी ?"

तिमिरा के हाथ से उन्होंने सहज भाव से नोट ले लिया लेकर धूपदान का प्रणाम किया जो भजनीक महोदय उनके समक्ष ले आये थे फिर उस धूपदान को हाथ म लेकर उन्होंने मृतक शरीर की परिक्रमा आरम्भ की अन्त म उसके सिरहाने रुककर अपने व्यवसाय के अनुरूप नम्र और शोकाकुल वाणी म कहा, "ओ परम पिता परमेश्वर ! तू परम दयालु है तू जसा आदि मे था अब है, और वही सदा रहने वाला है अनन्त यह जगत तेरी ही अपार माया है "

भजनीकों ने भजन गाए मानो उन भजना के द्वारा कोई परम गुह्य सन्देश वह दे रहे हो ऐसी शान्त गम्भीर अवसादपूर्ण उनकी वाणी थी मधुर भाव स किन्तु तनिक शीघ्र स्वर से उन्होंने गाया ए पिता, ऐ पिता ! तेरा वर पाकर सन्त जन परमैश्वर्य मे जसे तेरे निकट स्थान पाए हैं उसी तरह इस अपने दास की आत्मा को तू अपनी शरण और शान्ति दे जीव मात्र के लिए जो तुझम अपार करुणा है उसी की वरदछाया मे तू इसे भी

स्वीकार कर"

भजनीक न धूपदान घुमाया और सबको धूम का प्रसाद दिया सबको बत्तिया बांटी गई उन जीती जागती नन्ही कोमल ज्योत के एक पर एक जगने पर वहा के भारी बोझल अधकार मे क्रमश उन स्त्रिया के चेहरे आद्र और पारदर्शी से प्रकाशित होते दिखाई दिए

सगीत का स्वर शोक विह्वल सा समवेत स्वर से गूज गया और सगीत के इन बोलो मे दुखी देवताओ का मानो व्यथित उच्छवास ध्वनित हुआ

ऐ पिता गोद मे स्वीकार कर इस अपनी दास आत्मा को अपनी कृपा के स्वग मे जगह दे, जहा कि तेरे भक्त और अनन्य सेवको के मुखा का प्रकाश सबको प्रकाशित रखता है इस अपनी दास आत्मा को शाति दे जो अपने सब दोष सब पापो को पीछे छोडकर अब चिरनिद्रा म सो गई है'

तिमिरा ध्यान से सुन रही थी शब्द परिचित थे लेकिन जाने कब से उसन उन्ह सुना नही सुनकर एक कड़वी स्मति उसम जागी और उसी कड़वाहट से वह मुस्करा आई स्वर्गीय जेनी के शब्द उसे याद आए जिनमे पागलपन था पर कितना उन्माद था कितनी गहरी अनास्था और अनिवाय निराशा क्या परम दयालु परम क्षमाशील परमेश्वर क्षमा कर देंगे या वह क्षमा नही कर सकेंगे। उस जीवन को जो तिक्त था कटु था, अपावन था और एसा तूफानी और विक्षिप्त था तू तो सब जानता है, क्या तू भी उसे दुतकारेगा? वह जो कि विद्रोही थी पर दयनीय थी व्यभिचारिणी थी पर विवश थी तेरा नाम न लेती थी, उसे स्वीकार न करती, पर बच्ची थी ओ, तू यह जो परम कल्याणमय है ओ अशरण शरण।

इतने मे उस भवन मे एक दबी-सी सिसकी की आवाज़ उठी और देखते-देखते चीख बनकर वह भवन को गुजार गई वह पुकार रही थी "ओ जेनी!" यह पुकार नन्ही गोरी मनका के कलेजे में से निकल कर आई थी वह घुटनो के बल बैठी रूमाल को मुह में दे देकर सुबकी रोक

रही थी और आँसुओ में नहा रही थी पर सब कलेजे में रुक न सका चीख फूटी और दूसरी उसकी साथिनें भी उसी तरह घुटनो बठकर उसमे शामिल हो गईं भवन सारा उनके विलाप से हुकार से, उच्छ्वास से भर गया

"एक तू ही अमर है ! तू कि जिसने मर्त्य को सिरजा और बनाया है इस धरती की धूल से हम बने हैं और धरती की उसी धूल मे हमे जा मिलना है यह तेरा विधान है और सृष्टि के आदि में ही तूने मुझे कह दिया था कि तू धूल मे से है और फिर धूल मे ही तेरा वास होना है"

तिमिरा अचल खड़ी थी चेहरा उसका थिर और कठोर, जैसे पत्थर बन गया था मोमबत्ती से उठता प्रकाश उसके घुंघियाले बालो मे से काले सुनहरी वलयपुञ्ज-सा प्रतिबिम्बित दीखता उसकी आँखें जेनी के चेहरे पर बँधी थी और हटती न थी वहाँ से उसे जेनी का माथा दीख रहा था और नाक का सिरा जो पीला दीखता और कुछ भीगा-सा

'धूल तू है और धूल मे तुझे जा मिलना है" वह मन-ही मन भजन के इन शब्दो को दोहराती, सोचती, "क्या सबका बस यही अन्त है ? सिर्फ धूल, कुछ भी और नही तो बेहतर क्या है ? कुछ न होना या कुछ-तो भी होना ? नकार सर्वथा न होना—या तुच्छ कीट ही सही पर तो भी कुछ-न-कुछ होना"

और समवेत सगीत वहाँ उसकी शकाओ को ताल देता हुआ मानो अन्तिम आश्वासन को उसके पास से छीन लेता निरीहता के साथ गा रहा था

"यह अनित्य ससार, यहाँ से जाना है"

अन्तिम भजन समाप्त हुआ मोमबत्तियाँ बुझा दी गइ धुए की नीली-सी लकीरें धूपदानी मे से उठकर हवा में लपेटे ले रही थी पादरी ने गाई, प्रार्थना पढ़ी और फिर उस व्याप्त नीरवता मे भजनीक द्वारा थमाये गये अपने हाथ के खोचे से धरती मे से मट्टी उठाई और शव पर क्रास बनाते हुए उसे शव पर डाल दिया ऊपर के सफेद महीन कपडे पर मट्टी की लकीरों का यह क्रूस साकेतिक बन आया फिर गम्भीर और अवसन्न अनिवार्यता के साथ शब्द कहे जिनमें ससार के तत्व का मानो

रहस्य भरा था जगत कि जो भगवान् का है, जिसका होना और सबके जिसम होना उसी के ऐश्वय का प्रसाद है

लडकियाँ अपनी मृत सहेली के साथ वहाँ तक गइ कि जहाँ उस काया को भूमिस्थ होना है उस ओर जाने वाली राह उनकी गली के मुहाने को छूती हुई जाती थी गली मे से निकलते तो फासला शायद आधा हो सकता था लेकिन उस गली म से तो शव ले जाने की प्रथा न थी, अनुमति न थी

तो भी उस गली के सब ठिकानो म से, सब घरो के सभी दरवाजो मे से जैसी थी उसी हालत मे सब जनी बाहर चौराहे पर आ गईं नगे पाँवो, रात की पोशाक या सिर पर रूमाल लपेटे बाहर आइ, गहरा साँस लिया 'स्वस्ति' कहा और आँखो मे बरबस आये आँसुओ को रूमालो से या धोती के छोरो से पूछा

मौसम साफ हो आया गहरे नीले सर्द आसमान मे से सूरज चमक आया घास जो सूखी थी अपने मे से हरे किल्ले दिखा उठी वृक्षो पर जीण पात की जगह सुनहरी और गुलाबी कापलें खिल आइ और निर्मल आकाश मे, ठण्डी वायु मे गम्भीर विषाद के से स्वर मे गूजता रव पुकार उठा पावन पिता, पावन परमेश्वर वह कि जो सनातन है, सर्वेश्वर है, हम पर दया करो जीवन के प्रति वह अदम्य प्यास जो बुझना नही जानती, आनन्द के और होने के सौन्दय के प्रति—चाहे वह होना क्षणिक हो, स्वप्नवत हो, किन्तु उस क्षण और स्वप्न के प्रति कैसी लालसा और आकुलता मत्यु की अनन्त नीरवता के समक्ष कैसा अगाध विस्मय और भय—गति की प्राचीन लय मे यह सब किस वेग से ध्वनित और प्रतिध्वनित हो रहे थे

अन्त मे कब्र के ऊपर एक अन्तिम मगलाचरण हुआ और कफन के ढकन पर मिट्टी के गिरने की आवाज सुन पडने लगी गढा या वहाँ धरती मे उभार आया

"और अब यह अन्त है' तिमिरा ने, अकेली रह गई अपनी साथिनो से कहा "सखिया, बहनो—घण्टा भर पहले और अब घण्टे भर बाद तो सबको ही चलना है मुझे जेनी के लिये शोक है गहरा सन्ताप है-

ऐसी दूसरी कोई हमे मिलने वाली नही है तो भी मेरी बच्चियो क्यो वह अपने उस गढे मे उससे अच्छी नही जितनी हम अपने गढे म हैं अस्तु आओ, अब हम अन्तिम बार यहाँ 'स्वस्ति' कहे—और घर चलें "

सबने 'स्वस्ति' कहा, 'स्वस्तिक' का चिह्न किया उसके बाद एकाएक तिमिरा न भेद भरे से गम्भीर भाव से ये शब्द कहे, 'उसके बिना अब हम यहाँ ज्यादा साथ रहने वाली नही हैं हवा आयेगी और जल्दी ही सब इधर उधर बिखर जायेंगी जीवन आनन्दमय है, यह देखो, सूरज है, नीला आसमान है, हवा है, कैसी साफ और स्वच्छ ओस के जाले से तैर रहे हैं जगत् म कितना सुख है कितना मगल है सिफ हम ही, हम लडकियाँ राह स छिटके गन्द की मानिन्द परआओ, चलें '

सब अनी राह पर आग हो ली एकाएक बराबर से एक बडे मकान के पीछे से लम्बे कद और पुष्ट शरीर का विद्यार्थी निकल कर बढा वह लुवी तक पहुँचा और धीमे स उसे बाँह पर छुआ लुवी पीछे मुडी और सामने सोमदेव को देखकर चहक-सी गई उसका चेहरा एक साथ ही पीला हो आया आँखें फटी रह गइ और उसके होठ काँप आये "चले जाओ," उसने अपार घृणा फिर भी धीमे स्वर से कहा

'लुवी! लुवी ' सोमदेव बुदबुदाकर बोला 'मैंने ढूढा सारे मे ढूढता फिरा मैं, भगवान् जानता है, वैसा उस लखनपाल जैसा नही हू सच कहता हूँ यकीन करो, आओ इसी वक्त आज ही "

"चले जाओ" और भी सयत बनकर लुवी ने कहा

'मैं ईमान से कहता हूँ मजाक नही है, गम्भीरता से कहता हूँ—मेरा मतलब है विवाह '

"ओह! जानवर कही का" लुवी एक वार ही गुस्से से चिल्लाई और अपने कडे देहाती हाथों से तेजी से उसके गालो पर चाँटा जडती हुई बोली, 'ले, यह ले और चाहिये ?"

सोमदेव पल के लिये अपनी जगह पर डगमगाता-सा खडा रह गया आँखें उसकी ऐसी बन आइ जैसे शहीद की हो मुह आधा खुला रह गया और उसके आस-पास विस्मय और विषाद की रेखाएँ घिर आइ

"निकल, चला जा यहां से मैं तुम लोगो की शक्ल नही देखना चाहती" लुवी क्रोध से चीखती जा रही थी, "सुअर, बदमाश, हत्यारे !"

सोमदेव ने आशा के विपरीत हथेलियो से अपना मुह ढका और वापिस मुड लिया उसे अब राह पता न था पग डगमगाते थे जैसे पिये हो और होश मे न हो

९

तिमिरा के शब्द सचमुच ही सच निकले जेनी के दफ न के बाद दो हफ्ते से ज्यादा न गुजरे होंगे कि इस थोडे से वक्त म एमा उडवानी के ठिकाने पर वह सितम टूटे और घटनायें घटी जो बरसो के दौर म अक्सर नही हुआ करती

ठीक अगले ही दिन बदनसीब पाशा को एक अनाथा के लिय बने पागलखाने भेजना पडा उसका मस्तिष्क दुर्बल होते होते बेकार हो गया था और सुध-बुध सब खो गई थी डाक्टर का खयाल था कि सुधार की कोई आशा नही है और सचमुच ही मानसिक चिकित्सालय मे ले जाकर फर्श पर पुआल की गद्दी पर उसे जिस हालत म लिटाया गया मौत के क्षण तक वहां वह ठीक वैसा ही पडी रही न हिली, न उठी, मानो नीचे पाताल का गर्त्त खुल आया हो और उसकी चेतना गहरे से गहरे उसमें डूबती और लुप्त होती जाती हो मगर मरने म उसने पूरा आधा बरस लिया, लेटे-लेटे उसका बदन छिल गया और उसके खून मे तरह तरह के रोग बन आये

दूसरा नम्बर तिमिरा का था कोई आधे महीने उसने सरभिका क कर्तव्य निबाहे इस काल मे अपना काम उसने बडी मुस्तदी से किया और असाधारण कुशलता के साथ मगर उसके अन्दर बराबर कुछ घुनता रहता था, वह वेग पकडता आ रहा था उसके वश उसने सब खतम कर दिया एक शाम वह गायब थी, फिर वापिस उस ठिकाने लौटी नहीं "

असल बात यह थी कि शहर में भी एक इज्जतदार रिटायर्ड अफसर

के साथ उसका प्रेम व्यापार आरम्भ हो गया था अधेड उसकी उम्र थी काफी सम्पन्न था पर था बेहद कजूस कोई सालभर पहले उनमे जरा जान पहचान हुई सयोग ऐसा हुआ कि एक ही स्टीमर मे दोनो जा रहे थे दोनो म किसी तरह बात भी हो निकली चतुर, सुन्दर तिमिरा, उसकी भेदीली आमन्त्रण-सा देती मुस्कान उसकी खुशगवार मजेदार बातचीत घोल के साथ उसका चलन, रहन-सहन इस सबने अफसर का मन जीत लिया तिमिरा ने उसी क्षण भाँप लिया था कि इस भले आदमी को अपना शिकार बनाना होगा दखने मे भव्य, व्यवहार म भद्र और निश्चय ही परिवार और प्रतिष्ठा से सम्पन्न तिमिरा ने अपने व्यवसाय के बारे में उसे कुछ नही बताया उसे उत्सुक और रहस्य म भरमाये रखा तिमिरा को यह रुचिकर होता था एक चलने से सकेत के तौर पर अस्पष्ट से शब्दो मे उसने जताया कि वह मध्यम श्रेणी की एक विवाहिता महिला है, गहस्थ जीवन, कलह और क्लेश का है क्योकि पति जुआरी है और बरहम है कि भाग्य ने और तो क्या उसे सन्तति का सन्तोष भी तो नही दिया है कि उसी पर तस्कीन करती अलग होते समय उसने इन्कार किया और क्षमा माँगी कि न्ह सध्या उन्हें न दे सकेगी क्योकि एसा उचित नही है, न उसकी ऐसी इच्छा है मगर हाँ वह चाहे तो उसे खत लिख सकते हैं डाकखाने की माफत अमुक बनावटी नाम से उनमे इस तरह चिट्ठी पत्री शुरू हुई और पनप आई अपने पत्रो मे अफसर महोदय अपना दिल कलेजे प निकाल रखते और शैली वह लिखते जो नाविला के नायको को मात करती है तिमिरा न अपनी आर से तटस्थ और अनिश्चित भाव ही पत्रो मे बनाये रखा आखिर अन्त मे महोदय की प्राथनाओ से पिघलकर उसने प्रिस पाक मे मिलन की एक तिथि को स्वीकार किया वहाँ वह बडी मोहक बन आई दिलचस्प और ऐसी कि स्वय रीझी हो पर उनके साथ कही भी जाने से उसने इन्कार कर दिया

ऐस वह अपने भक्त को सताये गई और उनकी ज्वाला को होशियारी से उकसाये गई और चेताये चली गई कामना की यह ज्वाला प्रेम की आग मे अकसर ज्यादा तेज और तीखी थी और उतनी ही खतरनाक

आखिरकार इस गर्मी में जब कि मन राय साहब का परिवार बाहर कहीं गया था उसने तय किया कि वह उनसे मुलाकात के लिये जा सकती है तब पहली बार उसने अपने को उन पर वार दिया इस आत्मसमर्पण मे मानो उसके अन्दर अन्त करण का बडा सघर्ष था और उतनी ही उत्कट कामना और विवशता थी उसमे से रायसाहब को इतना उच्छवास मिला और उत्साह सक्रियता और निष्क्रियता इतनी उमड और इतना आवेग कि बेचारे रायसाहब का सिर फिर गया वह एक बार के लिये पागल हो आये बुढभस उन पर सवार हुई और वह उसमे ऐसे बहे कि आगे पीछे की उन्हे सुध न रही मद उन पर चढ आया और उनके रुकने का आखिरी सहारा बेहया और बेवकूफ दीखने का डर, वह भी उनमे दूर हो गया

तिमिरा बडी बचकर मिलती थी और कम मिलती थी इसमे बेसब्र रायसाहब की आग भी और भडकी रहती वह मानो मजबूरी मे आखिर उनमे कभी फूलो के उपहार स्वीकार कर लेती मध्यम से किसी रस्मी मे निमन्त्रण स्वीकार कर लेती मगर कीमती तोफे कभी उसने कबूल न किये बल्कि गुस्से से इन्कार कर दिया यानी कि कुल मिलाकर वह ऐसी चतुराई से व्यवहार किये गई कि रायसाहब को सामने लेकर उस पमा देने की हिम्मत ही कभी न हो सकी एक बार उन्होने हकलाते कुछ एसा कहा, कि अगर एक अलग मकान उसे ले दिया जाये जहाँ दूसरे सब सुभीने हो—तो बीच मे ही तिमिरा ने उनकी आँखो मे ऐसे स्वाभिमान भरी कडाई और ऐसी तीव्रता मे देखा कि वह एक बालक की तरह, खिचडी बालो की तरह अपने चेहरे पर सुख हो आया और आदर से उसके हाथ उठाकर चूमने हुए लाख-लाख क्षमा मागने लगा

इस तरह तिमिरा उनके साथ खेल रचती रही थी देखती जाती थी कि जमीन नीचे खूब पुख्ता होती जाती है अब वह बखूबी जानती थी कि रायसाहब किन दिनो मे अपनी लाहे की फायरप्रूफ सेफ मे क्या रखते लाकर रखा करते हैं ताहम उसे जल्दी नहीं थी कि कही हडबडी मे और बेताबी मे सब मन ही कही चौपट न हो जाए

कि आखिर सही दिन आकर पहुँचा जिसका कबसे इन्तजार था एक बडी नुमायश का ठेका हाल ही मे खतम हुआ रायसाहब के आधीन सभी अफसर थे हर रोज बडी बडी रकमो का मामला तय कर रहे थे तिमिरा जानती थी कि रायसाहब अकसर शनिवार के दिन सब पैसा बैंक ले जाया करते है कि जिससे इतवार को पूरे आजाद हो चुनाचे शुक्र के दिन रायसाहब को एक आदमी के जरिये नीचे लिखा खत मिला

"मेरे प्रीतम ! मेरे चांद ! मेरे राजा सूरज ! तेरी बांदी तेरी चमन चहेती तेरी चेरी अपने अतप्त चुम्बनो से तुझे याद करती है तेरा स्वागत करती है प्यारे ! आज मेरी छुट्टी का दिन है और मैं बेहद खुश हूँ आज मैं आजाद हूँ और तुम भी आजाद हो वह पूरे एक दिन के लिये काम काज के सिलसिले से कानपुर चला गया है और मैं चाहती हूँ कि मैं सारी शाम और सारी रात घर मे तुम्हारे साथ बिताऊँ आह मेरे प्यारे ! मैं तेरे सामने दोजान होकर सारी जिन्दगी बिताने को तैयार हूँ मै कही नही जाना चाहती इधर उधर के रेस्ट्राँ और होटलो से मैं तग आ गई हूँ मैं तुम्हे चाहती हूँ तुमको तुमको सिर्फ तुमको इसमे मेरे राजा ! शाम को रात होते मेरी राह देखना, कोई दस या ग्यारह बजे शराब की खूब सी बोतलें निकाल रखना जो बर्फ मे बसाई हो और मेवा, और नमकीन और मैं कामना से जल रही हू तेरी प्यास से मरी जा रही हूँ लगता है तुम साथ न दे सकोगे मैं तुम्हे थका मारूँगी मैं ठहर नही सकती मेरा सिर घूम रहा है चेहरा जल रहा है और हाथ दोनो ऐसे ठण्डे हैं जमे बर्फ आओ मुझे आलिंगन दो और मेरा आलिंगन लो

उसी शाम कोई ग्यारह बजे तक वह रायसाहब के साथ काफी दूर तक बढ गई ऐसी बातों की सम्पन्नता के उनके अभिमान को ऐसा दुलराया, चतुराई से ऐसा बहलाया कि उन्होंने उठकर खुद उसके सामने अपनी फायरप्रूफ सेफ खोली तिमिरा न होशियारी से देखकर पकड लिया कि किन-किन अक्षरो को घमाकर साथ बिठाने से ताला खुल जाता है फिर उटती सी नजर से सेफ के खाने और अन्दर रखे बक्सो को देखकर उसने मुह मोडा थकान की सी एक जमुहाई ली, बोली, 'ऍंह, आओ क्या बेकार

और देखते-देखते रायसाहब के गले में बाँहें डालकर उन्हें अपने में बाँध लिया, और कानों के पास मुँह ले जाकर अपने गर्म साँसों से उनके उछलते मन को उकसाते हुए कहा, "बन्द भी करो कम्बख्त को ताला लगाकर आओ और चलो मेरे राजा ! आओ-आओ"

और उस कमरे से बाहर निकलकर जाने में पहले और आगे-आगे खुद वह थी

'यहाँ आओ प्यारे !" वहाँ से पुकारती हुई वह बोली, "जल्दी आओ कहीं यह खोने का वक्त है ? मैं पीना चाहती हूँ कि बस फिर एक ही चीज रह जाये—प्यार, प्यार, अनन्त प्यार ! नहीं, पी भी डालो, है कितनी छोड़ना गुनाह है तली तक पी डालो प्यारे ! जसे कि आज हमने अपने प्यार को तली तक पी के चुका डालना है '

रायसाहब ने अपना ग्लास उसके ग्लास के साथ बजाया और एक घूट में गटक कर सारा पी गये तब फिर उन्होंने होठ बिचकाए और बोले, "ताज्जुब है शराब आज किसी कदर कड़वी मालूम हुई"

"हाँ, "तिमिरा ने कहा, और अपने प्रेमी को टक बाँधकर देखती रही 'यह शराब कड़तल्ख होती है पहाड की शराबें तुम जानते हो "

'मगर आज तेजी रोज से ज्यादा थी !" रायसाहब ने कहा, "नहीं, शुक्रिया तुम्हारा मेरी जान ! – और मुझे नहीं चाहिए"

पाँच मिनट बाद कुर्सी पर बैठे-बैठे वह सो गये, सिर पीछे कुर्सी की पुश्त पर टिका था और जबड़ा लटक आया था तिमिरा ने कुछ देर इन्तजार किया और फिर उन्हें जगाकर देखने की कोशिश की रायसाहब अचल थे और जान कहा पहुँच गये थे तब उसने जलती मोमबत्ती ली गली पर खुलने वाली खिड़की की चौखट पर उसे चमकाया बाहर मुख्य द्वार के पास पहुँची और कुछ आहट लेने की चेष्टा की कुछ ही देर में जीने पर किसी के कदमों की आवाज आई बिना शब्द किये उसने चुपचाप दरवाजा खोला और अन्दर सैनका दाखिल हुआ असल जन्टिलमैन का वेष था और हाथ में नया चमड़े का आला हैण्डबैग था

"तैयार ?" चोर सरदार ने फुसफुसाकर पूछा

"नीद में एकदम चित है" उसी आहिस्ता आवाज मे तिमिरा ने जवाब दिया "देखो यह चाबी है

दोनो साथ उस फायरप्रूफ वाली सेफ के कमरे मे गये टॉर्च फेंककर सैनका ने ताले पर जो निगाह डाली तो हौली आवाज मे कसम खा कर कोसता सा बोला "कम्बख्त बूढा, बडा काइयाँ निकला, शैतान का बच्चा जानता था कि ताला बदमाश ने नम्बरो वाला बनाकर रखा हुआ है, अब नम्बर पहले पता चलें तो जाकर नही तो सारे को बिजली से गलाना होगा और इसमे जाने ससुरी कितनी देर लगे"

"नहीं, वह सब फसीहत जरूरी नही है" तिमिरा ने जल्दी से कहा, "मुझे नम्बरो का जोड मालूम है दो, चार, नौ, पाँच, छँ बस यह चुन कर लगा दो"

दस मिनट बाद दोनो साथ साथ जीना उतर कर मकान से बाहर आए जान बूझकर अलग अलग होकर कई फालतू मोड और गली पार करते हुए अ त म पुराने शहर मे पहुँच कर डिपो के लिये उन्हाने गाडी की और बकाया नागरिक पासपोट दिखाते हुए शहर से बाहर हुए पासपोट मे व ऊँचे जागीरदार पति पत्नी थे नाम था सतवन्त

मुद्दत तक फिर उनके बारे मे कुछ नही सुना गया आखिर डेढ़ेक साल बाद दिल्ली मे एक बडी चोरी के सिलसिले मे सैनका पकडा गया। हवालात की तक्लीफ उसे दी गई आखिर उससे तग आकर उसने तिमिरा का सुराग दे दिया दोनो पर मुकदमा चला और दोनो को अदालत से सजायें मिली

तिमिरा के बाद नम्बर आया वर्का का, स्वभाव से वह भोली थी, विश्वास करने वाली और प्रीत पालने वाली इधर अर्से से वह एक अध-फौजी आदमी के प्रम मे थी जो फौजी विभाग के दफ्तर मे अपने को क्लर्क बताता था नाम था दलजीत दोनो के सम्बन्धो मे वर्का थी जो इश्क मे थी और यह हजरत अपने को मूरत गिनते थे जिसकी भक्ति की जा सक्ती हो, आरती उतारी जा सकती हो जिनका खुद काम पूजा और चढ़ावा

स्वीकार करने की कृपा करना ही हो पिछली गर्मियों के अन्त से वर्का देखने लगी थी कि उसका आराध्य ठडा पड रहा था और उसमे उपेक्षा आ चली थी उससे बात करता है तो मालूम होता है कि मन उसका कहीं दूर बहुत दूर है वह बार बार पूछती, झुनलाती और श्राम के मारे मरी जाती एक अनजानी ईर्ष्या उसे कुतरती रहती पर जवाब मे वह साफ कुछ न कहता जाने क्या कुछ साकेतिक से शब्द कहता जिनसे लगता कि कोई भारी बिपत और घोर सकट उस पर आने वाला है न हो कही अकाल मौत ही आ जाये सितम्बर के शुरू मे जाकर आखिर उसने वर्का से कुबूल किया कि उसने सरकारी रुपये मे खयानत की है और तीन हजार से कुछ ऊपर रकम चुरा ली है अब पाच दिन मे भेद खुल जायगा क्योकि चक-अप होने वाला है और दलजीत की बदनामी और बेइज्जती होगी सो होगी, आखिर म अदालत से सख्त मुशक्कत की सजा भी उसे जरूर होगी कहते कहते फौजी विभाग के क्लक महाशय सिर को दोनो अपने हाथा म थाम रहते, सुबकी ले लेकर रो उठते और पुकारते "ओ मेरी मा बेचारी उसका क्या होगा ? वह इस बेइज्जती को झेल नही सकेगी नही इस बेगुनाह जिल्लत या दोजख की तकलीफ से मरना हजार दफा अच्छा होगा"

अगर्चे हमेशा की तरह वह सस्ते उपन्यासो की भाषा मे अपने दुख की तस्वीर खीचता था (और इसी किस्म की लच्छेदार बातो ने भाली वर्का का मन उसने काबू किया था) तो भी अपघात की बात नाटकीय होकर एक बार मन मे होकर सहसा वह वहाँ से दूर नही होती थी और मन मे गहरी ही बसती जाती थी

एक दिन किसी तरह वह प्रिंस पार्क मे वर्का के साथ काफी सैर तक घूमता रहा पार्क मे पतझड के बाद अब दरख्त नये नये चिकने पत्ते ओढ कर अजब बहार से लहलहा आये थे कोपलें फोडते हुए नये निकलन थे कि सलय धूप की ज्योत से तरह-तरह खेलते और नये नये रगा का आभास देते गुलाबी, सुख, ऊदे किशमिशी से हरे नीले, बजनी रग का मन आपस मे खेलते से जान पडते लगता कि वायु सौरभ बखेर रही है और सबस के साथ भीतर उतर कर वह उन्माद की हिलोर मे जगा जाती है इस आनन्द

और उन्माद के साथ लगता कि बिछी घास से लताओ से वृक्षों से, एक अवसाद भी फूट रहा है, मानो शान्त मत्यु का कोमल स्पश हो "

दलजीत अपने ही आवग म विह्वल और आद्र हो आया भावावेग मे वह वह कर अपने ही प्रति सदय बना-सा वह आसू बहा उठा वर्का भी उसके साथ रो आई

"आज मैं अपनी हत्या कर लूगा " दलजीत ने सक्ल्प-सा प्रकट किया, "सब खत्म हो चुका है "

"नही प्यारे ! यह न करना मेरे मोती मेरे हीरा ! यह न करना "

"नही, अब और कुछ नही है " दलजीत ने अनिवाय बनकर कहा, "कम्बख्त पैसा क्या प्यारा है—जिन्दगी कि इज्जत ?"

"मेरे प्राण "

"बोलो नही, नही बोलो मत, नीता ! (जाने कसे वह सीधे सादे वर्का की जगह ऊँचे और अच्छे इस नीता नाम से उसे पुकारता था) नाम यह काफी सोचकर उसने रखा था बोलो नही, यह तय है "

"ओह ! जो मैं कुछ मदद कर सकती !" वका दुख भरे स्वर म बोली, "तो म प्राण देकर करती—अपने खून की एक-एक बद दे देती—"

"जिन्दगी क्या है ?" ऐक्टर की सी निराशा म दलजीत ने सिर हिलाया कहा, "बिदा नीता—सदा के लिए बिदा—'

लडकी न जोर से सिर हिलाकर कहा, 'नहीं नहीं मैं बिदा नहीं लूगी—नही लूगी—कभी भी विदा नही लूगी मुझे लो—मैं भी साथ चलूगी—"

रात ढले दलजीत ने एक कीमती होटल मे एक कमरा लिया वह जानता था कि कुछ ही घण्टो मे शायद मिट्टी म वह और वर्का शव मात्र रह जायग और इसलिए अगर्चे उसकी जेब मे कुल जमा सिफ पाँच पैसे पड़े थे उसी शान से, मानो नवाब का बेटा हो और हाथ बेहद खच का आदी हो, उसने बढ़बढ कर आडर किया एक ने एक खान मँगाये और फल और मेवे और व्यजन और पेय और शराबें और सब कुछ अमल म

उसे यकीन था कि वह अपनी गोली मार लेगा यह ख्याल उसे खूबसूरत लगता उसे पसन्द आता और अलग से वह उसे ऐसे देखता जैसे शानदार ट्रेजडी सामने देखता हो और अपने रिश्तेदारो की घोर निराशा और साथी बाबुओ की उत्सुकता और अचरज का पूर्वाभास उसे आनन्द और हर्ष देता उधर वर्का ने जब यह कहा कि अपने प्यारे के साथ वह भी जान दिए बिना न रहेगी तो यह खयाल उसमे और मजबूत हो गया था। वर्का के लिए इस मौत मे कोई डर न था कहती, "तुम्ही कहो, इस जिल्लत और मुसीबत के नीचे झोंकते हुए जीने में क्या रखा है यहाँ मैं अपने प्यारे के साथ तो हू और मौत साथ होकर क्या प्यारी न होगी—" कह कर वह क्लब बाबू के गले से चिपट कर उसे चूमती, हँसती और खुश होती इस समय की वर्का अपने बिखरे फैले घुघराले बालो के बीच उसका चेहरा जिसम आखें आस्था से दमकी दीखती इससे ज्यादा सुदर कभी न दीखा था

आखिर अन्तिम क्षण जिसमे विजय थी और समाप्ति थी, आ पहुचा

"तुमने और मैंने, हम दोनो ने जीता अपने को छककर भोगा—प्याले को उसके तल तक ढाल कर हम पी गए हैं अब वह खाली है कि उस जाम को हम फेंककर तोड दें" "दलजीत ने कहा, "तुम पछता तो नही रही हो? मेरी प्राण '

"नही-नही "

'तैयार हो ?"

"हाँ।' आहिस्ता से उसने कहा और होठो पर उसके मुस्कान खेल आई

"तो मुडकर दीवार की तरफ हो जाओ और आखें ढक लो"

"नहीं नही, राजा मेरे ऐसे नही यह मैं नही चाहती पास आओ, हाँ, ऐसे और पास, और पास—लाओ, आँखें मुझे दो उनमे मुझे देखने दो लाओ अपने होठ दो—मैं चूमती रहूँगी जब कि तुम जबकि तुम मुझे डर नही है—हारो नही, मेरे बहादुर, कस के और कस कर चूमो—"

उसने उसे मार दिया हत्या के बाद अपने हाथों हुए काम को देखकर

उसे सहसा डर-सा लग रहा था कमीना, गन्दा घिनौना डर वर्का की अधनगी काया बिस्तर पर अब भी गरम थी और मरोड ले रही थी दलजीत की टागें मारे डर के नीचे से मानो जबाब दे आइ लेकिन कायर कुटिल कपटी एक दक अब भी चौकन्ना था मगर उसमे काफी चेतनता और साहस शेष था कि वह बराबर फैलकर लेट रहा और अपनी पसलियो के बीच गोली दाग सका उसने तमचे का घोडा खीचा उसकी आहट गूज गई और गोली उसे चीरती चली गई मारे डर और दद के वह चीखा उमी क्षण वर्का की काया उसके आगे आखिरी मरोड लेकर शाँत हो गई

वर्का की मृत्यु के दो सप्ताह बाद नेक नम्र जिद्दी कलहन न'ही गोरी मनका भी चल बसी बखेडे झगडे तो इन अड्डो मे कोई नई बात थी नही ऐसे ही एक बखेडे मे बढते-बढ़ते किसी ने एक भारी खाली बोतल लेकर उसके सिर पर देकर मारी कि मनका फिर न उठी और हत्यारे का अन्त तक पता न चला

उस सारी गली मे जैसे कि एमा के ठिकाने मे घटनाओ पर घटनायें तेजी से घटी शायद ही कोई ऐसी बची होगी जिसका अन्त ऐसे ही भीषण, विकट औ^ खतरनाक तरीके से नही हुआ

आखिरी और सबसे बढ चढ कर जो नृशस काण्ड हुआ वह था जो फौज के सिपाहियो ने आकर ढाया उसकी नबरता और बरबादी का अन्त न था

बात यह थी कि दो दस्ते फौजी रगरूटो के एक अठन्नी वाले चकले मे पहुचे बेहूदा हरकतो पर उ^ह पीट पाटकर रात मे वहाँ से गलो मे निकाल बाहर किया गया लहू-लुहान, बुरी तरह पिटी घायल हालत मे वे लोग लौटकर अपनी बैरका मे वापिस आए उनके साथी सवेरे की कवायद से निबटकर चुके ही थे उन्होने जो देखा तो नतीजा यह हुआ कि आधा घटा न बीता होगा कि कोई एक सैकडा सिपाही गली पर आ टूटे और एक के बाद दूसरे के हर ठिकाने को उ^होने तहस-नहस करना शुरू किया साथ ही राह चलते उचक्कों की भीड उनमे जा मिली हर किस्म के अवारा, चोर, उठाईगीरे, गुण्डे, बदमाश, लूटमार मे शामिल हो गये खिडकियो के

सब काच तोड डाले गये और झाड फानूस, प्यानो वगैरा चकनाचूर कर दिए गये कीमती घरो के पलगो को फोड फाड कर बाहर फेंक दिया गया उसके बाद कोई दो दिन तक उनसे निकले पर सारी गली मे उडते फिरते दिखाई देते कि जैसे बरफ के गाले हा लडकियाँ खुले सिर, मादरजात नगी बाहर सडको पर खदेड दी गई तीन चौकीदारो को कुचल कर मार डाला गया भगदड न सारे फर्नीचर का, गद्दा को, तोश्कों को, रेशमी चादर और पर्दों को गद से लथड कर धज्जियाँ करके फाड फेंका इस हल्ले में आस पास की ताडी कि दुकानो या सरायो को भी उन्होने न छोडा और सब उजाड कर दिया

यह लूटमार, बलात्कार और हत्या का लहूसना उन्मत्त व्यापार कोई सात घण्टे तक चलता रहा आखिर बाकायदा फौजी पुलिस आई और आग बुझाने का दस्ता साथ आया तब कहीं उत्पातियो की भीड को खदेड कर तितर-बितर किया गया दो चवन्नी वाले अड्डो मे आग लगा दी गई मगर आग पर जल्दी काबू पा लिया गया ताहम अगले रोज उपद्रव खूब उठा इस बार वह सारे शहर और आसपास तक फैल गया बढकर उसने अकस्मात विकराल रूप धारण कर लिया जसे गदर ही मचा हो, पूरे तीन दिन यह गदर जारी रहा उसकी खुरेजी और गारतगर्दी का बयान मुश्किल है

हफ्ते भर बाद गवर्नर जनरल की तरफ से हुक्म जारी हो गया कि इस गली के या कि शहर के और मोहल्ले के सब चकले, ठिकाने फौरन बद कर दिये जाएँ उनको चलाने वाली मालकिन नायिकाओ को एक हफ्ते का वक्त दिया गया कि व मकान जायदाद के सिलसिले के सारे मामले निपटा दें नहीं तो सब जब्त हो जाएगा

यह नायिकायें अक्सर मोटी और दोहरी काया की अधेड औरतें थीं उनका जाहोजलाल सब उड गया लुट कर, मिट कर, कुचल कर वे ऐसी बन आई कि हँसी आती थी और दया भी होती थी सब लदर-पदर अपना इतजाम बैठाने मे लगी थीं आखिर महीने भर के अन्दर काठ बाजार का सिर्फ नाम रह गया कि कभी वहाँ जिन्दगी रगरेलियाँ लेती और सितम

ढावा करती थी फिर याद भी लुप्त हो गई

और आखिर जगह का नाम भी बदल डाला गया कि पुरानी याद का बहाना तक न बाकी बचे वह जमाना जड से ही खत्म हो गया बदल कर एक अच्छा सा नया नाम उसे दे दिया गया

और वहाँ की नन्हीजान और मुन्नीजान, कल्लो, सिल्लो और बिल्लो और दूसरी सब जनी निकल कर बडे शहर मे फैल गई और जज्ब हो गई व सीधी थीं और मूरख थी अक्सर वे ठगी गई थी और बचपन म बिगाड दी गइ थी सबका इतिहास था और सबके पास सबब था खैर उनमे से फिर समाज मे एक नए स्तर से जन्म लिया फिर खानगियाँ जन्मी जो अलग-अलग अपना धधा चलाती और बँधने के बजाय इधर-उधर डोलती इनका जीवन वैसा ही बिछुडा-सा होता और वे जन दयनीय और द्रवित । फिर भी वह भिन्न था और रीतनीत उसकी भिन्न थी लेकिन यह लेखक इस उपन्यास मे जो—जो उसकी ओर से युवको को समर्पित है और माताओ को वह सब न कह सकेगा वह फिर कभी कहा जायगा

□□□